

पुरुष क्यों नहीं सुनते और महिलाएँ क्यों नहीं समझतीं

क्यों अलग है पुरुष और महिलाओं की सोच !

ऐलन + बारबरा पीज़

THE NEW INTERNATIONAL BESTSELLER

Hindi translation of
*Why Men Don't Listen &
Women Can't Read Maps*



पुरुष क्यों नहीं सुनते
और
महिलाएँ क्यों नहीं समझतीं...

पुरुष क्यों नहीं सुनते
और
महिलाएँ क्यों नहीं समझतीं...

ऐलन + बारबरा पीज़

अनुवाद: नीलम भट्ट





मंजुल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.

कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय

द्वितीय तल, उपा प्रीत कॉम्प्लेक्स , 42 मालवीय नगर, भोपाल-462 003

ई मेल: manjul@manjulindia.com

वेबसाइट: www.manjulindia.com

विक्रय एवं विपणन कार्यालय

7/32, भू तल, अंसारी रोड, दिरियागंज, नई दिल्ली-110 002

ई मेल: sales@manjulindia.com

वितरण केन्द्र

अहमदाबाद, बैंगलुरु, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई,

हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

ऐलन व बारबरा पीज़ द्वारा लिखित मूल अंग्रेजी पुस्तक वाय मेन डोन्ट लिसन
एंड विमेन कान्ट रीड मैप्स का हिन्दी अनुवाद

कॉर्पोरेइट © ऐलन पीज़ 2001

सर्वाधिकार सुरक्षित

पीज़ इंटरनैशनल प्रॉ. लि., ऑस्ट्रेलिया की अनुमति से प्रकाशित

C/o डोरी सिमंड्स एजेन्सी लि.

यह हिन्दी संस्करण 2015 में पहली बार प्रकाशित

ISBN 978-81-8322-613-4

हिन्दी अनुवाद: नीलम भट्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित। यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

विषय-सूची

आभार

परिचय

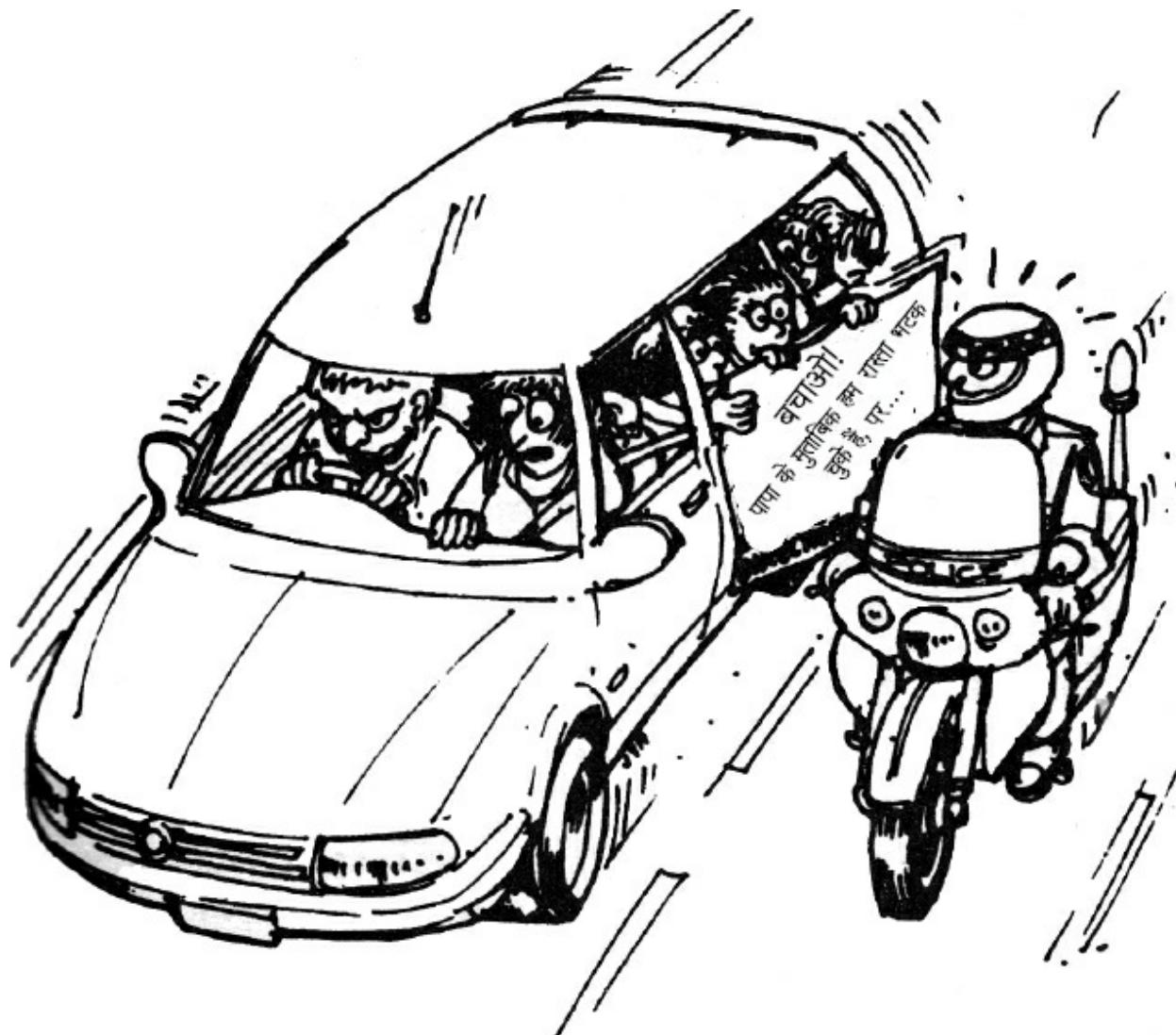
1. समान प्रजातियाँ, अलग-अलग दुनिया
2. सही मायने समझना
3. सब कुछ हमारे दिमाग़ में है
4. बात करना और सुनना
5. स्थानिक क्षमता: मानचित्र, लक्ष्य और समानांतर पार्किंग
6. विचार, रवैये, भावनाएँ और अन्य अनर्थकारी स्थितियाँ
7. हमारा केमिकल कॉकटेल
8. लड़के तो लड़के रहेंगे, लेकिन हमेशा नहीं
9. स्त्री-पुरुष और सेक्स
10. विवाह, प्रेम और रोमांस
11. एक अलग भविष्य की ओर

आभार

हम निम्नलिखित लोगों का धन्यवाद करना चाहेंगे, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से और अक्सर अनजाने में इस पुस्तक में अपना योगदान दिया है।

रेव रुथ पीज़, बिल व बीट जूटर, ऐलिसन व माइक टिली, ज़ाशी ईलियट, स्टेला ब्रॉकल्सबी, पॉला व नताशा थॉम्पसन, कोल और जिल हेस्ट, डॉ. डेसमंड मॉरिस, प्रो. डेटलेफ़ लिंक, कैरल टॉकिन्सन, प्रो. ऐलन गार्नर, ब्रोनिया शगिल, जॉन व सू मैकिन्टोश, केविन ऑस्टिन, डॉ. जॉन टिकल, डॉ. रोज़ी किंग, डॉ. बैरी किचन, डायना रिची, कैडबरी श्रेष्ठ, अमांडा गोर, एस्थर रैटज़ेन, मेलिसा, कैमरांन व जैसमिन पीज़, ऐडम सेलर्स, गैरी स्किनर, माइक व कैरल पीज़, एंडी क्लार्क, लेन व सू स्मिथ, डॉ. डेनिस वेटले, फ़ियोना व माइकल हेजर, क्रिस्टीन माये, रे मार्टिन, डॉ. रूडी ब्राश, प्रो. स्टीफ़न दायन, क्रिस्टीन क्रेयगी, डॉ. थीमि गरगानस, प्रो. डेनिस बर्नम, प्रो. बार्बरा गिल्हम, ब्रायन कॉकरिल, लियान विल्सन, ज्योफ़ आर्नल्ड, लीज़ा टियर्नी, रॉबिन मैककॉर्मिक, केरी-ऐन केनरली, ज्योफ़ बर्च, जोनाथन नॉर्मन, मेरी रिकॉट, जूली फ़ेन्टन, निक सेमन्स, रिचर्ड व लिंडा डेनी, एंजेला व शीला वॉटसन-शैलि, साइमस हॉवर्ड, टाम कैन्यन-स्लैनी, टोनी व पैट्रिका अर्ल, डार्ली एंडरसन, सू इरविन, लियेन क्रिस्टी, अनिता व डेव काइट, बैरी टोफर, बर्ट न्यूटन, ब्रेंडन वॉल्श, कैरी साइपोला, डेबी टॉज़, सीलिया बार्न्स, क्रिस्टीना पीटर्स, हन्नालोर फ़ीडरशपील, डेविड व यैन/गुडविन, यूनिस वोर्डन, फ्रैंक व कैविल बॉग्स, ग्राहम व ट्रैसी डफ़र्टी, ग्राहम शील्स, ग्रांट सेक्सटन, कैज़ लायन्स, बैरी मार्कोफ़, पीटर रोजेट्री, मैक्स हिचिन्स, डेबी मेरटेन्स, जैक व वैलेरी कॉलिस, जॉन ऐलन्सन, जॉन हेपवर्थ, पूर्व वॉट्स, माइकल व सू रैविट, माइकल व सू बर्नेट, माइकल व के गोल्डरिंग, माइक शॉट्लर, पीटर व जिल गाँस्पर, रेचल जोन्स, रास व साइमन टाउनसेन्ड, सूसन हॉरिलक, सू विलियम्स, टेरी व टैमी बटलर, डब्ल्यू मिचल, वॉल्टर डिकमैन, बी पुलर, ऐलन कॉलिन्सन, रसल जेफ़री, सांद्रा व लॉरेन वॉट्स, कैटरिना फ़िलन, ल्यूक कॉसबि, पीटर ड्रेपर, स्कॉट गिलमोर, जेनेट गिलमोर, लीज़ा पेट्रिच, जेफ़ वेदरबर्न, डॉन ऐकल्स-सिमकिन्स, डेविड ऑरचर्ड, डॉन गथरि, क्रिस स्टुअर्ट, हॉवर्ड गिब्स, सू मिकरिथ, जूल्स डि मेयो, नेथन हेन्स, माइकल केली, गैरी लार्सन, डोरी सिमन्ड्स और ट्रेवर डॉल्बी।

परिचय



रविवार को गाड़ी की सवारी

र विवार की धूप भरी दोपहर थी और बॉब व सू अपनी तीन किशोर बेटियों के साथ समुद्र तट की ओर मस्ती भरी डाइव पर निकल पड़े। बॉब गाड़ी चला रहे थे और स उनकी बगल में बैठी थी, बीच-बीच में वे अपनी बेटियों के बीच चल रही बातचीत में हिस्सा लेने के लिए पौछे की ओर मुड़ रही थीं। बॉब को लग रहा था कि वे सभी एक साथ बात कर रही थीं। लगातार आवाजें आ रही थीं, जिनका सिर-पैर समझना बॉब के लिए मुश्किल हो रहा था। आखिरकार उनके सब्र का बाँध टूट गया।

‘क्या आप सभी अपना मुँह बंद रखेंगी!’ बॉब चिल्लाए।

वहाँ हैरानी भरी खामोशी छा गई थी।

‘क्यों?’ सू ने पूछा।

‘क्योंकि मैं गाड़ी चलाने की कोशिश कर रहा हूँ।’ उन्होंने चिढ़कर कहा।

उनकी पत्नी और बेटियों ने एक-दूसरे की तरफ असमंजस भरी नज़रों से देखा। ‘गाड़ी चलाने की कोशिश?’ वे बुद्बुदाईं।

उन्हें अपनी बातचीत और बॉब के गाड़ी चलाने के बीच कोई संबंध नहीं दिखाई दिया। उधर बॉब यह बात नहीं समझ पाए कि वे सभी लगातार बोले जा रही थीं, वह भी अलग-अलग विषयों पर और लग रहा था कि कोई भी दूसरे की बात नहीं सुन रहा।

वे सब चुपचाप क्यों नहीं बैठ सकती और उन्हें गाड़ी चलाने पर ध्यान केंद्रित नहीं करने दे सकती? उनकी बातचीत के कारण पहले ही हाईवे का पिछला मोड़ उनसे छूट गया था।

यहाँ बुनियादी समस्या बहुत सीधी-सादी है: पुरुष व महिलाएँ एक-दूसरे से अलग हैं। बेहतर या बदतर नहीं, बस वे अलग हैं। वैज्ञानिक, मानवविज्ञानी और सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने वाले जीवविज्ञानी कई वर्षों से इस बात से परिचित हैं, लेकिन वे इस बात से भी अच्छी तरह वाकिफ़ हैं कि पॉलिटिकली करेक्ट यानी राजनीतिक रूप से सही बात करने वाली इस दुनिया में अपने इस ज्ञान को सार्वजनिक तौर पर व्यक्त करने पर उन्हें समाज से निष्कासित करने का जोखिम उठाना पड़ेगा। आज का समाज इस बात को लेकर बहुत दृढ़ निश्चयी है कि पुरुष व स्त्रियों में बिल्कुल एक समान कौशल, योग्यताएँ व क्षमताएँ होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे विज्ञान विडंबनापूर्वक यह साबित करने लगा है कि वे दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं।

तो फिर इसके बाद क्या बचा? समाज के रूप में हम बहुत कमज़ौर ज़मीन पर खड़े हैं। स्त्री-पुरुषों के बीच के अंतर को समझकर ही हम अपनी सामूहिक शक्तियों पर अपने समाज को खड़ा कर सकते हैं, न कि अपनी-अपनी कमज़ौरियों पर ध्यान केंद्रित कर। इस पुस्तक में हाल ही में मानव विकास विज्ञान में हुई महान प्रगति को दृष्टि में रखते हुए हम यह दिखा रहे हैं कि सीखें गए सबकों को कैसे स्त्री-पुरुष संबंधों में लागू किया जा सकता है। हम जिन निष्कर्षों तक पहुँचे हैं, वे विवादास्पद हैं। वे टकराव भरे हैं। कई बार वे बहुत अशांति भरे भी होते हैं। लेकिन वे सभी हमें स्त्री-पुरुषों के बीच होने वाली अजीबोगरीब चीज़ों की ठोस एवं पूरी समझ प्रदान करते हैं। काश, बॉब और सू ने घर से निकलने से पहले इसे पढ़ा होता...

इस पुस्तक को लिखना इतना कठिन क्यों था

इस किताब को लिखने में हमें तीन साल लगे और हमने इस दौरान 400,000 किलोमीटर की यात्रा की। इसके लिए अपने शोध के दौरान हमने शोधपत्रों का अध्ययन किया, विशेषज्ञों से बातचीत की और ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, सिंगापुर, थाईलैंड, हांगकांग, मलेशिया, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, आयरलैंड, इटली, यूनान, जर्मनी, हॉलैंड, स्पैन, तुर्की, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, बोत्स्वाना, ज़िम्बाब्वे, ज़ाम्बिया, नामीबिया, अंगोला, स्विटज़रलैंड, ऑस्ट्रिया, फ़िलिप्पीन्स, इंडोनेशिया, बुलारिया, सऊदी अरब, पोलैंड, हंगरी, बोर्नियो, रूस, बेल्जियम, फ़्रांस, जापान और कैनेडा में सेमिनार आयोजित किए।

सार्वजनिक एवं निजी संगठनों को तथ्यों पर अपनी राय देने के लिए राजी करना एक सबसे मुश्किल काम था। उदाहरण के लिए, कमशियल एयरलाइन पायलटों का एक प्रतिशत से भी कम हिस्सा महिलाओं का है। जब हमने एयरलाइन अधिकारियों से इस बात पर चर्चा करने की कोशिश की, तो कई अधिकारी अपनी राय देने के मामले में इस बात से भयभीत थे कहीं उन पर लैंगिकवादी या महिला विरोधी होने का आरोप न लग जाए। कई संगठनों ने ‘कोई टिप्पणी नहीं’ कहा, जबकि कुछ ने हमें धमकी दी कि इस किताब में उनके नाम का उल्लेख न किया जाए। महिला अधिकारी सामान्यता अधिक उदार थीं, हालाँकि उनमें से कई ने इस शोध को लेकर रक्षात्मक स्थिति अपना ली और यह जाने बिना कि आखिर हम किस बात की चर्चा कर रहे हैं, उन्होंने इस शोध

को नारीवाद पर हमले के रूप में देखा। हमारे द्वारा प्रस्तुत कुछ प्रामाणिक विचारों को हमने कॉपीरैट एक्ज़ीक्यूटिव्स और यूनिवर्सिटी प्रोफेसरों से धूँधली रोशनी वाले कमरों में बंद दरवाज़ों के पीछे ‘ऑफ रिकॉर्ड’ प्राप्त किया, उन लोगों ने हमसे यह गारंटी माँगी कि उन्हें उनके नाम के साथ उद्धृत नहीं किया जाएगा और उनके संगठनों के नाम का भी उल्लेख नहीं किया जाएगा। कई लोगों की दो राय थी, एक थी जो राजनीतिक रूप से सही थी और दूसरी उनकी असली राय थी, जिसे ‘उद्धृत नहीं’ किया जाना था।

आपको यह किताब कभी चुनौतीपूर्ण तो कभी हैरतअंगेज़ लगेगी, लेकिन दोनों ही स्थितियों में यह आपको दिलचस्प लगेगी। जहाँ एक ओर यह ठैस वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित है, वहाँ हमने पढ़ने में इसे दिलचस्प बनाने के लिए रोज़मर्रा की बातचीत, मान्यताओं और परिदृश्यों का भी उपयोग किया है, जो हास्यप्रद होने से लेकर बहुत मज़ेदार भी हैं, जिससे इन्हें पढ़ना दिलचस्प हो सकता है। हमने कोशिश की है कि सभी तथ्यों को सबसे सरल व्याख्याओं में व्यक्त किया जाए, लेकिन साथ में यह भी ध्यान रखा है कि चीज़ों का अतिसरलीकरण न हो जाए। इस तरीके से अधिकतर लोगों तक जानकारी आसानी से पहुँच पाती है, लेकिन विज्ञान की दुनिया के उन लोगों को इससे खीझ होती है, जो विज्ञान पत्रिका पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं। इस पुस्तक को लिखने के पीछे हमारा उद्देश्य आपको स्वयं को और विपरीत लिंग के व्यक्ति को अधिक समझने में मदद करना है, ताकि रिश्ते ज्यादा भरे-पूरे, आनंददायक और संतोषजनक हों।

एक ड्राइविंग संगठन ने रिवर्स पार्किंग की क्षमता में स्थी-पुरुषों के बीच अंतर को नापा और कई देशों में इसकी तुलना की। उनके नतीजे इतने चौंकाने वाले थे कि जब रिपोर्ट जारी हुई, तो उस संगठन में जैसे शिकायतों की बाढ़ सी आ गई कि वे लैंगिकवादी और नस्लवादी हैं। रिपोर्ट को तुरंत वापस ले लिया गया और बंद करके रख दिया, उसे फिर कभी नहीं देखा गया, क्योंकि स्पष्ट था कि वह कामकाज के लिए सही नहीं थी। हमने उस अध्ययन की एक प्रति प्राप्त की और उसके परिणामों पर हम चर्चा करेंगे, लेकिन कानूनी व नैतिक कारणों की वजह से हम स्रोत का नाम नहीं बता सकते।

यह किताब उन स्थी-पुरुषों को समर्पित है, जिन्होंने कभी सुबह दो बजे उठकर अपने जीवनसाथियों से बहस करते हुए यह कहते हुए अपने बाल नोचे होंगे, ‘लेकिन तुम समझते क्यों नहीं?’ रिश्ते नाकाम रहते हैं, क्योंकि पुरुष कभी यह नहीं समझ पाते कि महिलाएँ क्यों पुरुषों की तरह नहीं होती और महिलाएँ अपने पुरुषों से यह उम्मीद करती हैं कि वे बिल्कुल उनकी तरह बर्ताव करें। यह पुस्तक न केवल विपरीत लिंग पर आपकी पकड़ मज़बूत करने में मदद करेगी, बल्कि स्वयं को समझने में भी आपकी मदद करेगी। यह भी बताएगी कि आखिरकार आप दोनों कैसे ज्यादा खुशियों भरी, अधिक स्वास्थ्यप्रद और अधिक सामंजस्यपूर्ण जीवन जी पाएँगे।

बारबरा और ऐलन पीज़

1

समान प्रजातियाँ, अलग-अलग दुनिया



एक शानदार प्राणी का क्रमिक विकास

पुरुष एवं महिलाएँ एक-दूसरे से अलग हैं। बेहतर या बदतर नहीं, बल्कि अलग हैं। सिफ्ट एक बात दोनों के बीच अलग है और वह है कि दोनों एक ही प्रजाति के हैं। वे एक-दूसरे से अलग दुनिया में जीते हैं, उनकी मान्यताएँ बहुत कम लोग, खासकर पुरुष, इस बात को स्वीकार करने को तैयार होते हैं। लेकिन सच्चाई सबके सामने है। साध्यों को देखें। पश्चिमी देशों में लगभग 50 फीसदी शादियों का अंत तलाक में होता है और अधिकतर गंभीर रिश्ते लंबे समय तक नहीं टिक पाते। हर संस्कृति, मत और नस्ल के स्त्री-पुरुष अपने साथी की राय, बर्ताव, रवैये और मान्यताओं को लेकर लगातार बहस करते रहते हैं।

कुछ बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं

जब कोई पुरुष शौचालय जाता है, तो अक्सर उसका एक ही कारण होता है। महिलाएँ शौचालय का इस्तेमाल एक सामाजिक और उपचार कक्ष के रूप में करती हैं। शौचालय में अजनबी के रूप में घुसने वाली महिलाएँ एक-दूसरे की सबसे अच्छी दोस्त और आजीवन मित्र बनकर बाहर निकलती हैं। अगर कोई पुरुष किसी दूसरे को कहे, 'फ्रैंक, मैं टॉयलेट जा रहा हूँ। तुम मेरे साथ चलोगे?' तो आसपास के लोग उन्हें शक्ति निगाहों से देखने लगेंगे।

टीवी रिमोट कंट्रोल पर पुरुषों का कब्जा रहता है और वे चैनल बदलते रहते हैं, जबकि महिलाओं को विज्ञापन देखने में कोई अपत्ति नहीं होती। दबाव में आने पर पुरुष शराब पीते हैं, अन्य देशों पर हमला करते हैं; जबकि महिलाएँ चॉकलेट पर टूट पड़ती हैं और खरीदारी करती हैं।

महिलाएँ पुरुषों की आलोचना करती हैं कि वे कठोर, बेपरवाह होते हैं, बात नहीं सुनते, स्नेहिल नहीं होते, बातचीत नहीं करते, पर्याप्त प्रेम नहीं करते, रिश्तों को लेकर प्रतिबद्ध नहीं होते, प्रेम क्रीड़ा करने के बजाय यौन संबंध बनाने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं, वातानुकूलन का तापमान कम करते हैं और टॉयलेट सीट को उठा हुआ छोड़ देते हैं।

पुरुष महिलाओं के गाड़ी चलाने, उनके द्वारा सड़कों की दिशाएँ न पढ़ पाने, मानचित्रों को उलटा पकड़ने, दिशाबोध न होने, मुद्दे पर पहुँचने के बजाय ज़रूरत से ज्यादा बातें करने, ज्यादातर यौन संपर्क की शुरुआत न करने, वातानुकूलन का तापमान बढ़ाने और टॉयलेट सीट नीचे करने की आलोचना करते हैं। पुरुष कभी अपनी जुराबें नहीं खोज पाते, जबकि उनकी सीड़ी बिल्कुल सही वर्णनुक्रम से रखी जाती हैं। महिलाएँ हमेशा कार की चाबी खोज लेती हैं, लेकिन अपने गंतव्य स्थान का सीधा रास्ता शायद ही कभी ढूँढ पाती हों। पुरुषों को लगता है कि वे सबसे विवेकपूर्ण हैं। महिलाएँ जानती हैं कि वे वास्तव में ऐसी हैं।

टॉयलेट पेपर के एक रोल को बदलने में कितने पुरुषों की ज़रूरत पड़ती है? कोई नहीं जानता। ऐसा कभी हुआ ही नहीं।

पुरुषों को हैरानी होती है कि कैसे लोगों से भरे हुए किसी कमरे में घुसते हुए कोई महिला हर किसी पर तुरंत टिप्पणी दे सकती है; महिलाएँ यकीन नहीं कर पाती कि पुरुष कैसे किसी चीज़ पर ध्यान नहीं दे पाते। पुरुष इस बात से आश्वर्य में पड़ जाते हैं कि महिलाएँ कैसे कार के डैशबोर्ड पर चमकती हुई लाल लाइट को नहीं देख पाती, लेकिन 50 मीटर दूरी पर मौजूद किसी अँधेरे कोने में पड़ी गंदी जुराब को देख सकती हैं। महिलाएँ यह देखकर हँकी-बँकी रह जाती हैं कि पुरुष कैसे कार के पीछे के शीशे का इस्तेमाल करते हुए किसी तंग जगह में कार को पार्क कर सकते हैं, लेकिन कभी जी-स्पॉट का पता नहीं लगा सकते।

अगर कोई महिला गाड़ी चलाते हुए खो जाए, तो वह रुककर किसी से दिशा के बारे में पूछेगी। पुरुष के लिए यह कमज़ोरी की निशानी है। वह घंटों गोल-गोल घूमता रहेगा और साथ में बुद्बुदाता रहेगा, 'मुझे वहाँ पहुँचने का नया रास्ता मिल गया है' या 'मैं सार्वजनिक जगह में हूँ' और 'मुझे वह पेट्रोल स्टेशन याद है!'

कार्य संबंधी विशेषता

स्त्री-पुरुषों का विकास अलग तरह से हुआ है। पुरुष शिकार करते थे, महिलाएँ उसे इकट्ठा करती थीं। पुरुष सुरक्षा

करते थे, महिलाएँ पालन-पोषण करती थीं। परिणामस्वरूप, उनके शरीर और दिमाग़ का विकास एक-दूसरे से विल्कल अलग तरीके से हुआ।

विशिष्ट कार्यों के अनुकूल जैसे-जैसे उनमें शारीरिक परिवर्तन आए, वैसे ही उनके मस्तिष्क में भी बदलाव आए। पुरुष अधिक लंबे हुए और अधिकतर महिलाओं से ज्यादा मज़बूत हुए, वहीं उनके कार्यों को करने के लिए उनके मस्तिष्क का भी विकास हुआ। पुरुषों के बाहर जाकर काम करने में महिलाएँ संतुष्ट थीं और वे गुफाओं की आग जलाए रखने का काम करती थीं, इस प्रकार उनके मस्तिष्क जीवन के अपने कार्यों को करने के हिसाब से विकसित हुए।

इस प्रकार लाखों-करोड़ों वर्षों के दौरान स्त्री-पुरुषों के मस्तिष्क की संरचना में अलग-अलग तरीके से लगातार बदलाव आते रहे। अब हम जानते हैं कि दोनों जानकारी को अलग ढंग से संसाधित करते हैं। उनके सोचने का तरीका एक-दूसरे से अलग है। उनकी मान्यताएँ अलग हैं। उनकी ग्रहणबोध प्राथमिकताएँ और व्यवहार अलग हैं।

इस बात को न समझने या इसे नज़रअंदाज़ करने से यह आपके लिए ज़िंदगी भर की कसक, असमंजस और मोहभंग का कारण बन सकता है।

‘स्टीरियोटाइप’ तर्क

1980 के दशक के अंतिम वर्षों से स्त्री-पुरुषों के बीच के अंतर और दोनों के मस्तिष्कों की कार्य प्रणाली पर शोध में बहुत तेज़ी से बढ़ोतरी हुई। पहली बार कम्प्यूटर द्वारा ब्रेनस्कैनिंग के विकसित उपकरणों के माध्यम से हमारे लिए यह संभव हुआ कि हम मानव मस्तिष्क को ‘सीधे’ काम करता देखें, इस प्रकार दिमाग़ की पूरी तसवीर में झाँकने से हमें स्त्री-पुरुषों के बीच के अंतर से जुड़े कई सवालों के उत्तर मिले। इस किताब में जिस शोध पर चर्चा की गई है, उसे वैज्ञानिक, चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक अध्ययनों से लिया गया है और यह एक चीज़ की ओर ही इशारा करता है: सभी चीज़ें बराबर नहीं हैं; पुरुष एवं महिलाएँ एक-दूसरे से अलग हैं। 20वीं सदी के अधिकतर वर्षों तक उन अंतरों की व्याख्या सामाजिक अनुकूलन के रूप में की गई, यानी हम जो भी हैं, वह अपने माता-पिता व अध्यापकों के रवैये के कारण हैं, जो दरअसल उनके समाज के रवैये का प्रतिविम्ब होता है। नन्ही लड़कियों को गुलाबी रंग के कपड़े पहनाए जाते थे और उन्हें खेलने के लिए गुड़िया दी जाती थी; लड़कों को नीले रंग के कपड़े पहनाए जाते थे और उन्हें खेलने के लिए खिलौने सैनिक व फूटबॉल जर्सी दी जाती थी। लड़कियों को गले से लगाकर, छूकर दुलारा जाता था, जबकि लड़कों को पीठ पर थपकी दी जाती थी और उन्हें कहा जाता था कि वे रोएँ नहीं। हाल तक यह माना जाता था कि पैदा होने के समय शिशु का मस्तिष्क एक साफ़ स्लेट की तरह होता था, जिस पर शिक्षक उसकी पसंद व प्राथमिकताओं को लिख सकते थे। अब उपलब्ध जैविक साक्ष्य थोड़ी अलग तसवीर दिखाते हैं कि आखिर हमारे सोचने का तरीका वैसा क्यों होता है। यह निश्चित रूप से दिखाता है कि हमारे हार्मोन्स व मस्तिष्क की बनावट हमारे रवैयों, प्राथमिकताओं व बर्ताव के बड़े पैमाने पर जिम्मेदार होते हैं। इसका मतलब है कि मार्गदर्शन करने के लिए किसी संगठित समाज या माता-पिता की अनुपस्थिति में किसी निर्जन टापू पर पलने-बड़ने वाले लड़के-लड़कियों में भी लड़कियाँ गले लगाकर व छूकर प्यार जताएँगी, दोस्ती करेंगी और गुड़िया के साथ खेलेंगी, जबकि लड़के मानसिक व शारीरिक तौर पर एक-दूसरे के साथ प्रतियोगिता करेंगे और स्पष्ट पदानुक्रम वाले समूह बनाएँगे।

गर्भ में हमारे मस्तिष्क की वायरिंग और हार्मोन्स का प्रभाव हमारी सोच व बर्ताव को निर्धारित करता है।

जैसा कि आप देखेंगे, हमारे मस्तिष्क की बनावट और हमारे शरीर में काम कर रहे हार्मोन वे दो कारक हैं, जो हमारे पैदा होने से काफ़ी पहले से बड़े पैमाने पर यह तय करते हैं कि हमारी सोच कैसी होगी और हम कैसा व्यवहार करेंगे। हमारा सहज बोध और कुछ नहीं, हमारी जीन्स द्वारा यह निर्धारित करना है कि निश्चित परिस्थितियों में हमारा शरीर कैसा बर्ताव करेगा।

क्या यह सब पुरुषों का षड्यंत्र है?

1960 के दशक से कई दबाव समूह हमें इस बात के लिए मनाने की कोशिश करते रहे हैं कि हम अपनी जैविक विरासत का प्रतिरोध करें। उनका दावा है कि सरकारें, धर्म और शैक्षणिक संस्थान केवल पुरुषों द्वारा महिलाओं का दमन किए जाने के षड्यंत्र का हिस्सा रहे हैं, अच्छी महिलाओं को दबाने में उनकी सांठगाँठ रही है। महिलाओं को गर्भवती बनाए रखना उन्हें अधिक नियंत्रित करने का एक तरीका था।

निश्चित तौर पर ऐतिहासिक रूप से ऐसा लगता भी है। लेकिन यह प्रश्न पूछे जाने की ज़रूरत है: यदि महिलाएँ व पुरुष एक समान हैं, जैसा कि इन समूहों का दावा है, तो पुरुषों ने आखिर संसार पर इतना प्रभुत्व कैसे हासिल किया? अब मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर हुए अध्ययन से हमें कई जवाब मिलते हैं। हम एक समान नहीं हैं। पुरुष व महिलाएँ अपनी संपूर्ण क्षमता का उपयोग करने के लिए अवसरों के मामले में बराबर होने चाहिए, लेकिन अपनी जन्मजात क्षमताओं के मामले में वे निश्चित तौर पर समान नहीं हैं। महिलाएँ व पुरुष बराबर हैं, यह एक राजनीतिक या नैतिक प्रश्न है, लेकिन उनका एक समान होना एक वैज्ञानिक प्रश्न है।

स्त्री-पुरुषों की समानता एक राजनीतिक या नैतिक मुद्दा है अनिवार्य अंतर वैज्ञानिक है।

जो लोग इस विचार का विरोध करते हैं कि हमारा जीवविज्ञान हमारे बर्ताव को प्रभावित करता है, उनकी मंशा गलत नहीं होती, वे तो लैंगिकवाद का विरोध कर रहे होते हैं। लेकिन वे लोग बराबरी और एक समान होने के बीच के अंतर को नहीं समझ पाते, जो कि दो बिल्कुल अलग मुद्दे हैं। इस पुस्तक में आप देखेंगे कि कैसे विज्ञान इस बात की पुष्टि करता है कि स्त्री-पुरुष शारीरिक व मानसिक रूप से एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। वे एक जैसे नहीं हैं।

हमने अग्रणी जीवाश्म वैज्ञानिकों, मानवजाति विज्ञानियों, मनोवैज्ञानिकों, जीवविज्ञानिकों और तंत्रिका विज्ञानियों के शोध की छानबीन की। महिलाओं व पुरुषों के मस्तिष्कों के बीच के अंतर अब स्पष्ट हैं, जो अटकलबाज़ीयों, पूत्रग्रहों या विवेकपूर्ण संदेह से परे हैं।

इस पुस्तक में दिए गए महिलाओं व पुरुषों के बीच अंतर पर विचार करते हुए कुछ लोग कह सकते हैं, ‘नहीं, वह तो मेरे जैसा नहीं है, मैं वैसा नहीं करता या करती।’ संभव है कि वे लोग ऐसा न करते हों। लेकिन हम यहाँ पर एक सामान्य स्त्री व पुरुष की बात कर रहे हैं, यानी अधिक पुरुष व महिलाएँ अधिकांश समय, अधिकतर मौक़ों पर ऐसा करते हैं और अतीत में भी अधिकतर वैसा ही बर्ताव करते रहे हैं। औसत या सामान्य का अर्थ है कि जब आप लोगों से भरे किसी कमरे में हों, तो आप पाएँगे कि महिलाओं की तुलना में पुरुष ज्यादा विशाल व लंबे हैं, जो कि औसतन 7 प्रतिशत अधिक लंबे और 8 प्रतिशत अधिक विशाल होते हैं। हो सकता है कि उस कमरे में कोई महिला सबसे ज्यादा लंबी या बड़ी हो, लेकिन सभी लोगों को देखने पर आप पाएँगे कि महिलाओं के मुकाबले पुरुष अधिक विशालकाय और लंबे हैं। गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स 2001 में अधिकतर ऐसा हुआ है कि सबसे विशाल और सबसे लंबे लोग पुरुषों में से होते हैं। दर्ज किए गए सबसे लंबे मनुष्यों में ऐल्टन, इलिनांय के रॉबर्ट वादलो थे, जन 1940 में जिनकी ऊँचाई 2.72 (8 फीट 11.1 इंच) नापी गई थी। वर्ष 2000 में ट्यूनीसिया के राधुआने चार्बिब दुनिया के सबसे लंबे व्यक्ति थे, जिनकी लंबाई 2.35 मीटर (7 फीट 8.9 इंच) थी। इतिहास की किताबें बिंग जॉन्स और लिट्ल सूजीस से भरी पड़ी हैं। यह लैंगिकवाद नहीं है। यह सद्वार्दी है।

हमारा (लेखकों) का पक्ष

इस पुस्तक को पढ़ते हुए कुछ लोग आत्मतुष्टि से भर सकते हैं, कुछ अहंकार महसूस कर सकते हैं, जबकि कुछ गुस्से में आ सकते हैं। कुछ हृद तक इसका कारण यह है कि वे सभी लोग आदर्शवादी दर्शन के शिकार हैं, जो दावा करते हैं कि पुरुष व महिलाएँ एक समान हैं, इसलिए सबसे पहले हमें अपनी स्थिति स्पष्ट करनी होगी। हम यानी लेखक इस पुस्तक को इसलिए लिख रहे हैं ताकि आप दोनों लिंगों से अपने रिश्ते विकसित कर सकें व उन्हें बेहतर बना सकें। हमारा मानना है कि स्त्री-पुरुषों को किसी भी क्षेत्र में अपनी पसंद के करियर चुनने के बराबर अवसर मिलने

चाहिए और एक समान योग्यता वाले लोगों को अपने प्रयासों के लिए बराबर वेतन मिलना चाहिए।

अंतर होने का मतलब गैर बराबरी होना नहीं है। समानता का मतलब है कि हम अपनी मर्जी का काम करने के लिए आज्ञाद हैं और अंतर का मतलब है कि पुरुष या महिला होने के नाते संभव है कि हम एक जैसे काम न करना चाहें। हम अक्सर उसी सूची से अलग-अलग चीज़ें चुनते हैं।

हमारा उद्देश्य स्त्री-पुरुष सम्बंधों को निष्पक्ष रूप से देखना है, इतिहास के बारे में बताना है, उससे जुड़े अर्थों व आशयों को स्पष्ट करना है और ऐसी तकनीकें व रणनीतियाँ विकसित करना है, जिनसे ज़िंदगी जीने का तरीका ज्यादा खुशहाल व संतोषजनक हो। हम अटकलों या अनुमानों, राजनीतिक रूप से सही घिसी-पिटी पुरानी बातों या वैज्ञानिक बकवास का इस्तेमाल कर इधर-उधर की बातें नहीं करेंगे। अगर कोई चीज़ बतख जैसी दिखाई, उसकी तरह आवाज़ करे, उसकी तरह चले और इस बात के काफ़ी सबूत मौजूद हों कि वह बतख है, तो हम उसे वही कहेंगे।

यहाँ प्रस्तुत साक्ष्य दिखाते हैं कि दोनों लिंगों की प्रवृत्ति बुनियादी रूप से एक-दूसरे से अलग तरीके से बर्ताव करने की होती है। हम यह कर्तव्य नहीं बता रहे हैं कि दोनों में से कोई लिंग किसी निश्चित तरीके से बर्ताव करने के लिए बाध्य है या फिर उसे वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

प्रकृति बनाम पालन-पोषण का तर्क

मेलिसा ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया, जिनमें से एक लड़की व एक लड़का था। लड़की का नाम जैस्मिन था और उसे गुलाबी कम्बल में लपेटा गया था, जबकि लड़के को ऐडम नाम दिया गया और उसे नीले कम्बल में रखा गया। जैस्मिन के लिए रिश्तेदार सॉफ्ट टॉयज़ लेकर आए और ऐडम के लिए एक छोटी-सी फुटबॉल जर्सी। हर कोई जैस्मिन से बहुत धीमी कोमल आवाज़ में बात करते हुए उसे कहता कि वह बहुत प्यारी व सुंदर है, लेकिन अक्सर महिला रिश्तेदार ही उसे उठाकर अपने गले लगाती। जब कभी पुरुष रिश्तेदार घर आते तो वे अपना पूरा ध्यान ऐडम पर लगाते और काफ़ी ऊँची आवाज़ में उससे बात करते हुए उसके पेट को छेड़ते, उसे ऊपर-नीचे करते और इस बात की संभावना व्यक्त करते कि वह तो फुटबॉल खिलाड़ी बनेगा।

इस तरह का दृश्य सभी के लिए बहुत जाना-पहचाना है। इससे हालाँकि एक प्रश्न उभरता है: वयस्क के रूप में हमारा ऐसा बर्ताव क्या जीवविज्ञान के कारण है या फिर यह सीखा हुआ व्यवहार है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहता है? यह कुदरत है या फिर पालन-पोषण?

20वीं शताब्दी के अधिकतर समय मनोवैज्ञानिक व समाजविज्ञानी यह मानते थे कि हमारा व्यवहार और प्राथमिकताएँ हमारे सामाजिक अनुकूलन व वातावरण से सीखी गई थीं। हम यह जानते हैं कि पालन-पोषण एक सीखी गई प्रक्रिया है - दत्तक माताएँ, वे चाहे मनुष्य हों या फिर वानर, वे अक्सर अपने शिशुओं का पालन-पोषण बहुत अच्छे ढंग से करती हैं। दूसरी ओर, वैज्ञानिकों का तर्क है कि जीवविज्ञान, रसायनविज्ञान और हार्मोन्स इसके लिए बड़े पैमाने पर जिम्मेदार हैं। 1990 से इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समर्थन में ज़बर्दस्त सबूत मिलते रहे हैं कि जन्म के समय ही हमारा दिमाग़ एक खास तरह से काम करने के लिए तैयार होता है। यह तथ्य कि पुरुष आमतौर पर शिकारी होते थे और महिलाओं का काम पालन-पोषण करना होता था, आज भी हमारे बर्ताव, मान्यताओं व प्राथमिकताओं को निर्धारित करता है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में हुए एक बड़े शोध में दिखाया गया कि हम न केवल लड़के व लड़कियों से अलग तरह का बर्ताव करते हैं, बल्कि हमारे द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द भी अलग होते हैं। हम लड़कियों से बहुत कोमलता से कहते हैं, 'तुम बहुत कोमल हो', 'तुम बहुत प्यारी हो', 'तुम बहुत सुंदर हो' और लड़कों को ऊपर उठाकर हम ऊँची आवाज़ में कहते हैं, 'अरे बिंग बाँय! और वाह, तुम तो बहुत तगड़ हो!'

लड़कियों को बार्बी डॉल और लड़कों को ऐक्शन मैन देकर उनके बर्ताव को नहीं बनाया जा सकता; इससे उसे बढ़ावा मिलता है। ठीक इसी प्रकार, हार्वर्ड के अध्ययन में पाया गया कि लड़की व लड़के शिशुओं के प्रति वयस्कों का विशिष्ट व्यवहार पहले से मौजूद अंतर को अधिक सुस्पष्ट करता है। जब आप किसी बतख का पानी में रखते हैं, तो वह तैरने लगती है। सतह के नीचे देखने पर आपको बतख के जालीदार पैर दिखेंगे। उसके मस्तिष्क का विश्लेषण करने पर आप पाएँगे कि वह पहले से मौजूद एक 'तैराकी मापदंड या स्विमिंग मॉड्यूल' के साथ विकसित हुआ है। तालाब तो बस वहाँ पहले से मौजूद था, जहाँ पर बतख थी, और वह बतख के बर्ताव का कारण नहीं था।

शोध दिखाता है कि अपनी सामाजिक रूढ़िवादिता का शिकार होने के बजाय हम अपने जीवविज्ञान के परिणाम हैं। हम अलग हैं, क्योंकि हमारे मस्तिष्कों की संरचना अलग है। इसके कारण हम दुनिया को अलग तरह

से देखते हैं और हमारे मूल्य व प्राथमिकताएँ अलग होती हैं। न बेहतर, न बदतर - बस हम अलग हैं।

आपकी मानव गाइडबुक

यह पुस्तक किसी विदेशी संस्कृति या देश में जाने पर मार्गदर्शिका की तरह है। इसमें स्थानीय बोलियाँ, कहावतें, शरीर की भाषा के संकेत और इस बात की जानकारी है कि वहाँ के निवासी वैसे क्यों हैं, जैसे वे हैं।

अधिकतर पर्यटक कोई स्थानीय शोध किए बिना दूसरे देशों में पहुँच जाते हैं और फिर यह देखकर कि वहाँ के लोग अंग्रेजी नहीं बोलते या बर्गर्स व चिप्स नहीं बनाते, त्रस्त हो जाते हैं या फिर उनकी आलोचना करने लगते हैं। किसी दूसरी संस्कृति का आनंद लेने और उसका लाभ उठाने के लिए आपको सबसे पहले उसके इतिहास व विकास को समझना होगा। फिर आपको बुनियादी मुहावरों को समझने की ज़रूरत होगी और प्रत्यक्ष अनुभव के लिए उनकी जीवनशैली को समझना होगा और उसकी संस्कृति को गहराई से जानना होगा। इस तरह से आप किसी जगह पर पर्यटक जैसे नहीं लगेंगे, यानी उस व्यक्ति के जैसे नहीं लगेंगे, जो घर पर रहकर व बाक़ी जगहों के बारे में सोचकर ही उतना लाभ पा सकता था।

यह पुस्तक आपको दिखाएगी कि कैसे आप विपरीत लिंग के बारे में जानकारी लेकर आनंद प्राप्त कर सकते हैं व लाभ उठा सकते हैं। लेकिन सबसे पहले आपको उनके इतिहास व विकास को समझना होगा।

**विंडसर कासल में जाने पर एक अमेरिकी पर्यटक को यह कहते
सुना गया, ‘यह किला बहुत बढ़िया है, लेकिन उन्होंने इसे
एयरपोर्ट के इतने क़रीब क्यों बनाया?’**

यह पुस्तक तथ्यों और वास्तविकता पर आधारित है। यह वास्तविक लोगों, प्रामाणिक शोध, असली घटनाओं और दर्ज की गई बातचीत से जुड़ी है। आपको मस्तिष्क के शोध में डेंड्राइट्स, कॉर्पस क्लोसम, न्यरोपेट्राइड्स, मैग्नेटिक रेज़ोनेंस इमेजिंग (एमआरआई) और सेरोटोनिन के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। हमने ऐसा किया, लेकिन अब हम हर चीज़ को जहाँ तक संभव हो सरल बनाकर प्रस्तुत करेंगे, ताकि उसे पढ़ने में आसानी हो। हमारा सामना बड़े पैमाने पर तुलनात्मक रूप से हाल के विज्ञान सामाजिक जीव विज्ञान से होता है, यह विज्ञान हमारी जीन्स व हमारे विकास के अध्ययन के माध्यम से हमारे बर्ताव का वर्णन करता है।

आप सशक्त अवधारणाओं के समूह, तकनीकों व रणनीतियों को पाएँगे, जिनकी वैज्ञानिक तरीके से पृष्ठि हुई हैं और बड़े पैमाने पर जो सुस्पष्ट या व्यावहारिक लगते हैं। हमने ऐसी सभी तकनीकों, तौर-तरीकों या मतों को एक ओर कर दिया है, जो तार्किक नहीं हैं या फिर विज्ञान द्वारा साबित नहीं हुए हैं।

हमारा सामना यहाँ आधुनिक कपि (वानर) से है, ऐसा वानर जो मेंगा कम्प्यूटर्स से दुनिया को नियंत्रित करता है, मंगल ग्रह पर जा सकता है और उसके मूल को अब भी एक मछली में देखा जा सकता है। एक प्रजाति के रूप में विकसित होने में हमें लाखों-करोड़ों साल लगे हैं, फिर भी आज हमें एक तकनीकी व राजनीतिक रूप से सही दुनिया में धकेल दिया गया है, जिसमें हमारे जीवविज्ञान के लिए बहुत कम या न के बराबर स्वीकृति है।

लगभग दस करोड़ वर्षों में हम ऐसे समाज के रूप में विकसित हुए, जो इतना परिष्कृत था कि मानव को चाँद पर भेज सके, लेकिन इतनी तरफ़ी के बावजूद उस मानव को अपने आदिम पूर्वजों की तरह शौच के लिए जाना पड़ता था। विभिन्न संस्कृतियों में मानव भले थोड़ा अलग दिखे, लेकिन दरअसल हमारी जैविक आवश्यकताएँ और आवेग एक जैसे हैं। हम बताएँगे कि कैसे हमारी स्वभावजन्य विशेषताएँ हमें विरासत में मिलती हैं या फिर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती हैं, जैसा कि आप पाएँगे कि इस मामले में व्यावहारिक रूप से सांस्कृतिक तौर पर कोई अंतर नहीं है।

आइए, अब संक्षेप में देखें कि हमारा मस्तिष्क कैसे विकसित हुआ।

हम इस प्रकार कैसे विकसित हुए

लंबे समय पहले कभी स्त्री-पुरुष प्रसन्नतापूर्वक रहते थे और पूरी तरह सामंजस्य में काम करते थे। पुरुष हर रोज़ अपनी जान को जोग्यिम में डालकर शिकार करने व अपने परिवार के लिए भोजन लाने के लिए बाहर प्रतिकूल और खतरनाक दुनिया में निकलता था। वह जंगली जानवरों व दुश्मनों से भी उनकी रक्षा करता था। उसने लबी दूरी तक के दिशाज्ञान कौशल विकसित किए, ताकि वह भोजन का पता लगा सके और उसे घर ला सके। इसके अलावा उसने शानदार निशानेबाज़ी के हुनर भी विकसित किए, ताकि वह चलते-फिरते लक्ष्य पर निशाना साध सके। उसका काम बिल्कुल सीधा-सादा था: वह खाने का पीछा करने वाला था और हर कोई उससे इसी काम को करने की अपेक्षा करता था।

महिला स्वयं को सम्मानित महसूस करती थी, क्योंकि उसका पुरुष अपने परिवार की देखभाल व सुरक्षा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देता था। पुरुष के रूप में उसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि वह कितना अच्छा शिकार करता था और उसे घर ला सकता था। उसका आत्मगौरव इस बात से आँका जा सकता था कि महिला उसके संबंध व प्रयास की कितनी सराहना करती थी। शिकार का पीछा करने व परिवार की रक्षा करने के उसके काम पर परिवार निर्भर करता था, इसके अलावा कोई और बात नहीं थी। ‘संबंध का विश्लेषण’ करने की कभी कोई ज़रूरत नहीं पड़ती थी और पुरुष से कचरा फेंकने या बच्चों के पोतड़े बदलने की अपेक्षा नहीं की जाती थी।

महिला की भूमिका भी उतनी ही स्पष्ट थी। बच्चे को जन्म देने की उसकी भूमिका ने निर्धारित किया कि उसका विकास कैसे होगा और उसके कौशल इतने विशिष्ट कैसे होंगे कि वह अपनी उस भूमिका को ठीक से निभा सके। उसमें अपने परिवेश के आसपास ख़तरे के लक्षण पहचानने के लिए निगरानी करने की क्षमता होनी चाहिए थी, छोटी दूरी के दिशा ज्ञान के बढ़िया हुनर होने चाहिए थे, जगहों के निशानों का इस्तेमाल कर अपना रास्ता खोजना आना चाहिए था और उसमें यह भी ख़ासियत थी कि वह बच्चों व वयस्कों के बर्ताव तथा रूप-रंग में आने वाले छोटे से छोटे बदलाव को समझ सके। स्थितियाँ सामान्य व सरल थीं: वह खाने का पीछा करता था, वह घरोंदे की हिफ़ाज़त करती थी।

महिला का दिन बच्चों की देखभाल करने, फल-सब्जियाँ, मेवे इकट्ठा करने और समूह की अन्य महिलाओं से बातचीत करने में बीतता था। उसे बड़े पैमाने पर भोजन की आपूर्ति या दुश्मनों से लड़ने की चिंता नहीं करनी पड़ती थी और उसकी सफलता इस बात से आँकी जाती थी कि वह पारिवारिक जीवन को कैसे संभालती थी। उसका आत्मगौरव इस बात से तय होता था कि पुरुष उसके द्वारा घर की देखभाल करने व उसके पालन-पोषण के कौशल की कितनी सराहना करता है। स्त्री की बच्चे पैदा करने की क्षमता को चमत्कारी यहाँ तक कि पवित्र माना जाता था, क्योंकि केवल वही जीवन देने के रहस्य को जानती थी। उससे यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि वह शत्रुओं से लड़ेगी या फिर बिजली के बल्ब बदलेगी।

अपना अस्तित्व बनाए रखना कठिन था, लेकिन संबंध सरल थे। हज़ारों-लाखों साल पहले यही जीवन का तरीका था। दिन के समाप्त होने पर शिकारी अपने शिकार के साथ वापस लौटते थे। शिकार को बराबर हिस्सों में बाँटा जाता था और हर कोई सामुदायिक गुफा में उसे मिल-बाँटकर खाता था। हर शिकारी अपने शिकार के कुछ हिस्से के बदले स्त्री से उसके फल-सब्जियों का विनियय करता था।

भोजन करने के बाद पुरुष आग के चारों ओर बैठ जाते थे, उसे देखते थे, कोई खेल खेलते थे, कहानियाँ सुनाते थे या फिर चुटकुलों पर ठहाके लगाते थे। यह प्रागैतिहासिक मानव का टीवी चैनल बदलने का या फिर अपने अखबार में खोए रहने जैसा था। शिकार में लगे अपने प्रयासों से वे थक जाते थे और अगले दिन के शिकार के लिए इस प्रकार फिर से तरोताज़ा होते थे। स्त्रियाँ बच्चों का ध्यान रखती थीं और यह सुनिश्चित करती थीं कि पुरुषों को पर्यास भोजन व आराम मिलता रहे। दोनों ही एक-दूसरे के प्रयासों का मोल समझते थे। पुरुषों को आलसी व महिलाओं को उनके द्वारा सताई गई नौकरानी नहीं माना जाता था।

ये साधारण सी रीतियाँ और व्यवहार बोर्नियो, अफ्रीका व इंडोनेशिया के कुछ हिस्सों की प्राचीन सभ्यताओं, ऑस्ट्रेलिया की आदिम जनजातियों, न्यूज़ीलैंड के माओरी लोगों और कैनेडा व ग्रीनलैंड के इनुइट लोगों में आज भी मौजूद हैं। इन संस्कृतियों में हर व्यक्ति अपनी भूमिका जानता है और उसे समझता है। पुरुष महिलाओं की कदर करते हैं और महिलाएँ भी उनका सम्मान करती हैं। दोनों ही एक-दूसरे को परिवार के अस्तित्व और कल्याण में अनोखे ढंग से योगदान देने वाले के रूप में देखते हैं। लेकिन आधुनिक सभ्य देशों में रहने वाले स्त्री-पुरुषों ने इन पुराने नियमों को अपने जीवन से निकाल दिया है और अव्यवस्था, असमंजस व अप्रसन्नता ने उनकी जगह ले ली है।

हमें इस तरह की अपेक्षा नहीं थी

पारिवारिक इकाई अब अपने अस्तित्व के लिए केवल पुरुषों पर निर्भर नहीं करती और न ही महिलाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे घर पर रहकर परिवार का ध्यान रखते हुए केवल घरेलू बनकर रहेंगी। हमारी प्रजातियों के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि अधिकतर स्त्री-पुरुष अपने काम को लेकर असमंजस में हैं। इस पुस्तक के पाठक आप मनुष्यों की उस पहली पीढ़ी से जुड़े हैं, जिसे ऐसे हालात का सामना करना पड़ रहा है, जो आपके पूर्वजों के सामने कभी पैदा ही नहीं हुए। ऐसा पहली बार हो रहा है कि हम अपने साथियों से प्रेम, दीवानगी व निजी संतुष्टि की अपेक्षा कर रहे हैं, क्योंकि अब अस्तित्व बनाए रखना महत्वपूर्ण नहीं रहा। हमारी आधुनिक सामाजिक संरचना सामाजिक सुरक्षा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य, उपभोक्ता सुरक्षा कानून और कई सरकारी संस्थानों के माध्यम से हमें निर्वाह का बुनियादी स्तर उपलब्ध कराती है। तो फिर नए नियम क्या हैं और आप उन्हें कहाँ से सीखते हैं? यह पुस्तक कुछ उत्तर उपलब्ध कराने का प्रयास करती है।

माता-पिता मदद क्यों नहीं कर सकते?

अगर आपका जन्म 1960 से पहले हुआ हो, तो आपने अपने माता-पिता को स्त्री-पुरुष के अस्तित्व के पुराने नियमों के अनुसार एक-दूसरे के प्रति बर्ताव करते हुए देखा होगा। आपके माँ-बाप अपने माता-पिता से सीखे गए बर्ताव को दोहरा रहे थे, उनके माता-पिता अपने माता-पिता की नकल करते थे और इस प्रकार यह व्यवहार गुफा में रहने वाले मानवों के बर्ताव जैसा था, जिसमें स्त्री-पुरुषों की भूमिका बहुत सुस्पष्ट थी।

अब नियम पूरी तरह से बदल गए हैं और आपके माता-पिता को समझ नहीं आ रहा वे इससे कैसे निपटें। नवविवाहित जोड़ों में तलाक की दर अब 50 प्रतिशत के आसपास है और इसमें वास्तविक व समलैंगिक संबंध भी शामिल हैं। रिश्ते टूटने की वास्तविक दर 70 प्रतिशत से भी अधिक हो सकती है। 21वीं सदी में खुश रहने के तरीके जानने और भावनात्मक रूप से सही-सलामत रहने के लिए हमें नए नियम सीखने होंगे।

हम दरअसल एक जानवर ही हैं

अधिकतर लोगों को यह मानने में मुश्किल होती है कि हम बस एक जानवर ही हैं। वे इस तथ्य को नहीं मानना चाहते कि हमारे शरीर में पाए जाने वाला 96 प्रतिशत हिस्सा किसी सुअर या घोड़े के शरीर में भी पाया जाता है और हमारा 97.5 प्रतिशत डीएनए गोरिल्ला के समान है और 98.4 प्रतिशत हिस्सा चिम्पांज़ी जैसा है। जो बात हमें अन्य जानवरों से अलग करती है, वह यह है कि हममें सोचने-विचारने और भविष्य की योजनाएँ बनाने की क्षमता मौजूद है। अन्य जानवर अपने मस्तिष्क की आनुवंशिक संरचना के अनुसार केवल स्थितियों पर प्रतिक्रिया करते हैं और बार-बार एक ही काम को दोहराकर सीखते हैं, वे सोच नहीं सकते; वे बस प्रतिक्रिया करते हैं।

अधिकतर लोग इस बात को मानते व स्वीकार करते हैं कि जानवरों में सहज प्रवृत्ति होती है, जो बड़े पैमाने पर उनके बर्ताव को निर्धारित करती है। इस प्रकार के बर्ताव को देखना आसान है - पक्षी कलरव करते हैं, मेंढक टर्टीते हैं, कुत्ते टाँग उठाकर पेशाब करते हैं और बिल्लियाँ अपने शिकार का चुपके से पीछा करती हैं। लेकिन ये सभी बौद्धिक व्यवहार नहीं हैं, इसलिए कई लोगों को इस बर्ताव और अपने खुद के बर्ताव के बीच संबंध जोड़ने में मुश्किल होती है। वे इस बात को भी नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि उनके स्वयं के प्रारंभिक व्यवहार, जैसे रोना व स्तनपान करना सहज प्रवृत्ति से जुड़े थे।

हमें अपने माता-पिता से जो भी व्यवहार विरासत में मिलते हैं, वे चाहे सकारात्मक हों या फिर नकारात्मक, वही हम अपने बच्चों को भी सौंपते हैं और सभी जानवरों में ऐसा ही होता है। जब हम इंसान खुद को एक ऐसे जानवर की तरह स्वीकार करेंगे, जिसके आवेग लाखों-करोड़ों वर्षों में तराशे गए हैं, तो हमारे लिए अपनी बुनियादी इच्छाओं व आवेगों को समझना आसान होगा और तभी हम स्वयं को व अन्य लोगों को अच्छी तरह स्वीकार कर सकेंगे। सच्ची खुशी का रास्ता यहीं से होकर गुज़रता है।

2

सही मायने समझना

शेरिल तुमने फिर से मक्खन
मुझसे छिपाकर रख दिया है।
वह फ्रिज में नहीं है!!



पुरुष कभी चीज़ों को नहीं खोज सकते...

जॉन और सू के पहुँचने तक पार्टी अपने चरम पर पहुँच चुकी थी। अंदर जाने पर सू ने जॉन की तरफ देखा और अपने होठ हिलाए बिना बोली, “खिड़की के पास खड़े उस जोड़े को देखो।” उस जोड़े को देखने के लिए जॉन ने अपना सिर घुमाया। ‘अभी मत देखो।’ सू ने फुसफुसाकर कहा, ‘तुम तो सबको जता दोगे।’ सू को समझ नहीं आया कि जॉन को उस तरीके से अपना पूरा सिर क्यों घुमाना पड़ा और जॉन को यकीन नहीं हुआ कि कैसे सू लोगों को न देखते हुए भी सब लोगों को कैसे देख सकती थी।

इस अध्याय में हम महिला व पुरुषों के बीच संवेदी बोध के अंतर को गहराई से जानेंगे और यह भी देखेंगे कि ये अंतर हमारे संबंधों में किस प्रकार दिखाई देते हैं।

संकेत पकड़ने वाली महिलाएँ

किसी भी महिला को यह स्पष्ट तौर पर समझ आता है कि कब दूसरी महिला परेशान है या कब उसे तकलीफ पहुँचती है, जबकि पुरुष को यह बात तब समझ आती है, जब उसे आँसू दिखाई दें, झल्लाहट दिखाई दे या फिर उसके चेहरे पर तमाचा पड़े। उससे पहले उसे परेशानी का कोई संकेत नहीं मिलता। अधिकतर मादा स्तनधारियों की तरह महिलाओं में पुरुषों की तुलना में संवेदी कौशल अधिक सुस्पष्ट होता है। बच्चों को जन्म देने और अपने घरांदे की रक्षा करने वाले के रूप में महिलाओं में अन्य लोगों के मनोभाव व रवैये में आए हल्के से बदलावों को पहचानने की क्षमता होनी चाहिए थी। जिसे आमतौर पर महिलाओं का सहज ज्ञान कहा जाता है, दरअसल वह बहुत बारीक बातों और अन्य लोगों के रूप-रंग या बर्ताव में आने वाले बदलावों को पहचानने की उनकी पैनी क्षमता होती है। समूचे इतिहास में महिलाओं में दिलचस्पी रखने वाले पुरुषों को यह बात हैरान करती रही है और वे इस कारण पकड़े जाते रहे हैं।

हमारे एक दोस्त का कहना है कि जब कभी उन्हें अपनी पत्नी से कुछ छिपाना होता था, तो वे उनकी पैनी निगाहों से हैरान रह जाते थे, लेकिन वही नज़रें तब बिल्कुल नाकाम हो जाती थीं, जब उनकी पत्नी को कार को बैक करके उसे गैराज में लगाना होता था। कार चलाते हुए उसके पिछले हिस्से व गैराज की दीवार के बीच के फ़ासले का अनुमान लगाना स्थान से जुड़ा कौशल है, जो पुरुषों के मस्तिष्क के दाएँ हिस्से में होता है और अधिकतर महिलाओं में यह बहुत सशक्त नहीं होता। बाद में अध्याय 5 में हम इसकी चर्चा विस्तार से करेंगे।

‘मेरी पत्नी मेरे कोट पर एक सुनहरा बाल बीस फीट की दूरी से
देख लेती है लेकिन कार पार्क करते हुए वह गैराज के दरवाजे पर
टक्कर मार देती है।’

अपने परिवार की रक्षा करने के लिए अपने घरांदे की सुरक्षा करने के काम में महिलाओं में दर्द, भूख, चोट, आक्रामकता या अवसाद के रूप में अपने बच्चों के बर्ताव में आए छोटे से छोटे बदलाव को समझने की क्षमता होनी चाहिए थी। भोजन की तलाश करने में लगे पुरुष कभी इतना समय अपनी गुफा के आसपास नहीं बिताते थे कि वे शब्देतर संकेतों या आपसी संवाद के तरीकों को समझना सीख सकें। पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी के न्यूरोसाइकॉलोजिस्ट प्रोफेसर रूबेन गर ने यह दिखाने के लिए मस्तिष्क के स्कैन परीक्षण किए कि जब पुरुष आराम कर रहे होते हैं तो उनके दिमाग की इलेक्ट्रिकल गतिविधि कम से कम 70 प्रतिशत तक रुक जाती है। महिलाओं के मस्तिष्क के स्कैन ने उसकी 90 प्रतिशत गतिविधि को दिखाया, जिससे इस बात की पुष्टि हुई कि महिलाएँ लगातार अपने परिवेश से जानकारी प्राप्त करती रहती हैं और उसका विश्वेषण करती रहती हैं। महिला अपने बच्चों के दोस्तों, उनके सपनों, उम्मीदों, रोमांस, छिपे हुए डर, उनकी सोच, वे कैसा महसूस करते हैं, यह सब जानती हैं और अक्सर उसे यह भी पता होता है कि बच्चों के दिमाग में क्या खिचड़ी पक रही है। पुरुषों को बस मोटे तौर पर यह जानकारी होती है कि कुछ नन्हे लोग उनके घर में रहते हैं।

आँखों में यह मौजूद होता है

आँखें मस्तिष्क का विस्तार होती हैं, जो खोपड़ी में बाहर की ओर स्थित होती हैं। आँख की पुतली के पीछे मौजूद रेटिना में फोटोरिसेप्टर्स कहलाने वाली छड़ के आकार की लगभग 13 लाख कोशिकाएँ होती हैं, जो काले-सफेद रंग की पहचान करती हैं और रंगों की पहचान के लिए शंकु के आकार की सत्तर लाख कोशिकाएँ होती हैं। एक्स क्रोमोज़ोम इन रंगीन कोशिकाओं को उपलब्ध कराता है। महिलाओं में दो एक्स क्रोमोज़ोम होते हैं, जिसके कारण पुरुषों की तुलना में उनकी आँखों में शंकुओं की अधिक विविधता होती है और यह अंतर तब स्पष्ट होकर उभरता है, जब महिलाएँ रंगों का वर्णन विस्तारपूर्वक करती हैं। पुरुष लाल, नीले और हरे जैसे बुनियादी वर्णन करते हैं, जबकि महिला हड्डी जैसे रंग, हरे रंग की झलक वाले नीले रंग, नीले रंग की झलक वाले हरे रंग, हल्के बैंगनी और हरे सेब के रंग जैसे रंगों की बात करती हैं।

मनुष्य की आँखों में सफेद हिस्सा बहुत सुस्पष्ट होता है, जो कि अन्य नरवानरों में नहीं होता। इससे आँखों की गतिविधि संभव होती है और नज़र की दिशा तय होती है, जो इंसानों के आमने-सामने के संचार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की आँखों में सफेद हिस्सा ज़्यादा होता है, क्योंकि नज़दीकी दायरे का निजी संवाद या संचार महिलाओं के आपसी जुड़ाव का अखंड हिस्सा होता है और ज़्यादा बड़ा सफेद हिस्से के कारण आँखों की गतिविधियों की दिशा में भेजे जाने वाले और ग्रहण किए जाने वाले आँखों के संकेतों का दायरा बड़ा हो जाता है।

इस प्रकार का आँखों का संचार जानवरों की अन्य प्रजातियों के लिए इतना महत्वपूर्ण नहीं होता, इसलिए उनकी आँखों में बहुत कम या न के बराबर सफेद हिस्सा होता है और वे संचार के प्रमुख स्वरूप के रूप में शारीरिक संकेतों पर निर्भर रहते हैं।

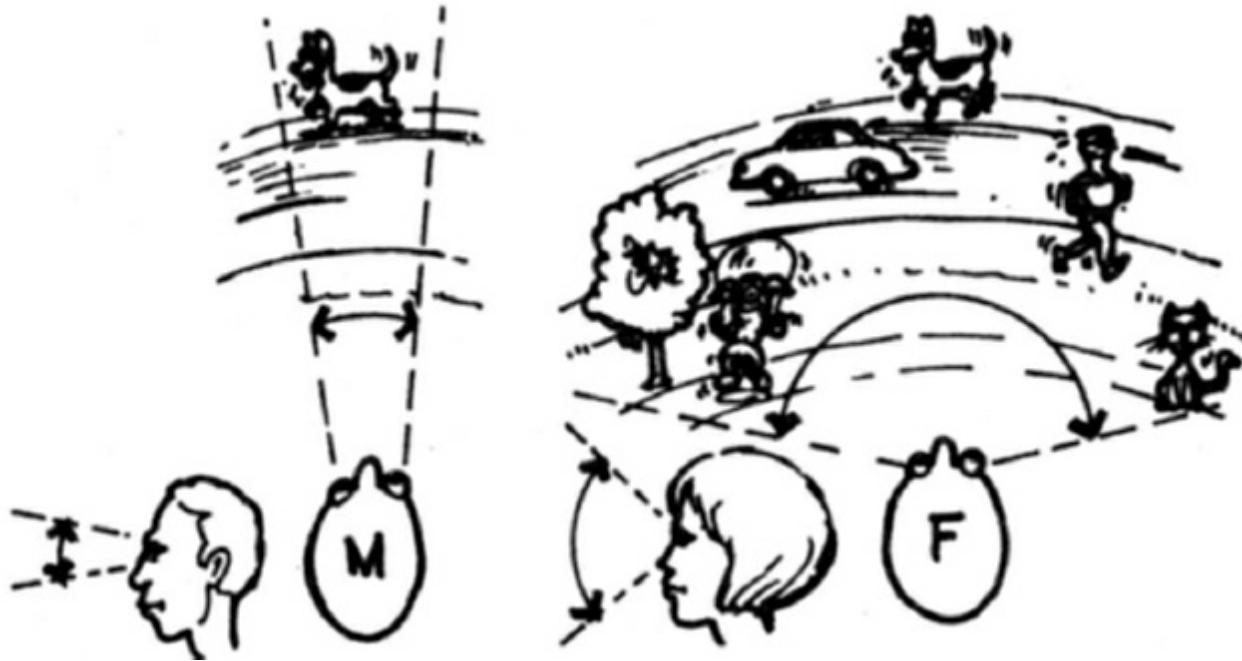
क्या उसके सिर के पीछे आँखें हैं?

ऐसा होता तो नहीं, लेकिन यह काफी हद तक उस बात के नज़दीक है। महिलाओं के रेटिना में पुरुषों की तुलना में न केवल बड़ी संख्या में शंकु होते हैं, बल्कि उनकी परिधीय दृष्टि भी व्यापक होती है। घरोंदे की रक्षक होने के नाते महिला के मस्तिष्क में यह खासियत होती है कि वह अपने सिर के दोनों ओर कम से कम 45 डिग्री तक और अपनी नाक के ऊपर व नीचे स्पष्ट देख सकती है। कई महिलाओं की परिधीय दृष्टि लगभग 190 डिग्री तक कारगर होती है। पुरुष की आँखें महिलाओं की तुलना में बड़ी होती हैं और उसके मस्तिष्क ने उन्हें लंबी दूरी की सुरंगी दृष्टि के लिए विशेष रूप से बनाया है, इसका अर्थ है कि वह अपने ठीक सामने व बड़ी दूरी तक किसी दूरबीन की तरह बहुत स्पष्टता व सही ढंग से देख सकता है।

महिलाओं की परिधीय दृष्टि व्यापक होती है पुरुषों की दृष्टि टनल यानी सुरंगी होती है।

शिकारी के रूप में पुरुष को ऐसी दृष्टि की आवश्यकता थी जिससे कि वह फासले पर मौजूद शिकार का पीछा कर सके और उस पर सही निशाना लगा सके। वह लगभग दिशा संकेतक दृष्टि के साथ विकसित हुआ, ताकि अपने लक्ष्य से न भटके, जबकि महिला को ऐसी आँखें चाहिए थीं, जो उसकी दृष्टि को व्यापक चाप दें, ताकि वह अपने घरोंदे में चुपके से घुसने वाले शिकारी पर नज़र रख सके। यही कारण है कि आधुनिक पुरुष किसी भी सुदूर पव में आसानी से पहुँच सकता है, लेकिन प्रिंज, अलमारी और दराज में रखी चीज़ों को नहीं खोज सकता।

1997 में युके में सड़कों पर पैदल चलने वाले 4132 बच्चे मारे गए या फिर घायल हुए, जिनमें से 2640 लड़के थे, जबकि लड़कियों की संख्या 1492 थी। ऑस्ट्रेलिया में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले व घायल होने वाले पद यात्रियों में लड़कों की संख्या लड़कियों की तुलना में दोगनी थी। सड़क पार करने में लड़कियों की तुलना में लड़के अधिक जोखिम लेते हैं और इसके साथ-साथ उनकी खराब परिधीय दृष्टि उनके घायल होने की दर को बढ़ा देती है।



पुरुषों व स्त्रियों की दृष्टि की श्रेणी

आप अभ्यास के द्वारा अपनी परिधीय दृष्टि के विस्तार को बढ़ा सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे फ़ाइटर पायलट करते हैं। जान पर बन आने की स्थिति में किसी व्यक्ति की परिधीय दृष्टि का चाप बड़ा हो जाता है। 1999 में ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में जेल में हुए दंगों में कैदियों ने जेल के अधिकारियों का बंधक बना लिया था। उन्होंने घोषणा की थी कि अगर उनकी माँगें नहीं मानी गई तो वे अधिकारी मारे जाएँगे। जेल अधिकारी लैंस ब्रेमेन ने बताया कि उस समय तक उनकी दृष्टि पुरुषों की सामान्य सुरंगी दृष्टि थी, लेकिन उस घटना के बाद उनकी परिधीय दृष्टि लगभग 180 डिग्री तक बढ़ गई थी। उस घटना के सदमे और मारे जाने के भय के कारण उनके मस्तिष्क ने उनकी दृष्टि के विस्तार को बढ़ा दिया था, ताकि वे चुपके से आने वाले किसी भी व्यक्ति पर निगाह रख सकें।

महिलाओं की आँखें इतना अधिक क्यों देखती हैं

कम्प्यूटर डेटा के 100 मेगाबाइट्स के बराबर प्रकाश के अरबों फ़ोटोन्स हर सेकेंड आँखों के रेटिना पर टकराते हैं। इतनी अधिक गतिविधि से निपटना मस्तिष्क के लिए मुश्किल होता है, इसलिए वह जानकारी को काट-छाँट कर उतना कम कर देता है, जितना कि जीवित रहने के लिए आवश्यक हो। उदाहरण के लिए, एक बार जब आपका मस्तिष्क आसमान के सभी रंगों को समझ लेता है, तो वह बस उसे ही चुनता है, जिसे देखा जाना ज़रूरी हो, जैसे कि नीला रंग। हमारा मस्तिष्क हमारी दृष्टि को इतना सँकरा कर देता है कि हम किसी निश्चित चीज़ पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकें। अगर हम कालीन पर पड़ी सुई को ढूँढ़ रहे हैं, तो हमारी दृष्टि ध्यान केंद्रित करने योग्य सँकरी हो जाती है। पुरुषों के मस्तिष्क कुदरती तौर पर पहले से ही शिकार के लिए बने हैं, इसलिए वे बहुत सँकरे क्षेत्र में देखते हैं। महिलाओं के मस्तिष्क अधिक व्यापक परिधीय दृष्टि क्षेत्र में जानकारी का अर्थ समझते हैं, क्योंकि अतीत में वे अपने घरोंदे की सुरक्षा का काम करती थीं।

मक्खन का नज़र से फिसलना

दुनिया में हर महिला खुले फ्रिज के सामने खड़े पुरुष से यह बातचीत कभी न कभी कर चुकी होती है।

डेविड़: मक्खन कहाँ हैं?

यॉन: फ्रिज में हैं।

डेविड़: मैं वहाँ देख रहा हूँ, लेकिन मुझे मक्खन नहीं दिख रहा।

यॉन: वह वहीं है। मैंने बस दस मिनट पहले ही रखा था।

डेविड़: नहीं। तुमने उसे कहीं और रख दिया होगा। फ्रिज में मक्खन नहीं रखा है।

यॉन किचन में जाती हैं, फ्रिज खोलती हैं और जैसे जादू से उनके हाथ में मक्खन आ जाता है। कई बार अनुभवहीन पुरुषों को लगता है कि उनके साथ चालबाज़ी हो रही है और वे महिलाओं पर आरोप लगाते हैं कि वे हमेशा उनसे चीज़ें छिपाकर दराज़ों व अलमारियों में रख देती हैं। जूते-जुराब, अंतर्वर्त, जैम, मक्खन, कार की चाबियाँ, बटुए - सभी चीज़ों अपनी जगह पर होती हैं, बस पुरुषों को दिखाई नहीं देती। व्यापक परिधीय दृष्टि होने के कारण महिलाएँ फ्रिज या अलमारी में रखी हुई अधिकतर चीज़ों को देख पाती हैं। अपने ईस्ट्रोजन हॉर्मोन के कारण महिला किसी दराज़, अलमारी या कमरे के दूसरे कोने में रखी मिलती-जुलती चीज़ों की पहचान कर सकती है और बाद में जटिल अनियमित तरीके से चीज़ों को याद भी रख सकती है, जैसे रेफ्रिजरेटर में मक्खन या जैम कहाँ रखा है। नए शोध यह भी बताते हैं कि पुरुष मस्तिष्क फ्रिज में मक्खन शब्द को खोज रहा होता है। अगर मक्खन सामने नहीं लिखा हुआ है, तो वह उसे नहीं देख पाएगा। यही कारण है कि पुरुष अपना सिर हिलाते हैं। ‘खोई हुई’ चीज़ों को स्कैन करने के लिए वे अपने सिर को एक ओर से दूसरी ओर ले जाते हैं और उसे ऊपर-नीचे करते हैं।

दृष्टि में इस अंतर के जीवनभर कई निहितार्थ होते हैं। उदाहरण के लिए कार बीमा के ऑफ़िस बताते हैं कि गाड़ी चलाने वाले पुरुषों की तुलना में महिला चालकों के मामले में किसी चौराहे पर बगल से टक्कर लगकर दुर्घटना होने की आशंका कम होती है। महिलाओं की अधिक परिधीय दृष्टि के कारण वे बगल से गुज़र रहे ट्रैफ़िक को देख सकती हैं। उनके द्वारा गाड़ी को पीछे ले जाते हुए समानांतर पार्किंग करते हुए गाड़ी पर सामने या पीछे से टक्कर लगने की आशंका अधिक होती है, क्योंकि ऐसी स्थिति में उनके कम विकसित स्थानिक कौशल को चुनौती मिलती है।

यदि महिला बहुत नज़दीक से चीज़ों को न देख पाने से जुड़ी पुरुषों की समस्याएँ समझ ले, तो उसके जीवन का तनाव बहुत कम हो जाएगा। जब कोई महिला किसी पुरुष से यह कहती है कि वह चीज़ अलमारी में है, तो पुरुष के लिए उसकी बात पर भरोसा करना आसान हो जाता है और वह अपनी तलाश जारी रखता है।

पुरुषों का तिरछी नज़रों से देखना

व्यापक परिधीय दृष्टि के कारण पुरुषों को धूरने वाली महिलाएँ बहुत कम ही पकड़ी जाती हैं।

लगभग हर पुरुष पर कभी न कभी किसी न किसी महिला का धूरने का आरोप लगता रहा है, जबकि बहुत कम महिलाओं पर यह आरोप लगाया जाता है। हर जगह पर लिंग संबंधी शोध करने वाले लोगों का कहना है कि महिलाएँ भी पुरुषों को उनके बराबर या कई बार उनसे अधिक धूरती हैं। फिर भी अपने बेहतर परिधीय दृष्टि के कारण उनका इस प्रकार देखना बहुत कम ही नज़र आता है।

देखने पर ही विश्वास होता है

अधिकतर लोग तब तक किसी बात पर विश्वास नहीं करते, जब तक कि वे उसके सबूत न देख लें, लेकिन क्या आप अपनी आँखों पर भरोसा कर सकते हैं? लाखों लोग इस तथ्य के बावजूद कि 92 प्रतिशत उड़न तश्तरियाँ (यूएफओ) सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में शनिवार को रात ग्यारह बजे देखी गई, जब सभी पब्स बंद हो जाते हैं, उन पर विश्वास करते हैं। कभी किसी प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ने उन्हें नहीं देखा और न ही वे कभी किसी विश्वविद्यालय के परिसर, किसी सरकारी शोध प्रयोगशाला या संसद में उतरी। वे कभी खुराब मौसम में भी नहीं उतरी।

शोधकर्ता एडवर्ड बोरिंग ने एक चित्र बनाकर यह प्रदर्शित किया कि हम एक ही तसवीर में कैसे विभिन्न चीज़ों को देखते हैं। यह संभावना अधिक है कि चित्र में महिलाओं को कोई बूढ़ी महिला दिखाई दे, जिसने फर

कोट के कॉलर में अपनी ठोड़ी दबाई हुई है, जबकि पुरुषों को उसी चित्र में कहीं और देखती हुई किसी युवती के चेहरे का बायाँ हिस्सा दिखाई देने की संभावना अधिक होगी।
मेज़ की तसवीर भी वही दिखाती है कि जो चीज़ आपको नज़र आती है।



आपके दिमाग़ को धोखा दिया जाता है और उसे विश्वास हो जाता है कि मेज़ का दूर का हिस्सा अगले की

तुलना में लंबा है। महिलाओं को आमतौर पर इसमें मज़ा आता है, लेकिन पुरुष इसका सबूत चाहते हैं और मेज़ को नापना चाहते हैं।



ऊपर दी गई तसवीर में आपका मस्तिष्क ठोस रंग पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए आपको यह असंगत आकारों का समूह लगता है। जब आप तसवीर को देखने का नज़रिया बदलते हैं और उसके सफेद हिस्से को ध्यान से देखते हैं, तो आपको 'फ्लाइ' शब्द दिखाई देगा। पुरुष की तुलना में महिला को यह शब्द जल्दी दिखाई देगा, क्योंकि पुरुष का मस्तिष्क ज्यामितीय आकारों में उलझ जाएगा।

पुरुषों को रात को गाड़ी क्यों चलानी चाहिए

पुरुष की तुलना में महिला अँधेरे में बेहतर देख सकती हैं, विशेषकर स्पेक्ट्रम या वर्णक्रम के लाल छोर को। पुरुष की आँखों में संकरे क्षेत्र के बजाय लंबी दूरी तक देखने की बेहतर दृष्टि होती है, जिसके कारण महिला की तुलना में वह रात को लंबी दूरी तक देख सकता है और इस प्रकार सुरक्षा की दृष्टि से यह बेहतर होता है। इसके साथ ही मस्तिष्क के दाएँ हिस्से की स्थानिक क्षमता के कारण पुरुष सड़क पर आगे चलते व पीछे से आने वाले अन्य वाहनों को अलग से देख सकता है और उनकी गतिविधि की पहचान कर सकता है। अधिकतर महिलाओं में एक प्रकार की रताँधी की पुष्टि होती है: वे यह पहचान नहीं कर पाती कि सड़क के किस ओर से ट्रैफिक आ रहा है। पुरुष की शिकारी दृष्टि यह काम अच्छी तरह कर सकती है। इसका मतलब है कि अगर आप लंबे समय तक कार में सफ़र करने वाले हैं, तो बेहतर होगा कि महिला दिन में गाड़ी चलाए और पुरुष रात को। पुरुषों की तुलना में महिलाएँ अँधेरे में ज्यादा बारीकी से देख सकती हैं, लेकिन केवल छोटे व विस्तृत दायरे में।

लंबी यात्राओं में पुरुषों को रात में और महिलाओं को दिन में गाड़ी चलानी चाहिए।

महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की आँखों पर ज्यादा ज़ोर पड़ता है, क्योंकि उनकी आँखें लंबी दूरी तक देखने के लिए बनी हैं और कम्प्यूटर स्क्रीन देखते हुए या अखबार पढ़ते हुए उन्हें लगातार समायोजित करते रहना पड़ता है। महिला की आँखें नज़दीकी दायरे की गतिविधियों के लिए बेहतर ढंग से अनुकूलित हैं, जिसके कारण वे बारीकियों पर लंबे समय तक काम कर सकती हैं। इसके साथ ही उनका मस्तिष्क कुदरती तौर पर छोटे क्षेत्र में फ़ाइन मोटर समन्वय क्षमता के लिए तैयार होता है, इसका मतलब है कि एक औसत महिला सुई में धागा डालने वाला काम और कम्प्यूटर स्क्रीन पर विस्तृत जानकारी पढ़ने का काम बखूबी कर सकती है।

महिलाओं में ‘झूठी इंद्रिय’ क्यों होती है

कई शताब्दियों तक महिलाओं को ‘अलौकिक शक्तियाँ’ होने के कारण जलाया जाता रहा। इनमें संबंधों के परिणाम, झूठ बोलने वालों को पहचानना, पशुओं से बात करना और सत्य का पता लगाना शामिल था।

1978 में हमने एक टेलीविज़न कार्यक्रम के लिए एक प्रयोग किया, जिसमें शिशुओं के शारीरिक संकेतों को पढ़ने की महिलाओं की क्षमता को प्रदर्शित किया गया था। एक प्रसूति अस्पताल में हमने रोते हुए शिशुओं की दस सेकेंड की फ़िल्म किलप्स का मिलान किया और माँओं से कहा कि वे आवाज़ बंद करके उन किलप्स को देखें।

अधिकतर माँओं ने बहुत कम समय में भूख, दर्द से लेकर गैस या थकान जैसे विभिन्न भावों की पहचान कर ली। जब पिताओं ने भी वही परीक्षण किए, तो सफलता की दर बहुत ही शोचनीय थी। 10 प्रतिशत से भी कम पिता दो से अधिक भावों को पहचान पाए। उसमें भी हमें संदेह था कि कई पिताओं ने अंदाज़ा ही लगाया। बहुत से पिताओं ने बहुत विजयी भाव से कहा, ‘बच्चे को उसकी माँ चाहिए।’ अधिकतर पुरुषों में शिशुओं के रोने की आवाज़ के अंतर को समझने की क्षमता न के बराबर थी। हमने यह देखने के लिए दादा-दादी के साथ भी परीक्षण किया कि परिणामों पर उम्र का असर पड़ता है या नहीं। अधिकतर दादी-नानी का सफलता प्रतिशत 50-70 था, जबकि अधिकतर दादा-नाना अपने पोते-पोतियों को पहचान तक नहीं पाए।

एक जैसे जुड़वा बच्चों के एक अध्ययन से पता चला कि अधिकतर दादा-नाना जुड़वा बच्चों में से हर एक को अलग से नहीं पहचान पाए, जबकि परिवार की अधिकतर महिला सदस्यों को इस काम में कम परेशानी हुई। पचास दंपत्तियों से भरे एक कमरे में एक औसत महिला दस मिनट से कम समय में कमरे में मौजूद हर जोड़े के आपसी रिश्ते का विश्लेषण कर सकती है। जब कोई महिला किसी कमरे में प्रवेश करती है, तो अपनी बेहतर संवेदी क्षमताओं के कारण वह तेज़ी से उन जोड़ों की पहचान कर लेती है, जिनके बीच बहस होती है, कौन किस पर डोरे डाल रहा है और होड़ करने वाली या दोस्ताना किस्म की महिलाएँ कहाँ पर हैं। किसी पुरुष के कमरे में प्रवेश करने पर हमारे कैमरों ने बिल्कुल अलग तसवीर दिखाई। कमरे में घुसते ही पुरुष वहाँ से बाहर निकलने व अंदर आने के रास्तों को स्कैन करता है, इसका कारण यह है कि प्राचीन काल से ही उसका मस्तिष्क इस बात के लिए कुदरती रूप से तैयार होता है कि कहाँ से हमले की आशंका हो सकती है और कहाँ पर बचाव के संभावित रास्ते मौजूद हो सकते हैं। फिर वह परिचित चेहरों या संभावित दुश्मनों की तलाश करता है और कमरे के पूरी बनावट को देखता है। उसका ताकिक दिमाग़ उन चीज़ों को दर्ज करेगा, जिन्हें ठीक करने या जिनकी मरम्मत करने की ज़रूरत हो सकती है, जैसे टूटी हुई खिड़कियाँ या बिजली का बल्ब। इस बीच महिलाएँ कमरे में मौजूद सभी चेहरों की स्कैनिंग कर चुकी होती हैं और जानती हैं कि कोई चीज़ कैसी है, कौन कैसा है और लोग कैसा महसूस कर रहे हैं।

पुरुष महिलाओं से झूठ क्यों नहीं बोल सकते

शारीरिक भाषा के हमारे शोध बताते हैं कि आमने-सामने बातचीत के दौरान शब्देतर संकेत हमारे संदेश के प्रभाव का 60-80 प्रतिशत हिस्सा होते हैं, जबकि शाब्दिक ध्वनियाँ उसका केवल 20-30 प्रतिशत भाग होती हैं। महिला के बेहतर संवेदी अंग इस जानकारी को पकड़ते और उसका विश्लेषण करते हैं। उसका मस्तिष्क दोनों गोलाधीं के बीच जानकारी के तेज़ी से हस्तांतरण में सक्षम होता है, इसलिए वह शाब्दिक, दृश्य संबंधी व अन्य संकेतों को जोड़ने और उनके अर्थ को समझने में अधिक कुशल होती है।

यही कारण है कि अधिकतर पुरुषों को महिलाओं के सामने झूठ बोलने में कठिनाई होती है। लेकिन जैसा कि महिलाएँ जानती हैं, पुरुष के सामने झूठ बोलना तुलनात्मक रूप से आसान होता है, क्योंकि पुरुष में महिला के शाब्दिक व शब्देतर संकेतों के बीच मौजूद असंगतता की पहचान करने के लिए ज़रूरी संवेदनशीलता नहीं होती। महिलाओं के सामने अगर पुरुष झूठ बोलना चाहते हैं, तो उनमें से अधिकतर को फोन पर, लिखकर या फिर बतियाँ बुझाकर और सिर पर कंबल डालकर ऐसा करना चाहिए।

महिला सुनने के मामले में भी बेहतर है...

पुरुषों की तुलना में महिलाएँ ऊँची आवाज़ों के बीच अंतर करने में भी बहुत निपुण होती हैं। महिला का मस्तिष्क

रात को शिशु की आवाज़ सुनने के लिए कुदरती तौर पर तैयार होता है, जबकि पिता इससे अनज्ञान हो सकते हैं और उसके बावजूद सोए रह सकते हैं। अगर कुछ दूरी पर कोई बिल्ली का बच्चा रो रहा हो, तो महिला उसकी आवाज़ सुन लेगी। जबकि पुरुष अपने बेहतर स्थानिक और दिशा संबंधी हुनर के कारण यह बता सकता है कि वह कहाँ पर मौजूद है।

टपकते नल महिलाओं को पागल कर सकते हैं जबकि पुरुषों को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

एक सप्ताह की बच्ची भी अपनी माँ की आवाज़ या कमरे में मौजूद आवाज़ों में से दूसरे शिशु की आवाज़ को समझती है, जबकि लड़के ऐसा नहीं कर पाते। पुरुष अपने मस्तिष्क के केवल बाएँ हिस्से का इस्तेमाल सुनने के लिए करते हैं, लेकिन महिलाएँ इस काम के लिए दिमाग़ के दोनों हिस्सों को काम में लाती हैं। महिला के मस्तिष्क में ध्वनियों को अलग करने व उनका वर्गीकरण करने और हर आवाज़ को लेकर निर्णय करने की क्षमता होती है। यही बजह है कि महिलाएँ सामने बैठे एक इंसान की बातचीत सुनने के साथ-साथ किसी दूसरे इंसान की बातचीत पर भी गौर कर सकती हैं। जबकि यदि टेलीविज़न चल रहा हो या रसोईघर में बर्तन धोए जा रहे हों, तो पुरुषों को बातचीत सुनने में मुश्किल होती है। किसी फ़ोन के बजने पर पुरुष चाहेगा कि लोग बातचीत करना बंद कर दें, संगीत की आवाज़ कम कर दी जाए और टेलीविज़न को भी ऑफ़ कर दिया जाए, ताकि वह फ़ोन पर बात कर सके। लेकिन यदि महिला का फ़ोन बजे तो वह बस उसे उठाकर बात शुरू कर देगी।

महिलाएँ छिपे अर्थों को समझ लेती हैं

महिलाओं में आवाज़ के उतार-चढ़ाव और स्तर में आए परिवर्तन को समझने की बेहतर संवेदनशीलता होती है। इसके कारण वे बच्चों व बड़ों की आवाज़ में आए भावनात्मक बदलाव को समझ सकती हैं। यही कारण है कि अगर आठ महिलाएँ ऐसा बखूबी कर सकती हैं, तो केवल एक ही पुरुष ऐसा करने में सक्षम है। उनकी इस क्षमता को पुरुषों या लड़कों से बहस करते हुए इस वाक्य से समझा जा सकता है, ‘मुझसे इस स्वर में बात मत करो!’ अधिकतर पुरुषों को समझ नहीं आता कि आखिर महिला किस बारे में बात कर रही है।

शिशुओं पर हुए परीक्षणों से पता चला कि लड़कों की तुलना में ऊँची आवाज़ पर लड़कियों की प्रतिक्रिया दोगुना अधिक थी। इससे पता चलता है कि कैसे ऊँची आवाज़ में बात करके शिशु लड़कों की तुलना में लड़कियों को आसानी से शांत किया जा सकता है व ढाढ़स बँधाया जा सकता है और क्यों सहज रूप से माताएँ लड़कियों को लोरी सुनाती हैं, लेकिन लड़कों के साथ बातचीत करती या फिर खेलती हैं। महिलाओं के सहज ज्ञान में उनके सुनने की इस बेहतर क्षमता का बहुत बड़ा योगदान होता है और शायद यही कारण है कि लोग कहते हैं कि महिलाएँ गूढ़ अर्थों को समझने की क्षमता रखती हैं। लेकिन इससे पुरुषों को निराश नहीं होना चाहिए। जानवरों की पहचान करने वह उनकी आवाज़ों की नकल करने में पुरुष बहुत निपुण होते हैं, जो प्राचीन शिकारी के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा होगा। यह दुःखद है कि आज के समय में इस गुण का कोई विशेष उपयोग नहीं रहा।

पुरुष दिशाओं को ‘सुन’ सकते हैं

महिलाएँ आवाज़ों में आए बदलाव को बेहतर ढंग से समझ सकती हैं, लेकिन पुरुष आवाज़ आने की दिशा की ओर इशारा कर सकते हैं। जानवरों की आवाज़ों की पहचान व उनकी नकल करने की क्षमता के साथ-साथ यह कौशल पुरुष को प्रभावशाली शिकारी बनाता है। तो फिर ध्वनि मस्तिष्क में जाकर कैसे नक्शे में बदल जाती है?

कैलिफोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलॉजी के प्रोफेसर मसाकाज़ु कोनिशि ने बार्न आउल की मदद से कुछ उत्तर खोज निकाले। ये पक्षी ध्वनि की सही दिशा बताने में इंसानों से ज्यादा माहिर होते हैं। आवाज़ को सुनकर वे उसी दिशा में अपना सिर घमा लेते हैं, जहाँ से वह आ रही होती है। कोनिशि ने पता लगाया कि इन पक्षियों के मस्तिष्क के श्रवण क्षेत्र में कोशिकाओं का एक समूह होता है, जो ध्वनि की सटीक जगह का नक्शा तैयार करता है। हर उल्लू के कान में वही आवाज़ सुनाई गई और लेकिन उस ध्वनि की गति अलग थी, जो एक सेकेंड का 20

करोड़वाँ हिस्सा थी, उसके कारण उल्लू के मस्तिष्क ध्वनि के स्थान का 3डी स्थानिक नक्शा तैयार कर लिया। उसके बाद उल्लुओं ने ध्वनि की ओर अपना सिर घुमाया और अपने शिकार का पता लगा लिया या फिर अपनी ओर आते हुए दुश्मनों से खुद को बचा लिया। पुरुषों के मामले में भी यही होता है, अपनी इसी क्षमता के कारण वे ध्वनि के स्रात का पता लगा लेते हैं।

जब लड़के बात नहीं सुनते

लड़कों को अक्सर उनके अध्यापकों और माता-पिता द्वारा बात न सुनने के लिए डॉट पड़ती है। लेकिन जैसे-जैसे लड़के बड़े होते हैं, खासकर जब वे तरुण अवस्था में पहुँचते हैं, उनकी कर्णनालें तेज़ी से बढ़ने लगती हैं, जिसके कारण अस्थायी तौर पर उन्हें सुनने में समस्या होती है। यह देखा गया है कि अध्यापिकाएँ लड़कियों को लड़कों से अलग तरीके से डॉटती हैं, हो सकता है कि वे सहज तौर पर महिला व पुरुषों के सुनने की क्षमता के अंतर को समझती हैं।

यदि कोई लड़की डॉटती हुई अध्यापिका से नज़रें न मिलाए, तो भी अध्यापिका उसे डॉटना जारी रखती है, जबकि अगर कोई लड़का ऐसा न करे, तो कई अध्यापिकाएँ सहज तौर पर यह समझती हैं कि संभवतः वे उनकी बात नहीं सुन पा रहे या फिर उनकी बात पर ध्यान नहीं दे रहे। ऐसे में वे कहेंगी, ‘जब मैं बात कर रही हूँ, तो मेरी तरफ देखो।’ बदकिस्मती से देखने की क्षमता के मुकाबले लड़कों की सुनने की क्षमता उतनी प्रभावी नहीं होती। इसके प्रमाण के लिए दिए गए वाक्य में एक वर्ण को खोजें।

फ़िनिश फ़ाइल्स आर द रिज़ल्ट ऑफ़ ईर्स ऑफ़ साइंटिफ़िक रिसर्च।

इस वाक्य में मौजूद पाँच एक को देखने में लड़कियों की तुलना में लड़कों का प्रदर्शन बेहतर रहता है। लेकिन अगर इस वाक्य को ज़ॉर-ज़ोर से बोलकर पढ़ा जाए तो उसे सुनकर एक की संख्या बताने में लड़कियों का प्रदर्शन लड़कों से बेहतर होता है।

पुरुष विस्तृत जानकारी की अनदेखी करते हैं

लिन और क्रिस एक पार्टी से लौट रहे हैं। क्रिस गाड़ी चला रहा है, लिन उसका मार्गदर्शन कर रही है और दोनों के बीच इस बात पर बहस हो रही है कि जब लिन ने उसे गाड़ी बाएँ घुमाने को कहा, तो दरअसल उसका मतलब दाएँ जाने से था। नौ मिनट तक खामोशी छाई रही और क्रिस को लगा कि कुछ गड़बड़ है। उसने पूछा, ‘प्रिये... सब कुछ ठीक है न?’ ‘हाँ, सब कुछ बिल्कुल ठीक है!’ लिन ने जवाब दिया।

‘ठीक’ शब्द पर लिन ने जितना ज़ोर दिया, उससे यह साबित होता है कि हालात सामान्य से काफ़ी दूर हैं। क्रिस पार्टी के बारे में सोचता है और पूछता है, ‘क्या मैंने पार्टी में कोई गड़बड़ी की?’ ‘मैं उसके बारे में बात नहीं करना चाहती।’ लिन ने जवाब दिया।

इसका अर्थ है कि लिन नाराज़ है और उस पर बात नहीं करना चाहती। इस बीच, क्रिस इस बात से पूरी तरह अनजान है कि उसने क्या गड़बड़ की है। ‘मुझे बताओ। मैंने किया क्या है?’ वह बोला। ‘मैं नहीं जानता कि मैंने किया क्या है।’

इस तरह की बातचीत में पुरुष सच बोल रहा होता है, उसे वाकई पता नहीं होता कि समस्या क्या है। ‘ठीक है,’ लिन कहती है, ‘मैं बताती हूँ कि समस्या क्या है। तुम तो बिल्कुल अनजान बनने का नाटक कर रहे हो।’ लेकिन यह नाटक नहीं है। क्रिस को सचमुच परेशानी के सिर-पैर का अंदाज़ा नहीं है। लिन गहरी साँस लेती है और कहती है, ‘वो छोकरी जो पार्टी में तुम्हारे आगे पीछे घूमकर तुम्हें अपने पास आने के इशारे कर रही थी, तुमने उससे पीछा छुड़ाने की कोई कोशिश नहीं की। तुम तो उसे बढ़ावा दे रहे थे।’

क्रिस बिल्कुल भौंचका रह गया। कौन सी छोकरी? क्रिस तरह के इशारे? उसे तो कुछ भी दिखाई नहीं दिया। तो देखा आपने, क्रिस का ध्यान इस बात पर नहीं गया कि जो छोकरी (महिलाओं के मुताबिक वह मूर्ख छोकरी

थी; पुरुष उस तरह की लड़की को 'सेक्सी' कहना पसंद करते) उससे बात कर रही थी, उसकी ओर छूका रही थी, उसका पैर क्रिस की ओर था, वह अपने बालों को झटक रही थी, अपनी जाँघ को सहला रही थी, अपने कान की लवों को छू रही थी, क्रिस को काफ़ी देर तक देख रही थी, अपने वाइन ग्लास की नली को सहला रही थी और एक स्कूली छात्रा की तरह बात कर रही थी। पुरुष शिकारी है। वह दूर मौजूद किसी ज़ेब्रा को देख सकता है और बता सकता है कि वह कितनी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। लेकिन उसमें यह खासियत नहीं होती कि वह दृश्य, ध्वनि या शरीर के संकेतों को समझ सके, जो यह बताते हों कि कोई उस पर डोरे डाल रहा है। उस पार्टी में मौजूद हर महिला अपना सिर घुमाए बिना यह देख सकती थी कि वह लड़की क्या कर रही है। पार्टी में मौजूद महिलाओं के बीच एक दूरसंचेदी निंदा चेतावनी का आदान-प्रदान हुआ। अधिकतर पुरुष इस बात को बिल्कुल भी नहीं समझ पाए।

इसलिए जब कोई पुरुष यह दावा करता है कि वह इन आरोपों को लेकर सच कह रहा है, तो संभवतः वह सही कह रहा होता है। पुरुषों के मस्तिष्क इस तरह की बारीकियों को सुनने या देखने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

स्पर्श का जादू

स्पर्श जीवनदायी हो सकता है। हालों और ज़िमरमेन द्वारा बंदरों पर किए गए आरंभिक परीक्षणों से पता चला कि शिशु बानरों को जब छुआ नहीं गया, तो उसके परिणामस्वरूप उनमें अवसाद, बीमारी और समय से पहले उनकी मौत तक हो गई। उपेक्षित बच्चों में भी इसी प्रकार के परिणाम पाए गए। इस सप्ताह से लेकर छह महीने तक के शिशुओं पर एक कारगर अध्ययन में पाया गया कि जिन माँओं को अपने बच्चों को सहलाना सिखाया गया, उनके बच्चों में जुकाम, नाक बंद होने में नाटकीय रूप से कमी आई। उन बच्चों को उल्टी व दस्त भी कम हुए, जबकि जिन माँओं को यह नहीं सिखाया गया, उनके बच्चों में ये समस्याएँ बनी रही। अन्य शोधों में यह पाया गया कि जो महिलाएँ तंत्रिका रोग से या फिर अवसादग्रस्त थीं, वे तब ज्यादा जल्दी ठीक हो गईं, जब उन्हें गले लगाया गया, यह उन्हें गले लगाए जाने की अवधि और आवृत्ति पर भी निर्भर करता था कि वे कितनी जल्दी ठीक होती हैं।

बच्चों के पालन-पोषण और हिंसा के अध्ययन में अग्रणी मानवविज्ञानी जेम्स प्रेसकॉट ने पाया कि जिस समाज में बच्चों को शायद ही कभी प्यार से छुआ जाता था, वहाँ वयस्क हिंसा की दर सबसे अधिक थी। स्नेह भरी देखभाल में पले-बढ़े बच्चे अक्सर बड़े होकर बेहतर, अधिक स्वस्थ और प्रसन्नचित्त वयस्क बनते हैं। यौन अपराधी और बच्चों का यौन उत्पीड़न करने वाले लोगों के अतीत में अस्वीकृति, हिंसा, बचपन में आलिंगन की कमी और किसी दूर-दराज़ के संस्थान में बीता बचपन था। स्पर्श न करने वाली कई संस्कृतियों में लोग अपने कुत्ते-बिल्लियों से बहुत प्यार करते हैं और उन्हें थपथपाकर व सहलाकर छुअन का अनुभव करते हैं। पालतुओं को थपथपाने के इलाज का तरीका अवसाद और अन्य मानसिक समस्याओं से ग्रस्त लोगों की मदद का एक महत्वपूर्ण तरीका है। खुले तौर पर प्रेम जताने के विरोधी अंग्रेज़ अपने पालतुओं से बहुत प्यार करते हैं। जैसा कि जर्मन ग्रीयर का कहना है, 'भूमिगत रेल में अपने भाई से टकराने के बावजूद एक औसत अंग्रेज़ यहीं दिखाएगा कि वह बिल्कुल अकेला है।'

महिलाएँ अपनी भावनाएँ स्पष्ट तौर पर व्यक्त करती हैं

त्वचा शरीर का सबसे बड़ा अंग है, जिसका विस्तार लगभग दो वर्ग मीटर होता है। इस पर दर्द के लिए अनियमित रूप से फैले हुए 2,800,000 ग्राही होते हैं, ठंड के लिए 200,00 और स्पर्श व दबाव के लिए 500,000 होते हैं। जन्म से ही लड़कियाँ स्पर्श के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं और वयस्क पुरुष की तुलना में स्पर्श व दबाव के प्रति महिला दस गुना अधिक संवेदनशील होती है। एक प्रामाणिक अध्ययन में यह पाया गया कि स्पर्श के प्रति जो लड़के संवेदनशील पाए गए, उनकी अनुभूति कम संवेदनशील लड़कियों से भी कम थी। महिलाओं की त्वचा पुरुषों के मुकाबले पतली होती है और उसके नीचे सदियों में अधिक गर्माइश व अधिक सहनशीलता के लिए वसा की एक अतिरिक्त परत होती है।

ऑक्सिटोसिन एक ऐसा हार्मोन है, जो छुए जाने को उत्प्रेरित करता है और हमारे स्पर्श ग्राहियों को जागृत करता है। यहीं कारण है कि पुरुषों से दस गुना अधिक संवेदनशील ग्राही होने के कारण महिलाएँ अपने प्रेमियों, बच्चों व दोस्तों का आलिंगन करने को इतना महत्व देती हैं। बॉडी लैंग्वेज के हमारे शोध दिखाते हैं कि पश्चिम में

सामाजिक बातचीत के दौरान पुरुषों द्वारा अन्य पुरुषों को छूने की तुलना में महिलाएँ अन्य महिलाओं को चार से छह गुना अधिक छूती हैं। पुरुषों के मुकाबले महिलाएँ स्पर्श से जुड़ी अधिक अभिव्यक्तियों, जैसे किसी सफल व्यक्ति को ‘जादुई स्पर्श’ वाला बताना, लोगों को पतली चमड़ी या मोटी चमड़ी वाले के रूप में व्यक्त करना, आदि का प्रयोग करती हैं। महिलाओं को एक-दूसरे के ‘संपर्क’ में रहना अच्छा लगता है और वे ऐसे लोगों को नापसंद करती हैं, जो उन्हें खीझ देते हैं, इसके लिए वे ‘गेट अंडर योर स्किन’ का इस्तेमाल करती हैं। वे ज़ज़बात की बात करती हैं, लोगों पर ख़ास तौर पर ध्यान देती हैं, संवेदनशील होती हैं और लोगों को कई बार चिढ़ा देती हैं। 1999 में क्यूबेक, कैनेडा में मेकगिल यूनिवर्सिटी में माइकल मीने ने प्रदर्शित किया कि जिन चूहों के बच्चों की उनके माता-पिता ने लगातार देखरेख की और उन पर ध्यान दिया, उनके मस्तिष्क का भार व उनकी बुद्धिमत्ता उन बच्चों की तुलना में अधिक थी, जिनके माता-पिता उनके प्रति बेपरवाह थे।

मनोरौगियों पर हुए एक अध्ययन से पता चला कि दबाव में आने पर पुरुष स्पर्श से बचते हैं और अपने खोल में सिमट जाते हैं। दूसरी ओर, उसी परीक्षण में आधी से अधिक महिलाओं ने पुरुषों के नज़दीक आने की कोशिश की, यह किसी यौन संपर्क की भावना से प्रेरित नहीं था, बल्कि इसका कारण स्पर्श की अंतरंगता पाना था। जब कोई महिला किसी पुरुष से नाराज़ होती है या फिर भावनात्मक रूप से अलग-थलग महसूस करती है, तो वह प्रतिक्रियास्वरूप अक्सर यह कहती है, ‘मुझे मत छूओ!’, जबकि पुरुषों के लिए इस वाक्य का कोई मतलब नहीं है। इसमें क्या सबक छिपा है? महिलाओं का दिल जीतने के लिए सही तरीके से स्पर्श की आवश्यकता होती है, लेकिन उन्हें टटोलने या ज़बरदस्ती छूने से बचना चाहिए। बच्चे मानसिक रूप से स्वस्थ रहें, इसके लिए उन्हें खूब प्यार-दुलार से गले लगाना चाहिए।

सामाजिक बातचीत के दौरान किसी पुरुष द्वारा अन्य पुरुषों को छुए जाने के मुकाबले एक महिला दूसरी महिला को चार से छह बार अधिक छूती है।

पुरुष मोटी चमड़ी वाले क्यों होते हैं

पुरुषों की त्वचा महिलाओं की तुलना में मोटी होती है, यही कारण है कि महिलाओं की त्वचा पर अधिक झूर्रियाँ पड़ती हैं। पुरुष की पीठ की त्वचा उसके पेट की चमड़ी के मुकाबले चार गुना मोटी होती है, यह चार पैरों पर चलने वाले प्राणी के इतिहास की विरासत है, जब पीठ की मोटी चमड़ी पीछे से होने वाले हमले से उसे अधिक सुरक्षा देती थी। किसी लड़के की त्वचा की अधिकतर संवेदनशीलता उसके तरुण होने तक समाप्त हो जाती है और उसका शरीर शिकार की कठोरता के लिए स्वयं को तैयार करता है। कॉटेदार ज्ञाइयों से होकर भागने, जानवरों से लड़ने और दर्द से धीमा न होकर दुश्मन से भिड़ने के लिए उसे कठोर त्वचा की ज़रूरत थी। जब कोई पुरुष किसी शारीरिक कार्य या खेल गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करता है, तो यह संभव है कि वह किसी चोट पर ध्यान भी न दे।

सच यह है कि लड़का तरुण होने पर अपनी त्वचा की संवेदनशीलता नहीं खोता, बल्कि वह एक जगह पर सिमट जाती है।

जब पुरुष किसी काम पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा होता, तो उसकी दर्द की सीमा महिला से काफ़ी कम होती है। जब पुरुष कराह रहा होता है, ‘मेरे लिए चिकन सूप/संतरे का ताज़ा रस/मुझे गर्म पानी की थैली दो/डॉक्टर को बुलाओ और ध्यान रहे कि मेरी वसीयत तैयार है!’, तो इसका मतलब होता है कि थोड़ा जुकाम व सिरदर्द हुआ है। दर्द या असहजता झेल रही महिला के प्रति पुरुष कम संवेदनशील होते हैं। अगर महिला दर्द से कराह रही हो, उसे 104 डिग्री बुखार हो और वह कंबल के नीचे ठिठुर रही हो, तो पुरुष कहेगा, ‘सब ठीक तो है न, प्रिये?’ लेकिन वह

सोच रहा होता है, ‘इसे अनदेखा कर दूँ तो हो सकता है कि वह मेरे करीब आ जाए - वह बिस्तर में तो पहले से है ही।’

फुटबॉल या किसी आक्रामक खेल को देखते हुए पुरुष संवेदनशील हो जाते हैं। टीवी पर मुकेबाज़ी का मैच देखते हुए अगर किसी मुकेबाज़ को चोट लगती है, तो महिला कहेगी, ‘ओह... उसे चोट लगी होगी’ जबकि पुरुष दर्द से कराहते हुए दोहरे हो जाएँगे और सचमुच दर्द महसूस करेंगे।

स्वाद जिंदगी का

महिलाओं की स्वाद व गंध की इंद्रियाँ पुरुषों की तुलना में बेहतर होती हैं। हमारे मुँह में कम से कम चार स्वादों का पता लगाने के लिए 10,000 तक स्वाद ग्राही होते हैं; जीभ के सिरे पर मीठा व नमकीन स्वाद, किनारों पर खट्टा और पीछे की ओर कड़वा। जापानी शोधकर्ता फ़िलहाल पाँचवें स्वाद का परीक्षण कर रहे हैं - वसा का स्वाद। नमकीन व कड़वे स्वाद को पहचानने में पुरुषों का प्रदर्शन बेहतर होता है, इसी कारण वे बियर पीते हैं। महिलाएँ मीठे व चीनी के स्वाद को पहचानने में बेहतर होती हैं, यही कारण है कि दुनिया भर में पुरुषों के मुकाबले चॉकलेट की दीवानी महिलाओं की संख्या अधिक है। घरांदे की रक्षा करने वाली और फल जमा करने का काम करने वाली महिलाओं को खाने का स्वाद लेना होता था और देखना होता था कि वे इतने मीठे व पके हुए हैं कि उन्हें अपने परिवार को दिया जा सके। ऐसे में मीठे का स्वाद पहचानने का हुनर होना फ़ायदेमंद था। इससे स्पष्ट होता है कि क्यों महिलाओं को चीनी वाली मिठास पसंद आती है और क्यों अधिकतर फूड टेस्टर्स महिलाएँ होती हैं।

हवा में कुछ है

महिलाओं में गंध का बोध न केवल किसी औसत पुरुष से बेहतर होता है, बल्कि अपने मासिक चक्र के अंडोत्सर्ग चरण के दौरान वे अधिक संवेदनशील हो जाती हैं। उसकी नाक फ़ेरोमोन्स का पता लगा सकती है और पुरुषों से जुड़ी कस्तूरी जैसी गंध को पहचान सकती है, इन सुगंधों को चेतन रूप से पहचाना नहीं जा सकता। महिला का मस्तिष्क पुरुष की प्रतिरक्षा प्रणाली की स्थिति के संकेतों को समझ सकता है और अगर वह उसकी अपनी प्रणाली का पूरक है या फिर उससे ज्यादा मज़बूत है, तो वह किसी पुरुष का वर्णन आकर्षक या ‘अजीब ढंग से चुंबकीय’ के रूप में कर सकती है। अगर महिला की प्रतिरक्षा प्रणाली पुरुष से ज्यादा मज़बूत है, तो संभव है कि उसे पुरुष कम आकर्षक लगे।

मस्तिष्क के शोधकर्ताओं ने पाया कि महिला का मस्तिष्क किसी मुलाकात के तीन सेकेंड के अंदर प्रतिरक्षा प्रणाली के इन अंतरों का विश्लेषण कर सकता है। पूरक या कॉम्प्लिमेंटरी प्रतिरक्षा प्रणालियाँ संतान के जीवित रहने के अवसरों को बढ़ा देती हैं। इस शोध का एक परिणाम यह रहा कि अब पुरुषों के लिए कई तेलों और पेयों की मार्केटिंग की जा रही है, जिनमें कथित रूप से फ़ेरोमोन आकर्षण का रहस्य मौजूद है, जिससे महिलाओं को कामोन्माद हो जाता है।

मज़बूत प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण कोई पुरुष ‘अजीब ढंग से सम्मोहक’ लग सकता है।

एक्स-फाइल्स

हमारी विकासमूलक भूमिकाओं ने हमें उन जीववैज्ञानिक कौशलों और इंद्रियबोध से लैस किया है, जो हमारे जीवित रहने के लिए ज़रूरी हैं। अक्सर जादूटोना, अलौकिक शक्तियाँ या महिलाओं का अंतर्ज्ञान कहलाने वाली चीज़ों का 1980 के दशक से वैज्ञानिक रूप से परीक्षण किया जा रहा है और उन्हें मापा जा रहा है, इसका एक बड़ा हिस्सा अनुभूति के सभी बोधों में महिला की श्रेष्ठता से जुड़ा है। अधिकतर डायनें महिलाएँ थी, जिन्हें पुरुषों

द्वारा मृत्युदंड दिया जाता था, क्योंकि वे जीववैज्ञानिक अंतरों को नहीं समझ पाते थे। शारीरिक भाषा की बारीकियों, मौखिक संकेतों, स्वरों और अन्य संवेदी उद्दीपनों को पढ़ने में महिलाएँ बेहतर होती हैं। वे जानवरों के रवैयों व भावनाओं को भी पढ़ सकती हैं। इसी वजह से प्राचीन समय में महिलाएँ यह जान पाती थीं कि उनके घरोंदे की ओर बढ़ रहा कोई जानवर खतरनाक था या फिर दोस्ताना। कोई महिला यह भी बता सकती है कि कुत्ता घबराया हुआ है या घोड़ा दुलत्ती मारने वाला है। अधिकतर पुरुष यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि घबराया हुआ कुत्ता कैसा दिखता है। महिलाएँ बिल्लियों को सलाह दे सकती हैं। महिलाओं का ध्यान इधर-उधर होने पर पुरुष बिल्लियों को लात मारते हैं।

अपने घरोंदे की रक्षा करने वाली महिलाएँ दोनों हाथों से काम करने में कुशल थीं, इससे उन्हें चीज़ें समेटने में आसानी होती थी और उनकी गति भी दोगुनी हो जाती थी। परिणाम यह हुआ कि कई महिलाओं के मस्तिष्क के दोनों हिस्सों में बाएँ व दाएँ की पहचान के लिए कोई निश्चित क्षेत्र नहीं था, यह ज़रूरी भी नहीं था। यहीं कारण है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ असंगत तरीके से दोनों हाथों का कुशलतापूर्वक इस्तेमाल करने में अधिक दक्ष होती हैं। इसके कारण ही हर जगह महिलाओं को अनुचित रूप से पुरुषों की आलोचना का सामना करना पड़ता है, जब किसी महिला द्वारा ग़लत दिशा बताए जाने पर वे हताश होकर चिल्लाते हैं, ‘तुम्हें तो दाएँ ओर बाएँ का फ़र्क तक नहीं मालूम!’ सही जवाब है, ‘नहीं’ - प्रमुख नियंत्रण वाला दायाँ हाथ निशाना साधने के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन तेज़ी से चीज़ें बटोरने के लिए सही नहीं हैं। इस मामले में अपनी बेहतर क्षमताओं के कारण आधुनिक महिलाएँ ज्योतिषियों, साइकिक्स, टैरो कार्ड पढ़ने वालों, अंकशास्त्रियों और उन लोगों के प्रति आकर्षण रखने के कारण ठगी जाती हैं, जो मेहनत की कमाई के बदले महिला के सहज ज्ञान की व्याख्या करते हैं। महिला के उत्कृष्ट रूप से परिष्कृत संवेदक किशोर लड़कियों के जल्दी परिपक्ष होने में उल्लेखनीय योगदान देते हैं। सत्रह साल की उम्र तक लड़कियाँ वयस्कों की तरह काम कर सकती हैं, जबकि उस समय तक लड़के स्विमिंग पूल में एक-दूसरे की खिंचाई कर रहे होते हैं।

पुरुषों को ‘असंवेदनशील’ क्यों कहा जाता है?

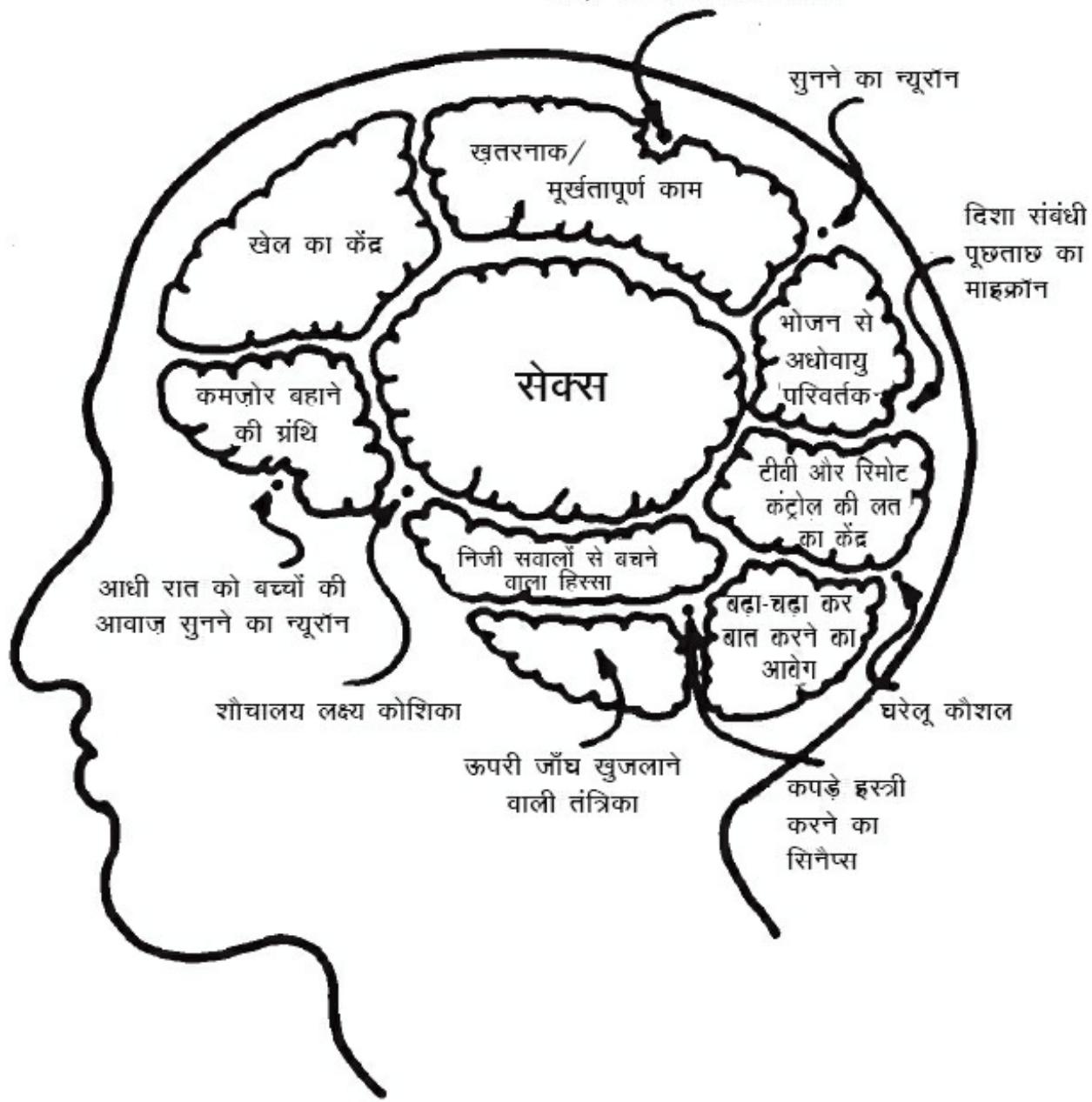
बात सिर्फ़ इतनी नहीं है कि महिलाओं का इंद्रियबाध बहेतर होता है, बल्कि इससे भी बड़ी बात यह है कि तलुनात्मक रूप से पुरुषों का इंद्रियबाध उतना पैना नहीं होता। अपनी अत्यधिक अनुभवबोधी दुनिया में महिला पुरुष से यह अपेक्षा करती है कि वह उसके शाब्दिक, मौखिक व शरीर के संकेतों को पढ़ सके और अन्य महिलाओं की तरह उसकी ज़रूरतों का पूर्वानुमान लगा सके। जैसा कि विकासमूलक चर्चा से स्पष्ट है, मामला इतना सीधा-सादा नहीं है। कोई महिला चूपचाप यह मान लेती है कि पुरुष उसकी इच्छाओं व आवश्यकताओं को जान लेगा और जब वह उसके संकेतों को नहीं समझता, तो महिला उस पर ‘असंवेदनशील’ होने का आरापे लगाती है और कहती है कि ‘वह कुछ नहीं जानता!’ पुरुष बस शिकायत भरे लहजे में यह कहते रह जाते हैं, ‘मैं किसी के दिमाग़ को कैसे पढ़ सकता हूँ?’ शोध साबित करते हैं कि मन की बात जानने में पुरुष नाकाम रहते हैं। लेकिन अच्छी बात यह है कि अधिकतर पुरुषों को प्रशिक्षित कर शब्दतेर संकेतों और शाब्दिक संदेशों को पढ़ने की उनकी क्षमता को बेहतर बनाया जा सकता है।

अगले अध्याय में एक अनोखा परीक्षण है, जो आपके मस्तिष्क के लैंगिक रुद्धान को प्रदर्शित करेगा और बताएगा कि आप जैसे हैं, वास्तव में वैसे क्यों हैं।

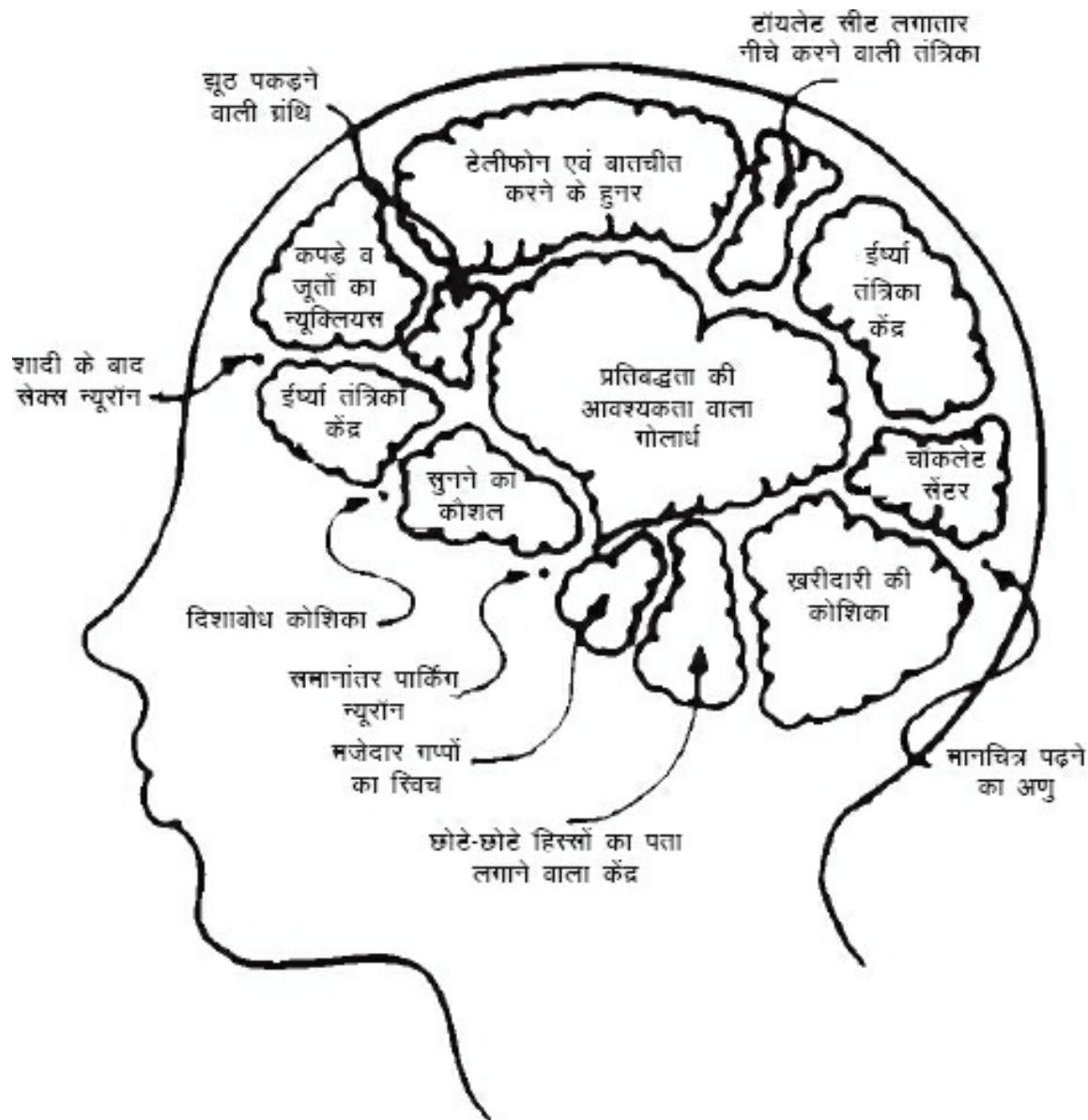
3

सब कुछ हमारे दिमाग़ में है

फ्रिज या अलमारी में रखी
चीजों को खोजने की क्षमता



पुरुष मस्तिष्क



महिला मस्तिष्क ईर्ष्या तंत्रिका केंद्र

पुरुष व महिला मस्तिष्क के ये हल्के-फुल्के चित्र मज़ेदार इसलिए हैं, क्योंकि इनमें कुछ न कुछ सच्चाई मौजूद है। लेकिन वह कितनी है? शायद उससे ज्यादा, जितना आपने सोचा हो। इस अध्याय में हम मस्तिष्क पर हुए शोध से हाल के नाटकीय रहस्योदयाटन का परीक्षण करेंगे।

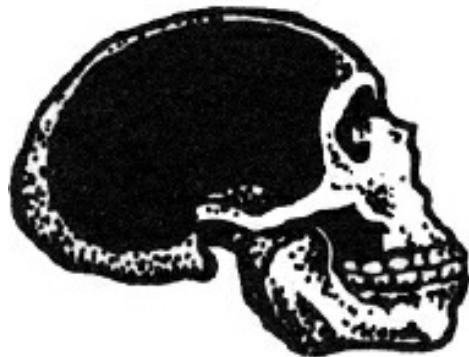
यह अध्याय आपकी औँखें खोल देगा और अधिकर में हमने आपके मस्तिष्क का व्यवहार दिखाने के लिए एक बहुत साधारण सा, लेकिन अनोखा परीक्षण शामिल किया है।

हम अन्य प्राणियों से अधिक चतुर क्यों हैं

दिए गए चित्रों को देखने पर आप गोरिल्ला, निएंडरथल मानव और हम आधुनिक मानवों के बीच दो बड़े आश्वर्यजनक अंतर पाएँगे। पहला यह कि गोरिल्ला के मुकाबले हमारे मस्तिष्क का आकार तीन गुना बड़ा है और हमारे आदिम पूर्वज की तुलना में यह एक-तिहाई बड़ा है। जीवाश्म प्रमाण दिखाते हैं कि पिछले 50,000 वर्षों में हमारे मस्तिष्क के आकार में कोई बदलाव नहीं हुआ है और उसकी कार्यप्रणाली में बहुत कम परिवर्तन आया है। दूसरा यह कि हमारा माथा आगे की ओर निकला हुआ है, जबकि हमारे पूर्वजों और आदिम संबंधियों का माथा ऐसा नहीं था। माथे में मस्तिष्क का बायाँ व दायाँ अगला हिस्सा होता है, जिसके कारण हमारे पास सोचने, नक्शे का अध्ययन करने और बोलने की अनोखी क्षमताएँ मौजूद होती हैं। यही खासियत हमें अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है।



गोरिल्ला



निएंडरथल मानव



आधुनिक मानव

पुरुषों व महिलाओं के मस्तिष्क अलग-अलग विशेषताओं, प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ विकसित हुए हैं। शिकार की ज़िम्मेदारी होने के कारण पुरुषों के मस्तिष्क को लंबी दूरी के दिशासंचालन, शिकार की व्यवस्था करने का कौशल विकसित करने और लक्ष्य पर निशाना साधने के हुनर को पैना करने वाले हिस्सों की आवश्यकता थी। उनके लिए अच्छी बातचीत करने वाला होने या किसी की भावनात्मक ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना ज़रूरी नहीं था, इसलिए उनके मस्तिष्क में अंतर्वैयक्तिक या इंटरपर्सनल कौशलों की आवश्यकता के लिए ज़रूरी हिस्से विकसित नहीं हुए।

दूसरी ओर, महिलाओं को छोटी दूरी के दिशासंचालन, अपने आसपास की जगह की निगरानी रखने के लिए विस्तृत परिधीय दृष्टि, एक साथ कई गतिविधियों को कर पाने की क्षमता और प्रभावी संचार कौशलों की आवश्यकता थी। इन्हीं आवश्यकताओं का परिणाम था कि पुरुषों व स्त्रियों के मस्तिष्कों में हर हुनर के लिए खास हिस्से विकसित हुए।

आज की दृष्टि से देखें तो प्राचीन समाज बहुत सेक्विस्ट यानी लैंगिकवादी था, इस मुद्दे पर हम बाद में विचार करेंगे।

हमारे मस्तिष्क क्षेत्र की रक्षा कैसे करते हैं

पुरानी कहावत है, ‘पुरानी आदतें जल्दी नहीं जाती’। वैज्ञानिकों का कहना है कि ‘आनुवंशिक स्मृति अब भी जीवित है और काम कर रही है।’ आनुवंशिक स्मृति हमारे सहज व्यवहार का हिस्सा है। यह स्वाभाविक है कि अपने आसपास निगरानी रखने के लिए गुफा के बाहर हज़ारों साल से बैठे रहने, अपने इलाके की हिफ़ाज़त करने और अस्तित्व की अनगिनत समस्याओं को सुलझाने के काम ने इंसान पर अपनी गहरी छाप छोड़ी होगी।

किसी रेस्टोरेंट में लोगों को देखें। अधिकतर पुरुष दीवार की ओर पीठ करके और रेस्टोरेंट के दरवाज़े की तरफ मुँह करके बैठना पसंद करते हैं। इससे वे आरामदह, सुरक्षित और चौकन्ना महसूस करते हैं। कोई भी उनके पास दबे क़दमों से नहीं आएगा और अगर आए भी तो आजकल के समय में वह भारी-भरकम बिल से ज्यादा घातक नहीं हो सकता। दूसरी ओर महिलाओं को खुली जगह की ओर पीठ करके बैठने में कोई परेशानी नहीं होती, लेकिन बच्चों के साथ अकेले होने पर वह ऐसा नहीं करती। उस स्थिति में वे दीवार के पास की जगह लेना पसंद करती हैं।

घर में भी पुरुष अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार शयनकक्ष में बिस्तर पर उस जगह पर सोते हैं, जो दरवाज़े के सबसे नज़दीक होती है - यह गुफा के प्रवेशद्वार की सुरक्षा करने की प्रतीकात्मक गतिविधि है। यदि कोई दम्पति नए घर में चला जाए या फिर किसी होटल में हो, जहाँ पर शयनकक्ष का दरवाज़ा महिला के बिस्तर के नज़दीक हो, तो पुरुष बेचैनी महसूस कर सकता है और उसे सोने में परेशानी हो सकती है, हो सकता है कि वह अपनी इस परेशानी की वजह कभी जान भी न पाए। सोने की जगह बदलने पर दरवाज़े के पास सोने पर अक्सर यह समस्या सुलझ सकती है।

पुरुष मज़ाक में कहते हैं कि वे अपने पहले वैवाहिक घर में चुपके से निकल जाने के लिए दरवाज़े के पास सोते हैं। सच्चाई यह है कि यह विशुद्ध रूप से सहज रक्षात्मक प्रवृत्ति है।

पुरुष के घर से बाहर जाने पर आमतौर पर महिला उसकी सुरक्षात्मक भूमिका अपना लेती है और बिस्तर पर उसकी जगह ले लेती है। रात को बच्चे के रोने जैसी तेज़ आवाज़ सुनते ही कोई महिला गहरी नींद से अचानक जाग सकती है। महिलाओं को इस बात से बहुत खीझ होती है कि उस आवाज़ के बावजूद पुरुष खराटि भर रहे होते हैं। पुरुष का मस्तिष्क गतिविधि से जुड़ी आवाज़ें सुनने के लिए कुदरती रूप से विकसित होता है और खिड़की के बाहर से किसी टहनी के टूटने की आवाज़ से वह पल भर में हमले की आशंका की स्थिति में सुरक्षा के लिए उठ खड़ा होता है। ऐसे में महिलाएँ सोती रहेंगी, लेकिन पुरुष के घर में न होने पर महिला का मस्तिष्क उसकी भूमिका को अपना लेगा और घरांदे पर संकट से जुड़ी किसी भी आवाज़ या हरकत को सुन सकेगा।

सफलता के पीछे मौजूद मस्तिष्क

यूनानी दार्शनिक अरस्तु का मानना था कि चिंतन का केंद्र हृदय में होता है, जबकि मस्तिष्क शरीर को ठंडा रखने में मदद करता है। यही कारण है कि दिल हमारी भावनाओं की अभिव्यक्तियों का विषय रहा है। हमें आज भले यह बात हास्यास्पद या बेतुकी लगे, लेकिन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक कई विशेषज्ञ अरस्तु से सहमत थे।

1962 में रॉजर स्पेरी को यह पहचान करने के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया कि मस्तिष्क के दो गोलार्ध अलग-अलग बौद्धिक कार्यों के लिए उत्तरदायी होते हैं। विकसित टेक्नॉलॉजी के कारण अब हम देख सकते हैं कि दिमाग़ कैसे काम करता है, लेकिन उसके पूरे कामकाज की सही समझ अब भी बहुत बुनियादी किस्म की है। हम जानते हैं कि मस्तिष्क का दायाँ गोलार्ध जो कि रचनात्मक आयाम है, वह शरीर के बाएँ हिस्से को नियंत्रित करता है। वहीं बायाँ गोलार्ध तर्क, बातचीत और शरीर के दाएँ हिस्से को नियंत्रित करता है। मस्तिष्क के बाएँ भाग में भाषा और शब्दावली मौजूद है, विशेषकर पुरुषों के मामले में और दायाँ हिस्सा दृश्य संबंधी जानकारी को एकत्रित व नियंत्रित करता है।

बाएँ हाथ से काम करने वाले लोगों का झुकाव दाएँ गोलार्ध की ओर होता है, जो कि मस्तिष्क का रचनात्मक आयाम है। यही कारण है कि बाएँ हाथ से काम करने वाले कलात्मक प्रतिभाशाली व्यक्तियों की संख्या असंगत रूप से अधिक है, जिनमें ऐल्बर्ट आइन्स्टाइन, लियोनार्डो द विंची, पिकासो, लुईस कैरैल, ग्रेटा गार्बो, रॉबर्ट डी

नीरो और पॉल मैकार्टनी आदि शामिल हैं। पुरुषों की तुलना में बाएँ हाथ से काम करने वाली महिलाओं की संख्या अधिक है और सभी लोगों में से 90 प्रतिशत लोग दाईं हाथ से काम करते हैं। अधिकतर पुरुष दाईं बाँह और हाथ से काम करने में माहिर होते हैं, लेकिन बाएँ हाथ के मामले में अनाड़ी होते हैं। पुरुषों के लिए दाईं बाँह गतिशील लक्ष्य पर सही निशाना साधने के लिए और शरीर के अगले हिस्से के बचाव के लिए ज़रूरी होती है। पुरुषों के मामले में दाएँ हाथ का इस्तेमाल करने की उनकी विशेषता संभवतः उनके जीन्स में होती है और उससे यह स्पष्ट होता है कि क्यों आक्रमण करने की स्थिति में 90 प्रतिशत से अधिक समय उसका पहला क्रदम यह होगा कि वह दाईं बाँह उठाकर हमला करेगा।

परीक्षण बताते हैं कि सामान्य बृद्धिमत्ता के मामले में पुरुषों की तुलना में महिलाएँ तीन प्रतिशत उच्चतर स्थिति में होती हैं

1960 के दशक तक मानव मस्तिष्क पर एकत्र किए गए अधिकतर आँकड़े युद्ध भूमि में मारे गए सैनिकों से मिलते थे और उनकी संख्या बहुत अधिक होती थी। हालाँकि ऐसे में समस्या यह थी कि इनमें से अधिकतर पुरुष होते थे और चुपचाप यह मान लिया जाता था कि महिलाओं का मस्तिष्क भी उसी प्रकार काम करता था।

आज नवीनतम शोधों से यह पता चलता है कि महिलाओं का मस्तिष्क पुरुषों के मस्तिष्क की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अलग ढंग से काम करता है। यही स्त्री-पुरुष संबंधों में अधिकतर समस्याओं की जड़ है। महिला मस्तिष्क पुरुष की तुलना में थोड़ा छोटा होता है, लेकिन अध्ययन बताते हैं कि इससे उसके प्रदर्शन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 1997 में कोपेनहेगन म्यूनिसिपल हॉस्पिटल के तंत्रिका विज्ञान विभाग के डैनिश शोधकर्ता बेंते पेकेनबर्ग ने दर्शाया कि औसतन एक पुरुष के मस्तिष्क में महिला के मस्तिष्क की तुलना में चार अरब कोशिकाएँ अधिक होती हैं, लेकिन आमतौर पर परीक्षणों में पाया गया कि उनकी सामान्य बृद्धिमत्ता पुरुषों के मुकाबले 3 प्रतिशत अधिक थी। 1999 में पेनिसिल्वेन्या मेडिकल सेंटर में मस्तिष्क शोधकर्ता प्रौफ़सर रूबन गर ने पाया कि पुरुषों के मुकाबले महिलाओं के मस्तिष्क में धूसर रंग के तंत्रिका ऊतकों की संख्या अधिक होती है। दिमाग के इस हिस्से में अभिकलनकार्य होता है और इसके कारण पुरुषों के मुकाबले महिलाएँ दूसरों तक अपनी बात बेहतर ढंग से पहुँचाने वाली होती हैं।

‘यह स्पष्ट है कि महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक चतुर होती हैं। ज़रा सोचिए - हीरे लड़की के सबसे अच्छे दोस्त होते हैं; जबकि पुरुष का सबसे अच्छा दोस्त कुत्ता होता है।’

- जोन रिवर्स

मस्तिष्क में क्या कहाँ है?

मस्तिष्क का कौन सा हिस्सा क्या काम करता है, यहाँ उससे जुड़ा एक आम दृष्टिकोण दिया गया है।

जहाँ मानव मस्तिष्क पर हुए शोध और उससे जुड़ी हमारी समझ बढ़ती जा रही है, वहाँ शोध के परिणामों को लेकर विभिन्न प्रकार की व्याख्याएँ भी मौजूद हैं। लेकिन कई ऐसे क्षेत्र हैं, जिन पर वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं के बीच सहमति है। मस्तिष्क में होने वाली गतिविधि को नापने वाली मैग्नेटिक रेजोनेंस इमेजिंग (एमआरआई) का इस्तेमाल करते हुए अब मस्तिष्क के कई विशिष्ट कार्यों की ठीक-ठीक स्थिति की पहचान करना व उन्हें नापना संभव हो गया है। दिमाग के स्कैन करने वाले यंत्र से हम यह देख सकते हैं कि मस्तिष्क का कौन सा हिस्सा किस विशिष्ट कार्य को कर रहा है। जब मस्तिष्क का स्कैन किसी कौशल या कार्य की विशिष्ट स्थिति को दिखाता है, तो इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति उस काम को करने में आमतौर पर अच्छा होगा, वह उस काम को करना पसंद करेगा और ऐसे व्यवसाय व कार्य की ओर आकर्षित होगा, जिनमें उन कौशलों का इस्तेमाल हो सके।

बायाँ गोलार्ध

शरीर का दायाँ हिस्सा

गणित

शाब्दिक

तार्किक

तथ्य

वियोजन

विश्लेषण

व्यावहारिक

अनुक्रम

किसी गीत के शब्द

ऐतिहासिक

बारीकियों को देखता है



दायाँ गोलार्ध

शरीर का दायाँ हिस्सा

रचनात्मक

कलात्मक

दृश्य

अंतर्दृष्टि

विचार

कल्पना

समग्र

किसी गीत की धुन

‘बड़ी तसवीर’ देखता है

स्थानिक

कई कार्य एक साथ करना

उदाहरण के लिए, अधिकतर पुरुषों के मस्तिष्क में दिशा का पता लगाने के लिए एक निश्चित जगह होती है, ताकि वे आसानी से यह काम कर सकें। उन्हें दिशाओं की योजना बनाने में मज़ा आता है और उन्हें ऐसे काम व शौक पसंद आते हैं, जिनमें वे अपने दिशाज्ञान व दिशाविन्यास जैसी विशेषताओं का इस्तेमाल कर सकें। महिलाओं में बातचीत के लिए विशिष्ट क्षेत्र होते हैं। वे यह काम अच्छी तरह व आसानी से कर सकती हैं और ऐसे क्षेत्रों की ओर आकर्षित होती हैं, जिनमें वे अपनी इस खासियत का इस्तेमाल कर सकें, जैसे कि उपचार, सलाह और शिक्षण। अगर किसी निश्चित कौशल के लिए मस्तिष्क में कोई विशिष्ट स्थान नहीं है, तो आमतौर पर इसका मतलब होता है कि वह व्यक्ति उस काम में सहज रूप से अच्छा नहीं है या फिर उसे उस काम को करने में मज़ा नहीं आता, जिनमें उस कौशल का उपयोग किया जाता है। यही कारण है कि दिशानिर्देशन करने वाली किसी महिला को खोज पाना या फिर पुरुष परामर्शदाता से तसल्ली पाना मुश्किल होता है या भाषा के शिक्षक से ‘उचित’ अंग्रेज़ी सीख पाना कठिन होता है।

जहाँ मस्तिष्क शोध शुरू हुआ था

दोनों लिंगों के बीच अंतर पर प्रारंभिक अभिलिखित शोध 1882 में लंदन संग्रहालय में फ्रांसिस गाल्टन द्वारा किए गए थे। उन्होंने पाया कि पुरुष ‘भड़कीली’ ध्वनियों यानी कर्णभेदी या ऊँची पिच वाली आवाज़ों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। उनकी हाथ की पकड़ मज़बूत होती है और वे महिलाओं के मुकाबले दर्द के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। उसी समय अमेरिका में इस प्रकार के एक अध्ययन में पाया गया कि पुरुषों को नीले रंग की तुलना में लाल रंग अधिक पसंद आता है, उनकी शब्दावली बड़ी होती है और घरेलू समस्याओं को सुलझाने के बजाय उन्हें तकनीकी समस्याओं का हल खोजना ज्यादा पसंद आता है। महिलाएँ ज्यादा बारीकी से सुन सकती हैं, पुरुषों के मुकाबले अधिक शब्दों का इस्तेमाल करती हैं और वैयक्तिक काम व समस्याएँ सुलझाना उन्हें ज्यादा पसंद आता है।

मस्तिष्क में विशिष्ट काम करने वाले हिस्सों की स्थिति पर हुए प्रारंभिक शोधों के लिए जानकारी उन मरीज़ों से मिली जिनके दिमाग़ पर चोट लगी थी। उसमें पाया गया कि जिन पुरुषों के दिमाग़ के बाएँ हिस्से पर चोट

लगी थी, उनकी अधिकांश वाकशक्ति व शब्दावली समाप्त हो गई थी, लेकिन जिन महिलाओं के साथ ऐसा हुआ था उनकी वाकशक्ति की हानि उतनी नहीं हुई थी, जितनी पुरुषों की हुई थी। इससे यही संकेत मिला कि महिलाओं के मस्तिष्क में बोलने से जूँड़े एक से अधिक केंद्र थे।

महिलाओं की तुलना में पुरुषों में तीन से चार गुना वाकशक्ति खो जाने या बोलने में बाधा आने की आशंका थी और यह उम्मीद कम थी कि वे इन कौशलों को फिर से प्राप्त कर सकेंगे। यदि किसी पुरुष के सिर के बाएँ हिस्से में चोट लग जाए तो संभव है कि वह गूँगा हो जाए। यदि किसी महिला को उसी हिस्से पर चोट लगे तो उसकी वाकशक्ति बनी रहेगी।

मस्तिष्क के दाएँ हिस्से पर चोट लगने पर पुरुष अपने अधिकतर या फिर सभी स्थानिक कौशल यानी उनकी त्रिआयामी ढंग से सोचने की योग्यता और दिमाग़ में चीज़ों को घुमाकर विभिन्न कोणों से उन्हें देखने की ख़ासियत खो देते हैं। उदाहरण के लिए, किसी घर की वास्तुशिल्पीय योजना को महिला का मस्तिष्क बिदआयामी ढंग से देखेगा, जबकि पुरुष का मस्तिष्क उसे त्रिआयामी तरीके से देखेगा, यानी पुरुष गहराई को भी देख सकते हैं। अधिकतर पुरुष यह देख सकते हैं कि कोई इमारत पूरी तरह घर बन जाने पर कैसी दिखेगी। जिन महिलाओं के दिमाग के दाएँ हिस्से पर चोट लगी होगी, उनके स्थानिक कौशल में बहुत कम या न के बराबर अंतर आएगा।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न ऑन्टेरियो में मनोविज्ञान की प्रोफ़ेसर डोरीन किमुरा ने पाया कि पुरुषों में वाकशक्ति संबंधी विकार तब होता है, जब उनके दिमाग के केवल बाएँ हिस्से को क्षति पहुँचती है, लेकिन महिलाओं में ऐसा तभी होता है, जब उनके किसी भी गोलार्ध के आगे के हिस्से को नुकसान पहुँचता है। हकलाना वाकशक्ति की ऐसी ख़राबी है, जो लगभग पुरुषों तक सीमित है। वाचन सुधारने की कक्षाओं में लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या तीन से चार गुना अधिक होती है। सामान्य रूप से कहा जाए तो बोलने व बातचीत के मामले में पुरुषों की क्षमताएँ सीमित होती हैं। अधिकतर महिलाओं को इस निष्कर्ष पर आश्र्य नहीं होगा। इतिहास की पुस्तकें यह दिखाती रही हैं कि हज़ारों साल से बातचीत न कर पाने की कमी से महिलाएँ परेशान रही हैं।

मस्तिष्क का विश्लेषण कैसे होता है

1990 के आरंभिक दशकों से मस्तिष्क का स्कैन करने वाले यंत्र इतने विकसित हो चुके हैं कि अब पॉज़िट्रॉन एमिशन टोमोग्राफ़ी (पीईटी) स्कैन और मैग्नेटिक रेज़ोनेंस इमेजिंग (एमआरआई) का इस्तेमाल कर आप टेलीविज़न के पर्दे पर अपने मस्तिष्क को सीधे काम करता देख सकते हैं। वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ मेडिसिन के मार्कस राइश्ले ने उन क्षेत्रों का ठीक-ठीक पता लगाने के लिए मस्तिष्क में बढ़े हुए उपापचय के उन क्षेत्रों को नापा, जिनका इस्तेमाल कुछ विशिष्ट कौशलों में किया जाता है। इन्हें इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है: 1995 में येल यूनिवर्सिटी में डॉ. बेनेट और डॉ. शेविट्ज़ के नेतृत्व में स्त्री



एमआरआई द्वारा मस्तिष्क में मौजूद विशिष्ट संवेदनशील स्थान प्रदर्शित करना

व पुरुषों पर परीक्षण किए गए, ताकि यह पता लगाया जा सके कि तुकांत शब्दों के मिलान के लिए मस्तिष्क के किस हिस्से का इस्तेमाल किया जाता है। एमआरआई के इस्तेमाल से मस्तिष्क के विभिन्न हिस्सों तक पहुँचने वाले रक्त के प्रवाह में आए छोटे से छोटे अंतर का पता लगाकर उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि पुरुषों ने बोलने के लिए मुख्य तौर पर दिमाग के बाएँ हिस्से का इस्तेमाल किया, जबकि महिलाओं ने उस कार्य के लिए बाएँ और दाएँ हिस्सों का इस्तेमाल किया। 1990 के दशक से किए जा रहे इन व कई अन्य अनगिनत प्रयोगों ने स्पष्ट रूप से वही परिणाम दिखाएः स्त्री व पुरुषों के मस्तिष्क अलग तरीके से काम करते हैं।

शोध यह भी दिखाता है कि किसी लड़की के दिमाग का दायঁ हिस्सा किसी लड़के की तुलना में ज्यादा तेज़ी से विकसित होता है, इसका मतलब है कि वह अपने भाई के मुकाबले जल्दी व बेहतर ढंग से बात कर सकेगी, पढ़ सकेगी और किसी विदेशी भाषा को जल्दी सीख लेगी। इससे इस बात का जवाब भी मिलता है कि क्यों स्पीच पैथोलॉजिस्ट्स के पास लड़कों की कतार लगी होती है।

**यदि पुरुषों व महिलाओं से यह पूछा जाए कि क्या उनके दिमाग
अलग तरीके से काम करते हैं, तो पुरुष कहेंगे कि उनके विचार से
यह सही है। वे कहेंगे कि इंटरनेट पर उन्होंने कुछ पढ़ा था...
महिलाएँ कहेंगी कि वे बिल्कुल अलग ढंग से सोचती हैं - अगला
सवाल क्या है?**

लड़कियों के मुकाबले लड़कों के दिमाग का दायঁ हिस्सा ज्यादा तेज़ी से बढ़ता है, जिसकी वजह से उनके स्थानिक, तार्किक और ग्रहणबोध संबंधी कौशल बेहतर होते हैं। गणित, निर्माण, पहेलियाँ व समस्या सुलझाने में लड़के माहिर होते हैं और लड़कियों की तुलना में जल्दी ही इनमें महारत हासिल कर लेते हैं।

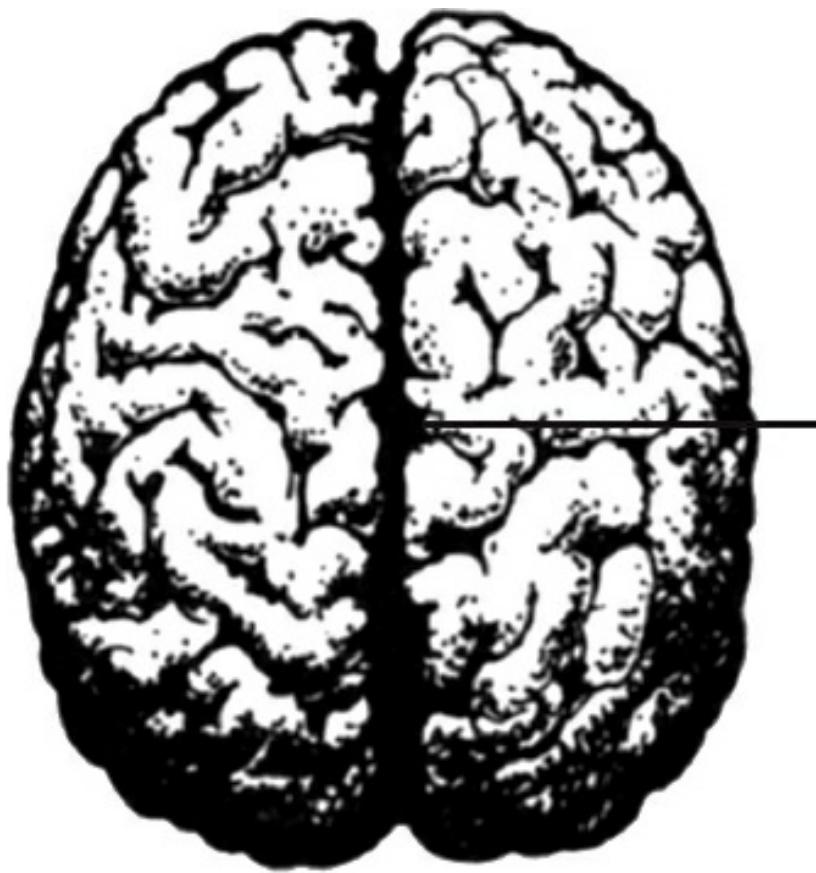
यह दिखावा करना फैशनेबल हो सकता है कि दोनों लिंगों के बीच मौजूद अंतर न्यूनतम या अप्रासंगिक है, लेकिन तथ्य इस दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करते। दुर्भाग्यवश, हम अब ऐसे सामाजिक वातावरण में रहते हैं जिसमें हम इस बात पर बल देते हैं कि हम सभी एक समान हैं, जबकि तथ्यों का पहाड़ यह दिखा रहा है कि हम प्राकृतिक रूप से अलग हैं और नाटकीय ढंग से बिल्कुल अलग प्राकृतिक क्षमताओं और रुक्णानों के साथ विकसित हुए हैं।

महिलाएँ क्यों बेहतर ढंग से जुड़ी हैं

बाएँ व दाएँ गोलार्ध कॉर्पस कलोसम कहलाने वाली तंत्रिकाओं के गुच्छे से जुड़े होते हैं। इस तंत्रिका के कारण मस्तिष्क के दोनों पक्ष संचार करते हैं और एक-दूसरे के साथ जानकारी का विनियम करते हैं।

कल्पना कीजिए कि आपके कंधों पर दो कम्प्यूटर हैं, जिनके बीच एक इंटरफ़ेस केबल मौजूद है। वह केबल कॉर्पस कलोसम है।

केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी, लॉस एंजेलीस के न्यूरोलॉजिस्ट रॉजर गोस्की ने पुष्टि की कि महिला के मस्तिष्क में मौजूद कॉर्पस कलोसम पुरुष की तुलना में अधिक मोटा होता है, महिला के दाएँ व बाएँ गोलार्ध में 30 प्रतिशत अधिक कनेक्शन होते हैं। उन्होंने यह भी साबित किया कि एक ही काम करते हुए स्त्री व पुरुष दिमाग के अलग-अलग हिस्सों का उपयोग करते हैं। इन निष्कर्षों को अन्य वैज्ञानिक भी दोहराते रहे हैं।



कॉर्पस कलोसम

शोध यह भी बताते हैं कि स्क्री हॉमोन ईस्ट्रोजन तंत्रिका कोशिकाओं को मस्तिष्क के भीतर और दोनों गोलाधीर्घों के बीच अधिक संपर्क बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। अध्ययन बताते हैं कि आपके जितने अधिक संपर्क या कनेक्शन्स होंगे, उतना ही बोलने में आप वाकपटु होंगे। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों महिलाओं में एक साथ कई असंबद्ध गतिविधियों को निपटाने की क्षमता होती है और इससे महिलाओं के अंतर्ज्ञान पर भी रोशनी पड़ती है। जैसी कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है, किसी महिला में संवेदक यंत्रों की बड़ी श्रेणी होती है और फ़ाइबर कनेक्शन्स की बहुतायत के कारण दोनों गोलाधीर्घों के बीच जानकारी का हस्तांतरण बहुत तेज़ी से होता है। इस कारण इसमें कोई आश्वर्य नहीं कि महिलाएँ अंतर्ज्ञान के स्तर पर लोगों व स्थितियों को लेकर बहुत तेज़ी से व सटीक निर्णय ले पाती हैं।

पुरुष एक समय में एक ही काम क्यों कर सकते हैं

सभी उपलब्ध शोध इस बात पर समहृत हैं: पुरुषों के मस्तिष्क विशिष्टिकृत हैं। वे वर्गीकृत होते हैं। पुरुष मस्तिष्क इस प्रकार बना होता है कि वह एक बार में किसी निश्चित काम पर ध्यान केंद्रित कर सकता है और अधिकतर पुरुष आपको बताएँगे कि वे ‘एक समय में केवल एक काम’ कर सकते हैं। जब कोई पुरुष किसी दिशा-निर्देश को पढ़ने के लिए अपनी कार रोकता है, तो वह सबसे पहले क्या करता है? वह अपने रेडियो को बंद कर देता है! अधिकतर महिलाएँ नहीं समझ पाती कि ऐसा क्यों होता है। वह तो बात करते हुए या फिर बात सुनते हुए पढ़ सकती है, तो फिर पुरुष ऐसा क्यों नहीं कर सकता? टेलीफ़ोन की धंटी बजने पर वह टीवी की आवाज़ कम करने को क्यों कहता है? ‘अखबार पढ़ते हुए या टीवी देखते हुए वह मेरी बात पर ध्यान क्यों नहीं दे सकता?’ यह एक ऐसी शिकायत है, जो दुनियाभर में किसी न किसी महिला को कभी न कभी ज़रूर रही होगी। इसका जवाब यह

है कि पुरुष का मस्तिष्क इस प्रकार बना है कि वह एक समय में एक ही काम कर सकता है, क्योंकि उसके बाएँ व दाएँ गॉलार्थ के बीच फाइबर कनेक्शन्स कम होते हैं और उसका मस्तिष्क अधिक वर्गीकृत होता है। पढ़ते हुए किसी पुरुष के सिर का स्कैन करने पर आप पाएँगे कि वह दरअसल उस समय लगभग बहरा होता है।

महिला का मस्तिष्क कई तरह के काम एक साथ करने के लिए सहज रूप से बना होता है। वह एक ही समय पर कई अलग-अलग काम कर सकती है, उसका दिमाग़ कभी भी खाली नहीं होता और वह हमेशा सक्रिय रहता है। वह खाना पकाने की किसी नई विधि को अपनाते हुए और टीवी देखते हुए फ़ोन पर बात कर सकती है। या वह कार चलाते हुए मेकअप कर सकती है और साथ ही रेडियो सुनते हुए हैंड्स फ़्री फ़ोन पर बात भी कर सकती है। लेकिन अगर कोई पुरुष किसी नई विधि से खाना पका रहा हो और आप उससे बात करने लगें, तो मुमकिन है कि वह नाराज़ हो जाए, क्योंकि तब उसके लिए बात सुनते हुए लिखे हुए निर्देशों को पढ़ना मुश्किल हो जाएगा। दाढ़ी बनाते हुए किसी पुरुष से अगर आप बात करने लगें तो हो सकता है कि वह घायल हो जाए। अधिकतर महिलाओं को यह अनुभव अवश्य हुआ होगा जब पुरुष ने उन पर यह आरोप लगाया होगा कि उनके लगातार बातचीत करते रहने से वह कहीं मुड़ना भूल गया। एक महिला ने हमें बताया कि जब कभी वह अपने पति से गुस्सा होती है, तो उससे बात तब करती है जब वह कील ठोक रहा होता है!

महिलाएँ अपने दिमाग़ के दोनों गोलार्थों का इस्तेमाल करती हैं, इसलिए कई बार बाएँ व दाएँ हाथ के बीच फ़र्क़ करना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। लगभग 50 प्रतिशत महिलाएँ तुरंत यह नहीं बता पाती और उसके लिए उन्हें किसी अँगूठी या चक्के की मदद लेनी पड़ती है। दूसरी ओर, पुरुष क्योंकि दिमाग़ के या तो बाएँ या फिर दाएँ हिस्से का इस्तेमाल करते हैं, तो उनके लिए बाएँ व दाएँ के बीच अंतर करना काफ़ी आसान होता है। नतीजतन, दुनियाभर की महिलाओं को पुरुषों की इस आलोचना का सामना करना पड़ता है कि जब उन्हें बाएँ मुड़ना होता है, तो वे ठीक उसका उलटा कहती हैं।

टूथब्रश परीक्षण आज़माएँ

अधिकतर महिलाएँ चलते-फिरते या कई विषयों पर बातचीत करते हुए अपने दाँतों को ब्रश कर सकती हैं। वे अपने दाँतों पर ब्रश को ऊपर-नीचे करते हुए ठीक उसी समय दूसरे हाथ से मेज़ पर गोल-गोल ढंग से हाथ फिरा सकती हैं। अधिकतर पुरुषों को यह काम असंभव तो नहीं, लेकिन बहुत मुश्किल ज़रूर लग सकता है।

जब पुरुष अपने दाँतों को ब्रश कर रहे होते हैं, तो उनका एक ही लीक पर चलने वाला दिमाग़ केवल उसी काम पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकता है। वे बेसिन के ठीक सामने खड़े होते हैं, उनके पाँवों के बीच 30 सेमी का फासला होता है, शरीर उस पर झुका होता है, वे अपने सिर को आगे-पीछे करते हैं और यह आमतौर पर पानी की गति के अनुरूप होता है।

हम जो हैं, वह क्यों हैं

ऐसे समय में जब हम लड़के-लड़कियों का पालन-पोषण ऐसे कर रहे हैं, जैसे कि वे बिल्कुल एक समान हैं, विज्ञान यह साबित कर रहा है कि दोनों की सोच नाटकीय ढंग से एक-दूसरे से अलग है। तंत्रिका विज्ञानी और मस्तिष्क शोधकर्ता अब इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अपने हॉमोन्स के कारण हम वैसे हैं जैसे कि हम हैं।

हम जो हैं, वह अपने हॉमोन्स के कारण हैं। हम अपने रसायनविज्ञान का परिणाम हैं।

20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में यह विचार था कि जन्म के समय हमारा दिमाग़ खाली होता है और हमारे माता-पिता, शिक्षक एवं हमारा वातावरण हमारे रवैये और चुनावों को निर्धारित करते हैं। हमारे मस्तिष्क और उसके विकास पर हुए नए शोधों से अब यह ज़ाहिर हुआ है कि गर्भाधान के छह से आठ सप्ताह के भीतर कम्प्यूटर की तरह हमारे मस्तिष्क की संरचना तैयार होने लगती है। हमारा अपना बुनियादी संचालन प्रणाली या ‘ऑपरेटिंग सिस्टम’ मौजूद होता है और उसमें कई प्रोग्राम्स डाले जाते हैं, ताकि जन्म के समय हम किसी कम्प्यूटर की तरह प्री-पैकेज्ड

हों, जिसमें कई हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर मौजूद हों।

विज्ञान यह भी बताता है कि आधारभूत ऑपरेटिंग सिस्टम और उसकी वायरिंग के कारण बदलाव के लिए बहुत कम जगह होती है। हमारा वातावरण व शिक्षक केवल उसमें आँकड़े जोड़ सकते हैं और उस सिस्टम के अनरूप कार्यक्रम चला सकते हैं। अब तक इस प्रणाली को चलाए जाने के तरीकों पर कोई नियम-पुस्तिका उपलब्ध नहीं है। इसका मतलब यह है कि जब हम पैदा होते हैं, तो हमारे भावी चुनाव और यौन प्राथमिकताएँ पहले से ही तय हो चुकी होती हैं। प्रकृति बनाम पालन-पोषण? यह अब सावित हो चुका है। प्रकृति को एकदम शुरुआत से बढ़त मिली है। अब हम जानते हैं कि पालन-पोषण एक सीखा हुआ बर्ताव है और बच्चों की देखरेख में दत्तक माता भी उतनी ही प्रभावी होती है, जितनी कि जन्म देने वाली माँ।

भूूण की प्रोग्रामिंग

हममें से लगभग सभी 46 क्रोमोज़ोम से मिलकर बने हैं, जो कि आनवंशिक बिल्डिंग ब्लॉक्स या किसी रूपरेखा की तरह हैं। इन 46 में से 23 हमारी माँ और 23 हमारे पिता से हमें मिलते हैं। यदि हमारी माँ का 23वाँ क्रोमोज़ोम एक एक्स क्रोमोज़ोम है (यह एक्स के आकार का होता है) और पिता का भी 23वाँ क्रोमोज़ोम एक्स है, तो बच्चा एक्सएक्स होगा, यानी वह लड़की होगी। यदि पिता का 23वाँ क्रोमोज़ोम वाय है, तो हमें एक्सवाय बेबी मिलेगा, यानी वह लड़का होगा। मानव शरीर और मस्तिष्क का बुनियादी नमूना मादा का है - हम सबकी शुरुआत लड़कियों के रूप में होती है और यही कारण है कि पुरुषों में महिलाओं की तरह स्तनाग्र और स्तन ग्रंथियाँ होती हैं।

गर्भाधान के छह से आठ सप्ताह में भूूण लिंगविहीन होता है और उसमें नर या मादा जननांगों के विकसित होने की संभावना होती है।

सामाजिक विज्ञान के अग्रणी जर्मन वैज्ञानिक डॉ. गुंटर डॉर्नर उन कुछ आंरभिक लोगों में से थे, जिन्होंने इस सिद्धांत को बढ़ावा दिया कि गर्भाधान के छह से आठ सप्ताह के भीतर हमारी यौन पहचान का निर्माण होता है। उनके शोध ने प्रदर्शित किया कि यदि भूूण एक आनुवंशिक लड़का (एक्सवाय) है, तो उसमें ऐसी विशेष कोशिकाएँ विकसित होती हैं, जो नर हॉर्मोन विशेषकर टेस्टोस्टेरॉन को सीधे शरीर में भेजता है, ताकि नर अंडकोष का निर्माण हो सके और पुरुषोचित विशेषताओं व बर्तावों, जैसे लंबी दूरी की दृष्टि और फेंकने, शिकार व पीछा करने जैसे स्थानिक कौशलों, के लिए मस्तिष्क को तैयार करता है।

मान लीजिए कि नर भूूण (एक्सवाय) को नर जननांग बनने के लिए कम से कम एक इकाई नर हॉर्मोन की ज़रूरत होगी और तीन अन्य इकाइयों की मस्तिष्क को बनाने के लिए, ताकि वह पुरुषोचित ऑपरेटिंग सिस्टम बन सके। लेकिन कुछ कारणों से उसे आवश्यक मात्रा नहीं मिलती। इन कारणों पर हम बाद में चर्चा करेंगे। मान लीजिए कि उसे चार इकाइयों की ज़रूरत पड़ती है, लेकिन उसे केवल तीन इकाइयाँ मिल पाती हैं। पहली इकाई का इस्तेमाल नर जननांग बनने में होता है, लेकिन मस्तिष्क को दो और इकाइयाँ भी मिलती हैं, जिसका मतलब है कि मस्तिष्क का दो-तिहाई हिस्सा नर बन जाता है, जबकि बाकी एक-तिहाई हिस्सा मादा बना रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि लड़के का जन्म होता है, जो ऐसा व्यक्ति बनता है, जिसका मस्तिष्क मुख्य तौर पर पुरुष का होता है, लेकिन उसमें महिलाओं की तरह सोचने के तरीके और क्षमताएँ होती हैं। अगर नर भूूण को नर हॉर्मोन की केवल दो इकाइयाँ मिलें तो एक का इस्तेमाल अंडकोष के निर्माण में हो जाएगा और मस्तिष्क को आवश्यक तीन के बजाय केवल एक इकाई मिल पाती है। ऐसे में हमारे पास जो बच्चा होगा, वह संरचनात्मक और वैचारिक तौर पर मुख्य रूप से महिला होगा, लेकिन आनुवंशिक रूप से उसका शरीर पुरुष का होगा। यौवन आते-आते संभव है कि वह बच्चा समलैंगिक बन जाए। अध्याय 8 में हम इस पर चर्चा करेंगे।

जब भूूण लड़की (एक्सएक्स) होता है, तो नर हॉर्मोन बहुत कम या नहीं के बराबर होता है। ऐसे में शरीर में स्त्री जननाग बनने लगते हैं और मस्तिष्क की रूपरेखा महिला की बनी रहती है। मादा हॉर्मोन के साथ मस्तिष्क की रूपरेखा बनती और उसमें अपने घरौंदे की रक्षा करने के गुण विकसित होते हैं, जिनमें शाब्दिक व गैर-शाब्दिक संकेतों के अर्थ समझने की क्षमता वाले केंद्र भी शामिल हैं। जब लड़की का जन्म होता है, तो वह मादा जैसी दिखती है और मस्तिष्क की रूपरेखा स्त्री की तरह होने के कारण उसका बर्ताव भी स्त्रीसुलभ होता है। लेकिन कभी-कभार अक्सर दुर्घटनावश ऐसा भी होता है कि मादा भूूण को नर हॉर्मोन की अत्यधिक मात्रा मिल जाती है और परिणामस्वरूप ऐसी लड़की का जन्म होता है जिसका मस्तिष्क कमोबेश पुरुषोचित होता है। इसकी चर्चा भी हम अध्याय 8 में करेंगे।

यह अनुमान है कि लगभग 80 से 85 प्रतिशत पुरुषों का मस्तिष्क मुख्यतः पुरुषोचित नमूने से बना होता है और लगभग 15 से 20 प्रतिशत पुरुषों का मस्तिष्क कुछ हद तक नारीसुलभ होता है। इस दूसरे समूह के अधिकतर पुरुष बाद में समलैंगिक बन जाते हैं।

पंद्रह से बीस प्रतिशत पुरुषों के दिमाग न्यियोचित होते हैं। लगभग दस प्रतिशत महिलाओं के मस्तिष्क पुरुषोचित होते हैं।

इस पुस्तक में मादाओं का जो भी उल्लेख किया जाएगा, उसका संबंध लगभग 90 प्रतिशत लड़कियों व महिलाओं से होगा, जिनके दिमाग मुख्यतः न्यियोचित व्यवहार के लिए बने हैं। लगभग 10 प्रतिशत महिलाओं के दिमागों की संरचना इस प्रकार बनी होती है कि उनमें कुछ सीमा तक पुरुषोचित विशेषताएँ आ जाती हैं। इसका कारण यह होता है कि गर्भाधान के छह से आठ सप्ताह के भीतर उन्हें नर हॉर्मोन की मात्रा मिलती है।

यहाँ एक साधारण, लेकिन दिलचस्प परीक्षण दिया गया है, जो आपको बता सकता है कि किस सीमा तक आपका मस्तिष्क सोचने के पुरुषोचित या नारीसुलभ तरीके से बना है। मानव मस्तिष्क की यौन प्राथमिकताओं पर हुए मुख्य अध्ययनों से प्रश्न एकत्रित किए गए हैं और मूल्यांकन प्रणाली ब्रिटिश आनुवंशिकी विज्ञानी ऐन मॉयर ने विकसित की है। इस परीक्षण में कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है, लेकिन इनसे आपको कुछ दिलचस्प बातों का पता लगेगा कि आप जिन चुनावों को अपनाते हैं, आखिर उनके कारण क्या हैं और आप जैसा सोचते हैं, वैसा क्यों सोचते हैं। परीक्षण के अंत में आप चार्ट में दिए गए परिणामों से अपने अंक जोड़ सकते हैं। इस परीक्षण की फोटोकॉपी बनाकर अपने साथ रहने व काम करने वालों को दें, नतीजे सभी की आँखें खोलकर रख देंगे।

मस्तिष्क की संरचना से संबंधित परीक्षण

यह प्रश्नावली आपके मस्तिष्क की संरचना की पुरुषोचित या नारीसुलभ विशेषताओं के बारे में बताने के लिए तैयार की गई है। इसमें कोई जवाब सही या गलत नहीं है - इसके परिणाम इस ओर संकेत करते हैं कि गर्भाधान के लगभग छह से आठ सप्ताह के आसपास आपके मस्तिष्क तक पहुँचने या न पहुँचने वाले नर हॉर्मोन का संभावित स्तर कितना था। यह आपके द्वारा बताए गए मूल्यों, व्यवहार, शैली, रुद्धान और चुनावों की प्राथमिकताओं को प्रतिबिम्बित करता है।

उन वक्तव्यों पर घेरा लगाएँ, जो आपके सदर्भ में सबसे सही हो सकते हैं।

1. किसी मानचित्र या सङ्क दिशा-निर्देश पढ़ने के मामले में:
 - अ. आपको मुश्किल होती है और आप अक्सर मदद माँगते हैं
 - आ. अपने जाने की दिशा में उसे घुमाते हैं
 - इ. मानचित्र या दिशा-निर्देश पढ़ने में कोई परेशानी नहीं होती
2. आप किसी जटिल विधि से व्यंजन बना रहे हैं, रेडियो बज रहा है और तभी एक दोस्त का फोन आता है। आप:
 - अ. रेडियो चलाए रखते हैं और फोन पर बात करते हुए खाना पकाना जारी रखते हैं।
 - आ. रेडियो बंद कर देते हैं और फोन पर बात करते हुए खाना पकाना जारी रखते हैं।
 - इ. दोस्त को कहेंगे कि खाना बनाने के बाद आप फोन पर उनसे बात करेंगे।
3. आपके दोस्त आपके नए घर पर आना चाहते हैं और आपसे रास्ता पूछते हैं। आप:

अ. स्पष्ट दिशाएँ बताते हुए एक नक्शा बनाएँगे और दोस्तों को भेज देंगे या किसी और से कहेंगे कि
उन्हें आपके घर का रास्ता बताएँ

आ. उनसे पूछेंगे कि आपके घर के आसपास की किन जगहों को वे पहचानते हैं और उसकी के
अनुसार उन्हें रास्ता बताएँगे

इ. फ़ोन पर घर का रास्ता बताएँगे: ‘न्यूकासल तक एम3 ले फिर मुड़ जाएँ, उसके बाद बाएँ
मुड़कर दूसरी ट्रैफ़िक लाइट तक जाएँ...’

4. किसी विचार या अवधारणा के बारे में बताते हुए आप:

अ. पेंसिल, कागज और शारीरिक मुद्राओं का सबसे अधिक उपयोग करते हैं

आ. शारीरिक हावभाव और मुद्राओं का इस्तेमाल करते हुए शाब्दिक वर्णन करते हैं

इ. शाब्दिक रूप से बहुत स्पष्ट व संक्षेप में उसके बारे में बताते हैं

5. कोई अच्छी सी फ़िल्म देखकर लौटते हुए आप:

अ. अपने दिमाग में फ़िल्म के दृश्यों को देखते हैं

आ. दृश्यों के बारे में बात करते हुए उनमें कहीं गई बातें बताते हैं

इ. फ़िल्म में कहीं गई प्रमुख बात को बताते हैं

6. सिनेमा हॉल में आप अक्सर कहाँ बैठना पसंद करते हैं:

अ. दाईं ओर

आ. कहीं भी

इ. बाईं ओर

7. आपके दोस्त के पास मौजूद मैकेनिकल चीज़ ख़राब हो गई है, ऐसे में आप:

अ. उसके साथ सहानुभूति रखेंगे और बताएँगे कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं

आ. किसी ऐसे विश्वसनीय व्यक्ति के बारे में उसे बताएँगे, जो उसे ठीक कर सके

इ. यह जानने की कोशिश करेंगे कि वह कैसे काम करता है और उसे ठीक करने का प्रयास करेंगे

8. आप किसी अनजानी जगह पर हैं और कोई आपसे पूछता है कि उत्तर दिशा किस ओर है, तो आप:

अ. मान लेंगे कि आपको उसकी जानकारी नहीं है

आ. थोड़ी देर सोचने के बाद उसका अनुमान लगाएँगे

इ. बिना किसी मुश्किल के उत्तर दिशा की ओर इशारा करेंगे

9. आपको पार्किंग की जगह मिल गई है, लेकिन वहाँ जगह बहुत कम और आपको रिवर्स में गाड़ी लगानी होगी, ऐसे में आप:

अ. किसी अन्य जगह की तलाश करेंगे

आ. बहुत सावधानी से गाड़ी बैक करेंगे

इ. बिना किसी परेशानी के गाड़ी रिवर्स कर लेंगे

10. आप टीवी देख रहे हैं कि फ़ोन की धंटी बजती है। आप:

अ. टीवी चलते हुए फ़ोन पर बात करेंगे

आ. टीवी की आवाज़ कम करके फ़ोन पर बात करेंगे

इ. टीवी बंद कर देंगे, अन्य लोगों को चुप रहने को कहेंगे और फिर फ़ोन पर बात करेंगे

11. आपने अपने पसंदीदा कलाकार का नया गाना सुना है। आप:

अ. बाद में आसानी से उस गाने का कोई हिस्सा गुनगुना सकते हैं

आ. अगर गाना बहुत सरल है, तो बाद में उसका कुछ हिस्सा गुनगुना सकते हैं

इ. गाना याद करने में आपको मुश्किल होगी, लेकिन बाद में कुछ शब्द आपको याद आ सकते हैं

- 12.** आप नतीजों का पूर्वानुमान लगा सकते हैं:
- अ. अंतर्ज्ञान या सहज ज्ञान से
 - आ. उपलब्ध जानकारी और अंतरिक अनुभूति के आधार पर निर्णय लेंगे
 - इ. तथ्य और ऑकड़ों का सहारा लेंगे
- 13.** आपकी चाबी नहीं मिल रही। आप:
- अ. किसी अन्य काम में लग जाएँगे, जब तक कि आपको जवाब नहीं सूझता
 - आ. कोई और काम करेंगे, लेकिन सही जगह को याद करने की कोशिश करते रहेंगे
 - इ. पूरे घटनाक्रम पर विचार करेंगे, जब तक कि आपको सही जगह याद न आ जाए
- 14.** आप होटल के कमरे में हैं और तभी आपको कहीं दूर से सायरन की आवाज़ सुनाई देती है। आप:
- अ. नहीं पहचान पाते कि वह किस ओर से आ रही है
 - आ. थोड़ा ध्यान लगाने पर आप शायद सही दिशा बता सकें
 - इ. सीधे आवाज़ की दिशा में इशारा कर सकते हैं
- 15.** किसी सामाजिक मेलजोल के दौरान आपकी मुलाकात सात-आठ लोगों से करवाई जाती है।
अगले दिन आपको:
- अ. सभी के चेहरे साफ़ -साफ़ याद रखेंगे
 - आ. कुछ लोगों के चेहरे आपको याद रहेंगे
 - इ. संभव है कि उनके नाम याद रहें
- 16.** आप छुट्टियों में ग्रामीण इलाके में जाना चाहते हैं, लेकिन आपका जीवनसाथी समृद्ध तट पर जाना चाहता है। उसे यह बताने के लिए आपका विचार बेहतर है, आप:
- अ. प्यार से उसे बताएँगे कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं, आपको ग्रामीण इलाके कितने पसंद हैं और बच्चों व पूरे परिवार को वहाँ कितना मज़ा आएगा
 - आ. बताएँगे कि अगर वह आपके साथ चले तो आप आभारी होंगे और अगली बार आप उनके साथ समृद्ध तट पर जाएँगे
 - इ. तथ्यों का इस्तेमाल करेंगे: ग्रामीण इलाका नज़दीक है, सस्ता है और खेलकूद व फुर्सत भरी गतिविधियों के लिए बेहतर है
- 17.** किसी दिन की गतिविधि की योजना बनाते हुए अक्सर आप:
- अ. लिखकर सूची बनाते हैं, ताकि आप देख सकें कि क्या किया जाना है
 - आ. काम के बारे में सोचते हैं
 - इ. अपने दिमाग़ में मिलने-जुलने वाले लोगों, आने-जाने की जगहों और किए जाने वाले कामों की तस्वीर बनाते हैं
- 18.** आपके किसी दोस्त को कोई परेशानी है और वह आपसे चर्चा करने आया है। आप:
- अ. सहानुभूति व समझदारी भरा रखेया दिखाएँगे
 - आ. कहेंगे कि समस्याएँ उतनी बुरी नहीं होती, जितनी दिखती हैं और उसका कारण बताएँगे
 - इ. समस्या सुलझाने के लिए सुझाव या तार्किक सलाह देंगे
- 19.** दो विवाहित लोगों के बीच प्रेम प्रसंग चल रहा है। आपको उसकी भनक लगने की संभावना कितनी है?
- अ. आप बहुत जल्द उसका पता लगा लेते हैं
 - आ. कुछ समय बाद आप उसके बारे में जान लेंगे
 - इ. शायद आपको पता ही न चले

20. आप ज़िंदगी को कैसे देखते हैं?

- अ. दोस्तों की मौजूदगी और अपने आसपास के लोगों के साथ सामंजस्य के साथ रहना
- आ. निजी स्वतंत्रता बनाए रखते हुए अन्य लोगों के साथ दोस्ती रखना
- इ. उचित लक्ष्य प्राप्त करते हुए, अन्य लोगों से सम्मान प्राप्त करते हुए प्रतिष्ठा प्राप्त करना और प्रगति करना

21. काम करते हुए आपकी प्राथमिकता क्या है:

- अ. अनुकूल लोगों के साथ एक टीम में काम करना
- आ. अपनी जगह बनाए रखते हुए अन्य लोगों के साथ काम करना
- इ. अपने आप काम करना

22. आप जिस तरह की किताबें पढ़ना पसंद करते हैं

- अ. उपन्यास और गल्प साहित्य
- आ. पत्रिकाएँ व समाचार पत्र
- इ. कथेतर साहित्य, आत्मकथाएँ

23. खरीदारी करते हुए आप:

- अ. आवेग में आकर चीज़ें खरीदते हैं, वह भी खास चीज़ें
- आ. योजना बनाकर रखते हैं, लेकिन स्थिति के अनुसार चीज़ें खरीदते हैं
- इ. लेबल पढ़कर लागतों की तुलना करते हैं

24. सोने-जागने और खाने को लेकर आप

- अ. अपनी इच्छा का पालन करते हैं
- आ. एक बुनियादी समय-सारणी रखते हैं, लेकिन लचीलापन बनाए रखते हैं
- इ. प्रतिदिन नियत समय पर ऐसा करते हैं

25. आपने नया काम शुरू किया है और आपकी मुलाकात बहुत से नए लोगों से आपकी मुलाकात हुई है। उनमें से एक आपको घर पर फोन करता है। आप:

- अ. आवाज़ को आसानी से पहचान लेते हैं
- आ. पचास प्रतिशत समय उसे पहचान लेते हैं
- इ. आवाज़ को पहचानने में आपको कठिनाई होती है

26. किसी के साथ बहस करते हुए कौन-सी बात आपको सबसे ज़्यादा परेशान करती है?

- अ. लोगों की खामोशी और प्रतिक्रिया की कमी
- आ. जब वे आपका दृष्टिकोण नहीं देख पाते
- इ. उनके पूछताछ या चुनौतीपूर्ण प्रश्न और टिप्पणियाँ

27. स्कूल में वर्तनी और लेख लिखने को लेकर आपका क्या विचार था?

- अ. आपको दोनों काम आसान लगते थे
- आ. एक में आप ठीकठाक थे, लेकिन दूसरे में आपका प्रदर्शन अच्छा नहीं था
- इ. आप दोनों में ही अच्छे नहीं थे

28. नाचने या जैज़ के अभ्यास के दौरान आप:

- अ. एक बार मुद्राएँ सीखने के बाद आप संगीत को 'महसूस' कर सकते हैं
- आ. कुछ वर्जिंश और नाच कर सकते हैं, लेकिन बाकी लोगों के साथ गडबड़ा जाते हैं
- इ. समय या ताल के साथ क्रदम मिलाने में आपको मुश्किल होती है

29. जानवरों की आवाज़ पहचानने या उनकी नकल करने में आप कितने अच्छे हैं?

- अ. बहुत अच्छे नहीं
- आ. ठीक-ठाक
- इ. बहुत अच्छे

30. थकान भरे दिन के बाद आप क्या करना पसंद करते हैं:

- अ. दोस्तों या परिवार के सदस्यों के साथ बात करना
- आ. दिन के बारे में अन्य लोगों की बात सुनना
- इ. अखबार पढ़ना, टीवी देखना और बात न करना

प्रश्नावली को कैसे आँका जाए

अ, आ और ई जवाबों को जोड़ें और दी गई सारणी का इस्तेमाल कर अंतिम नतीजे तक पहुँचें।

पुरुषों के लिए

$$\begin{array}{ll} \text{अ की संख्या} & \times 10 \text{ अंक} = \\ \text{आ की संख्या} & \times 5 \text{ अंक} = \\ \text{इ की संख्या} & \times 5 \text{ अंक} = \\ & \text{कुल अंक} = \end{array}$$

महिलाओं के लिए

$$\begin{array}{ll} \text{अ की संख्या} & \times 15 \text{ अंक} = \\ \text{आ की संख्या} & \times 5 \text{ अंक} = \\ \text{इ की संख्या} & \times 5 \text{ अंक} = \\ & \text{कुल अंक} = \end{array}$$

जो भी उत्तर आपके जीवन को सटीक ढंग से नहीं दर्शाता या फिर जिसका आपने कोई जवाब न दिया हो, उसे लिए खुद को पाँच अंक दें।

परिणाम का विश्लेषण करना

अधिकतर पुरुषों को 0-180 के बीच अंक मिलेंगे और अधिकांश महिलाओं के अंक 150-300 के बीच रहेंगे। मुख्य तौर पर पुरुषोचित चिंतन के लिए ‘तैयार’ मस्तिष्क अक्सर 150 से कम अंक पाते हैं। वे 0 के जितने नज़दीक होंगे, उतने ही पुरुषोचित होंगे और उतना ही उनका टेस्टोस्टेरॉन स्तर अधिक होगा। ऐसे लोगों में सशक्त तार्किक, विश्लेषणात्मक व मौखिक कौशल होते हैं और वे बहुत अनुशासित व सुव्यवस्थित होते हैं। वे जितना ज्यादा 0 के करीब होते हैं, उतना वे लागत की योजना बनाने और सांख्यिकीय आंकड़ों के नतीजों का पता लगाने में बेहतर होते हैं,

क्योंकि उनकी भावनाएँ इसके आड़े नहीं आती। नकारात्मक श्रेणी में आने वाले अंकों का मतलब अत्यधिक पुरुषोचित गुणों का होना है। ये अंक बताते हैं कि भूम के विकास के आरंभिक चरणों में टेस्टोस्टेरॉन की बड़ी मात्रा मौजूद थी। महिला के अंक जितने कम होंगे, उतनी ही इस बात की संभावना अधिक होगी कि उसका झुकाव समलैंगिकता की ओर हो सकता है।

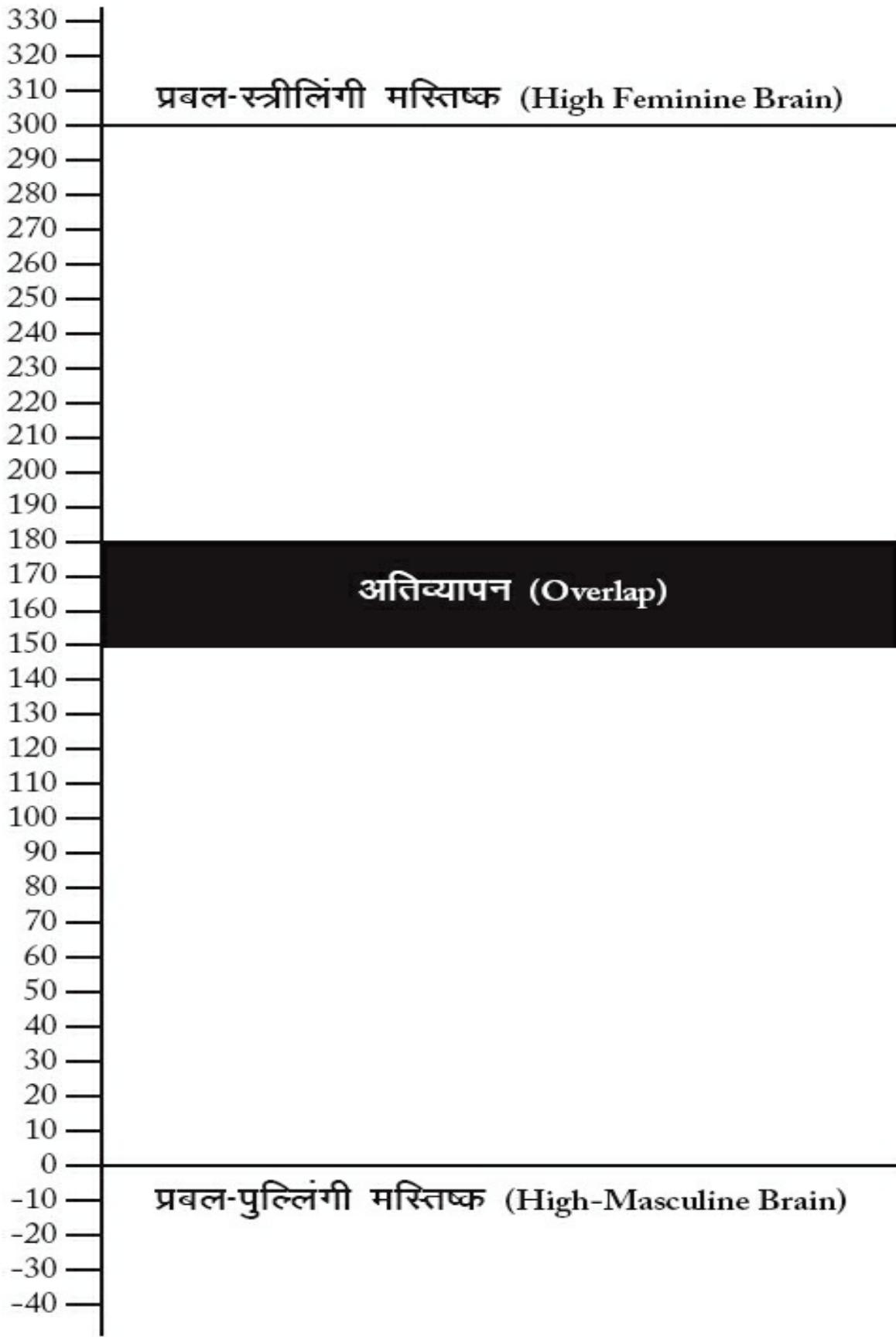
जो मस्तिष्क मुख्यतः स्त्रीसुलभ चिंतन के लिए बने होते हैं, उनके अंक 180 से अधिक होंगे। अंक जितने

अधिक होंगे, मस्तिष्क उतना ही अधिक नारीसुलभ होगा और इस बात की संभावना भी अधिक होगी कि उस व्यक्ति में उल्लेखनीय रचनात्मक, कलात्मक और संगीतात्मक प्रतिभा होगी। ऐसे लोग अपने अंतर्ज्ञान या आंतरिक भावना के आधार पर अधिक निर्णय लेंगे और वे आँकड़ों का न्यूनतम उपयोग कर समस्याओं की पहचान करने में कुशल होते हैं। ऐसे लोग रचनात्मकता और अंतर्दृष्टि का इस्तेमाल कर समस्या सुलझाने में भी माहिर होते हैं। पुरुष के अंक 180 से जितने अधिक होंगे, उसके समलैंगिक होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

0 से कम अंक पाने वाले पुरुष और 300 से अधिक अंक पाने वाली महिलाओं के मस्तिष्क इतने विपरीत ढंग से बने होते हैं कि उनके बीच साक्षा सत्र केवल यही होता है कि वे एक ही ग्रह के निवासी हैं!

150-180 के बीच अंक दोनों लिंगों के लिए वैचारिक अनुरूपता या फिर दोनों शिविरों में उपस्थिति व्यक्त करते हैं। ऐसे लोग स्त्री या पुरुष के दृष्टिकोण के प्रति पक्षपात या पूर्वग्रह नहीं दिखाते और अक्सर विचारों में लचीलापन प्रदर्शित करते हैं, जो किसी भी समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया में लगे किसी भी समूह के लिए फ़ायदेमंद हो सकता है। ऐसे लोग पुरुष व महिलाओं, दोनों से दोस्ती कर सकते हैं।

ब्रेन वायरिंग परीक्षण



निर्णायिक बात

1980 के दशक की शुरुआत से मस्तिष्क से संबंधित हमारी जानकारी ने हमारी कल्पना को भी पीछे छोड़ दिया है। अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने 1990 के दशक को डेकेड ऑफ़ द ब्रेन यानी मस्तिष्क दशक घोषित किया और अब हम मिलेनियम ऑफ़ द माइंड यानी दिमाग़ की सहस्राब्दी में प्रवेश कर चुके हैं। मस्तिष्क और उसके विभिन्न हिस्सों की हमारी चर्चा में हमने अत्यधिक तकनीकी विस्तार से बचने के लिए तंत्रिका विज्ञान का सरलीकरण किया है, लेकिन साथ ही हम अत्यधिक सरलीकरण को लेकर भी सचेत रहे हैं, क्योंकि हमारा मस्तिष्क न्यूरॉन्स की जाली जैसी एक संरचना है, जो मस्तिष्क कोशिकाओं का एक जटिल जमावड़ा है, जिससे मस्तिष्क के विभिन्न हिस्से बनते हैं।

हमारे पाठक तंत्रिका विज्ञानी नहीं बनना चाहते, बल्कि मस्तिष्क की कार्यप्रणाली और विपरीत लिंग के साथ बर्ताव करते हुए काम आने वाली रणनीतियों की बुनियादी जानकारी चाहते हैं। पुरुषों के मस्तिष्क में उस स्थान को बता पाना आसान है, जिसका इस्तेमाल स्थानिक कौशल के लिए होता है और उसके लिए रणनीतियाँ बनाना भी सरल होता है। मस्तिष्क में भावनाओं के संचालन की जगह को ठीक-ठीक बता पाना ज्यादा मुश्किल है। लेकिन इसके बावजूद हम इससे निपटने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ बना सकते हैं।

बात करना और सुनना



महिलाएँ क्या कहती हैं



पुरुष क्या सुनते हैं

बा रबरा और ऐलन एक कॉकटेल पार्टी में जाने के लिए तैयार हो रहे थे। बारबरा ने एक नई पोशाक खरीदी थी और वह सुंदर दिखने में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती थी। उसने दो जोड़ी जूते उठाए, जिनमें से एक नीला था और एक सुनहरा। फिर उसे ऐलन से वही सवाल पूछा, जिससे सभी पुरुष घबराते हैं, ‘डार्लिंग, इस पोशाक के साथ कौन-सी जोड़ी पहनूँ?’

ऐलन के शरीर में एक सिहरन सी दौड़ गई। वह जानता था कि वह मुसीबत में पड़ने वाला है, ‘हम्म... तुम्हें जो भी पसंद हो, प्रिये,’ वह हकलाकर बोला। ‘बताओ भी, ऐलन,’ बारबरा ने बेसब्री से कहा। ‘नीला या सुनहरा... कौन-सा बेहतर रहेगा?’ ‘सुनहरा!’ ऐलन ने घबराते हुए जवाब दिया। ‘नीले में क्या ख़राबी है?’ बारबरा ने पूछा। ‘तुम्हें वे कभी पसंद नहीं आए! मैंने उन पर इतने पैसे ख़र्च किए और तुम्हें उनसे नफरत है, है न?’

ऐलन हताश होकर बोला, ‘बारबरा अगर तुम्हें मेरी राय नहीं चाहिए, तो मुझसे मत पूछा करो!’ उसे लगा कि उससे किसी समस्या का समाधान पूछा गया, लेकिन जब उसे उसका हल बताया तो बारबरा ने उसे कोई अहमियत नहीं दी। दूसरी ओर, बारबरा बस एक महिलाओं की बोलचाल से जुड़ी एक महत्वपूर्ण विशेषता का इस्तेमाल कर रही थी और वह है, बातचीत का अप्रत्यक्ष तरीका। वह पहले ही फैसला कर चुकी थी कि वह कौन से जूते पहनेगी और उसे किसी दूसरे की राय की ज़रूरत नहीं थी; वह तो बस यह पुष्टि चाहती थी कि वह अच्छी लग रही थी। इस अध्याय में हम स्त्री-पुरुषों के बीच संवाद करने के दौरान आने वाली समस्याओं को देखेंगे और उनके कुछ नए हल भी बताएँगे।

‘नीले या सुनहरे जूते’ की रणनीति

अगर जूता चुनने के दौरान कोई महिला पूछती है ‘नीला या सुनहरा’, तो ऐसे में पुरुष को कोई जवाब नहीं देना चाहिए। उसे पूछना चाहिए, ‘तुमने कोई जोड़ा चुन लिया है, डार्लिंग?’ अधिकतर महिलाएँ इस तरीके से हैरान रह जाती हैं, क्योंकि जिन अधिकांश पुरुषों को वे जानती हैं वे तुरंत अपनी पसंद बता देते हैं। ‘मुझे लगता है... शायद मैं सुनहरा पहनना पसंद करूँगी...’ वह कुछ अनिश्चितता के साथ कहेगी। सच्चाई यह है कि वह पहले ही सुनहरा जोड़ा चुन चुकी है। ‘सुनहरा क्यों?’ पुरुष पूछेगा। ‘क्योंकि मैंने सुनहरे गहने पहने हैं और मेरी पोशाक पर भी सुनहरा डिज़ाइन है,’ वह जवाब में कहेगी। किसी चतुर पुरुष की प्रतिक्रिया होगी, ‘वाह! बहुत अच्छी पसंद है! तुम शानदार लगोगी! बहुत बढ़िया! मुझे यह पसंद है!’ आप अब शर्तिया कह सकते हैं कि उसकी रात अच्छी गुज़रेगी।

पुरुष सही ढंग से बात क्यों नहीं कर सकते

हम हज़ारों साल से यह बात जानते हैं कि पुरुष बहुत संवादपट नहीं होते, खासकर जब उनकी तुलना महिलाओं से की जाए। लड़कियाँ न केवल लड़कों से पहले बात करना शुरू करती हैं, बल्कि एक तीन साल की लड़की की शब्दावली उसी उम्र के लड़के के मुकाबले लगभग दोगुनी होती है और उसकी भाषा पूरी तरह समझ भी आती है। स्पीच पैथोलॉजिस्ट्स के पास लड़कों के माता-पिता की कतार लगी होती है और उनकी एक ही शिकायत होती है: ‘यह ठीक से बात नहीं करता।’ अगर लड़के की कोई बड़ी बहन हो तो बोलचाल का यह अंतर अधिक सुस्पष्ट होता है, विशेषकर जब बड़ी बहनें और माँ अक्सर अपने भाइयों व बेटों की ओर से बात करती हैं। किसी भी पाँच साल के लड़के से पूछते ही कि ‘आप कैसे हो?’ अक्सर उसकी माँ या बहनें जवाब देती हैं, ‘वह ठीक है, धन्यवाद।’

माताएँ, बेटियाँ और बहनें अक्सर अपने परिवार के पुरुषों की ओर से बात करती हैं।

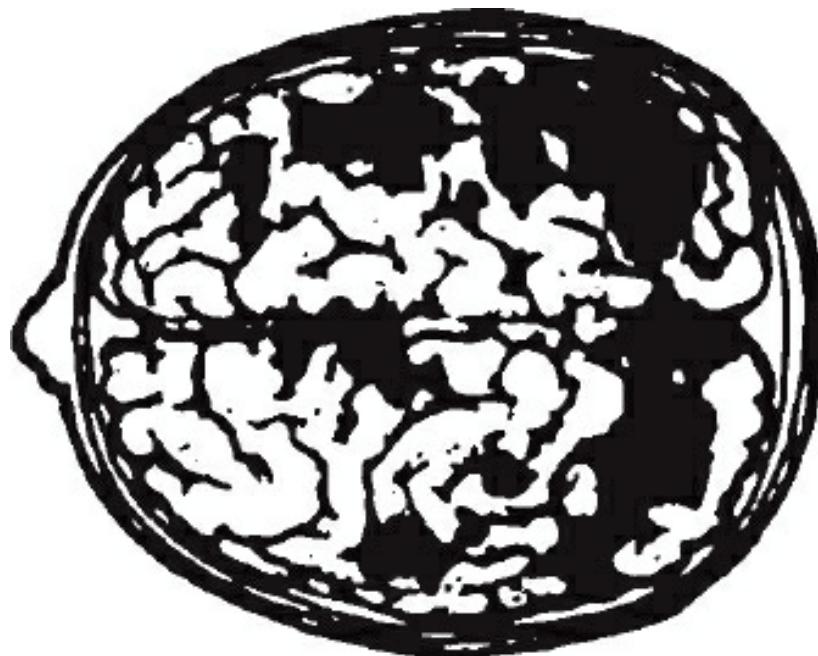
पुरुषों के लिए बोलना व भाषा महत्वपूर्ण मस्तिष्क कौशल नहीं हैं। ये मुख्यतः मस्तिष्क के बाएँ हिस्से में सचालित होते हैं और इनके लिए कोई विशेष स्थान नहीं होता। जिन लोगों के मस्तिष्क के बाएँ हिस्से को क्षति पहुँचती है, उससे पता चलता है कि पुरुषों में अधिकतर बोलचाल संबंधी विकार बाएँ/पिछले गोलार्ध में होते हैं

और महिलाओं के मामले में बाएँ/सामने के हिस्से में होते हैं। एमआरआई स्कैन दिखाते हैं कि जब कोई पुरुष बात करता है, तो बोलने के केंद्र का पता लगाने के लिए उसका पूरा बायाँ गोलार्ध सक्रिय हो जाता है, लेकिन वह ज्यादा कुछ खोज नहीं पाता। परिणामस्वरूप, पुरुष बातचीत करने में उतने माहिर नहीं होते।

लंदन के इंस्टिट्यूट ऑफ सायकियैट्री के प्रमुख डॉ. तन्माँय शर्मा द्वारा 1999 में किए गए शोध से यह एमआरआई ब्रेन स्कैन लिया गया है। जैसा कि आप देख सकते हैं, पुरुषों में बातचीत के कार्य के लिए बहुत कम संवेदनशील स्थान होते हैं।

इससे यही प्रदर्शित होता है कि क्यों लड़के अक्सर मुंह बंद करके बुद्धुदाते हैं और उनका उच्चारण लड़कियों के मुकाबले कम स्पष्ट होता है। बातचीत के दौरान वे ‘हम्म’, ‘अह’ और ‘जैसे’ पूरकों का इस्तेमाल करते हैं, वाक्यों के अंतिम शब्द खा जाते हैं, और बात करते हुए महिलाओं के पाँच स्वरों की तुलना में केवल तीन का इस्तेमाल करते हैं। जब टीवी पर फुटबॉल मैच देखने के लिए पुरुष इकट्ठा होते हैं, तो वे बस वही करते हैं - उनके बीच बातचीत के नाम पर बस यही कहा जाता है कि ‘चिप्स बढ़ा दो’ और ‘क्या और बीयर है?’ किसी टीवी कार्यक्रम को देखने के लिए एक साथ जुटी महिलाओं को बातचीत करने का एक और बहाना मिल जाता है। नतीजतन, वे किसी जटिल मर्डर मिस्टी के बजाय ऐसा टीवी धारावाहिक देखने के लिए जमा होती हैं, जिसके चरित्र व कथानक जाने-पहचाने हों।

दोनों लिंग स्वयं को जिस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं, शायद खेल के अलावा किसी अन्य क्षेत्र में वह उतना अधिक स्पष्ट नहीं दिखाई देता। टीवी पर कोई भी खेल देख लीजिए, आप पाएँगे कि महिला बास्केटबॉल खिलाड़ी अपने मैच का वर्णन कितनी अच्छी तरह संक्षेप में और पूरी तरह समझ में आने लायक तरीके से कर सकती हैं। पुरुष खिलाड़ियों का इंटरव्यू लेने पर उन्हें न केवल अपनी बात सही ढंग से कहने में मुश्किल होती है, बल्कि उनके मुँह ठीक से खुल भी नहीं पाते हैं। किशोरों में भी यह अंतर बहुत स्पष्ट होता है। जब हमने अपनी किशोर बेटी से उसकी पार्टी के बारे में पूछा तो उसने वहाँ हुई हर घटना का बहुत स्पष्ट व्योरा दिया कि किसने किससे क्या कहा, हर किसी को कैसा महसूस हुआ और लोगों ने कैसे कपड़े पहने थे। अपने किशोर बेटे से यही सवाल करने पर उसने बुद्धुदाते हुए कहा, ‘अह... अच्छी थी।’



पुरुषों की बातचीत व भाषा का स्थान काले रंग के क्षेत्र गतिविधि का प्रतिनिधित्व करते हैं। द्वि-इंस्टिट्यूट ऑफ सायकियैट्री, लंदन, 1999

वैलेंटाइन्स-डे पर फूल बेचने वाले पुरुषों से कहते हैं कि वे 'फूलों के माध्यम से अपनी बात कहें' क्योंकि वे जानते हैं कि पुरुषों को शब्दों से अभिव्यक्ति करने में मुश्किल होती है। कार्ड ख़रीदने में पुरुषों को कोई दिक्कत नहीं होती, असली समस्या यह होती है कि उसमें क्या लिखा जाए।

पुरुष अक्सर ऐसे ग्रीटिंग कार्ड से ख़रीदना पसंद करते हैं जिनमें पहले से काफ़ी कुछ छपा होता है। इस कारण उनके लिखने के लिए कम जगह बचती है।

याद रखिए कि पुरुष शिकार का पीछा करने वाले के रूप में विकसित हुए हैं, न कि संवाद करने वाले के रूप में। शिकार करने के दौरान बहुत से शब्देतर संकेत शामिल होते थे और अक्सर शिकारियों को कई घंटे चुपचाप घात लगाकर बैठना होता था। वे बातचीत नहीं करते थे और न एक-दूसरे से जुड़ने का काम करते थे। आधुनिक पुरुष जब अन्य पुरुषों के साथ मछली पकड़ने जाता है, तो वह घंटों बिना बातचीत किए बैठा रह सकता है। उन्हें एक-दूसरे के साथ मज़ा आ रहा होता है, लेकिन उन्हें उसे बताए जाने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। दूसरी ओर, अगर महिलाएँ एक साथ समय बिता रही हैं और उनके बीच बातचीत नहीं हो रही, तो यह किसी बड़ी समस्या का संकेत हो सकता है। पुरुष बातचीत करने की स्थिति के नज़दीक तभी होते हैं, जब उनके विभागीकृत मस्तिष्क में संचार टूट जाता है यानी जब उन्होंने काफ़ी मात्रा में मद्यपान किया होता है।

लड़के और उनकी स्कूली शिक्षा

शुरुआत में स्कूल में लड़कों का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहता, क्योंकि उनकी शाब्दिक क्षमताएँ लड़कियों की तुलना में कमतर होती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि भाषाओं व कला जैसे विषयों में उनका प्रदर्शन ख़राब होता है। वाकपटु लड़कियों के सामने वे बुद्धू जैसा महसूस करते हैं और उपद्रवी तथा उत्पाती बन जाते हैं। यह एक अच्छा विचार है कि लड़कों को एक साल बाद स्कूल भेजना चाहिए, जब उनका भाषा विकास अपने से एक साल छोटी लड़कियों के समकक्ष हो जाए। इससे लड़के खुद को लेकर बेहतर महसूस करेंगे और अपनी उम्र की लड़कियों की वाकपटुता से नहीं सहमेंगे।

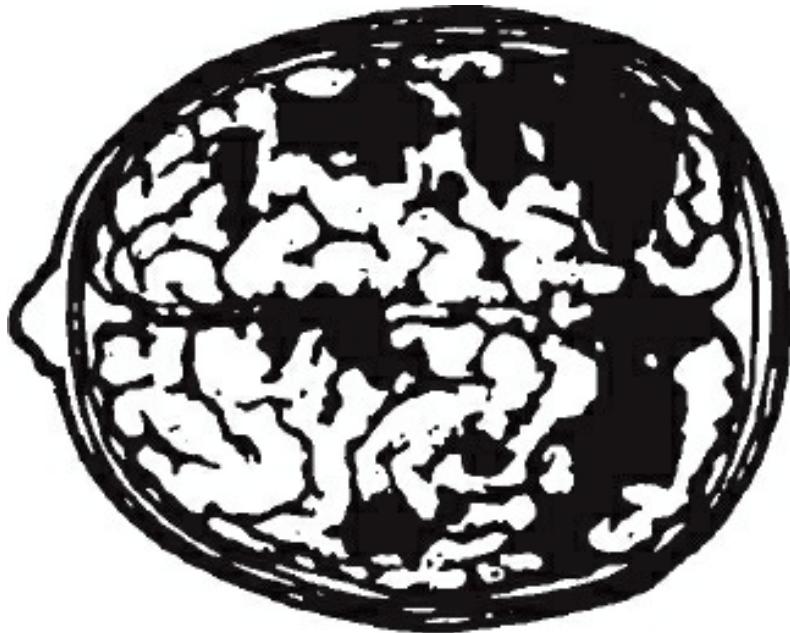
बाद के वर्षों में लड़कियाँ भौतिकी व विज्ञान में पिछड़ जाती हैं, जिनमें स्थानिक क्षमता बहुत महत्वपूर्ण होती है। भाषा सुधारने की कक्षा जहाँ लड़कों से ख़चाखच भरी होती है, जिनके माता-पिता यह आशा रखते हैं कि उनके बेटे आखिरकार भाषा को अच्छी तरह पढ़-लिख और बोल पाएँगे, वहीं लड़कियों पर अपने स्थानिक कौशल को बेहतर करने का कोई दबाव नहीं होता। वे बस अपने विषय बदल लेती हैं।

हाल के वर्षों में यह प्रचलन बढ़ा है कि अंग्रेज़ी, गणित और विज्ञान विषयों में लड़के-लड़कियों को अलग किया जाए। उदाहरण के तौर पर, ऐसेक्स के शेनफील्ड हाई स्कूल में लड़के-लड़कियों को ऐसे वातावरण में सीखने का मौका मिलता है, जिसमें उन्हें विपरीत लिंग से प्रतियोगिता का सामना न करना पड़े। गणित की परीक्षा में लड़कियों से बगीचे की व्यवस्था से जुड़े सवाल पूछे जाते हैं, जबकि लड़कों की परीक्षा हार्डवेयर स्टोर पर आधारित होती है। इस प्रकार का विभाजन करने से स्त्री व पुरुषों के मस्तिष्क की सहज प्राथमिकताओं का लाभ मिलता है और परिणाम बहुत कारगर होते हैं। अंग्रेज़ी में लड़कों के नतीजे राष्ट्रीय औसत से चार गुना अधिक थे, जबकि लड़कियों के गणित व विज्ञान के अंक अन्य स्कूलों की तुलना में लगभग दोगुना थे।

महिलाएँ अच्छी वक्ता क्यों होती हैं

महिलाओं में बोलने से जुड़ा विशिष्ट क्षेत्र प्रमुख तौर पर उनके बाएँ गोलार्ध के आगे वाले हिस्से में स्थित होता है और इसके लिए दाएँ गोलार्ध में भी एक विशिष्ट क्षेत्र होता है। मस्तिष्क के दोनों ओर वाकशक्ति के होने से महिलाएँ बातचीत करने में माहिर होती हैं। उन्हें ऐसा करने में मज़ा आता है और वे ख़बर बात करती हैं। वाकशक्ति को नियंत्रित करने के लिए विशिष्ट क्षेत्र होने के कारण महिला के मस्तिष्क का बाकी हिस्सा अन्य कामों

के लिए उपलब्ध होता है और इसी वजह से वे बातचीत करते हुए कई अन्य विभिन्न प्रकार के कामों को निपटा सकती हैं।



महिलाओं की बोलचाल और भाषा की स्थिति (काले रंग के क्षेत्र गतिविधि प्रदर्शित करते हैं)
इंस्टिट्यूट ऑफ सायकियैट्री, लंदन, 1999

महिलाओं में बोलचाल व भाषा की स्थिति दिखाने वाले इस चित्र की तुलना पुरुषों के मस्तिष्क से कीजिए और आप साफ़ देख सकते हैं कि महिलाएँ बातचीत करने में क्यों माहिर होती हैं, जबकि पुरुषों के मामले में ऐसा नहीं होता।

हाल के शोध दिखाते हैं कि बच्चा अपनी माँ की आवाज़ को गर्भ में रहने के दौरान ही पहचान लेता है, ऐसा शायद माँ के शरीर में से होकर गुज़रती आवाज़ के कारण होता होगा। चार दिन का शिशु अपनी मातृभाषा की बोलचाल के नमूने और विदेशी भाषा की अलग-अलग पहचान कर लेता है। चार महीने की उम्र में शिशु स्वरों की ध्वनियों से जुड़े होंठों की गतिविधियों को पहचान लेते हैं। पहले जन्मदिन से पहले वे शब्दों को उनके अर्थों से जोड़ना शुरू कर देते हैं और डेढ़ साल का होते-होते उनका शब्द भंडार बनना शुरू हो जाता है और दो साल तक की उम्र की लड़कियों के शब्द भंडार में 2000 तक शब्द हो सकते हैं। बौद्धिक और शारीरिक लिहाज़ से किसी वयस्क की सीखने की क्षमता की तुलना में यह एक अनोखी उपलब्धि है।

वाकशक्ति के लिए एक अलग विशिष्ट क्षेत्र मौज़ूद होने के कारण लड़कियाँ लड़कों के मुकाबले विदेशी भाषा ज्यादा तेज़ी से व आसानी से सीख सकती हैं और यही कारण है कि व्याकरण, विराम चिह्न एवं वर्तनी में लड़कियों का प्रदर्शन बेहतर होता है। विदेशों में सेमिनार करने के अपने 25 वर्ष के अनुभव में बहुत कम ऐसा हुआ कि हमारे पास कोई पुरुष अनुवादक रहा हो, अक्सर अनुवादक महिलाएँ रहीं।

विषय	शिक्षकों की संख्या	महिलाओं का %	पुरुषों का %
स्पैनिश	2,700	78	22
फ्रेंच	16,200	75	25

जर्मन	8,100	75	25
ड्रामा	8,900	67	33
अन्य भाषाएँ	1,300	70	30

यह सारणी दिखाती है कि कैसे उन विषयों पर महिलाओं का स्पष्ट वर्चस्व है, जिनमें मस्तिष्क के बाएँ हिस्से की शाब्दिक क्षमता की ज़रूरत होती है। महिलाओं के निश्चित वाकशक्ति केंद्र उन्हें भाषा क्षमता और शाब्दिक कौशल में श्रेष्ठतर बनाते हैं।

ये ऑक्डे दिखाते हैं कि शिक्षा और सरकार जैसे राजनीतिक रूप से सही क्षेत्रों में भी ऋनी-पुरुषों के मस्तिष्क के रुद्धान बहुत सशक्त रूप से किसी शिक्षक द्वारा विषयों के चुनाव को प्रभावित करते हैं। बराबरी की हिमायत करने वाले समूहों को लगता है कि आधे शिक्षक पुरुष हैं और आधी महिलाएँ हैं, लेकिन जैसा कि आप देख सकते हैं कि वाकशक्ति से जुड़े क्षेत्रों पर महिलाओं का वर्चस्व बहुत स्पष्ट है।

मस्तिष्क का बायाँ हिस्सा शरीर के दाहिने भाग की शारीरिक गतिविधियों को नियंत्रित करता है, यही कारण है कि अधिकतर लोग दायें हाथ से लिखते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों महिलाओं की बाएँ हाथ की लिखाई पुरुषों की लिखाई के मुकाबले पढ़ने में स्पष्ट होती है, महिलाओं के निश्चित भाषा केंद्र बोलने व लिखने की क्षमता समेत भाषा के बेहतर इस्तेमाल के लिए पहले से लैस होते हैं।

महिलाओं को बोलने की ज़रूरत क्यों होती है

पुरुषों के मस्तिष्क बहुत बड़े स्तर पर विभागीकृत होते हैं और उनमें जानकारी को अलग करने व जमा करने की क्षमता होती है। समस्याओं से भरे दिन के बाद पुरुष का एक ही लीक पर चलने वाला दिमाग़ उन सभी परेशानियों को बंद करके एक ओर रख देता है। महिलाओं का मस्तिष्क जानकारी का संग्रह इस प्रकार नहीं करता और उसमें समस्याएँ घूमती रहती हैं।

पुरुष मानसिक रूप से अपनी समस्याओं को क्रमबद्ध करता है और उन्हें एक ओर कर देता है। महिलाएँ उन पर मंथन करती रहती हैं।

अपना ध्यान समस्या से हटाने के लिए महिला के सामने एक रास्ता यह होता है कि वह उस पर बात करे और उसे कबूले। जब कोई महिला दिन ढलने पर बातचीत करती है, तो उसका मकसद समस्या से मुक्ति पाना होता है, न कि उसका कोई हल खोजना।

हार्मोन का संबंध

यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न ऑन्टारियो में वैज्ञानिक एलिज़ाबेथ हैंसन ने महिलाओं के प्रदर्शन और ईस्ट्रोजेन हार्मोन पर एक अध्ययन किया। हैंसन ने पाया कि टेस्टोस्टेरॉन के निम्न स्तर के कारण महिलाओं की स्थानिक क्षमता कम होती है, जबकि ईस्ट्रोजेन का उच्च स्तर उनकी वाकपटुता और सूक्ष्म संचालन कौशल को बढ़ाता है। यही कारण है कि मासिक चक्र के दौरान जब ईस्ट्रोजेन का स्तर ऊँचा रहता है, तब महिला का बर्ताव शांतिपूर्ण होता है और वह बहुत अच्छे ढंग से स्वयं को व्यक्त कर सकती है। इसके विपरीत, टेस्टोस्टेरॉन का स्तर बढ़ने पर उसकी बोलचाल अस्थिर होने लगती है, लेकिन स्थानिक कौशल बेहतर होता है यानी वह व्यंग्यात्मक बोली से किसी पुरुष को शायद नीचा न दिखा पाए, लेकिन 10 मीटर की दूरी से फ़ाइंग पैन से उस पर निशाना साध सकती है।

महिलाओं को बात करना पसंद है

जब महिलाएँ कोई फ़िल्म या टीवी कार्यक्रम देखने के लिए मिलकर बैठती हैं, तो वे अक्सर विभिन्न विषयों पर

बातचीत करती हैं, जिनमें बच्चे, पुरुष, कामकाज और उनकी ज़िंदगी में क्या कुछ हो रहा है, सब कुछ शामिल होता है। जब पुरुषों व महिलाओं का समूह मिलकर फ़िल्म देखता है तो पुरुषों को अक्सर महिलाओं को कहना पड़ता है कि वे अपना मुँह बंद रखें। पुरुष या तो बात कर सकते हैं या फिर पर्दे पर ध्यान लगा सकते हैं। वे दोनों काम एक साथ नहीं कर सकते और उन्हें यह भी समझ नहीं आता कि महिलाएँ ऐसा कर सकती हैं। इसके अलावा महिलाएँ मानती हैं कि एक साथ इकट्ठा होने का मतलब वक्त का भरपूर मज़ा लेना है और रिश्ते बनाना है, न कि चुपचाप बैठकर पर्दे को ताकते रहना।

ब्रेक के दौरान पुरुष अक्सर महिला से कहानी के बारे में पूछता है और जानना चाहता है कि किरदारों के बीच रिश्ते कैसे हैं। वह महिलाओं की तरह शरीर के सूक्ष्म हावभावों को नहीं समझ पाता, जो चरित्रों की भावनात्मक स्थिति को दर्शाते हैं। आदिम काल से ही महिलाएँ अन्य महिलाओं व बच्चों के साथ समय बिताती रही हैं, इसलिए उनमें रिश्ते बनाए रखने के लिए सफलतापूर्वक संवाद करने की क्षमता विकसित हुई। किसी महिला के लिए अब भी बातचीत का एक स्पष्ट उद्देश्य है और वह है, रिश्ते व दोस्त बनाना। पुरुषों के लिए बातचीत का मतलब तथ्यों को तरक्कीपूर्ण तरीके से जोड़ना है।

पुरुष टेलीफोन को अन्य लोगों तक तथ्यों व जानकारी पहुँचाने के संचार माध्यम के रूप में देखते हैं, लेकिन महिला इसे जुड़ने के साधन के रूप में देखती है। कोई महिला अपनी दोस्त के साथ दो सप्ताह छुट्टियाँ बिताकर घर लौटने के बाद भी उसी दोस्त से फ़ोन पर दो घंटे तक बात कर सकती है।

इस बात का कोई विश्वसनीय सबूत नहीं है कि सामाजिक अनुकूलन और यह तथ्य कि माँएँ लड़कियों से ज्यादा बात करती हैं, लड़कों के मुकाबले लड़कियों के ज्यादा बात करने का कारण है। सोशल बिहेवियर एंड लैंग्वेज एक्प्रिज़िशन के लेखक मनोविज्ञानी डॉ. माइकल लुईस ने प्रयोग किए, जिनमें पाया गया कि माताएँ लड़कों की तुलना में लड़कियों की ओर ज्यादा देखती हैं और उनसे ज्यादा बात करती हैं। वैज्ञानिक साक्ष्य बताते हैं कि माता-पिता अपने बच्चों के मस्तिष्क के द्वाकाव पर प्रतिक्रिया करते हैं। लड़की का मस्तिष्क संवाद भेजने व प्राप्त करने के मामले में चैकिं बेहतर ढंग से संगठित होता है, इसलिए हम उनसे ज्यादा बात करते हैं। परिणामस्वरूप, जो माताएँ अपने बेटों से बातचीत करने की कोशिश करती हैं, जवाब में भुनभुनाकर कही बात सुनकर निराशा ही हाथ लगती है।

पुरुष खुद से चुपचाप बात करते हैं

पुरुष योद्धा, संरक्षक और समस्या सुलझाने वाले के रूप में विकसित हुए। उनके मस्तिष्क का द्वाकाव और सामाजिक अनुकूलन उन्हें डर या अनिश्चितता दिखाने से रोकता है। यहीं कारण है कि अगर किसी पुरुष को समस्या सुलझाने के लिए कहा जाए तो वह अक्सर कहेगा, ‘क्या आप इसे मेरे पास छोड़ देंगे’ या ‘मैं इस पर विचार करूँगा’। यहीं वह करता भी है - वह उस पर निर्विकार भाव से शांतिपूर्वक विचार करता है। वह तभी बोलेगा जब उसके पास जवाब हो या फिर उत्साहित दिखेगा जब वह अपना जवाब आपको बताने के लिए तैयार हो। पुरुष मुख्यतः अपने भीतर चुपचाप बात करते हैं, क्योंकि उनके पास बाहरी तौर पर बातचीत करने के लिए महिलाओं की तरह शाब्दिक क्षमता नहीं होती। जब कोई पुरुष खिड़की से बाहर देख रहा होता है, तो उसके मस्तिष्क का स्कैन दिखाता है कि वह अपने दिमाग़ में खुद से बातचीत कर रहा होता है। जब कोई महिला पुरुष को ऐसा करते हुए देखती है तो मान लेती है कि वह या तो ऊबा हुआ है या फिर ख़ाली बैठा है और उससे बात करने की कोशिश करती है या उसे कोई काम करने को देती है। इस तरह व्यवधान डाले जाने पर वह व्यक्ति क्रोधित हो जाता है। जैसा कि हम जानते हैं, दरअसल वह एक बार में एक से ज्यादा काम नहीं कर सकता।

ख़ामोशी से बातचीत करने का नकारात्मक पक्ष

जब कोई पुरुष अन्य पुरुषों के साथ होता है, तो अपने दिमाग़ में बात करने में कोई समस्या नहीं होती। पुरुष लंबे समय तक किसी मीटिंग में बैठे रह सकते हैं, उनके बीच कोई बातचीत न होने पर भी किसी को कोई परेशानी नहीं होती - यह बिल्कुल मछली पकड़ने जैसा है। पुरुष अक्सर काम के बाद ‘ख़ामोशी से एक ड्रिंक’ लेना पसंद करते हैं और उसका मतलब ठीक वही होता है - बिल्कुल ख़ामोशी। अगर कोई पुरुष किसी एक महिला या फिर महिलाओं के समूह के साथ है, तो महिलाओं को लगेगा कि वह उदासीन है या फिर उनके साथ शामिल

नहीं होना चाहता। अगर पुरुष महिलाओं के साथ संपर्क में सफल रहना चाहते हैं तो उन्हें अधिक बातचीत करने की ज़रूरत होगी।

महिलाएँ ऊँचे स्वर में सोचती हैं

हमारे एक सेमिनार में एक पुरुष का कहना था, ‘मेरी पत्नी जब परेशाना होती है या फिर जब वह दिनभर किए जाने वाले काम के बारे में बात करती है, तो मुझे पागल कर देती है। वह विकल्पों, संभावनाओं, उसमें शामिल लोगों, उसे क्या करना है, उसे कहाँ जाना है, इस सब पर ज़ोर-ज़ोर से बात करती है। इससे ध्यान बँट जाता है और मैं किसी भी काम पर ध्यान नहीं लगा पाता।’

महिला बिना किसी क्रम के अपने सभी विकल्पों और संभावनाओं को शाब्दिक रूप से व्यक्त करती है।

महिला का मस्तिष्क इस तरह बना है कि वह बोलचाल का इस्तेमाल अभिव्यक्ति के प्रमुख स्वरूप के रूप में करता है और यह उसकी एक बड़ी खूबी है। अगर किसी पुरुष को पाँच-छह कामों की सूची बतानी है, तो वह कहेगा, ‘मुझे कुछ काम करने हैं। मैं बाद में मिलता हूँ।’ जबकि अगर महिला को यही बात बतानी है तो वह सभी बातों की एक सूची बोलकर आपके सामने रख देगी और अपने सभी विकल्पों व संभावनाओं का उल्लेख भी करेगी। वह कहेगी, ‘देखते हैं। मुझे ड्राइ-क्लीनिंग के कपड़े लेने हैं, कार धूलवानी है, फिर मैं डाकघर से पार्सल लूँगी, हो सकता है कि मैं...’ कई अन्य कारणों में से यह एक कारण है, जिससे पुरुष महिलाओं पर बातूनी होने का आरोप लगाते हैं।

ऊँचे स्वर में सोचने का नकारात्मक पक्ष

बोलकर सोचने से महिलाओं को लगता है कि बोलकर सोचना दोस्ताना किस्म का बर्ताव है और यह साझेदारी दिखाता है, जबकि पुरुष इसे अलग ढंग से देखते हैं। निजी स्तर पर पुरुष सोचता है कि महिला उसे समस्याओं की सूची थमा रही है, जिसे उसे ठीक करना है। इस कारण वह बेचैन, परेशान हो जाता है या फिर महिला को बताने की कोशिश करने लगता है कि उसे क्या करना चाहिए। बिज़नेस मीटिंग में अपनी सोच को ऊँचे स्वर में ज़ाहिर करने वाली महिलाओं को पुरुष बेतरतीब, अनुशासनहीन या नासमझ समझते हैं। ऐसे में पुरुषों को प्रभावित करने के लिए महिला को अपनी सोच को बोलकर व्यक्त नहीं करना चाहिए, बल्कि सिर्फ निष्कर्षों की बात करनी चाहिए। किसी रिश्ते में दोनों साथियों को समस्या हल करने के अपने अलग तरीकों पर बातचीत करनी चाहिए। पुरुषों को यह समझना चाहिए कि जब महिला बात करती है, तो वह उससे प्रतिक्रिया में किसी हल की उम्मीद नहीं करती। महिलाओं को भी समझना चाहिए कि जब पुरुष बात नहीं कर रहा होता, तो यह इस बात का संकेत नहीं है कि कुछ गड़बड़ है।

महिलाएँ बात करती हैं, पुरुष उसे सिर खाना समझते हैं

महिलाओं के मस्तिष्क की संरचना इस प्रकार की होती है कि बातचीत के माध्यम से रिश्ते बनाना उनकी प्राथमिकता होता है। इटली की महिलाएँ सबसे बातूनी होती हैं और वे प्रतिदिन 6000-8,000 शब्द बोलती हैं। इसके अलावा वे संचार के लिए 2,000-3000 अतिरिक्त ध्वनियों, 8,000-10,000 मुद्राओं, चेहरे की अभिव्यक्तियों, सिर की गतिविधियों और अन्य शारीरिक संकेतों का इस्तेमाल भी करती हैं। इससे इन महिलाओं को अपने संदेशों को व्यक्त करने में हर रोज़ औसतन 20,000 से अधिक संचार ‘शब्दों’ का लाभ मिलता है। पश्चिमी देशों की महिलाएँ इसका 80 प्रतिशत हिस्सा बोलती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि क्यों ब्रिटिश मेडिकल असोसिएशन ने हाल ही में कहा है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं को जबड़े की परेशानियाँ होने की आशंका

चार गुना अधिक होती है।

‘एक बार मैंने अपनी पत्नी से छह महीने तक बात नहीं की’, हास्य अभिनेता ने कहा। ‘मैं उसे टोकना नहीं चाहता था।’

किसी महिला की रोज़मर्रा की गपशप की तुलना पुरुष की बातचीत से करें। वह केवल 2,000-4,000 शब्दों व 1,000-2,000 स्वरों का इस्तेमाल करता है और सिर्फ़ 2,000-3,000 शारीरिक संकेतों को अपनाता है। उसका दैनिक औसत कुल मिलाकर लगभग 7,000 संचार ‘शब्दों’ का होता है - यह महिलाओं द्वारा इस्तेमाल शब्दों के एक-तिहाई से थोड़ा ही अधिक है।

बोलचाल का यह अंतर तब बहुत अधिक स्पष्ट होता है, जब दिनभर के कामकाज के बाद रुकी-पुरुष रात के खाने के लिए साथ बैठते हैं। वह अपने 7,000 ‘शब्द’ ख्रत्म कर चुका होता है और उसकी बातचीत की कोई इच्छा नहीं होती। महिला की स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि वह दिन भर क्या करती रही है। अगर वह दिन भर लोगों से बातचीत करती रही है, तो हो सकता है कि उसके ‘शब्दों’ का कोटा समाप्त हो चुका हो और उसमें बात करने की इच्छा न बची हो। अगर उसका दिन घर पर बच्चों के साथ गुज़रा हो, तो हो सकता है कि उसने 2-3,000 ‘शब्दों’ का ही इस्तेमाल किया हो और उसके पास अब भी 15,000 शब्द बचे हों! हम सभी खाने की मेज़ पर होने वाले इस टकराव से परिचित हैं।

फ़ियोना: ‘हाय डार्लिंग... तुम्हें देखकर अच्छा लगा। दिन कैसा रहा?’

माइक: ‘अच्छा।’

फ़ियोना: ‘ब्रायन ने बताया कि तुम पीटर थॉमसन के साथ कोई बड़ी डील करने वाले हो। वह कैसी रही?’

माइक: ‘अच्छी रही।’

फ़ियोना: ‘बहुत बढ़िया। वह टेढ़ी खीर साबित हो सकता है। तुम्हें लगता है कि वह तुम्हारी सलाह लेगा?’

माइक: ‘हाँ।’

...और इस तरह बात चलती रही।

माइक को लगता है कि जैसे उससे पूछताछ की जा रही हो और वह चिढ़ जाता है। वह बस ‘खामोशी और सुकून’ चाहता है। वह इस बात पर बहस नहीं चाहता कि वह बात क्यों नहीं कर रहा, इसलिए वह फ़ियोना से पूछता है: ‘तुम्हारा दिन कैसा रहा?’

वह शुरू हो जाती है और अपनी बात जारी रखती है। अपने पूरे दिन का हर ब्योरा उसके सामने रख देती है।

‘मेरा दिन भी क्या दिन था! मैंने आज शहर की तरफ़ न जाने का फ़ैसला किया, क्योंकि मेरी चचेरी बहन का एक अच्छा दोस्त बस स्टेशन पर काम करता है और उसने बताया कि आज हड्डताल होगी, इसलिए मैंने चलकर जाने का फ़ैसला किया। मौसम का पूर्वानुमान था कि आज धूप खिली होगी, इसलिए मैंने अपनी नीली पोशाक पहनी, वही जो मैंने अमेरिका में खरीदी थी... खैर... चलते हुए मेरी मुलाक़ात सूज़न से हुई और...’

वह अपने बचे हुए शब्द बोलना शुरू करती है। पुरुष सोचने लगता है कि वह कब अपना मुँह बंद करेगी और उसे शांति से रहने देगी। उसे लगता है कि वह ‘बकवक से उसकी जान ले लेगी’ ‘मुझे बस थोड़ा सुकून और शांति चाहिए!’ सभी पुरुषों की हर जगह यही पुकार होती है। वह शिकारी है और दिन भर खाने का पीछा करता है। वह बस चुपचाप आग को देखते रहना चाहता है। समस्या तब आती है, जब रुकी को लगता है कि उस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा और वह नाराज़ हो जाती है।

जब कोई पुरुष खामोश होता है, तो महिला को लगने लगता है
कि वह उससे प्यार नहीं करता।

महिला के बात करने का मतलब बात करना ही होता है। लेकिन पुरुष उसके द्वारा लगातार समस्याओं पर बात करने को हल सुझाने के रूप में देखते हैं। अपने विश्वेषणात्मक मस्तिष्क के कारण वे उसे टोकते रहते हैं।

फ़ियोना: ‘...मैं पटरी पर फिसली और मेरे नए जूतों की एड़ी टूट गई और फिर...’

माइक: (टोकते हुए) ‘एक मिनट, फ़ियोना... शॉपिंग सेंटर में तुम्हें ऊँची एड़ी के सैंडल्स नहीं पहनने चाहिए। मैंने उस पर एक सर्वे देखा है। यह ख़तरनाक है - ट्रेनर्स पहनना ज्यादा सुरक्षित है!’

वह सोचता है, समस्या सुलझ गई!

वह सोचती है, यह चुपचाप रहकर मेरी बात क्यों नहीं सुन सकता? वह अपनी बात जारी रखती है -

फ़ियोना: ‘...मैं जब कार तक पहुँची तो उसके एक टायर में हवा नहीं थी, इसलिए...’

माइक: (टोकते हुए) ‘तुम्हें गैराज में ही टायर में हवा के दबाव की जाँच करवा लेनी चाहिए। इस तरह तुम फिर से मुश्किल में नहीं पड़ोगी।’

वह सोचता है, मैंने उसकी एक और समस्या सुलझा ली।

वह सोचती है, यह चुपचाप रहकर मेरी बात क्यों नहीं सुन सकता?

वह सोचता है, यह अपना मुँह क्यों नहीं बंद कर लेती और मुझे अकेला छोड़ देती? क्या मुझे इसकी सभी परेशानियाँ दूर करनी होंगी? यह खुद ही पहली बार सभी काम ठीक से क्यों नहीं करती?

वह माइक के टोकने को नज़रअंदाज़ कर देती है और अपनी बात कहना जारी रखती है।

हमने हर जगह हज़ारों महिलाओं का सर्वेक्षण किया और उन्होंने एक बात बिल्कुल स्पष्ट की:

जब दिन समाप्त होने पर कोई महिला इस्तेमाल न किए गए अपने
शब्द बोलती है तो वह टोकाटाकी नहीं चाहती और न ही अपनी
समस्याओं का कोई समाधान चाहती है।

यह पुरुषों के लिए खुशबूवरी है - आपको कोई प्रतिक्रिया नहीं करनी, बस उनकी बात सुननी है। अपनी बात पूरी करने पर महिला को राहत व खुशी का एहसास होता है। साथ ही वह सोचती है कि आप बात सुनने के मामले में बहुत अच्छे हैं और इस कारण आपकी रात अच्छी गुज़र सकती है।

आधुनिक महिला के लिए तनाव से निपटने का एक तरीका रोज़मर्रा की परेशानियों पर बात करना है। वे इसे एक-दूसरे के साथ जुड़ने व सहारा देने के रूप में देखती हैं। यहीं कारण है कि काउंसलर के पास जाने वाले अधिकतर लोगों में महिलाएँ शामिल होती हैं और अधिकतर काउंसलर भी महिलाएँ होती हैं, जो सुनने के लिए प्रशिक्षित होती हैं।

दंपति क्यों नाकाम रहते हैं

74 प्रतिशत कामकाजी और 98 प्रतिशत गैर-कामकाजी महिलाओं के अनुसार उनके पति या बॉयफ्रेंड्स की सबसे बड़ी नाकामी उनके द्वारा बात करने में आनाकानी करना है, खासकर पूरा दिन बीतने के बाद। पहले की पीढ़ियों की महिलाओं को यह परेशानी महसूस नहीं हुई, क्योंकि उनके पास ढेर सारे बच्चे और बातचीत व सहारे के लिए अन्य महिलाएँ होती थीं। अब घर पर रहने वाली माताओं को अकेलापन या कटा हुआ महसूस हो सकता है, क्योंकि संभव है कि उनके पड़ोस की महिलाएँ काम पर जाती हों। कामकाजी महिलाओं को बातचीत न करने वाले पुरुषों से ज्यादा परेशानी नहीं होती, क्योंकि वे दिन भर बाकी लोगों से बात करती रहती हैं। इसमें किसी की कोई गलती नहीं है। हम उस पहली पीढ़ी में से हैं, जिसके सामने सफल रिश्तों के लिए कोई आदर्श जोड़े नहीं हैं। हमारे माता-पिता को यह समस्या कभी नहीं हुई। अच्छी बात यह है कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए ये ज़रूरी हुनर हम सीख सकते हैं।

पुरुष कैसे बात करते हैं

किसी पुरुष के वाक्य स्त्री के वाक्यों की तुलना में छोटे और अधिक संगठित होते हैं। वे साधारण तरीके से शुरू होते हैं, उनमें मुद्रे की बात व नतीजे बिल्कुल स्पष्ट होते हैं। यह जानना आसान होता है कि उसका तात्पर्य क्या है या उसे क्या चाहिए। अगर आप बहुत से विषयों पर एक साथ बातचीत करें, तो पुरुष गडबड़ा जाएगा। किसी स्त्री के लिए यह समझना ज़रूरी है कि अगर वह पुरुष को आश्वस्त करना चाहती है या उससे कोई बात मनवाना चाहती है, तो उसे एक बार में उसके सामने केवल एक स्पष्ट बात या विचार रखना चाहिए।

पुरुष से बात करने का पहला नियम है: बात को सरल रखें! उससे एक बार में एक ही बात करें।

अगर आप स्त्री-पुरुषों के मिले-जुले समूह के सामने कोई विचार रख रहे हैं, तो अपनी बात कहने के लिए पुरुषों के बोलने का तरीका अपनाना अधिक सुरक्षित रहेगा। महिला व पुरुष ‘पुरुषों के बात’ करने के तरीके को समझ सकते हैं, लेकिन पुरुषों को महिलाओं की तरह विभिन्न विषयों पर बात करने का तरीका समझने में मुश्किल होगी और बात में उनकी दिलचस्पी ख़त्म हो सकती है।

महिलाएँ कई विषयों पर एक साथ बात कर सकती हैं

मस्तिष्क के बाएँ व दाएँ गोलार्ध और बोलचाल के लिए विशिष्ट स्थानों के बीच जानकारी के अधिक प्रवाह के कारण अधिकतर महिलाएँ एक ही समय पर कई विषयों पर बात कर सकती हैं और कई बार एक ही वाक्य में वे ऐसा कर सकती हैं। यह एक ही समय तीन या चार गेंदों को एक साथ उछालने जैसा है और अधिकतर महिलाएँ सहजता से ऐसा कर सकती हैं। केवल यही नहीं, बल्कि महिलाएँ उन महिलाओं के साथ भी कई विषयों पर एक साथ बात कर सकती हैं, जो खुद भी ऐसा ही कर रही होती हैं और मजेदार बात यह है कि उनमें से किसी से भी एक भी गेंद नहीं गिरती यानी सभी को सब कुछ समझ में आ जाता है।

बातचीत के अंत में हर महिला कई विषयों व घटनाओं के बारे में कुछ न कुछ जानती है और हरेक के मायने जानती हैं। इस तरह कई तरह के काम एक साथ करने वाली यह क्षमता पुरुषों को हताश कर देती है, क्योंकि उनका दिमाग़ एक ही लीक पर चल सकता है और वे एक समय में एक ही विषय को सँभाल सकते हैं। जब महिलाओं का कोई समझ कई विषयों पर एक साथ बात कर रहा होता है, तो पुरुष पूरी तरह हैरानी और असमंजस में पड़ जाते हैं।

कोई महिला भले किसी एक विषय से शुरूआत करे, लेकिन वाक्य के बीच में ही वह दूसरे विषय पर चली जाती है, फिर बिना किसी चेतावनी के पहले विषय पर लौट आती है और बीच-बीच में बिल्कुल अलग किसी की बात भी करती है। पुरुष हैरान रह जाते हैं और बेवकूफ़ जैसा महसूस करते हैं। पीज़ के घर में होने वाली इस पारिवारिक बातचीत को देखिए:

ऐलन: ‘ज़रा एक मिनट - दफ्तर में किसने किससे क्या कहा?’

बारबरा: ‘मैं दफ्तर के बारे में बात नहीं कर रही थी - मैं तो अपने जीजाजी के बारे में बात कर रही थी।’

ऐलन: ‘तुम्हारे जीजा? तुमने बताया नहीं कि तुमने बीच में विषय बदल दिया!’

बारबरा: ‘तुम्हें बात पर ज्यादा ध्यान देना होगा। हर किसी की समझ में आ गया।’

फ़ियोना: हाँ, मैं जानती हूँ कि वे क्या कह रही थीं। मुझे बात अच्छी

(बहन) तरह समझ आ गई।

जैस्मिन: मुझे भी। डैड, आप तो कुछ समझे ही नहीं! आप किसी बात

(वेटी) पर ध्यान नहीं देते।

ऐलन: ‘आप सबके सामने मैं हार मानता हूँ।’

कैमरॉनः हाँ, मैं भी। लेकिन मैं तो अभी बच्चा हूँ।
(बेटा)

पुरुष गलियों की भूलभूलैया से होकर एक जगह से दूसरी जगह
भले पहुँच जाएँ, लेकिन उन्हें ऐसी महिलाओं के बीच में रख
दीजिए जो एक ही समय में कई विषयों पर बात कर रही हों, तो
वे पूरी तरह गड़बड़ा जाएँगे।

विभिन्न कामों को एक साथ करने की यह जटिल विशेषता लगभग सभी महिलाओं में पाई जाती है। सचिवों की बात लीजिए। उनकी नौकरी इस प्रकार की होती है कि एक साथ कई तरह के काम करना उनके लिए बहुत ज़रूरी होता है। इसमें कोई आश्र्य नहीं कि 1998 में यूके में 716148 सचिवों में से 99.1 प्रतिशत महिलाएँ थीं, जबकि पुरुषों की संख्या मात्र 5,913 थी। कुछ समूह इसका श्रेय इस बात को देते हैं कि लड़कियों को स्कूल के दिनों से ही इस तरह के कौशल के लिए तैयार किया जाता है। इस तर्क में इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता कि महिलाओं में शाब्दिक, संगठनात्मक और कई तरह के काम एक साथ करने की क्षमता होती है। सामुदायिक कार्य के क्षेत्रों, परामर्श देने और कल्याणकारी प्रणाली आदि में भी जहाँ संगठन समान अवसरों की नीतियों को लेकर प्रतिबद्ध होते हैं, 1998 में ब्रिटेन में इन कामों में लगे 144,266 लोगों में से 43,816 पुरुष थे, जबकि महिलाओं की संख्या 100,450 थी। जहाँ कहीं संचार और शाब्दिक कौशल की आवश्यकता होती है, वहाँ महिलाओं का वर्चस्व होता है।

मस्तिष्क के स्कैन क्या दिखाते हैं

जब कोई महिला बोल रही होती है, तो उसके दिमाग़ के स्कैन दिखाते हैं कि बोलचाल को नियंत्रित करने वाले उसके बाएँ व दाएँ गोलार्ध के केंद्र काम कर रहे होते हैं। उसके श्वेष केंद्र भी तभी काम कर रहे होते हैं। कई तरह के काम एक साथ करने की इस सशक्त क्षमता के कारण महिला एक साथ बोलने व सुनने का काम कर सकती है और ऐसा वह कई विभिन्न विषयों पर कर सकती है। महिलाओं की इस खासियत के बारे में जानकर पुरुष भौंचके रह जाते हैं, क्योंकि उन्हें तो लगता था कि महिलाएँ बहुत शोर मचाती हैं।

महिलाएँ बोलने व सुनने का काम एक साथ कर सकती हैं और उसके साथ ही वे पुरुषों पर इल्ज़ाम लगाती हैं कि वे दोनों में से कोई काम ठीक से नहीं कर सकते।

महिलाओं की बात करने की आदत पर हज़ारों साल से पुरुष उनका मज़ाक उड़ाते रहे हैं। किसी भी देश में हुए सम्मेलन में सभी पुरुष वही बातें कहते हैं - 'जरा उन सभी महिलाओं को बात करते हुए सुनिए - बक, बक, बक - कोई किसी की बात नहीं सुन रही!' चीनी, जर्मन और नॉर्वे के पुरुष भी अफ्रीकी व इन्दूइट पुरुषों जितना ही बोलते हैं। बस अंतर इतना ही होता है कि जब पुरुष बात करते हैं तो वे बारी-बारी से बोलने व सुनने का काम करते हैं। इसका कारण हम जानते हैं कि पुरुष एक समय में या तो बात कर सकते हैं या फिर उसे सुन सकते हैं - वे दोनों काम एक साथ नहीं कर सकते।

पुरुषों के साथ बात करने की रणनीतियाँ

पुरुष आमतौर पर एक-दूसरे को तभी टोकते हैं, जब वे या तो मुकाबला कर रहे हों या फिर आक्रामक हो रहे हों।

अगर आप किसी पुरुष के साथ संवाद करना चाहते हैं, तो साधारण सी नीति यह होनी चाहिए कि उसके बोलने के दौरान आप बीच में उसे न टोकें। किसी महिला के लिए ऐसा करना मुश्किल होता है, क्योंकि उसके मुताबिक साथ-साथ बात करने से रिश्ते बनते हैं और बातचीत में भागीदारी स्पष्ट होती है। उसकी हार्दिक इच्छा होती है कि वह बातचीत को विभिन्न विषयों पर ले जाए, ताकि पुरुष को प्रभावित किया जा सके और उसे महत्वपूर्ण महसूस करवाया जा सके। लेकिन जब महिला ऐसा करती है, तो पुरुष वहरे जैसा हो जाता है। वह बुरा मान सकता है, क्योंकि महिला का ऐसा करना उसे टोकाटोकी जैसा लगता है।

पुरुष बारी-बारी से बात करते हैं, इसलिए जब किसी पुरुष की बारी हो, तो उसे बोलने देना चाहिए।

‘बीच में बोलना बंद करो!’ हर कहीं और हर भाषा में पुरुष चिल्ला-चिल्लाकर महिलाओं से यही कहते हैं। पुरुष के वाक्य किसी हल की ओर लक्षित होते हैं और उसके लिए वाक्य के अंत तक पहुँचना ज़रूरी है, अन्यथा उसकी बातचीत बेमायने हो जाएगी। वह बातचीत में अलग-अलग समय पर कई मुद्दों को नहीं सँभाल पाता और उसके दृष्टिकोण में ऐसा करना बदतमीज़ी और बेवकूफ़ी है। महिला के लिए यह बात अनजानी है। वह पुरुष से घनिष्ठता बनाने और उसे महत्वपूर्ण महसूस करवाने के लिए कई विषयों को एक साथ जोड़ती है। यह जले पर नमक छिड़कने जैसा है, लेकिन स्त्री-पुरुष की एक सामान्य बातचीत में 76 प्रतिशत टोकाटोकी पुरुष करते हैं!

पुरुषों को भारी-भरकम शब्द क्यों पसंद हैं

बोलचाल के लिए मस्तिष्क में कोई निश्चित स्थान न होने के कारण शिकारी के लिए यह ज़रूरी था कि वह कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा जानकारी का संचार कर सके, इसलिए उसके मस्तिष्क में शब्दावली के लिए निश्चित क्षेत्र विकसित हुए, जो कि उसके बाएँ गोलार्ध के अगले व पिछले हिस्से में केंद्रित हैं। महिलाओं के मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों के अगले व पिछले हिस्से में शब्दावली मौजूद होती है और यह उसकी बड़ी ख़ूबी नहीं है। नतीजतन, शब्दों की परिभाषा व उनके अर्थ महिला के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि वह शब्दों के मायने के लिए स्वर के उतार-चढ़ाव पर और भावनात्मक पहलू के लिए शारीरिक भाषा पर निर्भर करती है।



पुरुष मस्तिष्क में शब्दावली की स्थिति

यही कारण है कि पुरुषों के लिए शब्दों के अर्थ क्यों महत्वपूर्ण हो जाते हैं और क्यों वे परिभाषा का इस्तेमाल दूसरे पुरुष या स्त्री पर बढ़त पाने के लिए करते हैं। पुरुष भाषा का इस्तेमाल एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने में करते हैं और परिभाषा इस खेल में एक महत्वपूर्ण युक्ति बन जाती है। अगर कोई पुरुष बहुत मज़बूती से या असरदार ढंग से अपनी बात कहने की कोशिश कर रहा है, मसलन, ‘...वह अपनी बात स्पष्टता से नहीं बता पा रहा था या फिर बुनियादी बात पर नहीं पहुँच पा रहा था, ताकि हर कोई उसकी बात समझ सके,’ ऐसे में दूसरा पुरुष बीच में टोक सकता है, ‘उसने स्पष्टता से अभिव्यक्ति नहीं की?’ ताकि पहले पुरुष की कही बात को बेहतर ढंग से व्यक्त कर सके और उससे एक क़दम आगे निकल सके। या फिर प्रतिस्पर्धी पुरुष किसी दूसरे व्यक्ति के समूचे वाक्य का एक ही शब्द में सार दे सकता है।

महिलाएँ शब्दों का इस्तेमाल प्रतिफल के रूप में करती हैं

महिला शब्दों का इस्तेमाल भागीदारी दिखाने और रिश्ते बनाने के लिए करती है, इसलिए उसके लिए उसके शब्द एक तरह से प्रतिफल का एक स्वरूप होते हैं। अगर वह आपको पसंद करती है और आपकी कही बात से सहमत है या आपकी दोस्त बनना चाहती है, तो वह आपसे ख़ूब बातें करेगी। इसका उलटा भी सच है: अगर वह आपको सज़ा देना चाहती है या आपको जताना चाहती है कि वह आपकी दोस्त नहीं है, तो वह बात नहीं करेगी। पुरुष अक्सर इसे ‘ख़ामोश सलूक’ कहते हैं और यदि कोई महिला कहे कि ‘मैं तुमसे कभी बात नहीं करूँगी!’ तो इस धर्मकी को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

यदि कोई महिला आपसे बहुत बात कर रही है, तो वह आपको पसंद करती है। अगर वह आपसे बात नहीं कर रही तो आप ज़रूर मुश्किल में हैं।

औसतन एक पुरुष को लगभग नौ मिनट की खामोशी के बाद समझ आता है कि उसे सजा दी जा रही है। नौ मिनट की समय सीमा तक पहुँचने से पहले वह इसे फ्रायदे के रूप में देखता है कि उसे कुछ 'शांति और सुकून' मिल रहा है। हर जगह पुरुषों की शिकायत होती है कि महिलाएँ बहुत बातौनी होती हैं। सच है कि पुरुषों की तुलना में वे ज़्यादा बात करती हैं।

महिलाएँ अप्रत्यक्ष होती हैं

दिन बहुत अच्छा था, वे घर से थोड़ी दूर स्थित खुबसूरत घाटी की ओर एक सुकूनभरा सप्ताहांत बिताने जा रहे थे। बल खाते पहाड़ी रास्तों पर आगे बढ़ते हुए जॉन ने रास्ते पर पूरा ध्यान लगाने के लिए रेडियो बंद किया। वह रेडियो सुनने के साथ-साथ सामने आ रहे मॉडॉन पर ध्यान नहीं दे सकता था।

उसकी गर्लफ्रेंड ऐलीसन ने कहा, 'जॉन, क्या तुम कॉफ़ी लेना पसंद करोगे?'

जॉन मस्कुराते हुए बोला, 'नहीं, शुक्रिया, मुझे नहीं चाहिए।' वह सोच रहा था कि ऐलीसन कितनी अच्छी है और उसका कितना ख़्याल रखती है। थोड़े समय बाद जॉन ने ग़ौर किया कि ऐलीसन बिल्कुल ख़ामोश बैठी थी, उसे लगा कि शायद उसने कुछ गड़बड़ कर दी है। 'सब कुछ ठीक है न, डार्लिंग?' उसने पूछा। 'बिल्कुल ठीक है,' ऐलीसन ने फटाक से जवाब दिया। असमंजस में पड़े जॉन ने पूछा, 'तो... परेशानी क्या है?' वह उपहास करते हुए बोली, 'तुम तो रुकते ही नहीं!' जॉन के विश्वेषणात्मक मस्तिष्क ने याद करने की कोशिश की कि उसने 'रुकन' शब्द का कब इस्तेमाल किया था। उसे पूरा विश्वास था कि ऐलीसन ने उसे रुकने को नहीं कहा था और उसने वही उसे भी बताया। ऐलीसन ने कहा कि उसे थोड़ा संवेदनशील होना चाहिए। जब उसने पूछा कि क्या जॉन कॉफ़ी लेगा, तो उसका मतलब था कि उसे कॉफ़ी चाहिए। 'क्या मुझे मन पड़ना आना चाहिए?' जॉन ने व्यंग्य भरे स्वर में पूछा।

'मुझे की बात करो, प्लीज़!' पुरुष अक्सर हर जगह महिलाओं से यह कहते सुनाई पड़ते हैं। जब कभी महिला बात करती है, तो वह अप्रत्यक्ष तरीक़ा इस्तेमाल करती है, यानी वह उस चीज़ की ओर इशारा करती है, जिसे वह चाहती है या फिर इधर-उधर की बातें करती है। अप्रत्यक्ष भाषण महिलाओं की एक विशेषता है और एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति करता है - यह आक्रामकता, टकराव या मतभेद से बचकर बाक़ी लोगों के साथ रिश्ते और घनिष्ठता बनाता है। घरौंदी की रक्षा करने के दौरान सामंजस्य बनाए रखने के लिए यह बिल्कुल उचित कदम है।

अप्रत्यक्ष बातचीत महिलाओं के बीच घनिष्ठता बनाती है - लेकिन यह पुरुषों के साथ काम नहीं करती, क्योंकि वे नियमों से अनजान होते हैं।

महिलाओं के मस्तिष्क प्रक्रिया की ओर उन्मुख होते हैं और उन्हें संवाद करने की प्रक्रिया में आनंद आता है। पुरुषों को व्यवस्था और उद्देश्य की कमी परेशान कर देती है और वे महिलाओं पर आरोप लगाते हैं कि वे नहीं जानती कि वे किस बारे में बात कर रही हैं। बिज़नेस में, अप्रत्यक्ष बोलचाल महिलाओं के लिए अनर्थकारी हो सकती है, क्योंकि पुरुष विभिन्न विषयों पर की जाने वाली अप्रत्यक्ष बातचीत को समझ नहीं पाते और नतीजा यह होता है कि वे आगे बढ़ने के उनके प्रस्तावों, प्रार्थनाओं या बोलियों को ठुकरा सकते हैं। अप्रत्यक्ष तरीक़े की बातचीत रिश्ते बनाने के लिए बेहतरीन हो सकती है, लेकिन बदकिस्मती से यह फ्रायदा तब बिल्कुल फीका पड़ सकता है, जब चालकों या पायलटों द्वारा कही गई बात को न समझ पाने के कारण कारें या विमान आपस में टकरा जाएँ।

अप्रत्यक्ष बोलचाल में अक्सर कई विशेषकों का इस्तेमाल होता है, जैसे 'थोड़ा सा' 'कुछ कुछ' और 'थोड़ा',

आदि। कल्पना कीजिए कि विन्स्टन चर्चिल हिटलर के खिलाफ मित्र राष्ट्रों को प्रेरित करने के लिए अप्रत्यक्ष बातचीत का इस्तेमाल करते। वह काफ़ी कुछ अलग होता।

‘हम समूद्र तट पर उनसे लड़ेंगे - हम लड़ेंगे जैसे - हम थोड़ा युद्ध भूमि में लड़ेंगे - हम कभी मतलब कि हथियार नहीं डालेंगे।’ इस प्रकार तो वे लड़ाई हार ही जाते।

जब कोई महिला किसी दूसरी महिला के साथ अप्रत्यक्ष बातचीत का इस्तेमाल करती है, तो कोई परेशानी नहीं होती - वास्तविक अर्थ समझने को लेकर महिलाएँ संवेदनशील होती हैं। लेकिन पुरुषों के साथ इसका इस्तेमाल विनाशकारी हो सकता है। पुरुष प्रत्यक्ष भाषण का प्रयोग करते हैं और शब्दों को उनके शाब्दिक अर्थ के रूप में लेते हैं। लेकिन धैर्य और अभ्यास के साथ स्त्री-पुरुष एक-दूसरे को समझना सीख सकते हैं।

पुरुष प्रत्यक्ष भाषा अपनाते हैं

पुरुषों के वाक्य छोटे, प्रत्यक्ष, हल की ओर उन्मुख व प्रासंगिक होते हैं, बातचीत के दौरान वे विस्तृत शब्दावली का प्रयोग करते हैं और उसमें तथ्यों की भरमार होती है। वे ‘बिल्कुल नहीं’, ‘कभी नहीं’ और ‘पूरी तरह से’ जैसे विशेषकों का इस्तेमाल करते हैं। इस तरह की बातचीत से शीघ्रता से व कुशलतापूर्वक बिज़नेस डील की जा सकती है और यह अन्य लोगों पर प्रभुत्व जमाने का तरीका भी होती है। जब पुरुष अपने सामाजिक संबंधों में इस प्रकार की प्रत्यक्ष बातचीत का इस्तेमाल करते हैं, तो उनसे वे अक्सर अशिष्ट और अक्खड़ लगते हैं।

इन वाक्यों को देखिएः

जाओ और नाश्ते में ऑमलेट बनाओ!

मेरे नाश्ते के लिए ऑमलेट बना दो, बना दोगी?

क्या मेरे लिए नाश्ते में ऑमलेट बना दोगी, प्लीज़?

तुम्हारे ख़्याल से क्या हमें नाश्ते में ऑमलेट लेना चाहिए?

नाश्ते में ऑमलेट खाना बढ़िया रहेगा न?

क्या तुम्हारा मन नाश्ते में ऑमलेट खाने का है?

ऑमलेट खाने की इच्छा ज़ाहिर करने से जुड़े कुछ वाक्य पूरी तरह प्रत्यक्ष हैं, जबकि कुछ पूरी तरह अप्रत्यक्ष हैं। संभावना है कि पुरुष पहले तीन वाक्यों का इस्तेमाल करेंगे और महिलाएँ आखिरी तीन वाक्यों का। सभी वाक्यों में एक ही अनुरोध को अलग-अलग तरीके से व्यक्त किया गया है। यह आसानी से देखा जा सकता है कि कई बार ऑमलेट खाने की इच्छा का अंजाम यह हो सकता है कि पत्नी कहे, ‘इतना ही शौक है तो खुद बना लो!’ और पति कहे, ‘तुमसे तो कोई फैसला होने से रहा। मैं मैकडॉनल्ड्स जा रहा हूँ।’

ऐसे में क्या किया जाए

पुरुषों को यह समझना चाहिए कि अप्रत्यक्ष रूप से बोलना महिला के सहज स्वभाव का हिस्सा है और उन्हें इसे लेकर परेशान नहीं होना चाहिए। महिला से निजी रिश्ता बनाने के लिए पुरुष को ‘सुनने की ध्वनियों’ और शारीरिक हावभाव का इस्तेमाल करते हुए ध्यान से उसकी बात सुननी चाहिए (उस पर बाद में चर्चा करेंगे)। उसे हल बताने की ज़रूरत नहीं है या फिर उसे महिला की मंशा पर सवाल नहीं करने चाहिए। अगर किसी महिला की बात से यह लगता है कि उसे कोई परेशानी है, तो ऐसे में सबसे अच्छी तकनीक यही रहेगी कि पुरुष उससे पूछे, ‘तुम क्या चाहती हो कि मैं लड़के की तरह या फिर लड़की की तरह तुम्हारी बात सुनूँ?’ अगर महिला चाहती है कि वह लड़की की तरह बात सुने, तो उसे बस बात सुननी चाहिए और उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। अगर महिला चाहती है कि वह लड़के के रूप में उसकी बात सुने, तो वह परेशानी सुलझाने के हल बता सकता है।

अगर महिलाएँ चाहती हैं कि पुरुष उनकी बात सुनें तो उन्हें पहले से सूचना दें और फिर कार्यसूची उपलब्ध कराएँ।

पुरुष पर सबसे अधिक प्रभाव डालने के लिए उसे यह बताएँ कि आप किस बारे में और कब बात करना चाहती हैं। उदाहरण के लिए,: ‘मैं तुमसे दफ्तर में अपने बॉस से जुड़ी एक परेशानी से निपटने के बारे में बात करना चाहती हूँ। क्या रात के खाने के बाद हम लोग इस पर बात कर सकते हैं?’ पुरुष के मस्तिष्क की तार्किक संरचना को यह बात पसंद आती है, उसे लगता है कि उसकी अहमियत समझी गई है और समस्या निपट जाती है। अप्रत्यक्ष तरीका होगा, ‘कोई मुझे नहीं पूछता,’ जिससे समस्या पैदा होती है, क्योंकि पुरुष यह सोच सकता है कि उस पर आरोप लगाया जा रहा है और वह सीधे-सीधे आत्मरक्षात्मक रवैया अपना लेता है। पश्चिमी देशों में पुरुष अन्य पुरुषों के साथ कामकाज करने में बातचीत का प्रत्यक्ष तरीका अपनाते हैं, लेकिन पूर्व में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के तौर पर, जापान में कामकाज की भाषा के रूप में व्यापक तौर पर अप्रत्यक्ष बातचीत का इस्तेमाल होता है और प्रत्यक्ष भाषा अपनाने वाले लोगों को बचकाना या अनाड़ी समझा जाता है। इसे अपनाने वाले विदेशियों को अपरिपक्व माना जाता है।

पुरुष को काम के लिए कैसे प्रेरित किया जाए

अप्रत्यक्ष भाषण में उच्च शिक्षा प्राप्त महिला हमेशा अपने प्रश्न में ‘सकते हैं’ का इस्तेमाल करती है: ‘क्या तुम कचरा बाहर डाल सकते हो?’ ‘क्या मुझे आज रात फोन कर सकते हो?’ ‘क्या आज बच्चों को ला सकते हो?’ पुरुष उसके सवालों को अक्षरण: लेता है, इसलिए जब वह पूछता है कि ‘तुम बल्ब बदल सकते हो?’ तो वह सुनता है, ‘क्या तुम में बल्ब बदलने की क्षमता है?’ सकने जैसे शब्दों के इस्तेमाल को पुरुष अपनी क्षमता से जुड़े सवाल के रूप में लेता है और उसकी तार्किक प्रतिक्रिया होती है कि हाँ, वह कचरा बाहर फेंक सकता है या बल्ब बदल सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसने काम करने को लेकर हासी भरी हो। पुरुषों को लगता है कि उनसे चालाकी से काम निकलवाया जा रहा है और काम के लिए ‘हाँ’ कहने को मजबूर किया जा रहा है।

किसी पुरुष को काम के लिए प्रेरित करने के लिए ‘करोगे’ या ‘कर दोगे’ जैसे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। उदाहरण के लिए, ‘क्या तुम मुझे आज रात फोन करोगे?’ पूछने पर रात को काम के किए जाने की बात होती है और पुरुष को ‘हाँ’ या ‘नहीं’ में जवाब देना पड़ता है। इस तरीके से पूछे गए सवाल के जवाब में अगर आपको ‘नहीं’ सुनने को मिलता है, तो आप जानते हैं कि असल में स्थिति क्या है। जबकि ‘सकते हो’ का इस्तेमाल कर पूछे गए सवाल के जवाब में उत्तर के रूप में ‘हाँ’ मिलने पर भी स्थिति अनिश्चित रहती है। किसी महिला से शादी करने की बात कहने के लिए पुरुष पूछता है, ‘क्या तुम मुझसे शादी करोगी?’ वह यह कभी नहीं कहता कि ‘क्या तुम मुझसे शादी कर सकती हो?’

महिलाएँ भावात्मक बात करती हैं और पुरुषों की बातचीत शाब्दिक होती है

महिला के मस्तिष्क में शब्दावली का विशेष स्थान नहीं होता, इसलिए उसे लगता है कि उस शब्द की सटीक परिभाषा कोई मायने नहीं रखती। वह फिर शब्दों के साथ काव्यात्मक ढंग से खेलती है या फिर बात को असरदार बनाने के लिए उसे बढ़ा-चढ़ाकर कहने से भी नहीं चूकती। दूसरी ओर पुरुष उसकी बात को सही समझकर उसका शाब्दिक अर्थ लेते हैं और उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं।

बहस के दौरान महिला के शब्दों को पुरुष जीतने की कोशिश के रूप में देखते हैं। पढ़कर देखिए कि यह बातचीत आपको कितनी जानी-पहचानी लगती है:

रॉबिन: ‘तुम मेरी किसी बात से कभी सहमत नहीं होते।’

जॉन: ‘कभी नहीं से तुम्हारा क्या मतलब है? तुम्हारी पिछली दो बातों से मैं सहमत था कि नहीं?’

रॉबिन: ‘तुम हमेशा मुझसे असहमत रहते हो और चाहते हो कि तुम हमेशा सही रहो।’

जॉन: ‘यह सही नहीं है। मैं हमेशा तुमसे असहमत नहीं रहता! मैं आज सुबह, कल रात और पिछले शनिवार को तुम्हारी बात पर राज़ी था, तुम यह नहीं कह सकती कि मैं तुमसे हमेशा असहमत रहता हूँ।’

रॉबिन: ‘इस बात को उठाने पर तुम हर बार यही कहते हो!’

जॉन: 'यह दृढ़ है! मैं हर बार ऐसा नहीं कहता!'

रॉबिन: 'तुम मुझे तब ही छूते हो, जब तुम्हें सेक्स की ज़रूरत होती है!'

जॉन: 'बढ़ा-चढ़ाकर बात मत करो! मैं कभी तब ही...'

वह लड़ने के लिए भावनाओं का इस्तेमाल करते हुए बहस करना जारी रखती है; जॉन उसके शब्दों को परिभाषित करता रहता है। बहस बढ़कर इस हद तक पहुँच जाती है कि वह बात करने से मना कर देती है या फिर पुरुष दनदनाते हुए निकल जाता है। सफलतापूर्वक बहस करने के लिए पुरुष को यह समझना चाहिए कि महिला ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करेगी, जिनके वास्तविक अर्थ से उसे कोई लेना-देना नहीं है, इसलिए उसकी बातों को शाब्दिक ढंग से नहीं लेना चाहिए या उन्हें परिभाषित करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मिसाल के तौर पर अगर कोई महिला कहती है, 'अगर मैं अपने जैसी पोशाक पहने उस औरत के साथ बैठूँगी, तो मैं मर जाऊँगी! इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता!' तो उसका असल में मतलब यह नहीं होता कि उससे बुरा कुछ नहीं हो सकता या फिर वह सचमुच मरना चाहती है, लेकिन बातों को अक्षरशः लेने वाला पुरुष का मस्तिष्क जवाब में कहेगा, 'नहीं, तूम नहीं मरोगी, इससे भी बुरी चीज़ें होती हैं!' यह बात महिला को व्यंग्यात्मक लगेगी। ठीक इसी तरह महिला को भी समझना होगा कि अगर वह पुरुष से जीतना चाहती है तो उससे तार्किक तरीके से बहस करनी होगी और एक बार में उसके सामने एक ही बात रखनी होगी। किसी तर्क-वितर्क के दौरान महिला को विभिन्न विषयों पर नहीं जाना चाहिए, उनसे कोई फ़ायदा नहीं होता।

महिलाएँ कैसे सुनती हैं

आमतौर पर कोई महिला दस सेकेंड की अवधि में औसतन सुनने की छह अभिव्यक्तियों का प्रयोग कर सकती हैं और फिर बोलने वाले की भावनाओं पर प्रतिक्रिया करती हैं। उसका चेहरा वक्ता के भावों को प्रतिबिम्बित करता है। दो महिलाओं को बात करते हुए देखने के दौरान ऐसा लगेगा कि जिन घटनाओं पर बातचीत हो रही है, वे दोनों के साथ हो रही हैं।

बात सुनते हुए कोई महिला औसतन दस सेकेंड के क्रम में इस प्रकार के भाव प्रदर्शित करेगी:



दुख

आश्चर्य

क्रोध

प्रसन्नता

भय

झूँचा

वक्ता की आवाज के उतार-चढ़ाव और उसके शारीरिक हावभावों के माध्यम से कोई महिला कही गई बातों का मतलब निकालती है। किसी महिला का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उसे अपनी बात सुनाते रहने के लिए पुरुष को भी यही करना चाहिए। अधिकतर पुरुष बात सुनने के दौरान चेहरे के भावों के माध्यम से प्रतिक्रिया देने से भयभीत रहते हैं, लेकिन एक बार इस कला में माहिर हो जाने के बाद उन्हें काफ़ी फ़ायदा होता है।

बात सुनते हुए पुरुष मूर्ति बन जाते हैं

किसी बात को सुनते हुए हमारे नर शिकारी का जैविक लक्ष्य पूरी तरह भावशून्य बने रहना था, ताकि उसकी भावनाएँ व्यक्त न हों।

बात सुनने की दस सेकेंड की अवधि में पुरुष के चेहरे पर इस प्रकार के भाव दिखाई देंगे:



दुख



आश्चर्य



क्रोध



प्रसन्नता



भय



हृच्छा

पुरुषों द्वारा सुनने की तकनीक को दिखाने का यह एक हल्का-फुल्का तरीका है, लेकिन हास्य-व्यंग्य में सच की पहचान करने से वह अधिक सशक्त होता है। बात सुनने के दौरान पुरुषों द्वारा भावशून्य मुखौटे के इस्तेमाल का कारण यह है कि वह स्थिति पर नियंत्रण महसूस करना चाहता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह कुछ महसूस नहीं करता। मस्तिष्क के स्कैन बताते हैं कि पुरुष भी महिलाओं की तरह भावनाओं को महसूस करते हैं, लेकिन वे उन्हें ज़ाहिर करने से बचते हैं।

भुनभुनाहट का इस्तेमाल कैसे हो

किसी की बात सुनते हुए महिलाएँ कई तरह की ऊँची या निम्न पिच की आवाजें (पाँच स्वर) निकालती हैं, जिनमें ‘ऊह’ व ‘आह’, वक्ता के शब्दों या संदर्भ को दोहराना और बातचीत को कई विषयों पर ले जाना शामिल है। पुरुषों की पिच सीमित (तीन स्वर) होती है और उन्हें पिच में आए बदलाव के पीछे मौजूद अर्थों को समझने में मुश्किल होती है, इसलिए वे एक ही स्वर में बात करते हैं।

पुरुष यह जताने के लिए कि वे बात सुन रहे हैं, भुनभुनाने या हुंकारने जैसी आवाज़ निकालते हैं, जो छोटे-छोटे ‘हम्म’ की श्रंखला होती है और साथ में वे कभी-कभार सिर हिलाते हैं। महिलाएँ इस तरह से बात सुनने के लिए पुरुषों की आलोचना करती हैं और यही कारण है कि महिलाएँ पुरुषों पर बात न सुनने का आरोप लगाती हैं। पुरुष अक्सर बात सुन रहा होता है, लेकिन देखने से नहीं लगता कि वह सुन रहा है। कारोबार में लगी महिलाओं को इससे फायदा हो सकता है। अगर आप एक महिला हैं और किसी एक पुरुष या कई पुरुषों को किसी विचार या प्रस्ताव के बारे में बता रही हैं, तो यह ज़रूरी है कि जब अपनी बारी आने पर पुरुष बात कर रहा हो तो आप उसकी भावनाओं पर उस प्रकार प्रतिक्रिया न दें, जैसी आप किसी महिला को देती। वहाँ पर बिल्कुल भावनाशन्य होकर बैठी रहें, सिर हिलाएँ, धीरे से आवाज़ निकालें और उसे टोके नहीं। हमने पाया कि जो महिलाएँ इस तकनीक का इस्तेमाल करती हैं, उन्हें पुरुषों से विश्वसनीयता हासिल होती है। जो महिलाएँ पुरुषों की भावनाओं (या उनके अनुसार जो भी पुरुषों की भावनाएँ हों) पर प्रतिक्रिया देती हैं, उन्हें विश्वसनीयता व प्रभुत्व के मामले में कम आँका जाता है और पुरुष उन्हें कई बार ‘मूर्ख’ या ‘बहुत ज़बाती’ मानते हैं।

पुरुष को बात सुनने के लिए कैसे तैयार किया जाए

बात के लिए समय निर्धारित करें, उस दौरान उठाए जाने वाले विषयों के बारे में पुरुष को बताएँ और उससे कहें कि आपको कोई हल या कार्ययोजना नहीं चाहिए। आप कहिए, ‘ऐलन, मुझे तुमसे बात करनी है। रात के खाने के

बाद ठीक रहेगा? मुझे समस्याओं के हल नहीं चाहिए, मैं तो बस चाहती हूँ कि तुम मेरी बात सुनो।' अधिकतर पुरुष इस तरह की गुज़ारिश को मान लेंगे, क्योंकि इसमें समय, स्थान और उद्देश्य की बात है - ये सब चीज़ें पुरुष मस्तिष्क को आकर्षित करती हैं। मज़ेदार बात यह है कि उसे कोई काम भी नहीं करना है।

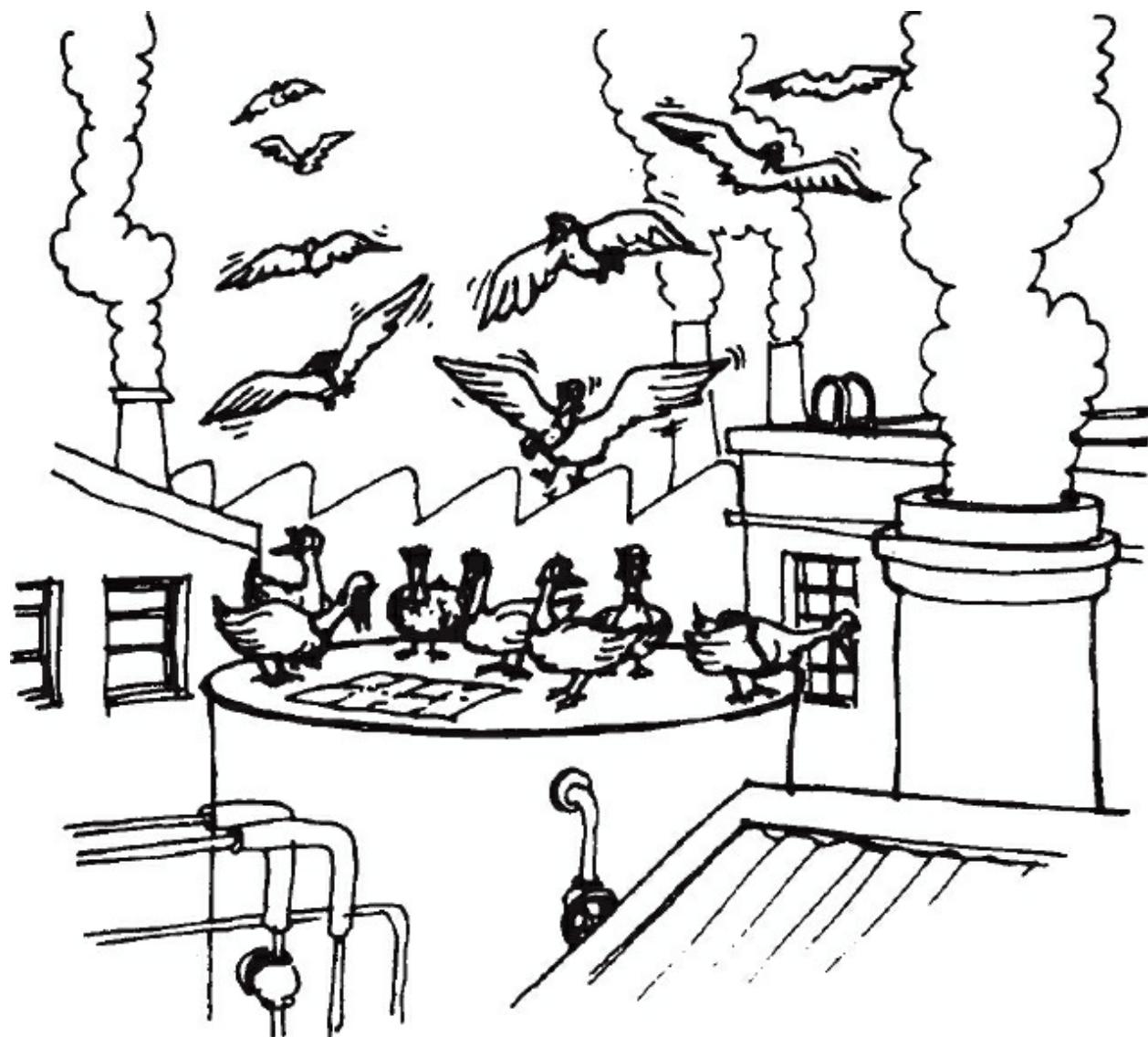
स्कूली लड़की की तरह बोलना

अधिकतर महिलाओं को गाने जैसी ऊँची आवाज़ में बातचीत करने की शक्ति जानने के लिए विकासात्मक जीवविज्ञान में किसी डिग्री की ज़रूरत नहीं होती। ऊँची आवाज़ें ईस्ट्रोजन के उच्च स्तर से जुड़ी हैं और उनके बच्चों जैसे स्वर अधिकतर पुरुषों में सहज रूप से मौजूद रक्षा करने की इच्छा को आकर्षित करते हैं। महिलाओं को पुरुष की गहरी आवाज़ पसंद आती है, क्योंकि यह टेस्टोस्टेरॉन के उच्च स्तरों का सशक्त संकेत है, जिसका मतलब अधिक पुरुषत्व का होना है। आवाज़ के स्तर में यह गिरावट यौवनारंभ होने पर लड़कों के शरीर में टेस्टोस्टेरॉन बढ़ने पर होती है और उनकी आवाज़ भारी होने लगती है। जब महिला अपनी आवाज़ की पिच बढ़ाती है और पुरुष उसे घटाता है, तो हो यह एक सशक्त संकेत है कि वे एक-दूसरे पर डोरे डाल रहे हैं। यहाँ हमारा यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं कि स्त्री-पुरुषों को एक-दूसरे के साथ ऐसा बर्ताव करना चाहिए, बल्कि हम केवल यह बता रहे हैं कि असल में क्या होता है।

**आपको लगता है कि कोई आपको बढ़ने का सिग्नल दे रहा है, तो
आपको उसकी आवाज़ की पिच को सुनना होगा।**

यह जानना महत्वपूर्ण है कि अध्ययन लगातार यह दिखाते हैं कि विज़नेस में गहरी आवाज़ वाली महिलाओं को अधिक बुद्धिमान, प्रभुत्वशाली और विश्वसनीय माना जाता है। ठुड़ी नीचे करके और धीमी आवाज़ में एक ही सुर में बोलकर गहरी आवाज़ निकालना मुमकिन है। अपनी आवाज़ में अधिक प्रभुत्व लाने की कोशिश में ग़लती से कई महिलाएँ अपनी आवाज़ ऊँची कर देती हैं, जिसे उनकी आक्रामकता के रूप में देखा जाता है। दो महत्वपूर्ण अवलोकन ये हैं कि ज्यादा वज़न वाली महिलाएँ अपने शरीर के विशाल आकार के असर को हल्का करने के लिए 'लड़कियों जैसी' आवाज़ बनाती हैं और कई महिलाएँ इसका इस्तेमाल पुरुषों में रक्षात्मक बर्ताव को प्रोत्साहित करने के लिए करती हैं।

स्थानिक क्षमता: मानचित्र, लक्ष्य और समानांतर पार्किंग



‘अरे नहीं लड़कियों! मुझे विश्वास नहीं हो रहा... ज़रा इस नक्शे को देखो! ...मेरे ख्याल से हमें उस हरियाले पहाड़ से दाँँ मुँडना था...’

किस प्रकार एक नक्शे से तलाक़ की नौबत आ गई

रे और रुथ शहर में एक शो देखने जा रहे थे। गाड़ी हमेशा रे चलाता था। उन्होंने इस बात पर कभी चर्चा नहीं की कि रे ही गाड़ी क्यों चलाता था, वस वही गाड़ी चलाता था। अधिकतर पुरुषों की तरह गाड़ी चलाते हुए वह बिल्कुल अलग किस्म का इंसान बन जाता था।

रे ने रुथ से कहा कि वह स्ट्रीट डायरेक्टरी में उस जगह का पता देखे, जहाँ वे जा रहे थे। रुथ ने बिल्कुल सही पृष्ठ खोला और फिर डायरेक्टरी को उलटा कर दिया। उसने उसे सीधे ऊपर की ओर घुमाया और फिर उसे पूरी तरह उलटा कर दिया। फिर चुपचाप बैठे हुए वह उसे गौर से देखने लगी। वह जानती थी कि नक्शा क्या दिखाता है, लेकिन जब उसमें दी गई बातों को वह अपने रास्ते पर लागू करती, तो उसे उसमें कोई भी चीज़ समझ नहीं आती। वह स्कूल में भगोल पढ़ने जैसा था। दिए गए गुलाबी व हरे आकारों और अपने आसपास की वास्तविक दुनिया के बीच उसे कोई समानता नज़र नहीं आती थी। उत्तर की ओर जाने पर तो वह फिर भी नक्शे में दी गई जानकारी का अर्थ निकाल लेती थी, लेकिन दक्षिण दिशा की ओर जाने की स्थिति में उसकी समझ में कुछ नहीं आता था और वे दक्षिण की ओर ही बढ़ रहे थे। उसने एक बार फिर नक्शे को घुमाया। कुछ देर बाद रे से रहा नहीं गया।

‘उस नक्शे को उलटाना बंद करो!’ गुस्से में वह बोला।

‘लेकिन मुझे उस दिशा को सामने रखना है, जिसकी तरफ हम जा रहे हैं,’ रुथ ने नर्मी से कहा।

‘ठीक है, लेकिन नक्शे को उलटा करके तो नहीं पढ़ा जा सकता।’ रे चिल्लाया।

‘मेरे हिसाब से मुझे नक्शे को उस दिशा में रखना है, जिधर हम जा रहे हैं। इस तरह मैं सड़कों के संकेतों को डायरेक्टरी के संकेतों से मिला सकती हूँ।’ रुथ ने अपनी आवाज़ ऊँची करके कहा।

‘अगर नक्शे को उलटा करके ही पढ़ना होता, तो फिर वे उसे उलटा ही छापते, है न? बेबूफ़ी भरी हरकत बंद करो और मुझे बताओ कि कहाँ जाना है।’

‘मैं तुम्हें बता दूँगी कि कहाँ जाना है, ठीक है।’ रुथ ने गुस्से में जवाब दिया। उसने रे पर डायरेक्टरी फेंक दी और चिल्लाई, ‘खुद ही पढ़ लो।’

क्या ये बहस जानी-पहचानी लगती है? हर जगह के छी-पुरुषों के बीच होने वाली यह सबसे आम किस्म की बहस है और हज़ारों साल से चली आ रही है। 11वीं शताब्दी में लेडी गोडाइवा शलत कॉवेंट्री स्ट्रीट पर नग्नावस्था में घुड़सवारी करती थी, जूलियट रोमियो के साथ मिलन के बाद घर लौटते हुए रास्ता भटक गई थी, मार्क एंटनी द्वारा किल्योपेट्रा को युद्ध के मानचित्र समझाने पर मजबूर करने की कोशिश किए जाने पर किल्योपेट्रा ने उसके वंध्यकरण की धमकी दी थी और पश्चिम की दुष्ट चुड़ैलें अक्सर दक्षिण, उत्तर या पूर्व की ओर बढ़ती थीं।

लैंगिकवादी सोच

मानचित्र पढ़ना और यह समझना कि आप कहाँ पर हैं, यह सब स्थानिक क्षमता पर निर्भर करता है। मस्तिष्क के स्कैन दिखाते हैं कि स्थानिक योग्यता पुरुषों व लड़कों के मस्तिष्क के अधिकतर दाएँ हिस्से में स्थित होती है और यह पुरुषों के सबसे बड़े गुणों में से एक है। यह प्राचीन समय से ही पुरुषों में विकसित हुई ताकि शिकारी पुरुष अपने शिकार की रफ़तार, हरकत और फ़ासले का अंदाज़ा लगा सके और फिर यह आँक सके कि अपने शिकार को पकड़ने के लिए उसे कितनी तेज़ी से ढौँड़ना होगा और किसी पथर या भाले से उसे मारने के लिए उसे कितनी ताक़त की ज़रूरत होगी। महिलाओं के मस्तिष्क के दोनों गोलाधर्मों में स्थानिक क्षमता मौजूद होती है, लेकिन पुरुषों की तरह उसमें विशिष्ट स्थान नहीं होता। 10 प्रतिशत महिलाओं में ऐसी स्थानिक क्षमताएँ मौजूद होती हैं, जो उसमें माहिर पुरुषों के बराबर होती हैं।

अधिकतर महिलाओं में सीमित स्थानिक क्षमता होती है।

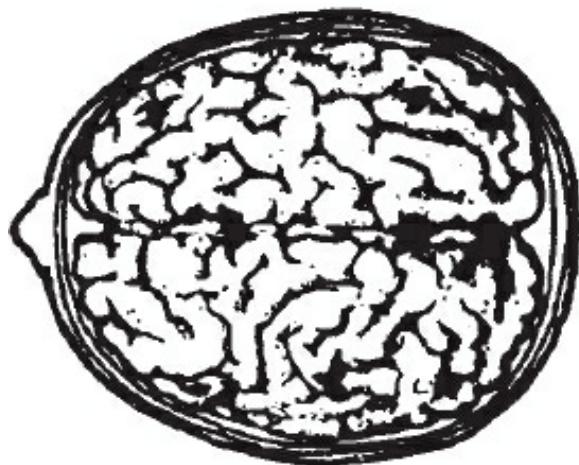
कुछ लोगों को यह शोध सेक्विस्ट यानी लैंगिकवादी लग सकता है, क्योंकि हम ऐसे गुणों व क्षमताओं पर चर्चा करने वाले हैं, जिनमें पुरुष माहिर होते हैं और उन कार्यों एवं व्यवसायों पर बात करने वाले हैं, जिनमें जीवविज्ञान ने उन्हें साफ़ बढ़ा दी है। बाद में हम उन क्षेत्रों की बात भी करेंगे, जिनमें महिलाओं का पलड़ा भारी

है।

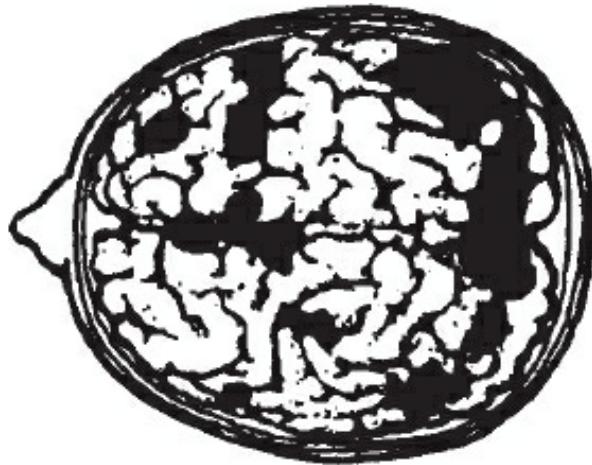
भोजन का पीछा करता शिकारी

स्थानिक क्षमता का मतलब, दिमाग़ में चीज़ों के आकार, उनके आयाम, उनके आपसी समन्वय, अनुपात, गतिविधि और भूगोल की कल्पना करने की क्षमता होना है। इसमें किसी वस्तु को आकाशीय स्थल में घुमाने की कल्पना करना, रास्ते में आने वाली बाधाओं के बीच से रास्ता बनाना और त्रि-आयामी संदर्भ में चीज़ों को देखना शामिल है। इसका उद्देश्य किसी लक्ष्य की गतिविधि को आँकना और यह जानना है कि उस पर निशाना कैसे लगाना है।

आयोवा स्टेट यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान की प्रोफेसर डॉ. कैमिला बेनबो ने स्थानिक क्षमता का अध्ययन करने के लिए दस लाख लड़के-लड़कियों के मस्तिष्क स्कैन किए और बताया कि चार साल की उम्र तक दोनों लिंगों के बीच अंतर बहुत स्पष्ट हो चुका होता है। उन्होंने पाया कि लड़कियाँ अपने मस्तिष्क में चीज़ों को दो आयामी ढंग से देखने में कठल होती हैं, जबकि लड़कों में गहराई यानी तीसरे आयाम को देखने की भी क्षमता होती है। त्रि-आयामी वीडियो परीक्षणों में लड़कों ने लड़कियों को बहुत पीछे छोड़ दिया और उनका अनुपात 4:1 रहा। इसमें अच्छा प्रदर्शन करने वाली लड़कियों का प्रदर्शन कम अंक पाने वाले लड़कों से बदतर रहा। पुरुषों के मस्तिष्क के दाँँ गोलार्ध के अगले हिस्से में कम से कम चार ऐसे केंद्र होते हैं, जो इस विशिष्ट गतिविधि के लिए बने हैं और बाँँ गोलार्ध में इसके लिए कई छोटे क्षेत्र मौजूद होते हैं। स्थानिक क्षमता के लिए कोई विशिष्ट स्थान न होने का मतलब है कि स्थानिक कार्यों में अधिकतर महिलाओं का प्रदर्शन आमतौर पर निम्न रहता है। अधिकतर महिलाओं को इस प्रकार की गतिविधियाँ अच्छी नहीं लगती और वे ऐसे काम या शौक नहीं अपनाती, जिनमें इनकी ज़रूरत हो।



स्त्री



पुरुष

मस्तिष्क में स्थानिक क्षमता की स्थिति (काले रंग के क्षेत्र गतिविधि दिखाते हैं) इंस्टिट्यूट ऑफ साइकियैट्री, लंदन, 1999

स्थानिक क्षमता के लिए निश्चित स्थान होने से लड़के उन गतिविधियों में अच्छे होते हैं, जिनमें इस प्रकार के कौशल की आवश्यता होती है और वे अक्सर ऐसे काम या खेलों में दिलचस्पी लेते हैं। मस्तिष्क में ये क्षेत्र मौजूद

होने के कारण पुरुष समस्याओं को सुलझाने की क्षमता भी रखते हैं। महिलाओं व लड़कियों में स्थानिक क्षमता उतनी सशक्त नहीं होती, क्योंकि जानवरों का पीछा करना और घर लौटने के रास्ते की तलाश करना कभी उनके काम का हिस्सा नहीं रहा। यही बजह है कि महिलाओं को मानचित्र या फिर सड़क निर्देश पढ़ने में मुश्किल होती है।

महिलाओं में अच्छी स्थानिक क्षमता नहीं होती क्योंकि पुरुषों के अलावा उन्हें कभी किसी और चीज़ का पीछा करने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

हजारों ऐसे प्रमाणित वैज्ञानिक अध्ययन हैं, जो स्थानिक कौशल में पुरुषों की श्रेष्ठता की पृष्ठि करते हैं। शिकारी के रूप में उसके विकास को देखते हुए इसमें कोई आश्वर्य की बात नहीं है। लेकिन आधुनिक पुरुष को अब अपने भोजन का पीछा नहीं करना होता। आज वह अपनी इस क्षमता का इस्तेमाल गॉल्फ, कम्प्यूटर गेम्स, फुटबॉल, शिकार करने और किसी अन्य खेल या गतिविधि में करता है, जिसमें उसे किसी चीज़ का पीछा करने या लक्ष्य पर निशाना साधने की ज़रूरत होती है। अधिकतर महिलाओं को शिकार करना उबाऊ काम लगता है, लेकिन अगर उनके मस्तिष्क के दाएँ हिस्से में लक्ष्य पर निशाना साधने के लिए विशिष्ट क्षेत्र होते, तो उन्हें न सिर्फ़ उस काम में मज़ा आता, बल्कि वे उसमें सफल भी रहतीं।

पुरुषों को अन्य पुरुषों द्वारा गेंद पर निशाना लगाया जाना इतना ज़्यादा पसंद है कि गॉल्फ, फुटबॉल, बास्केटबॉल और टेनिस खिलाड़ी दुनिया में सबसे ज़्यादा पैसा कमाने वाले लोगों में शामिल हैं। सम्मान पाने के लिए आपको किसी कॉलेज डिग्री की ज़रूरत नहीं है; आपको रफ़तार, फ़ासले, कोणों और दिशाओं का अनुमान लगाने में कुशल होना चाहिए।

पुरुष क्यों जानते हैं कि उन्हें कहाँ जाना है

स्थानिक कौशल के कारण पुरुष अपने मस्तिष्क में नक्शे को घुमा पाता है और जान लेता है कि उसे किस दिशा में जाना है। अगर उसे उसी स्थान पर फिर से लौटना है, तो उसे नक्शे की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि उसके स्थान से संबंधित क्षेत्रों में वह जानकारी जमा हो जाती है। अधिकतर पुरुष सामने उत्तर दिशा होने पर नक्शा पढ़ने के दौरान यह जानते हैं कि उन्हें दक्षिण की ओर जाना है। इसी प्रकार, अधिकतर पुरुष नक्शे को पढ़ सकते हैं और फिर अपनी स्मरण शक्ति से सफलतापूर्वक दिशानिर्देशन कर सकते हैं। अध्ययन दिखाते हैं कि पुरुष का मस्तिष्क गति और दूरी को नापकर यह जान सकता है कि दिशा कब बदलनी है। अधिकतर पुरुषों को यदि किसी ऐसे अनजाने कमरे में रख दिया जाए, जिसमें कोई खिड़की भी न हो, तब भी वे उत्तर दिशा का पता लगा लेते हैं। शिकार का पीछा करने के काम के दौरान उसे अपने घर का रास्ता ढूँढ़ने की ज़रूरत होती थी, वर्ना उसके ज़िंदा रहने के मौक़े कम हो सकते थे।

यह न जानने के बावजूद कि वे कहाँ हैं, अधिकतर पुरुष उत्तर दिशा बता सकते हैं।

किसी भी स्टेडियम में आप देख सकते हैं कि कितने पुरुष कोई पेय पदार्थ लाने के लिए अपनी सीट छोड़कर जाते हैं और फिर कुछ समय बाद सफलतापूर्वक अपनी सीट तक का रास्ता खोज लेते हैं। दुनिया के किसी भी शहर में चले जाइए, जंकशन पर गुस्से से नक्शे के पन्ने पलटती हुई और रास्ता भटकी हुई महिला पर्यटकों को पाएँगे। किसी भी शॉपिंग मॉल की बहुमंजिला कार पार्किंग में आप महिला खरीदारों को परेशान होकर अपनी कार खोजते हुए पाएँगे।

जब लड़के वीडियो आर्केड्स में बदल गुज़ारते हैं

दुनिया में किसी भी वीडियो या पिनबॉल आर्केड में चले जाएँ, वहाँ आपको अपने स्थानिक कौशल को आज़माते किशोर लड़के बड़ी संख्या में दिखाई देंगे। अब स्थानिक कौशल से संबंधित कुछ वैज्ञानिक अध्ययनों को देखते हैं। इनमें से अधिकतर में त्रिआयामी यांत्रिक उपकरणों को साथ जोड़ना शामिल है।

येल यूनिवर्सिटी में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि केवल 22 प्रतिशत महिलाएँ ही पुरुषों की तरह ऐसे काम कर सकती हैं। इसमें यह भी पाया गया कि 68 प्रतिशत पुरुष वीसीआर या ऐसे ही किसी यंत्र को लिखित निर्देशों के अनुसार पहली बार में ही प्रोग्राम कर सकते हैं, केवल 16 प्रतिशत महिलाएँ ऐसा कर सकती हैं। लड़कों का प्रदर्शन तब भी अच्छा रहा, जब उनकी दाईं आँख को ढक दिया गया, ऐसे में उनकी बाईं आँख जानकारी प्राप्त कर सकती थी, जिसे फिर मस्तिष्क के दाएँ हिस्से को भेजा जाता था, जहाँ स्थानिक कौशल मौजूद होता है। लड़कियों को इस बात से फँक नहीं पड़ा कि उन्होंने किस आँख का इस्तेमाल किया, क्योंकि समस्या हल करने की कोशिश में उनके मस्तिष्क ने दोनों हिस्सों का उपयोग किया। यही कारण है कि ऐसा बहुत कम होता है कि महिलाएँ मैकेनिक, इंजीनियर या पायलट बनें।

डॉ. कैमिला बेनबो और उनकी सहकर्ता जूलियन स्टैनली ने कुछ प्रतिभाशाली बच्चों पर परीक्षण किया और पाया कि गणित में अच्छा प्रदर्शन करने वाले लड़कों का अनुपात लड़कियों की तुलना में 13:1 का था। लड़कियों के मुकाबले लड़के द्विआयामी योजनाओं से बड़ी आसानी से और तेज़ी से ब्लॉक बना सकते हैं, वे कोणों का सटीक अनुमान लगा सकते हैं और देख सकते हैं कि कोई समतल भाग पूरी तरह से समान है या नहीं। इन्हीं प्राचीन शिकारी कौशलों के कारण वास्तुशिल्प, रसायनशास्त्र, निर्माण और सांख्यिकी जैसे क्षेत्रों में पुरुषों का वर्चस्व है। हाथ व आँख के समन्वय में लड़कों का प्रदर्शन बेहतर होता है, जिसके कारण गेंद से जुड़े खेलों में वे अधिक दक्ष होते हैं। यही वजह है कि क्रिकेट, गाँलफ, फुटबॉल, बास्केटबॉल या किसी अन्य ऐसे खेल के प्रति पुरुषों में जुनून होता है, जिसमें समन्वय, किसी चीज़ को फेंकने, पीछा करने या किसी लक्ष्य पर निशाना साधने की ज़रूरत होती है। इससे स्पष्ट होता है कि दुनिया भर में वीडियो व पिनबॉल आर्केड्स और स्केटबोर्ड क्षेत्रों में लड़के भारी तादाद में होते हैं, जबकि लड़कियों की संख्या बहुत कम होती है। अधिकतर लड़कियाँ वहाँ पर लड़कों को प्रभावित करने के लिए पहुँची होती हैं, लेकिन उनमें से अधिकतर जल्दी ही जान लेती हैं कि लड़कों के सिर उनका नहीं, खेलों का जादू चढ़कर बोलता है।

1999 में डॉ. सैंड्रा विटलसन ने ऑन्टैरियो, कैनेडा की मैकमास्टर यूनिवर्सिटी में वैज्ञानिकों के एक ऐसे दल का नेतृत्व किया, जिसने ऐल्बर्ट आइन्स्टाइन के मस्तिष्क की रचना का विश्लेषण किया और उसकी तुलना ऐसे 35 पुरुषों व 56 महिलाओं के संरक्षित मस्तिष्क से की, मृत्यु के समय जिनकी बुद्धिमत्ता सामान्य थी। उन्होंने आइन्स्टाइन के दिमाग़ की तुलना उन आठ पुरुषों के दिमाग़ से भी की, मरते समय जिनकी उम्र आइन्स्टाइन जितनी थी। इस दल ने पाया कि सामान्य स्त्री-पुरुषों की तुलना में गणित संबंधी तर्क से जुड़ा आइन्स्टाइन के दिमाग़ का स्थानिक क्षेत्र दोनों ओर 15 प्रतिशत अधिक चौड़ा था।

लड़कों के मस्तिष्क अलग ढंग से विकसित होते हैं

लड़के-लड़कियों के माता-पिता जल्दी ही यह बात समझ जाते हैं कि विकास की गति के मामले में दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर होता है। लड़कों में दिमाग़ का दायाँ हिस्सा बाएँ के मुकाबले तेज़ी से विकसित होता है। यह अपने भीतर ही अधिक संपर्क या कनेक्शन्स विकसित करता है और बाएँ हिस्से के साथ इसके संपर्क कम होते हैं। लड़कियों में दोनों हिस्से अधिक संतुलित गति से विकसित होते हैं, जिससे लड़कियों की क्षमताओं का विस्तार बेहतर होता है। उनके दिमाग़ के दाएँ व बाएँ हिस्से के बीच अधिक मोटे कॉर्पस कलोसम के माध्यम से अधिक संपर्क होते हैं, जहाँ लड़कों के मुकाबले लड़कियाँ दोनों हाथों से काम करने में ज्यादा माहिर होती हैं, वहीं उन महिलाओं की संख्या भी बहुत अधिक होती है जो बाएँ व दाएँ हाथ के बीच अंतर नहीं कर सकती।

टेस्टोस्टेरोन हार्मोन लड़कों के दिमाग़ के बाएँ हिस्से की वृद्धि को रोकता है और उसके बदले उसके दाएँ हिस्से को अधिक विकसित करता है, जिसके कारण शिकार करने के लिए उसमें बेहतर स्थानिक कृशलता होती है। पाँच से अठारह साल के बच्चों पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि तेज़ रोशनी से लक्ष्य पर निशाना साधने, फ़र्श पर ठीक वैसा ही नमूना फिर से बनाने, त्रिआयामी चीज़ों को जोड़ने और गणित संबंधी तार्किक योग्यता से जुड़ी समस्याओं को हल करने में लड़कों का प्रदर्शन लड़कियों से काफ़ी बेहतर था। ये सभी कौशल मुख्य तौर पर

लगभग 80 प्रतिशत पुरुषों व लड़कों के मस्तिष्क के दाएँ भाग में स्थित होते हैं।

डायना और उनका फर्नीचर

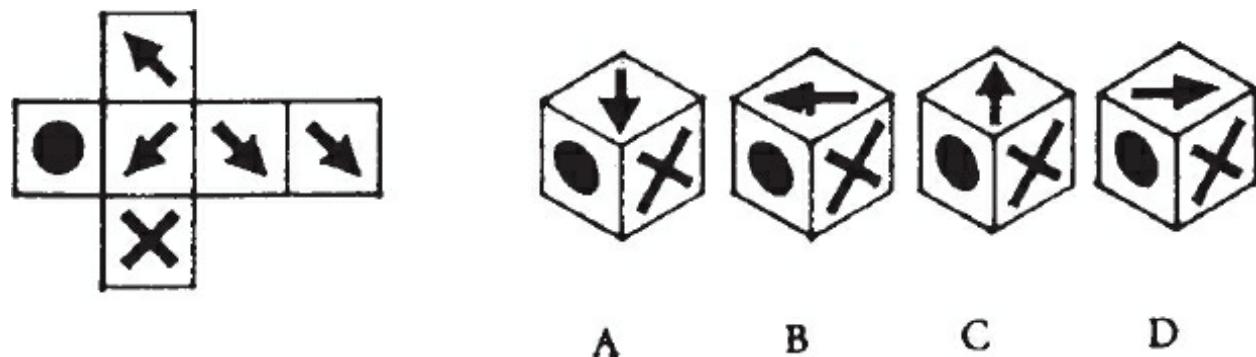
डायना के नए घर के लिए जब वैन से फर्नीचर उतारा गया, तो यह देखने के लिए सारा सामान सही जगह पर आ जाएगा, वह हर चीज़ का नाप लेने में व्यस्त हो गई। डायनिंग रूम के ड्रेसर को जब वह नाप रही थी, तो उसके 14 वर्षीय बेटे किलफ़ ने कहा, ‘रहने दो, माँ - वह उस जगह के लिहाज़ से काफ़ी बड़ा है, वह नहीं आ पाएगा’ जगह नापने पर डायना ने पाया कि किलफ़ सही था। वह समझ नहीं पाई कि कैसे सिर्फ़ फर्नीचर को देखकर उसने अंदाज़ा लगा लिया कि वह उस जगह पर नहीं आ पाएगा। आखिर उसने वह काम कैसे किया? उसने दरअसल जगह का अंदाज़ा लगाने के अपने हुनर का इस्तेमाल किया।

स्थानिक क्षमता का परीक्षण

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. डी वेकस्लर ने आईक्य परीक्षणों की एक श्रंखला तैयार की, जिसमें स्थानिक परीक्षणों के दौरान पुरुषों या महिलाओं के प्रति किसी भी प्रकार के लैंगिक पूर्वग्रह को दूर कर दिया गया। दुनिया भर की आदिम जातियों की संस्कृति के लोगों से लेकर परिष्कृत शहरी लोगों पर परीक्षण करने के बाद अन्य शोधकर्ताओं की तरह उन्होंने भी यही निष्कर्ष निकाला कि पुरुषों की तुलना में छोटे आकार का मस्तिष्क होने के बावजूद सामान्य बुद्धिमत्ता के मामले में द्वियाँ उनसे श्रेष्ठतर थीं, वे लगभग तीन प्रतिशत अधिक बुद्धिमान थीं। लेकिन जब भूलभूलैया की पहेलियों को सुलझाने का सवाल आया, तो पुरुषों का प्रदर्शन महिलाओं से कहीं गुना बेहतर था, उन्होंने महिलाओं के आठ प्रतिशत की तुलना में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, सभी संस्कृतियों में यह बात सही सावित हुई। आलोचक कह सकते हैं कि महिलाएँ इतनी अधिक बुद्धिमान होती हैं कि इस तरह की पहेलियाँ सुलझाना मूर्खतापूर्ण काम होगा, लेकिन यह सुस्पष्ट रूप से पुरुषों की स्थानिक क्षमता को प्रदर्शित करता है।

नीचे दिया गया स्थानिक परीक्षण प्लाइमाउथ यूनिवर्सिटी में विकसित किया गया और पायलट, नेविगेटर्स और एयर ट्रैफ़िक कंट्रोलर्स के चुनाव में इसी प्रकार के परीक्षण का इस्तेमाल किया जाता है। यह द्विआयामी जानकारी को लेकर अपने दिमाग़ में त्रिआयामी वस्तु के निर्माण की आपकी क्षमता को नापता है।

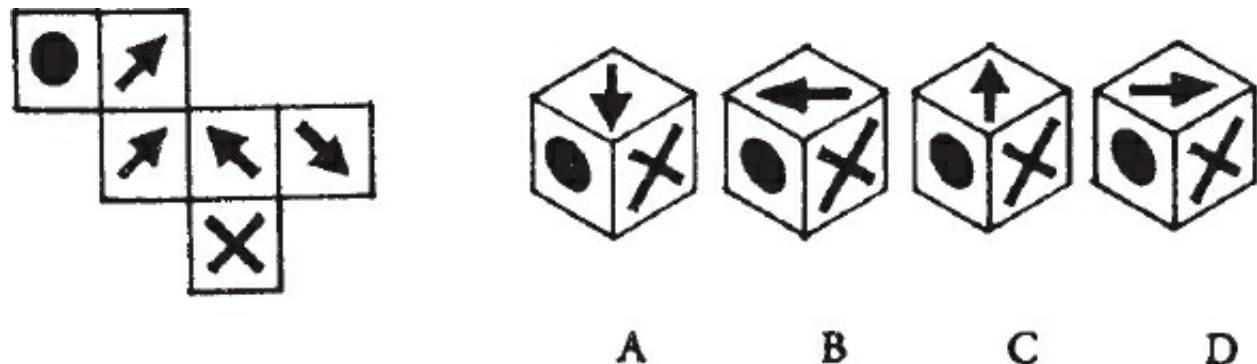
कल्पना कीजिए कि परीक्षण 1 एक में एक घन के विभिन्न फलकों को दिखाया गया है। मान लीजिए कि X वाला फलक दाईं ओर है और वृत वाला फलक बाईं ओर है, ऐसे में ए, बी, सी या डी में से आपका कौन-सा विकल्प सही होगा। अब आप इस परीक्षण को करके देखें।



परीक्षण 1

इस परीक्षण में आपके मस्तिष्क को चित्र की कल्पना तीन आयामों में करनी होगी और फिर सही कोण प्राप्त करने के लिए उसे घुमाना होगा। नक्शे या सड़क के दिशा-निर्देशों को समझने, विमान उतारने या भैंस का पीछा करने के लिए इन्हीं कौशलों की आवश्यकता होती है। (सही जवाब है, ए)।

अब परीक्षण का एक जटिल स्वरूप दिया गया है, जिसमें आपके दिमाग़ को पहले से ज्यादा चीज़ों को घुमाना पड़ता है।



परीक्षण 2

प्राणी शास्त्रियों द्वारा किए गए परीक्षणों से पता चलता है कि स्थान से जुड़ी क्षमताओं के मामले में नर स्तनधारियों का प्रदर्शन महिला स्तनधारियों से श्रेष्ठतर रहता है - मादा चूहों की तुलना में नर चूहे भूलभुलैया में से अपना रास्ता खोजने में बेहतर होते हैं और नर हाथी जल के स्रोत को खोजने में मादाओं से बेहतर होते हैं। (परीक्षण 2 का सही उत्तर सी है।)

महिलाएँ कैसे दिशासंचालन करती हैं

‘अगर पुरुष नक्शों का डिज़ाइन इस ढंग से नहीं बनाते, तो हमें उसे उलटा करके देखने की ज़रूरत नहीं पड़ती,’ कई महिलाएँ यह शिकायत करती हैं। ब्रिटिश कार्टोग्राफी सोसायटी का कहना है कि उसकी 50 प्रतिशत सदस्य महिलाएँ हैं और नक्शों का डिज़ाइन बनाने व उनमें सुधार लाने का काम करने वाले लोगों में भी 50 प्रतिशत महिलाएँ हैं। ‘नक्शे का डिज़ाइन बनाना द्विआयामी काम है, जिसमें महिलाएँ पुरुषों जितनी ही सक्षम होती हैं,’ अमरणी ब्रिटिश नक्शानवीस ऐलन कॉलिन्सन का कहना है। ‘नक्शे को पढ़ने व उसकी मदद से रास्ता खोजने में महिलाओं को समस्या इसलिए होती है, क्योंकि इसके लिए उन्हें त्रिआयामी परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता होती है। मैं ऐसे टूरिस्ट मैप बनाता हूँ, जिनमें त्रिआयामी परिप्रेक्ष्य होता है। उनमें पेड़, पर्वत और अन्य स्थल चिह्न होते हैं। इस प्रकार के मानचित्रों को समझने में महिलाएँ अधिक सफल होती हैं। हमारे परीक्षण दिखाते हैं कि पुरुषों में यह क्षमता होती है कि वे अपने दिमाग़ में द्विआयामी नक्शों को एक त्रिआयामी दृश्य में बदल सकें, लेकिन अधिकतर महिलाएँ ऐसा नहीं कर पाती।’

परिदृश्य मानचित्रों का उपयोग करते हुए महिलाओं के दिशासंचालन कौशल नाटकीय रूप से बेहतर हो जाते हैं।

एक अन्य दिलचस्प निष्कर्ष यह रहा है कि दिशासंचालन में पुरुषों का प्रदर्शन उस स्थिति में बहुत अच्छा रहता

है, जब किसी रास्ते पर उनके समूह का कोई नेता हर बिंदु पर उन्हें शाब्दिक रूप से नई दिशाओं के बारे में बताता रहे। इस प्रकार निर्देश दिए जाने की स्थिति में महिलाओं का प्रदर्शन बहुत निराशाजनक रहता है। इससे यह पता चलता है कि किस प्रकार पुरुष अपने मस्तिष्क में सही दिशा व रास्ते का परिदृश्य बनाने के लिए ध्वनि संकेतों को त्रिआयामी मानचित्रों में बदल सकते हैं, जबकि महिलाएँ एक त्रिआयामी परिदृश्य मानचित्र की सहायता से बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं।

क्या हुआ अगर आप उत्तर दिशा नहीं खोज सकते?

ऑस्ट्रेलियाई नाविक के कॉटी पहली ऐसी महिला थी, जिन्होंने जहाज से अकेले पूरी दुनिया का चक्र लगाया था। वे तो ऐसी महिला थीं, जो अपनी दिशा को अच्छी तरह जानती थीं, है न?

हाल में हुए एक सम्मेलन में उन्होंने हमें बताया कि उन्हें स्ट्रीट डायरेक्ट्री पढ़ने में मुश्किल होती थी। हैरान होते हुए हमने पूछा, ‘तो फिर आप पूरी दुनिया कैसे घूम आईं?’ ‘वह नौसंचालन है,’ के ने जवाब दिया। ‘आप कम्प्यूटर को प्रोग्राम करते हैं और वह आपको सही दिशा में ले जाता है। मैं सीधे समुद्र में पहुँचकर यह नहीं कहती, ‘मुझे लगता है कि मुझे बाएँ जाना चाहिए...’ स्ट्रीट डायरेक्ट्री सहज ज्ञान से जुड़ी चीज़ है। आपको यह ‘महसूस’ होना चाहिए कि किस रास्ते पर जाना है। जब मैं किसी अजनबी शहर में पहुँचती हूँ, तो मैं घूमने के लिए टैक्सी लेती हूँ। मैंने किराए पर कार लेने की कोशिश की, लेकिन उनसे मैं हमेशा गलत रास्ते पर चली गई।

लोगों को यह यक्कीन करने में मुश्किल होती है कि दुनिया का चक्र लगाने में के कॉटी रास्ता भटक सकती थीं, लेकिन उन्होंने साफ तौर पर दिखा दिया कि किस प्रकार दृढ़ निश्चय, योजना और साहस के बल पर आप दुनिया में अपने रास्ते खोज सकते हैं और यह तब भी सुमिकिन है, जब आपको स्ट्रीट डायरेक्ट्री पढ़नी न आती हो। सही लोगों और यंत्रों की मदद से आप अपना काम पूरा कर सकते हैं।

फेंककर मारा गया नक्शा

हम (लेखक) साल के नौ महीने दुनिया भर में सेमिनार देने के लिए घूमते रहते हैं और अधिकांश समय किराए पर कार लेते हैं। स्थान से संबंधित कौशल बेहतर होने के कारण आमतौर पर ऐलन गाड़ी चलाते हैं और दिशानिर्देशन का काम बारबरा करती हैं। बारबरा में दिशानिर्देशन क्षमता लगभग न के बराबर है, इसलिए उनके व ऐलन के बीच दुनिया के किसी भी देश और शहर की यात्रा के दौरान कई वर्षों से बहस व लड़ाई होती रही है। बारबरा द्वारा ऐलन पर हर भाषा में लिखी स्ट्रीट डायरेक्ट्रीज़ व नकशे फेंके जाते रहे हैं और कई बार ऐसा भी हुआ है कि उन्होंने यह कहकर कि ‘तुम खुद ही पढ़ लो!’ ऐलन व उनके नक्शों से दूर भागकर बसों व रेल की यात्रा की है।

बारबरा को दिशाबोध नहीं है, लेकिन ऐलन को दराज़ में कभी अपनी जुराबें नहीं मिलती।

खुशकिस्मती से स्थानिक क्षमता के उनके शोध ने उन्हें उन समस्याओं को लेकर सचेत कर दिया था, जो किसी एक साथी में इस क्षमता की कमी से पैदा होती हैं और जो दूसरे को समझ नहीं आती। आज गाड़ी चलाने से पहले ऐलन मानचित्र पढ़ते हैं और बारबरा बात करती हैं व प्राकृतिक दृश्य की दिलचस्प खासियतों को बताती हैं। उनकी शादीशुदा ज़िंदगी खुशहाल है और साथी पर फेंके जाने वाले नक्शों से रास्ते पर गुज़रने वाले अन्य लोगों को कोई ख़तरा होने का अंदेशा भी नहीं होता।

उलटा मानचित्र

1998 में इंग्लैंड में जॉन और ऐश्वी सिम्स ने एक ऐसा दो तरफा नक्शा बनाया, उत्तर की ओर यात्रा करते हुए जिसका रुख सामान्य रहता है और दूसरे में वह उलटा रुख दिखाता है, जिसमें दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करने

में दक्षिण ऊपर रहता है। ब्रिटेन के एक राष्ट्रीय समाचार पत्र की वीकेंड मैगज़ीन उन्होंने पहले लिखने वाले 100 लोगों को निःश्वास मानचित्र की पेशकश की। 15,000 से अधिक महिलाओं ने इस मानचित्र को लेने की इच्छा व्यक्त की, जबकि ऐसा करने वाले पुरुषों की संख्या बहुत कम थी। हमें बताया गया कि उल्टे नक्शे में पुरुषों की कोई दिलचस्पी नहीं थी या फिर उनका ख्याल था कि यह कोई मज़ाक था। महिलाओं को इसने प्रभावित किया, क्योंकि उन्हें इसे घुमाने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

बीएमडब्ल्यू मोटर कार्स वह पहली कंपनी थी, जिसने पहली बार अपने वाहनों में दृश्य दिशासंचालन यंत्र ग्लोबल पोज़िशनिंग सिस्टम (जीपीएस) लगाया, जिसमें गाड़ी की यात्रा के अनुसार छवि उल्टी हो जाती थी। ज़ाहिर है, महिलाओं के बीच यह सिस्टम बहुत लोकप्रिय हुआ।

अंतिम परीक्षण

मानव संसाधन और शोध कंपनी सैविल एंड होल्ड्सवर्थ (यूके) द्वारा विकसित इस परीक्षण को आज़माएँ, जो एयर ट्रैफ़िक कंट्रोलर्स जैसे काम के लिए सही उम्मीदवारों की स्थानिक तार्किक योग्यता की जाँच के लिए किया जाता है। अगर आप इसे तीन मिनट में न कर पाएँ, तो इसका मतलब है कि आप परीक्षण से बाहर हो गए। यह पहले दो परीक्षणों से ज़्यादा मुश्किल है और अगर आप पुरुष हैं, तो आपके अपने मस्तिष्क के दाएँ गोलार्ध का तापमान बढ़ाना होगा।



- 1 A B C D
- 2 A B C D
- 3 A B C D
- 4 A B C D

इस परीक्षण में आपको एक नमूना दिया गया है, जिसे काटने पर मोड़कर एक त्रिआयामी बॉक्स बनाया जा सकता है। आपको जल्दी से यह निर्णय लेना होगा कि इस नमूने को मोड़कर हर सेट में दिए गए चार बॉक्स में से क्या कोई एक बन सकता है और सही जवाब पर धेरा लगाएँ। अगर आपको लगता है कि इस नमूने से कोई भी बॉक्स नहीं बन सकता, तो किसी भी बॉक्स पर धेरा न लगाएँ।

तीन मिनट से कम समय में इस परीक्षण को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले लोगों में अधिकतर पुरुष होंगे, खासकर वे जो वास्तुशिल्प या गणित जैसे त्रिआयामी कार्यों में लगे होंगे। अब आप जान गए होंगे कि क्यों 94 प्रतिशत एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स पुरुष होते हैं। अधिकतर महिलाओं को लगेगा कि इस तरह के परीक्षण समय की बर्बादी है, हालाँकि हमें एक ऐसी महिला मिली है, जिसने इसे नौ सेकेंड में पूरा किया है। उसका व्यवसाय है, एकचुअरी यानी वीमांकिका। (सही जवाब, 1बी, 2डी, 3सी, कोई नहीं।)

बहस को कैसे टाला जाए

पुरुषों को घुमावदार रास्तों पर तेज़ी से गाड़ी चलाना पसंद आता है, क्योंकि उनके स्थानिक कौशल इसमें काम आते हैं - गियर अनुपात, क्लच और ब्रेक का संयोजन, किनारों, कोणों और दूरियों के अनुरूप गति। ये काम वे रेडियो बंद करके करते हैं।

आधुनिक पुरुष चालक गाड़ी चलाने वैठता है, पत्री को नक्शा थमाता है और रास्ता बताने के लिए कहता है। स्थानिक क्षमता सीमित होने के कारण वह खामोश हो जाती है, नक्शे को उलटना-पलटना शरू करती है और नाकारा महसूस करने लगती है। फिर वह क्षितिज पर मौजूद किसी चीज़ को पहचानने की कोशिश करती है, जो नक्शे में दी गई किसी चीज़ से मिलता-जुलता है। अधिकतर पुरुष यह नहीं समझ पाते कि अगर आपके दिमाग़ में नक्शे को घुमाने के लिए निश्चित क्षेत्र नहीं हैं, तो आप उसे अपने हाथों में घुमाएँगे। किसी महिला के लिए अपनी यात्रा की दिशा में नक्शे को घुमाना बिल्कुल सामान्य बात है। बहस से बचने के लिए पुरुष को चाहिए कि वह महिला को नक्शा पढ़ने के लिए न कहे।

खुशहाल ज़िंदगी के लिए: इस बात की ज़िद कभी न करें कि महिला ही नक्शा या स्ट्रीट डायरेक्ट्री पढ़ेगी।

मस्तिष्क के दोनों ओर स्थानिक क्षमता होने के कारण इस प्रकार का काम करते हुए महिला का बोलना प्रभावित होता है, इसलिए अगर आप उसे स्ट्रीट डायरेक्ट्री थमा देंगे, तो उसे घुमाने से पहले वह बातचीत करना बंद कर देगी। पुरुष को डायरेक्ट्री दिए जाने पर वह बात करना जारी रखेगा, लेकिन रेडियो बंद कर देगा, क्योंकि नक्शे को पढ़ने के लिए ज़रूरी कौशल का इस्तेमाल करने के दौरान वह सुनने का काम ठीक से नहीं कर सकता। यही वजह है कि घर में फ़ोन की घंटी बजते ही वह चाहता है कि हर कोई खामोश हो जाए, ताकि वह फ़ोन पर बात कर सके।

गणितीय समस्याओं को सुलझाने के लिए महिला मुख्यतः अपने दिमाग़ के बाएँ हिस्से का इस्तेमाल करती है, जिससे न सिर्फ़ कैलकुलस में उनकी रफ़तार धीमी हो जाती है, बल्कि इससे यह भी साफ़ हो जाता है कि कई महिलाएँ व लड़कियाँ गणित के सवाल हल करते हुए ज़ोर-ज़ोर से क्यों बोलती हैं। हर जगह अखबार पढ़ने की कोशिश करते पुरुष चिल्लाते हैं, ‘क्या तुम अपने दिमाग़ में हिसाब-किताब करोगी, प्लीज़! मैं अपना काम नहीं कर पा रहा!’

गाड़ी चलाते हुए बहस कैसे की जाए

पत्री को गाड़ी चलाने का प्रशिक्षण देने का मतलब है, तलाक़ की ओर क़दम बढ़ाना। दुनिया भर के पुरुष यही

निर्देश महिलाओं को देते हैं: ‘बाएँ मुड़ो - धीरे करो! - गियर बदलो - पैदल चलने वालों का ध्यान रखो - ध्यान लगाओ - रोना बंद करो!’ किसी पुरुष के लिए गाड़ी चलाना अपने माहौल के अनुसार अपनी स्थानिक क्षमता का परीक्षण करना है। महिला का लक्ष्य एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक सुरक्षित पहुँचना होता है। गाड़ी में यात्री सीट पर बैठकर पुरुष को अपनी आँखें बंद कर लेनी चाहिए, रेडियो का वाल्यूम बढ़ा लेना चाहिए और टिप्पणी करना बंद कर देना चाहिए, क्योंकि कुल मिलाकर महिलाएँ गाड़ी चलाने में पुरुषों से बेहतर होती हैं। वह उसे सही जगह पर पहुँचा देगी, चाहे उसमें थोड़ा ज्यादा समय लगे। लेकिन पुरुष राहत की साँस ले सकता है और जीता-जागता अपनी मंज़िल तक पहुँच सकता है।

महिलाओं द्वारा पुरुष के गाड़ी चलाने की आलोचना किए जाने का कारण यह है कि अपनी स्थानिक क्षमता के कारण पुरुष ऐसे निर्णय लेता है, जो महिला को ख़तरनाक लग सकते हैं। अगर पुरुष का गाड़ी चलाने का इतिहास ख़राब नहीं रहा है, तो महिला को भी बिना कोई आलोचना किए आराम से बैठना चाहिए और उसे गाड़ी चलाने देना चाहिए। बिंडस्क्रीन पर बारिश की पहली बूँद गिरते ही महिला वाइपर्स ऑन कर देती है, जो पुरुषों को कभी समझ नहीं आता। पुरुष का दिमाग़ तब तक इतज़ार करता है, जब तक कि वाइपर्स की गति के अनुसार बूँदें न पड़ें और वह तभी वाइपर्स ऑन करता है, जब निश्चित समय बीत जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह अपनी स्थानिक क्षमता का इस्तेमाल करता है।

महिला को कोई चीज़ कैसे बेची जाए

किसी महिला को कभी भी इस प्रकार निर्देश न दें, ‘उत्तर को चलो’ या ‘पश्चिम में पाँच किलोमीटर चलो’, क्योंकि इसके लिए दिक्सूचक कौशल की आवश्यकता होती है। इसके बजाय, दिशा बताते हुए आसपास की जगहों के बारे में कहें जैसे, ‘मैकडॉनल्ड्स के बाद उस इमारत की ओर बढ़ो जिस पर नेशनल बैंक लिखा हुआ है।’ अपनी परिधीय दृष्टि के कारण महिला को इस तरह के दिशा-निर्देश आसानी से समझ आते हैं। हर जगह भवन निर्माता और वास्तुशिल्पी अपने कारोबार में लाखों का नुकसान उठाते हैं, क्योंकि इससे जुड़े निर्णय लेने वाली महिलाओं के सामने वे ऐसी योजनाएँ और रूप रेखाएँ रखते हैं, जो द्विआयामी होती हैं। पुरुष का दिमाग़ इस तरह की योजनाओं को त्रिआयामी स्वरूप में बदलकर देख सकता है कि वे इमारतें पूरी बनने पर कैसी दिखेंगी, लेकिन महिलाओं को वे सिर्फ़ कुछ आड़ी-तिरछी रेखाओं जैसी लगेंगी। त्रिआयामी माडल या कम्प्यटर पर बनी छवि से महिलाओं को घर बेचे जा सकते हैं। इस जानकारी को पाने के बाद अब नक्शा देखती किसी महिला को बेवकूफ़ की तरह महसूस नहीं होगा। उसे पुरुष को थमा दें, यह उसका काम है।

पुरुष के लिए दिशा-निर्देशन करना और गाड़ी चलाना ज्यादा आरामदेह है, जबकि महिला आसपास की दिलचस्प जगहों के बारे में बात कर सकती है। जैसा कि आप जानते हैं, महिला की तुलना में पुरुष के शाब्दिक कौशल कमतर हैं, इसलिए बेहतर है कि इसके बदले वह दिशा-निर्देशन करे। इसका मतलब है कि वह अपनी नई गर्लफ्रेंड का पता तो खोज सकता है, भले वह यह न जानता हो कि वहाँ पहुँचकर उसे कहना क्या होगा।

रिवर्स पैरलल पार्किंग की परेशानी

अगर आपसे कहा जाए कि आप किसी सड़क पर रिवर्स पार्किंग की गई गाड़ियों को देखकर बताएँ कि किन गाड़ियों को पुरुषों ने पार्क किया है और किन्हें महिलाओं ने? एक इंग्लिश डिफ़ेसिव ड्राइविंग स्कूल द्वारा करवाए गए शोध से यह पता चला कि यूके में किसी की गाड़ी की किनारे पर रिवर्स पार्किंग करने के मामले में औसतन 82 प्रतिशत सटीकता पाई गई और 71 प्रतिशत लोगों को गाड़ी पार्क करने की पहली कोशिश में सफलता मिली। सटीकता के मामले में 22 प्रतिशत महिलाएँ सफल रहीं, जबकि केवल 23 प्रतिशत महिलाओं का गाड़ी पार्क करने का पहला प्रयास सफल रहा। सिंगापुर में किए इस प्रकार के अध्ययन में पुरुषों का सटीकता प्रतिशत 66 था, जबकि 68 प्रतिशत पुरुषों की पहली कोशिश कामयाब रही। महिलाओं का सटीकता परिणाम 19 प्रतिशत था, जबकि केवल 12 प्रतिशत महिलाएँ पहले प्रयास में सफल रहीं। एक बात स्पष्ट है कि अगर सिंगापुर की महिलाएँ गाड़ी चला रही हैं, तो बेहतर होगा कि आप रास्ते से हट जाएँ! सबसे अच्छी तरह पार्क करने में जर्मन पुरुष सबसे आगे हैं, 88 प्रतिशत पुरुषों को पहली बार ऐसा करने में सफलता मिली। ड्राइविंग स्कूलों में हुए परीक्षणों में पता चला कि प्रशिक्षक के दौरान आमतौर पर रिवर्स पार्किंग में महिलाओं का प्रदर्शन पुरुषों से बेहतर रहता है, लेकिन

आँकड़े दिखाते हैं कि असल ज़िंदगी में महिलाओं का प्रदर्शन बहुत बुरा रहता है। इसका कारण यह है कि स्त्रियाँ कोई काम सीखने और उसे सफलतापूर्वक दोहराने में पुरुषों से बहुतर होती हैं, बशर्ते जिस माहौल व जिन हालात में वे यह काम कर रही हैं, उसमें कोई बदलाव न हो। लेकिन ट्रैफिक में हर स्थिति नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं और पुरुष की स्थानिक क्षमता उनसे निपटने में अधिक उपयुक्त होती है।

अधिकतर महिलाएँ तंग जगह पर रिवर्स पार्किंग करने के बजाय बड़े क्षेत्र में गाड़ी पार्क करना और वहाँ से पैदल जाना पसंद करती हैं।

अगर स्थानीय परिषदों में महिलाओं का वर्चस्व होता, तो वे पैरलल पार्किंग पर प्रतिबंध लगा देती!

हाल के समय में कई कस्बों व शहरों में रिवर्स पार्किंग में पिछले हिस्से से किनारे तक 45 डिग्री की दूरी रखने की शुरुआत की गई है, क्योंकि इससे चालक को बाहर निकलते हए आगे की ओर गाड़ी चलाने में सुविधा होती है। दुर्भाग्यवश इससे रिवर्स पार्किंग को लेकर अधिकतर महिलाओं की चिंता कम नहीं हुई है, क्योंकि इसमें भी कोणों व दूरियों का अनुमान लगाने में स्थानिक क्षमताओं की ज़रूरत होती है।

हमने 20 स्थानीय परिषदों का सर्वेक्षण किया, जिन्होंने इस प्रकार की रिवर्स पार्किंग को लागू किया और पाया कि यह निर्णय लेने में महिलाएँ शामिल नहीं थी। हमेशा यह फ़ैसला लगभग अधिकतर पुरुषों का ही था। अगर परिषद पूरी तरह महिलाओं की होती, तो रिवर्स और पैरलल पार्किंग की कभी अनुमति न मिलती। वे पार्किंग के बीच से गाड़ी ले जाने का प्रावधान करती, जिससे गाड़ी को रिवर्स करना या फिर कोणों व फ़ासलों का अंदाज़ा लगाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। उसके लिए ज़्यादा जगह की ज़रूरत पड़ती, लेकिन दुर्घटनाएँ कम हो जाती।

महिलाएँ ज़्यादा सावधानी से गाड़ी चलाती हैं?

वर्ष 2000 में यूके 23 लाख चालकों के बीमा रिकॉर्ड्स के अध्ययन से पता चला कि अंतिम चार वर्षों में 22.5 प्रतिशत महिलाओं ने और 18.6 प्रतिशत पुरुषों ने बीमा क्लेम किया। इससे यह भी पता चला कि 9 प्रतिशत महिलाओं का नो क्लेम बोनस नहीं था, जिसका मतलब था कि पिछले 12 महीनों में उनसे कोई दुर्घटना हुई थी, पुरुषों के मामले में यह प्रतिशत 6.5 था। इससे यह निष्कर्ष निकालना आसान है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ ख़राब चालक होती हैं, लेकिन ध्यान से देखने पर कहानी बिल्कुल उल्टी दिखाई देती है। महिलाएँ ज़्यादा सावधान होती हैं, किसी गोलचक्कर पर वे ज़्यादा समय लगाती हैं या फिर इंतज़ार करती रहती हैं, जबकि उसकी ज़रूरत नहीं होती। इस सावधानी से ज़्यादा हादसे हो सकते हैं, क्योंकि यह अनिर्णय की स्थिति लगती है और इससे अन्य चालक परेशान हो सकते हैं। महिलाओं से दुर्घटनाएँ तो होती हैं, लेकिन उनके बीमा भुगतान कम होते हैं, क्योंकि उसमें ज़्यादा टक्कर व खरोंचें शामिल होती हैं। अधिकतर बड़े भुगतान और पूरी रकम के दावों में पुरुष चालक शामिल होते हैं, गाड़ी चलाते समय जिनका टेस्टोस्टेरोन स्तर ज़्यादा काम करता है। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि विवाहित महिलाओं की तुलना में तलाक़ शुदा महिलाओं की टक्कर ज़्यादा हुई।

अधिकतर महिलाओं को गुमराह किया गया

तो इस स्थानिक साक्ष्य में महिलाओं की क्या स्थिति है? कई अच्छे इरादे वाले समूह इस बात को लेकर आश्वस्त थे कि अगर वे एक बार पुरुष दमन की तथाकथित बेड़ियों से आज़ाद हो जाएँ तो वे बहुत तेज़ी से उन व्यवसायों व शौकों में ऊँचे स्तरों पर पहुँच सकती हैं, जिन पर पुरुषों का वर्चस्व है। लेकिन जैसा कि आप आगे देखने वाले हैं, उन व्यवसायों में पुरुषों का असल में एकाधिकार है, जिनमें स्थानिक क्षमता की आवश्यकता होती है। लाखों महिलाओं ने उन व्यवसायों व कामकाज में अपने सहज झुकावों को अनेदखा किया है, जिनमें वे अपने मस्तिष्क के विशेष कौशलों की सहायता से सहज रूप से अच्छा प्रदर्शन कर सकती थीं।

शिक्षा में स्थानिक क्षमता

जैसा कि हम देख चुके हैं, हमारा जीवविज्ञान हमें ऐसे कामकाज या शौकों की तरफ निर्देशित करता है, जो कि हमारे दिमाग की बनावट के अनुरूप हैं। एक ऐसे क्षेत्र का विश्लेषण करते हैं, जहाँ पर समान अवसर एक उच्च प्राथमिकता है और वह क्षेत्र है, शिक्षा का। हमने ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और ब्रिटेन के शिक्षा अधिकारियों से बात की, सबने इस बात पर बल दिया कि उनकी परी कोशिश रहती है कि दोनों लिंगों को समान अवसर देने के लिए स्त्री/पुरुष शिक्षकों का प्रतिशत 50/50 रहे। ब्रिटेन में 1999 में 48 प्रतिशत शिक्षक पुरुष व 52 प्रतिशत महिला शिक्षक थीं। पुरुषों के मस्तिष्क की तुलना में स्त्रियोंचित मस्तिष्क पढ़ाने के लिए अधिक उपयुक्त है, क्योंकि उसकी संवाद करने व मानव संपर्क की क्षमताएँ अधिक विकसित होती हैं। स्त्री व पुरुषों की विषयों की प्राथमिकताओं को देखते हैं।

विषय	शिक्षकों की संख्या	%पुरुष	%महिलाएँ
जीवविज्ञान	5,100	49	51
बिज़नेस स्टडीज़	6,400	50	50
इतिहास	13,800	54	46
भूगोल	14,200	56	44
सामाजिक अध्ययन	11,000	52	48
संगीत	5,600	51	49
करियर्स एजुकेशन	1,900	47	53
निजी एवं सामाजिक शिक्षा	74,200	47	53
सामान्य अध्ययन	7,900	53	47
क्लासिक्स	510	47	53
शारीरिक शिक्षा	20,100	58	42
धार्मिक शिक्षा	13,400	56	44
कला	9,400	44	56

इस सारणी से दो सबक मिलते हैं। पहला, पढ़ाए गए विषयों के लिए मस्तिष्क के बाएँ या दाएँ गोलार्ध के प्रभुत्व की आवश्यकता नहीं होती। इनके लिए उच्च स्थानिक क्षमता की भी ज़रूरत नहीं होती और न ही इसके लिए बाएँ हिस्से की खासियत रही शाब्दिक क्षमता की आवश्यकता होती है। आप देख सकते हैं कि इन विषयों में महिला व पुरुष शिक्षकों का प्रतिशत पर्याप्त रूप से समान है।

विषय	शिक्षकों की संख्या	%पुरुष	%महिलाएँ
भौतिकी	4,400	82	18
सूचना प्रौद्योगिकी	10,700	69	31
विज्ञान	28,900	65	35
रसायनशास्त्र	4,600	62	38

स्थानिक क्षमता की आवश्यकता वाले विषय

दी गई सारणी से स्पष्ट होता है कि जहाँ स्थानिक रूप से सोचने की क्षमता आवश्यक है, वहाँ पुरुषों का प्रभुत्व है।

स्थानिक क्षमता वाले व्यवसाय

यहाँ ऐसे व्यवसायों की सूची दी गई है, जिनके लिए उच्च स्थानिक क्षमता की आवश्यकता होती है और उसकी गैर

मौजूदगी में किसी की जान तक जा सकती है। इसके महत्व को समझने और पुरुष के दाएँ मस्तिष्क में मौजूद शिकारी कौशल के साथ इसके संबंध को समझने के लिए आपको रॉकेट साइंटिस्ट होने की ज़रूरत नहीं है।

जो लोग इस मान्यता पर अड़े रहते हैं कि सहज क्षमताओं का कोई महत्व नहीं, वे अब भी यह दावा करते हैं कि इन व्यवसायों में महिलाएँ इसलिए समानता प्राप्त नहीं कर पाई हैं, क्योंकि पुरुष इमन, ‘केवल लड़के ऐसा कर सकते हैं’ वाला पुरुषों का रवैया और पारंपरिक रूप से यूनियनों में उनके वर्चस्व ने महिलाओं को ऐसा करने से रोका है। द रॉयल इंस्टिट्यूट ऑफ ब्रिटिश आर्किटेक्ट्स ने हालाँकि यह बताया है कि वास्तुशिल्प में दाखिला लेने वाले 50 प्रतिशत विद्यार्थियों में महिलाएँ होती हैं, लेकिन इस व्यवसाय को अपनाने वाले लोगों में उनका हिस्सा केवल नौ प्रतिशत है। ज़ाहिर है कि वास्तुशिल्पी न बनने वाली कुछ महिलाओं ने मातृत्व को चुना होगा, लेकिन बाकी महिलाओं का क्या हुआ? कुल ब्रिटिश अकाउंटेंट्स या लेखाकारों में महिलाओं का प्रतिशत 17 है, जबकि उसके पाठ्यक्रम में दाखिला लेने वाली 38 प्रतिशत महिलाएँ थीं।

‘महिला पायलट अधिक क्यों नहीं हैं?’ हमने एयरलाइन्स से पूछा। ‘वे इसमें प्रवेश नहीं लेती,’ हमें जवाब मिला। ‘महिलाओं की दिलचस्पी विमान उड़ाने में नहीं होती।’ अधिकतर एयरलाइन अधिकारी इसे लेकर अनिश्चित थे या फिर वे इस बात से अनजान थे कि उड़ान में स्थानिक क्षमता कितनी महत्वपूर्ण होती है। उनमें से कई, यह जानने के बावजूद कि कॉकपिट कूप में 98 प्रतिशत पुरुष होते हैं, लैंगिक अंतरों पर कोई टिप्पणी करने को लेकर भयभीत थे। एक बात यहाँ बिल्कुल स्पष्ट है: इनमें से अधिकतर व्यवसायों में महिलाएँ नहीं होती, क्योंकि वे इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश नहीं लेती। उनके मस्तिष्क इन क्षेत्रों में काम करने के अनुरूप नहीं होते, इसलिए वे इन कामों को करना सीखने में दिलचस्पी नहीं लेती।

व्यवसाय	%पुरुष
फ्लाइट इंजीनियर	100.0%
इंजीनियर	100.0%
रेसिंग ड्राइवर	99.8%
न्यूकिलयर इंजीनियर	98.3%
पायलट	99.2%
एयर ट्रैफिक कंट्रोल	94.0%
ड्रैगकार/बाइक रेसर	93.6%
वास्तुशिल्पी	91.0%
फ्लाइट डेक ऑफिसर	90.5%
ऐक्चुअरी	90.0%
बिलियडर्स	87.0%
अकाउंटेंट	83.0%

बिलियडर्स और न्यूकिलयर विज्ञान

अपने शोध के दौरान हमने कई पेशेवर स्कूकर और बिलियडर्स खिलाड़ियों से बात की। ‘पेशेवर बिलियडर्स खेलने वाली महिलाएँ पुरुषों की तरह सोचती व काम करती हैं,’ एक पूर्व विश्व चैम्पियन का कहना है। ‘वे हमारी तरह बात करती हैं और उनका पहनावा भी हमारी तरह होता है, वे सूट और बो टाई पहनती हैं।’ महिला खिलाड़ियों का हालाँकि मानना है कि अगर वे पुरुषों जितना अभ्यास करें तो वे भी उतनी ही माहिर हो सकते हैं। कई खिलाड़ियों का मानना है कि उनके प्रति पुरुषों का रवैया भी कई बार उन्हें आगे बढ़ने से रोकता है। ‘इसमें स्थानिक क्षमता की बात कहाँ आती है?’ हमारा सवाल था। ‘जैसे गेंदों की सापेक्ष गति और कोणों को नापना, पॉकेट से दूरी और सफेद गेंद को सही जगह तक पहुँचाना?’ ‘हमने इसके बारे में कभी नहीं सुना,’ हमें यह जवाब मिला। एक बार फिर महिला चैम्पियनों और उनकी भागीदारी की कमी के लिए पुरुषों के रवैये को ज़िम्मेदार ठहराया गया।

‘हम दोनों लिंगों को बराबर अवसर देते हैं,’ इंस्टिट्यूट ऑफ न्यूक्लियर इंजीनियर्स ने हमें बताया, ‘लेकिन हम बराबरी के आधार पर नहीं, बल्कि क्षमता के आधार पर लोगों को काम देते हैं।’ न्यूक्लियर इंजीनियरों की संख्या 98.3 प्रतिशत है। दिलचस्प बात यह है कि इंस्टिट्यूट के शोध में यह पाया गया कि महिला इंजीनियर वर्णमाला के वर्णों के मामले में पुरुषों से बेहतर हैं और पुरुष संख्याओं के मामले में बेहतर हैं। यह बात उचित भी है, वर्ण लोगों, संबंधों व शाब्दिक क्षमताओं से जुड़े हैं, जबकि संख्याएँ चीज़ों के बीच के स्थानिक संबंधों से जुड़ी हैं।

इतिहास को देखें, तो आप पाएँगे कि उन क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति न के बराबर है, जिनमें स्थानिक क्षमता व गणितीय तर्क की ज़रूरत होती है, जैसे शतरंज, कम्पोजिंग और रॉकेट साइंस। कुछ लोग यह दावा कर सकते हैं कि लैंगिकवादी पुरुष निरंकुशता ने महिलाओं को इस तरह के कामों से दूर रखा है, लेकिन अपने आसपास देखने पर आप पाएँगे कि बराबर अवसर की हमारी दुनिया में स्थानिक कौशलों से जुड़े कामकाज में पुरुषों को पीछे छोड़ने वाली महिलाओं की संख्या बहुत कम है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उनके मस्तिष्क उन्हें बताते हैं कि वे अपने घरौंदों की रक्षा करने में ज़्यादा दिलचस्पी रखती हैं, न कि किसी अन्य के घरौंदे पर हमला करने में।

रचनात्मक क्षेत्रों, जैसे प्रदर्शन कलाओं, शिक्षण, मानव संसाधन और साहित्य, में महिलाओं का प्रदर्शन बहुत अच्छा रहता है, इन सभी क्षेत्रों में अमूर्त तर्क प्रमुख नहीं होता। पुरुष जब शतरंज खेलते हैं, तो महिलाएँ नृत्य व सजावट करती हैं।

कम्प्यूटर उद्योग

कम्प्यूटर विज्ञान व्यापक रूप से गणित पर आधारित है, जो स्थानिक क्षमता पर निर्भर करता है और परिणामस्वरूप यह पुरुषों का कार्यक्षेत्र है। हालाँकि कुछ कम्प्यूटर विज्ञान क्षेत्रों, जैसे प्रोग्रामिंग या यूज़र इंटरफ़ेस डिज़ाइन में गणित से ज़्यादा मानव मनोविज्ञान की ज़रूरत पड़ती है और इन क्षेत्रों में महिलाओं की संख्या काफ़ी ज़्यादा है।

यूएस बिज़नेस विमेन इन कम्प्यूटिंग पत्रिका द्वारा किए गए सर्वेक्षण के परिणामों से पता चला कि 1995 से 2000 के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आने वाली महिलाओं की संख्या में लगातार कमी आई और इसका कारण इन पाठ्यक्रमों में महिलाओं की रुचि कम होना बताया गया। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं द्वारा अपने कार्यस्थल में कम्प्यूटर का इस्तेमाल करने की संभावना दोगुनी है। जहाँ एक ओर 84 प्रतिशत महिलाओं ने कम्प्यूटर को रचनात्मक स्वतंत्रता उपलब्ध करवाने के एक तरीके या साध्य के रूप में देखा, वहीं केवल 33 प्रतिशत पुरुषों की यही राय थी। सर्वेक्षण से यह भी सामने आया कि 67 प्रतिशत पुरुषों ने कम्प्यूटर में टेक्नॉलॉजी या प्रोग्राम्स व ऐक्सेसरीज़ के साथ खेलने को महत्व दिया, सिर्फ़ 16 प्रतिशत महिलाओं का भी यही मानना था।

गणित और अकाउंटिंग

स्थानिक कौशल से जुड़े व्यवसायों या कार्यों में आने वाले पुरुष अक्सर उसमें बने रहते हैं और उनका प्रभुत्व भी रहता है। अधिकतर गणित अध्यापक पुरुष हैं, जबकि इस विषय में लैंगिक फ़ासला कम हो रहा है। वर्ष 2000 में यूके में 58 प्रतिशत गणित अध्यापक पुरुष थे।

तो इस विषय को पढ़ाने वाली महिलाओं के बढ़ते प्रतिशत के बारे में हम क्या कह सकते हैं? संभावित स्पष्टीकरण यह है कि पढ़ाने, आपसी संपर्क और समूहों के संगठन के काम के लिए महिलाएँ अधिक उपयुक्त हैं और पुरुषों की तुलना में वे बुनियादी बातें सीखने को लैकर अधिक प्रतिबद्ध हैं। चैकिंग वे उसी चीज़ को बार-बार पढ़ा रही हैं, इसलिए वे गणित सहित अधिकतर विषयों को अच्छी तरह पढ़ा सकती हैं। यही कारण है कि अकाउंटेंसी जैसे क्षेत्र में सामान्य तौर पर महिला अकाउंटेंट्स की संख्या बढ़ रही है। अब यह ग्राहक के अनुकूल सेल्स भूमिका के रूप में आ चुका है, जिसके लिए महिलाओं का दिमाग़ बेहतर रूप से उपयुक्त है और इसमें अकाउंटिंग गौण हो जाती है। हर जगह बड़ी अकाउंटिंग कंपनियों में अब किसी महिला अकाउंटेंट को ग्राहकों को अपना पक्ष बताते हुए व उन्हें अपने पक्ष में करते हुए देखा जा सकता है, जबकि गणित से जुड़ा अकाउंटिंग का काम जूनियर पुरुषों से करवाया जाता है। जब काम में पूरी तरह से स्थानिक क्षमता और गणितीय तर्क की आवश्यकता होती है, तो

वर्चस्व पुरुषों का ही रहता है। यही कारण है कि 91 प्रतिशत ऐक्चुअरी और 99 प्रतिशत इंजीनियर पुरुष होते हैं।

सभी चीज़ें अगर बराबर हों...

ऑस्ट्रेलिया में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में केवल पाँच प्रतिशत महिलाएँ हैं, फिर भी वे अपने पुरुष साथियों की तुलना में औसतन 14 प्रतिशत अधिक कमाती हैं। यह बताता है कि स्थानिक क्षमता के बराबर होने पर पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का प्रदर्शन बेहतर होता है। पेशेवर मोटर रेसिंग में महिला चैम्पियन न के बराबर ही रही हैं, लेकिन ड्रैग-रेसिंग में भाग लेने वाली और जीतने वाली महिलाओं का प्रतिशत 10 है। ऐसा क्यों? ड्रैग-रेसिंग में रफ्तार, कोणों, किनारों, आगे निकलने और जटिल गेयर अनुपातों से निपटने के लिए स्थानिक कौशलों की जरूरत नहीं होती। ड्रैग-रेसर एक सीधी रेखा में गाड़ी चलाते हैं और विजेता वह होता है, जो हरी बत्ती पर सबसे तेज़ी से प्रतिक्रिया करता है और महिलाओं को इस मामले में पुरुषों पर बढ़त हासिल होती है।

स्थानिक क्षमता बराबर होने पर महिलाओं के प्रदर्शन का स्तर पुरुषों से उच्चतर होता है।

अधिकतर महिला ड्रैग-रेसर्स के मस्तिष्क का परीक्षण करने पर हमने पाया कि रेस न करने वाली महिलाओं की तुलना में उनके दिमाग़ का सहज झूकाव पुरुषों की तरह था, इसके बावजूद ड्रैग-रेसिंग के फ़ायदों के बारे में उनकी बातचीत का केंद्र रिश्ते थे। ‘इन लोगों के साथ काम करना अच्छा तजुर्बा था,’ उन्होंने बताया। ‘हर कोई मदद करता है।’ ‘हम सभी अच्छे दोस्त हैं।’ पुरुष चालकों के लिए फ़ायदों में ट्रॉफ़ी जीतना, कार की अनोखी विशेषताएँ और हादसों से बचने की शेखी बघारना शामिल थे।

लड़के और उनके खिलौने

लड़कों को अपने खिलौने बहुत प्रिय होते हैं। यही कारण है कि 99 प्रतिशत पेटेंट पुरुषों द्वारा पंजीकृत किए जाते हैं। लड़कियों को भी अपने खिलौनों के साथ खेलना अच्छा लगता है, लेकिन 12 साल की उम्र तक वे बड़ी होने लगती हैं। अव्यावहारिक, स्थानिक कौशल से जुड़े खिलौनों के प्रति पुरुषों का जुनून कभी कम नहीं होता - वे उन पर ज़्यादा ख़र्च करने लगते हैं। उन्हें नन्हे पॉकेट टीवी, मोबाइल फ़ोन के आकार की गाड़ियाँ, कम्प्यूटर तथा वीडियो गेम्स, डिजिटल कैमरे, जटिल मशीनें, आवाज़ पर जलने-बुझने वाली लाइटें और इंजन वाली कोई भी चीज़ पसंद आती है। आवाज़ करने वाली, जगमगाने वाली और कम से कम छह डी-सेल बैटरियों वाली किसी भी चीज़ की चाहत पुरुषों को होती है।

महिलाएँ कैसा महसूस करती हैं

लैंगिक भेदभाव पर होने वाली किसी भी चर्चा के दौरान, जो कि इस पुस्तक में भी की गई है, महिला अधिकारीवादी और राजनीतिक रूप से सही बात करने वाले आंदोलनकारी शौररुगुल मचाने लगते हैं। उन्हें लगता है कि इस प्रकार की चर्चा से जीवन में समानता बात करने के उनके तर्क कमज़ूर हो जाते हैं। जहाँ एक ओर समाज के पूर्वग्रह स्त्री-पुरुषों में घिसे-पिटे वर्ताव और बुनियादी अन्याय को मज़बूत कर सकते हैं और उसे बढ़ावा दे सकते हैं, लेकिन वहाँ ये स्टीरियोटाइप इस वर्ताव का कारण नहीं होते। इसके ज़िम्मेदार हमारा बुनियादी जीविज्ञान और हमारे मस्तिष्क की संरचना हैं। कई महिलाओं को लगता है कि वे नाकाम हैं या पुरुषों के पारंपरिक गढ़ों को न जीत पाने के कारण सामान्य तौर पर महिलाएँ असफल रही हैं। इसमें बिल्कुल भी सञ्चार्जित पुरुष मस्तिष्क के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

महिलाएँ असफल नहीं रही हैं - वे बस पुरुषों की तरह नहीं बन पाई हैं।

यह विचार कि समाज में महिलाओं को सफलता नहीं मिल पाई है, तभी सही होगा जब हम यह मान लें कि सफलता का मतलब पुरुषों के मानक के अनुरूप होना है और वही हर किसी की सफलता का पैमाना है या होना चाहिए। लेकिन यह कौन कहता है कि किसीं कंपनी को नियंत्रित करने वाला प्रमुख कार्यकारी अधिकारी होना या जम्बो जेट चलाना या अंतरिक्ष यान की प्रोग्रामिंग करना ही संतुष्टि का अंतिम पैमाना है?

पुरुषों को ऐसा लगता है। यह केवल उनकी श्रेष्ठता का पैमाना है, यह हर किसी का पैमाना नहीं है।

क्या आप अपने स्थानिक कौशल को बेहतर कर सकते हैं?

एक शब्द में कहें, तो हाँ आप ऐसा कर सकते हैं। इसके कई विकल्प हैं। आप चाहें तो विकास की प्राकृतिक प्रक्रिया के संपन्न होने का इंतज़ार कर सकते हैं और अपनी स्थानिक गतिविधियों का लगातार अभ्यास तब तक करते रह सकते हैं, जब तक कि आपके मस्तिष्क में इसके लिए पर्याप्त संपर्क विकसित नहीं हो जाते। हालाँकि इसमें आपको काफ़ी लंबा समय लग सकता है। जीवविज्ञानियों का अनुमान है कि इसमें हजारों साल लग सकते हैं।

टेस्टोस्टेरोन हार्मोन लेने से भी स्थानिक क्षमता बढ़ेगी, लेकिन यह विकल्प बहुत संतोषजनक नहीं है क्योंकि इसके कारण आक्रामकता का स्तर व गंजापन बढ़ सकता है और दाढ़ी भी आ सकती है, जो कि अधिकतर महिलाओं पर अच्छी नहीं लगेगी।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि अभ्यास व बार-बार एक काम करने से किसी निश्चित गतिविधि के लिए स्थायी तौर पर मस्तिष्क में अधिक संपर्क विकसित हो सकते हैं। खिलौनों से भरे पिंजरे में रखे चूहों के मस्तिष्क का द्रव्यमान उन चूहों से ज्यादा होता है, जिन्हें बिना खिलौने वाले पिंजरे में रखा गया हो। अपने दिमाग को काम में न लाने वाले लोगों के मस्तिष्क का द्रव्यमान कम होने लगता है, जबकि मानसिक गतिविधियाँ करने वाले लोगों के मस्तिष्क का द्रव्यमान बना रहता है और बढ़ता भी है। नक्शों को देखकर और उन्हें समझने का अभ्यास करके उनका उपयोग करने की आपकी क्षमता बहुत बढ़ सकती है, ठीक वैसे ही जैसे रोज़ पियानो बजाने से आप बेहतर पियानो वादक बन सकते हैं। अगर पियानो बजाने वाले के दिमाग में ऐसे संपर्क नहीं हैं, जिनसे उसे सहज बजाना संभव नहीं है, तो एक संतोषजनक स्तर बनाए रखने के लिए उसे नियमित तौर पर बहुत अभ्यास करना होगा। अगर पियानो वादक या नक्शा पढ़ने वाले ने अभ्यास के स्तर को बनाए नहीं रखा, तो उनका कौशल बहुत तेज़ी से कम होगा और उन्हें उसे फिर से सीखने में उस आदमी की तुलना में अधिक समय लगेगा, जिसके मस्तिष्क में उस काम को करने की सहज क्षमता मौजूद है।

अपने स्थानिक कौशल को बेहतर करने के बदले गंजा सिर और दाढ़ी का उगना किसी भी महिला के लिए बहुत बड़ी कीमत हो सकती है।

आप किसी कुत्ते को उसके पिछले पैरों पर चलना सिखाने में सफल हो सकते हैं और अगर वह इस काम को बार-बार करे तो संभव है कि उसके बड़े भी इसे कर पाएँ। लेकिन यह कुत्ते के लिए सहज काम नहीं है और ऐसा करने में उसे बहुत दर्द हो सकता है व उसे ज्यादा कोशिश करनी पड़ सकती है। चारों पैरों पर चलना कुत्ते की सहज मुद्रा है।

कुछ उपयोगी रणनीतियाँ

अगर आप एक महिला हैं और आपका कोई बेटा है या आपकी ज़िंदगी में कई पुरुष हैं, तो आपके यह समझने की

आवश्यकता है कि उनमें बेहतरीन स्थानिक क्षमता हो सकती है, लेकिन फिर भी वे एक समय में एक ही काम कर सकते हैं। उनमें से अधिकतर को अपना होमवर्क, अपनी डायरी और जीवन को व्यवस्थित करने और प्रभावशाली बनाने के लिए मदद की ज़रूरत होती है। इस तरह के संगठनात्मक हुनर लड़कियों व महिलाओं में सहज ही होते हैं। एल्बर्ट आइन्स्टाइन स्थानिक दृष्टि से जीनियस थे, लेकिन पाँच साल की उम्र तक उन्होंने बोलना शुरू नहीं किया था और उनमें संगठनात्मक या अंतरवैयक्तिक कौशल न के बराबर थे, जैसा कि उनके उनके हेयरस्टाइल से भी ज़ाहिर होता था।

अगर आप स्थानिक कौशल, जैसे निर्माण या वास्तुशिल्प से जुड़ा काम करने वाले पुरुष हैं, तो आपको समझना होगा कि अधिकतर महिलाओं को आश्वस्त करने के लिए आपको उनके सामने त्रिआयामी परिप्रेक्ष्य रखना होगा।

**आप चाहते हैं कि महिला आपकी किसी योजना पर हामी भरे, तो
उसे योजना का त्रिआयामी स्वरूप दिखाएँ।**

अगर आप स्थानिक क्षमता से जुड़े व्यवसायों, जैसे इंजीनियरिंग, में महिलाओं को भर्ती कर रहे हैं, तो कुल महिलाओं में केवल 10 प्रतिशत में ही इसकी संभावना है, इसलिए केवल उन्हीं महिलाओं को लक्षित कीजिए। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि महिलाएँ कुल जनसंख्या का 50 प्रतिशत हिस्सा हैं, आप सभी महिलाओं को शामिल करने की मार्केटिंग रणनीति अपनाने की कोशिश न करें।

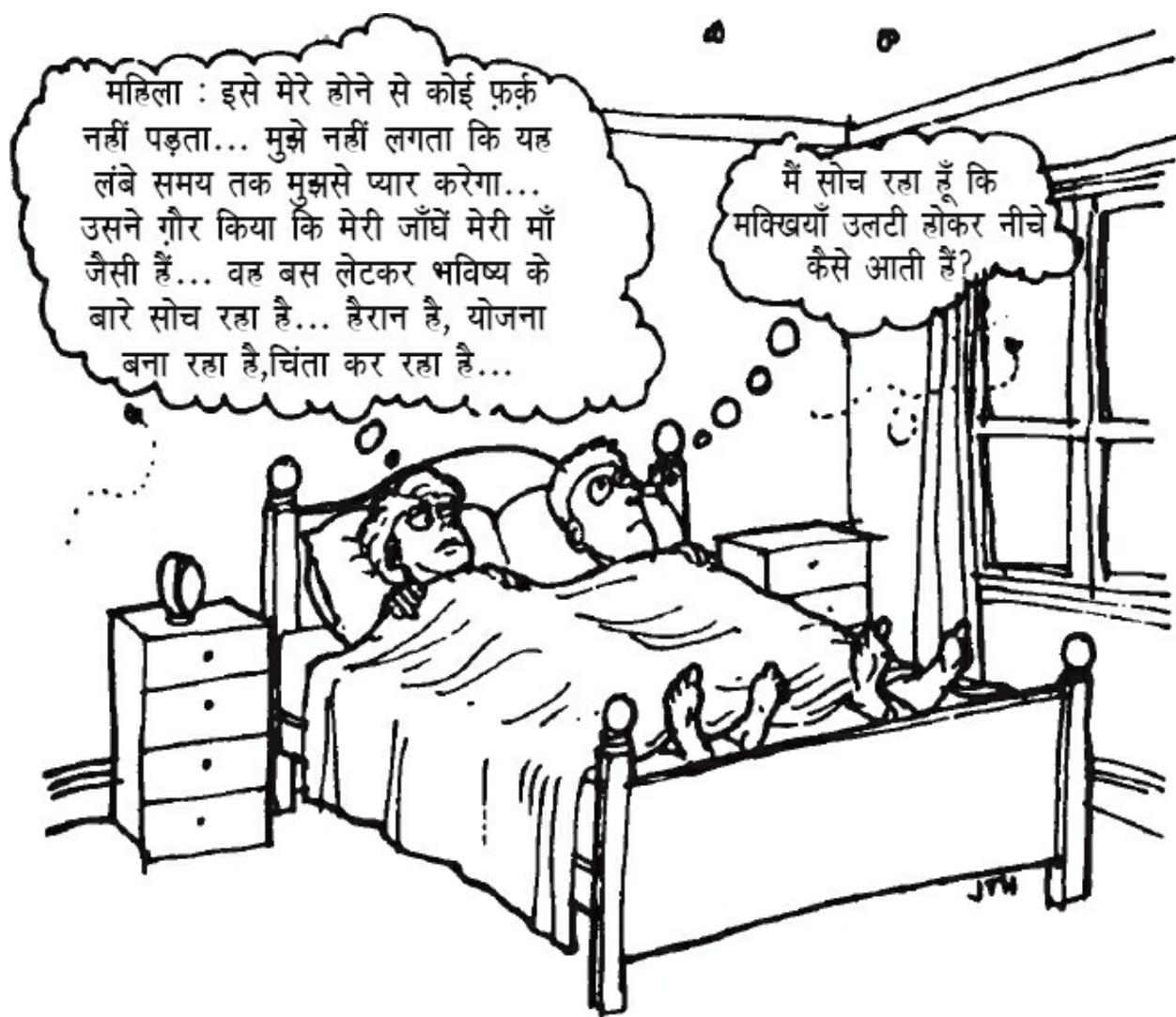
सारांश

रे और रुथ अब मिलकर हँसी-खुशी साथ सफ़र करते हैं। रे रास्ते का फैसला करता है और वही दिशानिर्देशन करता है। रुथ बात करती है और आसपास की जगहों के बारे में बताती है और रे उसे टोके बिना उसकी बात सुनता है। वह अब रे के गाड़ी चलाने की आलोचना नहीं करती, क्योंकि वह जानती है कि रे अपनी स्थानिक क्षमता के कारण ऐसे तरीके चुनता है, जो उसे ख़तरनाक लगते हैं, लेकिन असल में रे के हिसाब से वह गाड़ी चलाने का सुरक्षित तरीका है।

रे ने 3,000 डॉलर का एक कैमरा खरीदा, जिसमें स्थानिक संबंधित चीज़ें थीं और रुथ अब यह समझ पाती है कि उसे वह कैमरा इतना पसंद क्यों है। जब रुथ को फोटो खींचनी होती है, तो रे उसे कैमरा सेट करके दे देता है और दिखाता है कि अच्छा शॉट कैसे लिया जाए, न कि उस पर हँसता है कि वह कैमरा ऑन करना तक नहीं जानती।

पुरुष अगर महिलाओं को दिशानिर्देशन करने को नहीं कहेंगे, तो सभी खुश रह सकेंगे और जब महिलाएँ पुरुषों की गाड़ी चलाने की क्षमता की आलोचना बंद कर देंगी, तो उनके बीच होने वाली बहसें बहुत कम हो जाएँगी। हम सभी अलग-अलग काम अच्छी तरह सकते हैं, इसलिए अगर आप किसी ख़ास काम में अच्छे नहीं हैं, तो परेशान न हों। आप अभ्यास करके खुद को बेहतर कर सकते हैं, लेकिन उसके कारण अपनी या अपने साथी की ज़िंदगी बर्बाद न करें।

विचार, रवैये, भावनाएँ और अन्य अनर्थकारी स्थितियाँ



कॉलिन और जिल एक अपरिचित जगह में होने वाली पार्टी में जा रहे थे। दिशा-निर्देशों के अनुसार, उन्हें वहाँ पहुँचने में 20 मिनट लगने चाहिए थे। 50 मिनट बीत चुके थे और अब भी उनकी मङ्गिल का कोई नामोनिशान नहीं था। उसी गैराज से तीसरी बार गुज़रते हुए कॉलिन चिड़चिड़ाने लगा था और जिल मायूस होने लगी थी।

जिल: ‘डार्लिंग, मुझे लगता है कि हमें गैराज से दाएँ मुड़ना था। अब रुककर किसी से पूछ लेते हैं।’

कॉलिन: ‘कोई परेशानी नहीं है। मुझे पता है कि जगह यहीं कहीं है...’

जिल: ‘लेकिन हमें पहले ही देर हो चुकी है और पार्टी शुरू हो चुकी होगी - अब रुककर किसी से पूछ लेते हैं।’

कॉलिन: ‘मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ! तुम गाड़ी चलाना चाहती हो या फिर मुझे चलाने दोगी?’

जिल: ‘मैं गाड़ी नहीं चलाना चाहती, लेकिन मैं सारी रात एक ही जगह पर गोल-गोल भी नहीं धूमना चाहती।’

कॉलिन: ‘तो ठीक है, क्यों न हम कार वापस मोड़ लें, इस तरह हम वापस घर पहुँच जाएँगे।’

अधिकतर स्त्री-पुरुषों के लिए यह बात चीत काफ़ी जानी-पहचानी है। महिला यह बात नहीं समझ पाती कि जिस इंसान से वह इतना प्यार करती है, वह रास्ता भटकने के बाद अचानक गुस्से से इतना लाल-पीला कैसे हो जाता है। अगर वह रास्ता भूल जाए, तो वह लोगों से पूछ लेगी, लेकिन इसे क्या परेशानी है? वह मान क्यों नहीं लेता कि उसे रास्ता नहीं पता?

**मोज़ेज़ को रेगिस्तान में भटकते हुए चालीस साल क्यों लगे?
उन्होंने रास्ता पूछने से मना कर दिया था।**

महिलाओं को ग़लती मानने में कोई परेशानी नहीं होती, क्योंकि उनकी दुनिया में इसे एक-दूसरे से जुड़ने और विश्वास बनाने के तरीके के रूप में देखा जाता है। अपनी ग़लती मानने वाला आखिरी पुरुष जनरल कस्टर था।

हमारे अलग बोध

स्त्री-पुरुष एक ही दुनिया को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। पुरुष कामों व चीज़ों और उनके आपसी संबंधों को स्थानिक तरीके से देखते हैं, जैसे कि वे किसी पहेली के टुकड़ों को आपस में जोड़ रहे हों। महिलाएँ दुनिया को बड़े, व्यापक तरीके से देखती हैं और हर बारीकी पर ध्यान देती हैं, लेकिन उनके लिए इस पहेली के विभिन्न हिस्से व उनके आपसी संबंध उन्हें सही स्थिति में रखने की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

पुरुष परिणाम प्राप्त करने, लक्ष्य तक पहुँचने, दर्जा व शक्ति पाने, मुकाबला करने और काम को कुशलतापूर्वक करने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं। महिलाओं का बोध संवाद, आपसी सहयोग, समन्वय, प्रेम, साझेदारी और एक-दूसरे के साथ हमारे रिश्ते पर पर अधिक केंद्रित होता है। यह अंतर इतना बड़ा है कि इस बात पर आश्रय होता है कि स्त्री-पुरुष साथ में कैसे रह पाते हैं।

लड़कों को चीज़ें पसंद हैं और लड़कियों को लोग

लड़कियों के मस्तिष्क लोगों व उनके चेहरे पर प्रतिक्रिया करने के लिए प्राकृतिक रूप से बने होते हैं, लेकिन लड़कों के दिमाग़ चीज़ों व उनके आकार पर प्रतिक्रिया करते हैं। कुछ घंटों से लेकर कुछ महीने बड़े शिशुओं के अध्ययनों से एक बात पूरी तरह स्पष्ट है: लड़कों को चीज़ें पसंद आती हैं और लड़कियों को लोग अच्छे लगते हैं। दोनों लिंगों के बीच के वैज्ञानिक और मापने योग्य अंतर बताते हैं कि किस तरह दोनों एक ही दुनिया को अपने अलग तरीके से बने हुए दिमाग़ के अनुसार देखते हैं। शिशु लड़कियाँ चेहरों की ओर आकर्षित होती हैं और शिशु लड़कों की तुलना में दो से तीन गुना देर तक आँखों का संपर्क बनाए रखती हैं। लड़कों की दिलचस्पी अनियमित

आकार व नमूनों के मोबाइल्स की गतिविधि को देखने में ज्यादा होती है।

जन्म के 12 सप्ताह बाद लड़कियाँ अपने परिवार और अजनवियों की तसवीरों में अंतर कर सकती हैं, जबकि लड़के किसी खिलौने का पता लगाने में बेहतर होते हैं। सामाजिक अनुकूलन का असर पड़ने के काफी पहले से ये अंतर बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देते हैं। प्री-स्कूल के बच्चों को लेकर एक परीक्षण किया गया, उन्हें दूरबीन दी गई, जिसमें एक आँख से चीजें दिखती थीं और दूसरी से लोगों के चेहरे दिखाई देते थे। बच्चों द्वारा दिखाई गई चीज़ों को याद करने के परीक्षण में पाया गया कि लड़कियों को लोग और उनके चेहरों के भाव याद रहे और लड़कों को चीज़ें व उनके आकार ज्यादा याद रहे। स्कूल में लड़कियाँ घेरा बनाकर बैठती हैं, वे बातें करती हैं और हर कोई एक-दूसरे के शारीरिक हावभावों को प्रतीविम्बित करता है। आप किसी एक नेता की पहचान नहीं कर पाते।

लड़कियाँ रिश्ते और सहयोग चाहती हैं, लड़कों को ताक्तत और रुतबे की चाहत होती है।

अगर कोई लड़की कुछ बनाती है, तो अक्सर वह ऐसी इमारत होती है जो लंबी होती है, लेकिन उतनी स्पष्ट नहीं दिखती, लेकिन उसमें मौजूद काल्पनिक लोगों को पूरा महत्व दिया जाता है, जबकि लड़के दूसरे लड़कों की तुलना में ज्यादा बड़ी व ऊँची संरचना बनाने का मुकाबले करने लगते हैं। लड़के दौड़ते-भागते, कूदते-फाँदते, लड़ते-झगड़ते हैं और हवाई जहाज़ या टैंक बनाने का स्वाँग करते हैं, जबकि लड़कियाँ यह बात करती हैं कि वे किन लड़कों को पसंद करती हैं या फिर उनमें से कुछ कितने बेवकूफ लगते हैं।

प्री स्कूल में नई लड़के के आने पर बाकी सभी लड़कियाँ उसका स्वागत करती हैं और वे सभी एक-दूसरे का नाम जानती हैं। किसी नए लड़के के आने पर अन्य लड़के उस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते और उसे समूह में तभी शामिल किया जाता है, जब यह लगता है कि वह किसी काम आ सकता है। अधिकतर लड़कों को नए लड़के का नाम या उसके बारे में कोई अन्य जानकारी नहीं होगी, लेकिन उन्हें यह ज़रूर याद रहेगा कि वह अच्छा खिलाड़ी था या नहीं। लड़कियाँ दूसरों का स्वागत करती व उन्हें स्वीकारती हैं और उन लोगों के प्रति सहानुभूति रखती हैं, जिसे कोई समस्या या विकलाँगता हो, लेकिन इस बात की आशंका अधिक होती है कि लड़के उस व्यक्ति का बहिष्कार करें या फिर उसके साथ बुरा बर्ताव करें।

माता-पिता भले कितनी ही कोशिश करें कि वे लड़के-लड़कियों को एक जैसा पालन-पोषण दें, उनके मस्तिष्कों के बीच का अंतर अंततः उनकी प्राथमिकताओं व बर्ताव को निर्धारित करता है। एक चार साल की लड़की को टेडी बेयर देकर देखिए, वह उसे अपना सबसे अच्छा दोस्त बना लेगी। वही खिलौना लड़के को देंगे, तो वह उसकी चीरफाड़ करके यह जानने की कोशिश करेगा कि वह कैसे काम करता है, वह उसे वैसे ही छोड़ देगा और फिर अपने अगले काम में लग जाएगा।

लड़कों की दिलचस्पी चीज़ों में और उनके काम करने के तरीकों में होती है, जबकि लड़कियाँ लोगों व रिश्तों में दिलचस्पी लेती हैं। जब वयस्क किसी विवाह के बारे में बात करते हैं, तो महिलाएँ समारोह और उसमें शामिल होने वाले लोगों के बारे में बात करती हैं, जबकि पुरुष स्टैग नाइट यानी बैचलर्स पार्टी की बात करते हैं।

लड़के मुकाबला करते हैं, लड़कियाँ सहयोग करती हैं

लड़कियों के समूह मिलकर काम करने वाले होते हैं और आप देखकर किसी नेता की पहचान नहीं कर सकते। लड़कियाँ बातचीत का इस्तेमाल अपने जुड़ाव के स्तर को दिखाने के लिए करती हैं और आमतौर पर हर लड़की की एक सबसे अच्छी सहेली होती है, जिसके साथ वह अपने राज़ बाँटती है। लड़कियाँ प्रभूत्व जमाने वाली किसी लड़की का यह कहकर बहिष्कार करती हैं कि ‘उसे लगता है कि वह कुछ खास है’ या वे उसे ‘धौंसबाज़’ कहती हैं। लड़कों के समूह में एक अनुक्रम होता है, जिसमें नेता होते हैं और उनके अकड़कर बातचीत करने के तरीके, शारीरिक हावभाव से उन्हें पहचाना जा सकता है। हर लड़का समूह में अपने दर्जे के लिए मुकाबला करता है। लड़कों के समूह में ताक्तत और दर्जा सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। अपने हुनर, जानकारी या दूसरों से सख्ती से निपटने की काबिलियत या चुनौती देने वाले का मुकाबला करने से कोई लड़का समूह में ताक्तत व रुतबा हासिल कर सकता है। लड़कियों को अपने शिक्षकों व दोस्तों से रिश्ते बनाना अच्छा लगता है, जबकि लड़के शिक्षकों से सवाल

करते हैं और दुनिया के स्थानिक संबंधों की जाँच-पड़ताल करना उन्हें पसंद आता है, जिसे वे अकेले करना चाहते हैं।

हम किस बारे में बात करते हैं

किसी भी देश के स्त्री-पुरुष, लड़के या लड़कियों के समूह की बातें सुनते हुए आप पाएँगे कि हर लिंग के दिमाग़ की बनावट इस प्रकार की है कि वे एक समान चीज़ों पर अलग ढंग से बात करते हैं। लड़कियों की बातचीत का विषय यह होता है कि कौन किसे पसंद करता है या फिर कौन किससे नाराज़ है। वे छोटे समूहों में खेलती हैं और आपसी जुड़ाव के एक रूप के तौर पर बाकी लोगों से जुड़े राज़ आपस में बाँटती हैं। किशोरियाँ लड़कों, वज़न, कपड़ों व अपने दोस्तों के बारे में बात करती हैं। वयस्क महिलाएँ डायट, निजी रिश्तों, शादी-विवाह, बच्चे, प्रेमियों, व्यक्तित्वों, कपड़ों, दूसरों के कामों, कार्य संबंधों और लोगों व निजी मुद्दों से जुड़ी सभी चीज़ों पर बात करती हैं। लड़के चीज़ों व गतिविधियों के बारे में बात करते हैं - किसने क्या किया, कौन किस काम में अच्छा है और चीज़ें कैसे काम करती हैं। किशोर लड़के खेल, मैकेनिक्स और चीज़ों की कार्यप्रणाली के बारे में बात करते हैं। पुरुष खेल, अपने काम, समाचार, उन्होंने क्या किया या वे कहाँ गए, टेक्नॉलॉजी, कारों और मैकेनिकल गैजेट्स की बात करते हैं।

ब्रिटिश केबल फोन कंपनी टेलीवेस्ट द्वारा 1999 में टेलीफोन का इस्तेमाल करने वाले 1000 लोगों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें यह स्पष्ट हुआ कि स्त्री-पुरुष फोन पर किन विषयों पर बात करते हैं।

	पुरुष महिलाएँ	
दोस्त	30%	53%
सेक्स/रिश्ते	18%	22%
काम	25%	11%
खेल	6%	2%
अन्य	11%	12%

एक-तिहाई महिलाओं ने कहा कि उनके फोन कॉल 15 मिनट लंबे रहे, जबकि आधे पुरुषों का कहना था कि उनके कॉल 5 मिनट से कम अवधि के थे।

अश्वील बातें

महिलाएँ हमेशा यह मान लेती हैं कि समूहों में बैठे पुरुष सेक्स पर बेहूदा बातें करते हैं, लेकिन यह सच नहीं है। अगर कोई पुरुष अपने साथियों को रात की सारी बातें बताने लगे, जिसमें पूरी जानकारी शामिल हो, तो सभी साथी अवाक रह जाएँगे या फिर वहाँ से चले जाएँगे। ऐसा इसलिए नहीं होगा कि वह किसी महिला की बदनामी कर रहा है, बल्कि इसलिए होगा कि वह रात से जुड़े ऑकड़े सामने रखेगा और हो सकता है कि बाकी पुरुषों को उनसे परेशानी हो। यही वजह है कि पुरुषों को सेक्स को लेकर मज़ाक करना अच्छा लगता है।

पुरुषों की दोस्ती चीज़ों और उपलब्धियों पर आधारित होती है और महिलाएँ भावनात्मक साझेदारी की बुनियाद पर आमने-सामने की दोस्ती करती हैं। इसी वजह से महिलाओं के झगड़े ज़्यादा नुकसान पहुँचाते हैं - वे एक-दूसरे के बारे में ज़्यादा निजी बातें जानती हैं और उनके पास चोट पहुँचाने के लिए ज़्यादा गोला-बारूद होता है। सेक्स के बारे में महिलाएँ भी खुलकर बात करती हैं। वे बहुत आराम से तकनीकों, तरीकों, समय और आकारों के बारे में बात करती हैं। उनके वर्णन अधिक विस्तृत होते हैं।

आधुनिक स्त्री-पुरुष क्या चाहते हैं

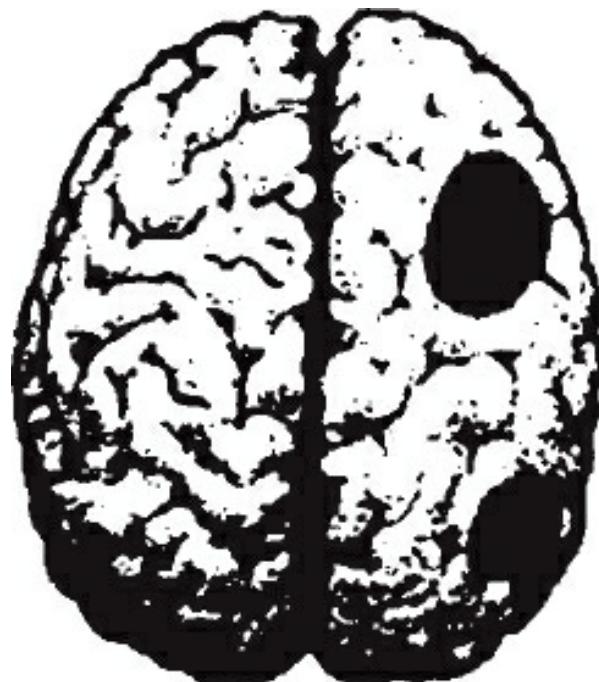
पाँच पश्चिमी देशों में हाल में हुए एक अध्ययन में पुरुषों व महिलाओं से यह बताने के लिए कहा गया कि वे किस तरह का इंसान बनना चाहेंगे। पुरुषों ने काफ़ी ज़बरदस्त ढंग से निडर, प्रतिस्पर्धात्मक, सक्षम, प्रभावशाली,

निश्चयात्मक, प्रशंसित और व्यावहारिक जैसे विशेषणों को चुना। उसी सूची से महिलाओं ने गर्मजोशी, स्नेही, उदार, सहानुभूतिपूर्ण, आकर्षक, दोस्ताना और समर्पित होने को चुना। महिलाओं ने अन्य लोगों की मदद के लिए उपलब्ध होने और दिलचस्प लोगों से मिलने को अपनी मान्यताओं के पैमाने पर सबसे ऊपर रखा, जबकि पुरुषों ने प्रतिष्ठा, ताक़त और चीज़ों पर स्वामित्व को महत्वपूर्ण माना। पुरुषों ने चीज़ों को महत्व दिया, महिलाओं ने रिश्तों को तरजीह दी। उनके मस्तिष्कों की संरचना ने उनकी प्राथमिकताओं को निर्धारित किया।

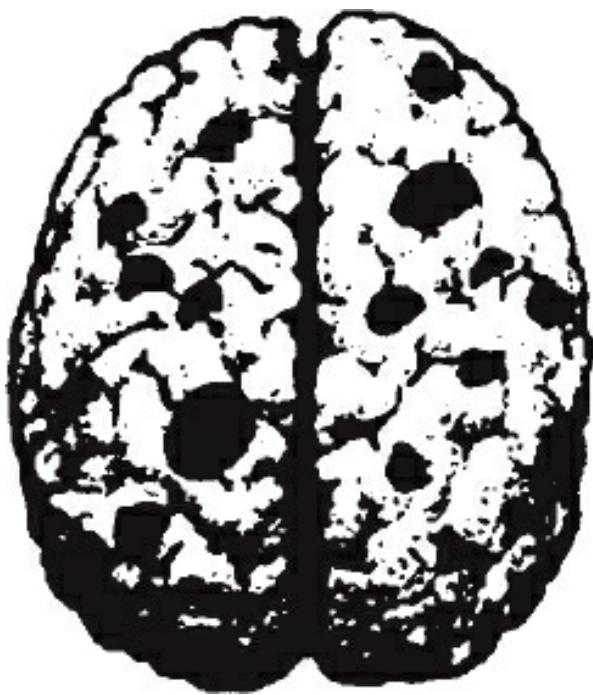
मस्तिष्क में भावना की स्थिति

कैनेडा की शोध वैज्ञानिक सैंड्रा विटलसन ने मस्तिष्क में भावनाओं की ठीक-ठीक स्थिति जानने के लिए महिलाओं व पुरुषों पर परीक्षण किए। पहले मस्तिष्क के दाएँ गोलार्ध को दाईं आँख व कान के माध्यम से भावुक बनाने वाली तसवीरें दिखाई गईं। एमआरआई स्कैन्स से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि पुरुषों के दाएँ गोलार्ध में मुख्य रूप से दो क्षेत्र हैं, जहाँ भावना की पहचान स्थित होती है और महिलाओं के मामले में यह दोनों गोलार्धों में होती है। नए शोध से यह ज़ाहिर होता है कि हमारे ज़बात हमारे शरीर के विभिन्न अंगों में न्यूरोपेप्टाइड्स कहलाने वाले अमीनो एसिड्स के रूप में पाए जाते हैं और मस्तिष्क के स्कैन्स में इन क्षेत्रों का पाया जाना बताता है कि ये इन न्यूरोपेप्टाइड्स के रिमोट कंट्रोल हैं।

पुरुषों में भावनाएँ आमतौर पर दिमाग के दाएँ हिस्से में स्थित होती हैं, जिसका मतलब है कि ये मस्तिष्क की अन्य गतिविधियों से अलग होकर काम कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, बहस करते हुए कोई पुरुष तर्क व शब्दों (बायाँ गोलार्ध) की बात कर सकता है और फिर पूरे मुद्दे पर भावुक हुए बिना अचानक स्थानिक हूल (मस्तिष्क का दायाँ अंगला हिस्सा) की बात करने लगता है। यह ऐसा है जैसे कि वह भावना आने किसी छोटे से कमरे में हो और पुरुष के तुलनात्मक रूप से छोटे कॉर्पस कलोसम का मतलब है कि इस बात की संभावना कम है कि भावनाएँ अन्य गतिविधियों के साथ-साथ काम करें।



पुरुष में भावनाओं की स्थिति



महिला में भावनाओं की स्थिति

महिलाओं के मामले में भावनाएँ दोनों गोलाधीर्घों में अधिक व्यापक क्षेत्र में काम करती हैं और इसलिए दिमाग़ के बाकी कामों के साथ-साथ भावनाएँ भी काम करती रहती हैं। किसी भावनात्मक मुद्रे पर बात करते हुए महिला भावुक हो सकती है, जबकि पुरुष द्वारा ऐसा करने की संभावना कम होती है या फिर वह उस पर बात करने से साफ मना कर सकता है। इस तरह वह भावुक होने या नियंत्रण की स्थिति में न होने से बच सकता है। कुल मिलाकर, महिलाओं के जज्बात उनके दिमाग़ के बाकी कामों के साथ-साथ चलते रहते हैं, जिसका मतलब है कि वह टायर बदलते हुए रो सकती है, जबकि पुरुष टायर बदलने के काम को अपनी समस्या सूलझाने की काविलियत के रूप में देखता है और उसकी आँख में तब भी आँसू नहीं आते, जब आधी रात को भारी बारिश के बीच सुनसान सड़क पर उसे पता चलता है कि उसके अतिरिक्त टायर में हवा नहीं है और पिछले हफ्ते ही उसने गाड़ी से जैक निकाला था।

**भावुक पुरुष किसी सरीसृप की तरह अचानक चोट कर सकता है;
भावुक महिला ‘उस पर बात’ करना पसंद करती है।**

यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिल्वेनिया में न्यूरो-साइकॉलॉजी के प्रोफ़ेसर रूबन गर ने एक ऐसा ही शोध किया और निष्कर्ष निकाला कि विभागीकृत होने के कारण भावनाओं से निपटने के मामले में पुरुष का मस्तिष्क किसी प्राणी के रूप में बहुत बुनियादी स्तर पर काम करता है, यह हमला करते किसी मगरमच्छ की तरह है। दूसरी ओर, महिला ‘बैठकर उस पर बातचीत’ करेगी। जब कोई महिला जज्बाती होकर बात करती है, तो वह चेहरे के संकेतों, शारीरिक हावभाव और बोलने के तरीकों के माध्यम से अपनी बात रखती है। भावुक होने पर पुरुष द्वारा सरीसृप का तरीका अपनाने की संभावना बढ़ जाती है और वह शाब्दिक रूप से चोट कर सकता है या फिर आक्रामक हो सकता है।

महिलाएँ रिश्तों को महत्व देती हैं, पुरुष काम को

आधुनिक समाज मानव विकास के पर्दे पर एक छोटे से बिंदु की तरह है। हज़ारों-लाखों साल से अपनी पारंपरिक भूमिका निभाने के बाद स्त्री-पुरुषों के मस्तिष्क का विकास इस तरह से हुआ है कि अब वही हमारे रिश्तों की अधिकतर परेशानियों व गलतफ़हमियों की वजह बन गया है। पुरुष हमेशा से अपने काम व उपलब्धियों के द्वारा खुद का महत्व बताते रहे हैं और महिलाएँ रिश्तों की गुणवत्ता से अपने मोल को आँकती रही हैं। पुरुष शिकार का पीछा करने और समस्या सुलझाने वाला है - जीवित रहने के लिए यही उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए थी। स्त्री घरोंदे की रक्षा करने वाली है - अगली पीढ़ी के अस्तित्व को सुनिश्चित करना उसकी भूमिका थी। 1990 के दशक में स्त्री-पुरुषों के जीवन-मूल्यों पर हुए सभी अद्ययनों में यही बात सामने आई कि हर जगह 70-80 प्रतिशत पुरुष अब भी यही मानते हैं कि उनका काम उनकी ज़िंदगी का सबसे अहम हिस्सा है और 70-80 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि उनके परिवार ही उनके लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता हैं। परिणामस्वरूप,

अगर कोई महिला अपने रिश्तों को लेकर नाखुश है, तो वह अपने काम पर ध्यान नहीं लगा सकती। अगर पुरुष अपने काम को लेकर खुश नहीं है, तो वह अपने रिश्तों पर ध्यान नहीं दे सकता।

तनाव या दबाव में आने पर अपने साथी के साथ बातचीत करते हुए समय बिताने को महिला इनाम के रूप में देखती है, लेकिन यही बात पुरुष को समस्या सुलझाने की अपनी प्रक्रिया में हस्तक्षेप के रूप में दिखाई देती है। वह बात करना चाहती है, आलिंगन करना चाहती है और वह फुटबॉल मैच देखना चाहता है। महिला को वह परवाह न करने वाला और उदासीन लग सकता है, जबकि पुरुष उस खिलाने वाली या आडम्बरपूर्ण समझ सकता है। इस प्रकार बिल्कुल अलग ढंग से चीज़ों को समझना यही दिखाता है कि दोनों के मस्तिष्कों की संरचना और प्राथमिकताएँ एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। यही बजह है कि महिला हमेशा कहती है कि पुरुष के मुकाबले उसे रिश्ते ज़्यादा महत्वपूर्ण लगते हैं - यह सही भी है। इस अंतर को समझकर आप व आपके साथी पर पड़ने वाला दबाव कम हो जाएगा और आप एक-दूसरे के बर्ताव को बेरहमी से नहीं आँकेंगे।

पुरुष ‘चीज़ें ठीक’ क्यों करते हैं

पुरुष का मस्तिष्क चीज़ों का मूल्यांकन, उन्हें समझने, बाकी चीज़ों के साथ उनके संबंध, स्थानिक प्रासांगिकता, चीज़ें कैसे काम करती हैं और समस्याओं के हल के लिए के लिए व्यवस्थित होता है। उसके दिमाग की प्रोग्रामिंग इस तरह हुई है कि जीवन में किसी भी बात पर उसकी प्रतिक्रिया होती है कि उसे ‘कैसे ठीक किया जाए?’ पुरुष अपने अधिकतर कामों में ‘ठीक करने’ के मानदंड को अपनाते हैं। एक महिला ने हमें एक बार बताया कि वह चाहती थी कि उसका पति उसके प्रति ज़्यादा प्यार भरा रखैया दिखाए - इसलिए उसके पति ने लॉन की घास काट दी। उसने इस काम को प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में देखा। जब पत्नी ने कहा कि वह तब भी खुश नहीं थी, तो पति ने किचन का रंग-रोगन कर दिया। जब इससे भी काम नहीं बना, तो उसने पत्नी को फुटबॉल मैच देखने ले जाने की पेशकश की। जब महिला परेशान होती है, तो वह ज़बाती होकर अपने दोस्तों से बात करती है, लेकिन मूड ख़राब होने पर पुरुष मोटर या फिर टपकते नल की मरम्मत करेगा।

उसके लिए अपने प्यार को साबित करने के लिए वह सबसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा, गहरे महासागर में तैरा और विशाल रेगिस्तान को उसने पार किया। लेकिन वह तब भी उसे छोड़कर चली गई, क्योंकि वह कभी घर पर ही नहीं रहता था।

महिलाएँ जहाँ प्यार और रोमांस के सपने देखती हैं, वहीं पुरुष तेज़ कारों, बड़े कम्प्यूटरों, नावों और मोटरसाइकिलों के ख़बाब देखते हैं। ये सभी चीज़ें हैं, जिनका वे इस्तेमाल कर सकते हैं और ये सभी स्थानिक क्षमता और 'कुछ करने' से जुड़े हैं।

स्त्री-पुरुष एक-दूसरे का साथ क्यों छोड़ते हैं

पुरुष की जीववैज्ञानिक इच्छा महिला का भरण-पोषण करने की होती है और महिला द्वारा उसके प्रयासों की सराहना किए जाने से उसकी सफलता की पुष्टि होती है। अगर वह खुश है, तो पुरुष संतुष्ट महसूस करता है। अगर वह नाखुश है, तो पुरुष को लगता है कि वह नाकाम है, क्योंकि उसे लगता है कि वह ठीक ढंग से उसका ध्यान नहीं रख पाया। पुरुष अपने दोस्तों से लगातार कहते हैं, 'मैं उसे कभी खुश नहीं कर सकता,' और पुरुष के लिए यह काफ़ी होता है वह किसी ऐसी दूसरी महिला के लिए अपने इस रिश्ते को छोड़ दे, जो उससे व उसके प्रयासों से प्रसन्न लगती है।

कोई महिला किसी पुरुष को इसलिए नहीं छोड़ती कि वह उसके द्वारा उपलब्ध चीज़ों से नाखुश होती है, बल्कि वह इसलिए छोड़ती है कि वह भावनात्मक रूप से असंतुष्ट होती है।

महिला को प्यार, रोमांस और बातचीत की चाहत होती है। पुरुष को महिला से यह सुनना होता है कि वह अपने काम में सफल है और उसका भरण-पोषण कर सकता है। लेकिन पुरुष को रोमांटिक होने की ज़रूरत होती है और इससे भी ज़्यादा उसे किसी हल की पेशकश किए बिना महिला की बात सुननी चाहिए।

पुरुषों को ग़लत होना क्यों नापसंद है

इस बात को समझने के लिए कि पुरुषों को ग़लत होने से नफरत क्यों है, इतिहास को समझना ज़रूरी है कि इस तरह का रवैया आखिर आया कहाँ से। इस दृश्य की कल्पना कीजिए। गुफा में रहने वाला परिवार आग के आसपास जमा है। गुफा के प्रवेश द्वार पर बैठा पुरुष बाहर देख रहा है, वह आसपास की जगहों पर नज़र रख रहा है और किसी तरह की गतिविधि के लक्षणों के लिए क्षितिज की ओर बारीकी से देख रहा है। महिला व बच्चों ने कई दिन से कुछ नहीं खाया है और वह जानता है कि मौसम साफ़ होते ही उसे शिकार के लिए निकलना होगा और खाना मिलने तक वह वापस नहीं आ सकता। यह उसकी भूमिका है और उसका पूरा परिवार उस पर आश्रित है। परिवार के सदस्य भूखे हैं, लेकिन उन्हें विश्वास है कि वह हमेशा की तरह सफल होगा। उसके पेट में मरोड़ उठ रहे हैं और वह डरा हुआ है। क्या वह फिर कामयाब होगा? कहीं उसका परिवार भूखा तो नहीं मरेगा? क्या बाकी नर उसे मार देंगे, क्योंकि वह भूख के कारण कमज़ोर हो चुका है? वह चुपचाप चौहरे पर कोई भाव लाए बिना वहाँ बैठा रहता है और चुपचाप देखता रहता है। उसे अपने डर को परिवार के सामने ज़ाहिर नहीं होने देना होगा, वरना सभी हताश हो जाएँगे। उसे मज़बूत रहना होगा।

ग़लत होने पर पुरुष खुद को नाकाम मानता है क्योंकि वह अपने काम को अच्छी तरह नहीं कर पाया।

लाखों साल से असफल न दिखने की इच्छा आधुनिक पुरुषों के मस्तिष्क की बनावट का हिस्सा बन गई है। अधिकतर महिलाएँ यह नहीं जानती कि अगर कोई पुरुष गाड़ी में अकेला हो, तो शायद वह रुककर किसी से रास्ता पूछ ले। लेकिन गाड़ी में महिला के होने पर रास्ता पूछने को वह नाकामी के रूप में देखेगा, क्योंकि इसका मतलब होगा कि वह उसे वहाँ ले जाने में सफल नहीं रहा है।

जब कोई महिला कहती है, 'रास्ता पूछ लेते हैं,' तो पुरुष को लगता है कि वह कह रही है, 'तूम नाकारा हो, तूम रास्ते का पता नहीं लगा सकते।' अगर वह कहती है, 'रसोई का नल टपक रहा है, प्लम्बर को बुला लेते हैं,' तो पुरुष को सुनाई देता है, 'तुम बेकार हो, इस काम के लिए मैं दूसरे आदमी को बुला लूँगी।' यही बजह है कि पुरुषों को 'माझी माँगने' में मुश्किल होती है। माझी माँगने को वे ग़लती की स्वीकृति के रूप में देखते हैं और ग़लती करने का मतलब है कि वे नाकाम हो गए।

इस समस्या से निपटने के लिए महिला को यह ध्यान रखना होगा कि पुरुष से समस्याओं पर बातचीत करते हुए वह उसे ग़लत महसूस न करवाए। उसके जन्मदिन पर सेल्फ हेल्प की किताब देने को भी वह इस प्रकार देखेगा कि वह किसी काम में अच्छा नहीं है।

पुरुषों को आलोचना से नफरत है - यही कारण है कि वे कुँवारियों से शादी करना पसंद करते हैं।

पुरुष को यह समझने की ज़रूरत है कि महिला का उद्देश्य उसे ग़लत महसूस करवाना नहीं है; वह उसकी मदद करना चाहती है और उसे बातों को निजी स्तर पर नहीं लेना चाहिए। महिला अपने प्रेमी को बेहतर व्यक्ति बनाना चाहती है, लेकिन पुरुष इसका मतलब यह निकालता है कि वह उसके लिए पर्याप्त नहीं है। पुरुष ग़लती नहीं मानेगा, क्योंकि उसे लगता है कि वह उसे प्यार नहीं करती। जबकि सच यह है कि महिला किसी पुरुष को तब ज्यादा प्यार करती है, जब वह अपनी ग़लतियों को मान लेता है।

पुरुष अपनी भावनाएँ क्यों छिपाते हैं

आधुनिक पुरुष अब भी बहादुर बने रहने और कमज़ोर न दिखने की अपनी प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। हर जगह महिलाएँ पूछती हैं, 'उसे हमेशा मज़बूत बने रहने की क्या ज़रूरत है? वह मुझे क्यों नहीं दिखाता कि वह कैसा महसूस कर रहा है?' 'गुस्सा होने या परेशान होने पर वह अपने ज़ज़बात दबाए रखता है और सबसे कट जाता है।' 'लगता है कि उसकी परशानियों पर बातचीत के लिए जैसे उसके मुँह के अंदर हाथ डालना पड़ता है।'

अपनी प्रकृति से पुरुष संदेही, प्रतिस्पर्धात्मक, नियंत्रित, रक्षात्मक और अकेला है, जो नियंत्रण में बने रहने के लिए अपनी भावनात्मक स्थिति को छिपाता है। पुरुषों के अनुसार भावनात्मक दिखाई देने का मतलब है, नियंत्रण की स्थिति में न होना। सामाजिक अनुकूलन पुरुषों में इस तरह के वर्ताव को यह कहकर और मज़बूत करता है कि 'मर्द की तरह वर्ताव करो', 'बहादुर बने रहो' और 'लड़के रोते नहीं।'

अपने घरौंदे की रक्षक के रूप में महिला का मस्तिष्क इस तरह बना है कि वह उदार, विश्वास करने वाली, सहयोगी, संवेदनशीलता प्रदर्शित करने वाली, भावनाओं को दिखाने वाली है और जानती है कि हमेशा नियंत्रण में बने रहना ज़रूरी नहीं है। यही कारण है कि जब कभी स्त्री-पुरुष किसी समस्या का मिलकर सामना करते हैं, तो दोनों ही एक-दूसरे की प्रतिक्रिया को लेकर असमंजस में रहते हैं।

पुरुष लड़कों के साथ रहना क्यों पसंद करते हैं

गुफा में रहने वाले पुरुष के लिए उसका शिकार बहुत बड़ा और उससे ज़्याद ताक़तवर होता था, इसलिए उसने बाकी पुरुषों के साथ आपसी सहयोग पर आधारित सामूहिक शिकारी झुंड बनाए। उसके बेहतर दिमाग़ ने शिकार के लिए ऐसे समूह बनाए, जो आज की फुटबॉल टीमों जैसे हैं और उसने शारीरिक संकेतों की प्रणाली अपनाई, ताकि शिकार की रणनीतियों को असरदार ढंग से लाग किया जा सके।

इन शिकारी दलों में लगभग सभी सदस्य पुरुष होते थे, जो 'काम पर लगे' होते थे, यानी शिकार पर बरब्द्धी-भाले से वार करना और महिलाएँ, जो अक्सर गर्भवती रहती थीं, 'महिलाओं के काम' करती थीं। वे बच्चों की देखभाल करती थीं, फल जमा करती थीं, घर का ध्यान रखती थीं और उसकी हिफाज़त करती थीं। पुरुषों के दिमाग़ में दल बनाकर शिकार करने का विचार आने में लाखों साल लगे और किसी भी तरह का प्रशिक्षण उसे रातोंरात वहाँ से मिटा नहीं सकता। यही कारण है कि आधुनिक पुरुषों के शिकारी दल पब्स व क्लब्स में मिलते

हैं, चुटकुले सुनते-सुनाते हैं, अपनी शिकारी गतिविधियों के किस्से सुनाते हैं और घर लौटने के बाद आग के पास बैठकर उसे घूरते रहते हैं।

पुरुषों को सलाह लेना क्यों नापसंद है

पुरुष को यह महसूस करने की ज़रूरत होती है कि वह अपनी समस्याओं को सुलझा सकता है और किसी के साथ उन पर बातचीत करने को वह उस इंसान पर बोझ डालने जैसा समझता है। वह अपने सबसे अच्छे दोस्त को भी तब तक अपनी परेशानी नहीं बताता, जब तक कि उसे यह न लगे कि उसके दोस्त के पास कोई बेहतर हल हो सकता है।

**किसी पुरुष को तब तक सलाह नहीं देनी चाहिए जब तक वह
नहीं माँगता। उसे बताएँ कि आपको परेशानी हल करने की
उसकी क्षमता पर विश्वास है।**

जब कभी कोई महिला कोशिश करती है कि पुरुष अपनी भावनाओं व समस्याओं पर उससे बात करे, तो वह ऐसा करने से बचता है, क्योंकि वह उसे आलोचना के रूप में लेता है या फिर उसे लगता है कि वह उसे नाकारा समझती है और उसके पास बेहतर हल मौजूद है। सच यह है कि महिला चाहती है कि पुरुष को अच्छा महसूस हो और उसके लिए सलाह देने से किसी रिश्ते में भरोसा बनता है और वह उसे कमज़ोरी के लक्षण के रूप में नहीं देखती।

पुरुष समाधान क्यों देते हैं

पुरुषों के मस्तिष्क तार्किक और समस्या हल करने वाले होते हैं। जब कोई पुरुष पहली बार किसी कॉन्फ्रेंस सेंटर के कमरे या रेस्टोरेंट में प्रवेश करता है, तो वह आसपास देखता है, उन चीज़ों पर नज़र डालता है, जिनकी मरम्मत किए जाने की ज़रूरत होती है, जिन तसवीरों को सीधा किया जाना चाहिए और वह कमरे के डिज़ाइन को बेहतर किए जाने के तरीके सोचता है। उसका दिमाग़ समस्या सुलझाने की मशीन है, जो हमेशा काम पर लगी रहती है। अपनी आखिरी साँस लेते हुए भी वह वार्ड को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करने के बारे में सोचता है, ताकि प्राकृतिक प्रकाश व बाहरी दृश्यों का अच्छी तरह इस्तेमाल हो सके।

**अपनी परेशानियों पर बात करके महिला को अपने तनाव से
राहत मिलती है। लेकिन वह चाहती है कि कोई उसकी बात सुने
न कि उसके हल उसे बताए।**

जब कोई महिला अपनी समस्याओं के बारे में बात करती है, तो पुरुष लगातार उसे टोकता है और हल सुझाता है। वह ऐसा करने पर मजबूर है, क्योंकि उसके दिमाग़ की प्रोग्रामिंग इसी तरह हुई है। उसे लगता है कि समाधान पाकर महिला को बेहतर महसूस होगा, जबकि वह सिर्फ बात करना चाहती है और उसके समाधानों को नज़रअंदाज़ कर देती है। इससे पुरुष नाकारा व नाकाम महसूस करता है या उसे लगता है कि वह अपनी समस्याओं के लिए उस पर दोष मढ़ रही है। महिलाओं को समाधान नहीं चाहिए, वे बस बात करते रहना चाहती हैं और चाहती हैं कि कोई उनकी बात सुने।

तनावग्रस्त महिलाएँ बात क्यों करती हैं

तनाव या दबाव में आकर पुरुष के मस्तिष्क की स्थानिक क्षमता और तर्क संबंधी गतिविधियाँ सक्रिय हो जाती हैं। महिला की बातचीत की गतिविधि सक्रिय हो जाती है और वह अक्सर बिना रुके बोलने लगती है। तनाव में आने पर महिला बात करती है और लगातार करती चली जाती है, वह किसी भी व्यक्ति से बात कर सकती है, बशर्ते वह इंसान उसकी बात सुने। वह अपने दोस्तों से घंटों तक अपनी परेशानियों के बारे में बात कर सकती है, वह पूरे विस्तार से उन्हें बात बताती है और फिर उसकी सहेलियाँ परी समस्या की फिर से चीर-फाड़ करती हैं। वह अपनी मौजूदा परेशानियों, पुरानी समस्याओं, आने वाले संकटों और ऐसी परेशानियों के बारे में बात करती है, जिनके कोई हल नहीं हो सकते। जब वह बात करती है, तो उसे किसी तरह के समाधानों की ज़रूरत नहीं होती, उसे बातचीत से राहत और आराम मिलता है। उसकी बातचीत अव्यवस्थित होती है और एक बार में कई विषयों पर उसमें चर्चा हो सकती है, जिनमें किसी निष्कर्ष या हल पर नहीं पहुँचा जाता।

महिला के लिए अपने दोस्तों के साथ परेशानी सुझाना करना विश्वास और दोस्ती की निशानी है।

पुरुष के लिए महिला की समस्याओं के बारे में सुनना काफी मुश्किल होता है, क्योंकि उसे लगता है कि उससे उम्मीद की जा रही है कि वह बताई गई हर समस्या का समाधान करेगा। इसका कारण यह है कि महिला ऊँची आवाज में अपनी समस्या बताती है। वह केवल उस पर बात नहीं करना चाहता, वह उसे लेकर कुछ करना चाहता है। हो सकता है कि वह यह कहकर बीच में टोके, ‘यहाँ आखिर मुद्दा क्या है?’ यहाँ मुद्दा यह है कि दरअसल किसी मुद्दे की ज़रूरत ही नहीं है। ऐसे में कोई पुरुष जो सबसे अनमोल सबक सीख सकता है, वह यह है कि उसे सुनने से जुड़ी आवाज़ों व मुद्राओं का इस्तेमाल करते हुए बात सुननी चाहिए, और किसी तरह का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। हालाँकि पुरुष के लिए यह अवधारणा पूरी तरह से अनजानी है, क्योंकि वह तभी बात करता है, जब उसके पास कोई हल मौजूद हो।

जब आपका सामना किसी परेशान महिला से हो तो कोई समाधान न सुझाएँ या उसके ज़बात को खारिज न करें - उसे बस यह जताएँ कि आप उसकी बात सुन रहे हैं।

जब पुरुष द्वारा सुझाए गए हल कोई महिला नहीं स्वीकारती, तो पुरुष की अगली रणनीति यह होती है कि वह समस्याओं को यह कहकर हल्का करने की कोशिश करे, ‘इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता’, ‘तूम ज़रूरत से ज़्यादा सोच रही हो’, ‘उसे भूल जाओ’ और ‘यह कोई बड़ी बात नहीं।’ इससे महिला आगबबूला हो जाती है और उसे लगने लगता है कि पुरुष को उसकी परवाह नहीं है, क्योंकि वह उसकी बात ही नहीं सुनता।

तनावग्रस्त पुरुष बात क्यों नहीं करते

महिला ज़ोर-ज़ोर से बात करती है, ताकि आप उसकी बात सुन सकें, जबकि पुरुष मन ही में बात करता है। उसके दिमाग में बातचीत के मज़बूत क्षेत्र नहीं होते, इसलिए यह उसके लिए सही है। जब उसे कोई समस्या होती है, तो वह खुद से बात करता है, जबकि महिला बाकी लोगों से बात करती है।

यही वजह है कि समस्याओं के तनाव या दबाव में पुरुष मुँह बंद करके बैठ जाएंगा और किसी से बातचीत नहीं करेगा। वह अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए अपने मस्तिष्क के दाएँ हिस्से का इस्तेमाल करेगा और सुनने या बोलने के लिए अपने बाएँ हिस्से का इस्तेमाल करना बंद कर देगा। वह समस्या सुलझाने के साथ-साथ बात सुन या बोल नहीं सकता है। यह खामोशी महिला के लिए अक्सर तकलीफ़ देह और डरावनी होती है।

महिला अपने पति, बेटे और भाई से कहती है, 'अरे, अपनी परेशानी पर बात तो करो! तुम्हें बेहतर महसूस होगा!' वह ऐसा इसलिए कहती है, क्योंकि यह उपाय उसके मामले में कारगर होता है। लेकिन पुरुष चाहता है कि उसे आग को धूरने के लिए तब तक अकेला छोड़ दिया जाए, जब तक उसे कोई हल या जवाब नहीं मिल जाता। वह उसके बारे में किसी से बात नहीं करना चाहता, खासकर थेरेपिस्ट से, क्योंकि वह इसे कमज़ोरी के लक्षण के रूप में देखता है।

रॉदिन की मशहूर 'द थिंकर' यानी विचारक की मूर्ति अपनी समस्याओं पर विचार करते पुरुष का प्रतीक है। वह अपनी चट्टान पर बैठकर समाधानों के बारे में सोचता है और ऐसा करने के लिए वह बिल्कुल एकाकी रहना चाहता है। यहाँ प्रमुख शब्द है 'एकाकी' - किसी को भी वहाँ उसके पास जाने की इजाज़त नहीं होती, उसके खास दोस्तों को भी नहीं। सज्जाई यह है कि उसके पुरुष दोस्त तो वहाँ उस चट्टान तक चढ़ने के बारे में सोचेंगे भी नहीं। एक महिला को उसके पास जाकर उसे तसल्ली देने की इच्छा होती है और उसे तब बड़ा झटका लगता है, जब वह उसे वहाँ से धक्का दे देता है।

पुरुष समस्याएँ सुलझाने के लिए चट्टानों पर चढ़ जाते हैं। उनके पीछे जाने वाली महिलाओं को धक्का दे दिया जाता है।

अगर रॉदिन ने महिला की मूर्ति बनाई होती, तो शायद उसे 'द टॉकर' कहा जाता। महिलाओं को यह समझने की ज़रूरत है कि जब कोई पुरुष अकेला होता है, तो उन्हें उसे वहाँ उसकी विचार प्रक्रिया के साथ छोड़ देना चाहिए। कई महिलाओं को लगता है कि पुरुष की खामोशी का मतलब है कि वह उसे प्यार नहीं करता या फिर वह उससे नाराज़ है। इसका कारण यह है कि जब कोई महिला बातचीत नहीं कर रही होती, तो वह नाराज़ या परेशान होती है। लेकिन अगर वह महिला उस पुरुष को अकेला छोड़ दे, उसे एक कप चाय व बिस्किट थमा दे, उस पर बात करने का दबाव न डाले, तो वह ठीक हो जाएगा। अपनी समस्या हल करने के बाद, वह नीचे आ जाएगा, फिर से खुश हो जाएगा और बात करने लगेगा।

समस्याएँ हल करने के लिए स्थानिक उपयोग

पुरुषों द्वारा 'चट्टान पर बैठने' के अलग-अलग तरीकों में अखबार या पत्रिकाएँ पढ़ना, स्कैश खेलना, मछली पकड़ना, टेनिस, गॉल्फ खेलना, किसी चीज़ की मरम्मत करना या टेलीविज़न देखना शामिल है। इस बात की संभावना अधिक होती है कि दबाव में आया पुरुष किसी अन्य साथी को गॉल्फ खेलने के लिए बुलाता है और खेलने के दौरान उनके बीच बहुत कम बातचीत होती है। समस्या झेल रहा पुरुष गॉल्फ खेलने के लिए अपने दिमाग़ के दाएँ हिस्से में मौजूद स्थानिक कौशल का इस्तेमाल करता है और इसके अलावा वह इस क्षेत्र का उपयोग अपनी परेशानी के हल के लिए भी कर सकता है। ऐसा लगता है कि स्थानिक क्षेत्र को उत्प्रेरित करके परेशानी सुलझाने की प्रक्रिया तेज़ हो जाती है।

पुरुष टीवी चैनल क्यों बदलते हैं

महिलाओं को रिमोट कंट्रोल से टीवी के चैनल बदलता पुरुष फूटी आँख नहीं भाता। वह किसी प्रेत की तरह किसी कार्यक्रम पर ध्यान न देकर बैठकर बस चैनल बदलता रहता है। जब कोई पुरुष ऐसा करता है, तो दरअसल वह मानसिक रूप से किसी चट्टान पर बैठा होता है और उसका ध्यान किसी भी चैनल पर आने वाले कार्यक्रम पर नहीं होता। वह हर कहानी की केवल बुनियादी बात पर ध्यान दे रहा होता है। चैनल बदलकर वह अपनी समस्याओं को भूल सकता है और बाकी लोगों की परेशानियों के हल तलाश सकता है। महिलाएँ चैनल नहीं बदलती - वे किसी कार्यक्रम को देखती हैं, उसकी कहानी, उससे जुड़ी भावनाओं व रिश्तों की तलाश करती हैं। अखबार की लत भी पुरुषों के लिए वही काम करती है। महिलाओं को यह समझने की ज़रूरत है कि जब पुरुष ऐसे काम करते हैं, तो वे बातें सुन नहीं पाते या फिर उन्हें याद नहीं रख पाते, इसलिए उनसे बात करने की कोशिश करना बहुत मुश्किल होता है। इसके बजाय, उनके साथ समय निर्धारित करें और उन्हें कामों के बारे में बताएँ। याद रखिए कि

पुरुष के पूर्वज लाखों वर्षों से चट्टान पर भावशून्यता से क्षितिज निहारने में समय बिताते थे, इसलिए उसके लिए यह काम बहुत प्राकृतिक है और वह सहजता से ऐसा करता है।

लड़कों से बातचीत कैसे करवाई जाए

हर जगह माताओं की शिकायत होती है कि उनके बेटे उनसे बात नहीं करते। उनकी बेटियाँ स्कूल से आती हैं और हर चीज़ के बारे में उन्हें बताती हैं, चाहे वह महत्वपूर्ण हो या न हो। पुरुषों की प्रोग्रामिंग ‘काम करने’ के लिए हुई है और इसी के माध्यम से उनसे बात करवाई जा सकती है। जो माँ अपने बेटे से बात करना चाहती है, उसे उसके साथ किसी गतिविधि में शामिल होना चाहिए, वह चाहे पेंटिंग करना हो, कसरत करना हो, कम्प्यूटर गेम्स हों और फिर गतिविधि के दौरान उससे बात करनी चाहिए।

**लड़कों को नज़र मिलाना पसंद नहीं आता लेकिन माँओं को यह
अच्छा लगता है।**

इस तरह से लड़के को नज़र मिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती, यह और बात है कि बातचीत थोड़ी विखरी हुई लग सकती है, क्योंकि हर बार किसी सवाल का जवाब देते हुए उसे अपनी गतिविधि रोकनी पड़ती है। उसके लिए दोनों काम एक साथ करना मुश्किल होता है, लेकिन यहाँ मुख्य उद्देश्य उससे बात करवाना है। यही रणनीति पुरुष के साथ भी काम करती है, लेकिन उसके साथ ऐसे समय पर बात न करें, जब वह कोई महत्वपूर्ण काम कर रहा हो, जैसे कि जब वह बल्ब के पेंच कस रहा रहा हो!

जब दोनों तनावग्रस्त होते हैं

तनावग्रस्त पुरुष शराब पीते हैं और दूसरे देशों पर चढ़ाई करते हैं। तनाव में आने पर महिलाएँ चॉकलेट खाती हैं और शॉपिंग सेंटर पर हमला करती हैं। दबाव में आने पर महिलाएँ सोचे-समझे बिना बात करती हैं और पुरुष बिना विचारे काम करते हैं। यही कारण है कि जेल में बंद लोगों में से 90 प्रतिशत पुरुष होते हैं और थेरेपिस्ट के पास जाने वाले लोगों में से 90 प्रतिशत महिलाएँ होती हैं। जब स्त्री व पुरुष दोनों दबाव में हों तो स्थिति भावनात्मक रूप से बहुत विस्फोटक हो सकती है और दोनों उससे निपटने की कोशिश करते हैं। पुरुष बात करना बंद कर देते हैं और महिलाएँ चिंतित हो जाती हैं। महिलाएँ बात करना शुरू करती हैं और पुरुषों के लिए उससे निपटना मुश्किल हो जाता है। उसे बेहतर महसूस करवाने के लिए महिला चाहती है कि पुरुष परेशानी पर बात करे और इससे बदतर कुछ नहीं हो सकता। वह उसे अकेला छोड़ने के लिए कहता है और दूसरी जगह चला जाता है।

पुरुषों को यह समझना चाहिए कि जब कोई महिला तनावग्रस्त होती है, तो वह बात करना चाहती है और उन्हें बस महिला की बात सुननी चाहिए, न कि उसे कोई समाधान सुझाने चाहिए।

जब महिला भी दबाव में होती है, तो वह अपनी परेशानियों पर बात करना चाहती है, जिससे पुरुष और हताश हो जाता है। जब वह अपने खोल में सिमट जाता है, तो महिला को लगता है कि उसे नकार दिया गया है व उसे प्यार नहीं किया जाता और तब वह अपनी माँ, बहनों या सहेलियों को फोन करती है।

लोगों से पूरी तरह कट जाना

पुरुष व महिलाओं के बीच तनाव से जूँड़े अंतरों को सबसे कम समझा गया है। जब कोई पुरुष अत्यधिक तनाव में होता है या फिर किसी गंभीर परेशानी को सुलझाना चाहता है, तो वह खुद को बाकी लोगों से पूरी तरह काट लेता है। वह भावनाओं को नियंत्रित करने वाले दिमाग के हिस्से का संपर्क पूरी तरह काट लेता है, वह समस्या सुलझाने के तरीके पर चला जाता है और बातचीत बंद कर देता है। पुरुष के इस प्रकार पूरी तरह से कट जाना महिला को भयभीत कर सकता है, क्योंकि वह ऐसा तभी करती है, जब उसे चोट पहुँचती है, उससे झूठ बोला जाता है या फिर उसे अपमानित किया जाता है। महिला यह मान लेती है कि पुरुष के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा - हो सकता है कि उसे चोट पहुँची हो और वह उसे अब प्यार न करता है। वह उसे बात करने के लिए प्रौत्साहित करने की कोशिश करती है, लेकिन वह यह सोचकर मना कर देता है कि महिला को समस्या सुलझाने की उसकी काबिलियत पर भरोसा नहीं है। जब किसी महिला को ठेस पहुँचती है, तो वह भी अपने खोल में सिमट जाती है, ऐसे में पुरुष को लगता है कि उसे अकेले छोड़ देना चाहिए और वह अपने दोस्तों के साथ पब चला जाता है या फिर अपनी कार के कारब्यूरेटर को साफ करने लगता है। अगर कोई पुरुष खुद को सबसे काट लेता है, तो उसे ऐसा करने देना चाहिए, वह अपने आप ठीक हो जाएगा। लेकिन अगर कोई महिला ऐसा करती है, तो इसका मतलब है कि कुछ चल रहा है और गहरे विचार-विमर्श का समय आ गया है।

पुरुष किस प्रकार महिलाओं को अलग कर देते हैं

जब किसी पुरुष को यह आभास होता है कि महिला तनावग्रस्त है या उसे कोई परेशानी है, तो वह वही करता है, जो वह बाकी पुरुषों के साथ करेगा - वह वहाँ से चला जाता है, ताकि महिला को अपने परेशानी सुलझाने के लिए एकांत मिल सके। वह पूछता है, ‘सब कुछ ठीक है न, प्रिये?’, वह जवाब देती है, ‘हाँ, ठीक है...’ जो कि एक तरह की अप्रत्यक्ष बातचीत है, असल में वह कहना चाहती है, ‘अगर तुम्हें मुझसे प्यार है तो तुम मुझसे पूरी बात पूछ्योगे’। लेकिन वह यह कहकर कि ‘चलो अच्छा है’, अपने कम्प्यूटर पर काम करने लगता है। वह सोचकर कि ‘इसे मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं है और यह बेदिल है’, अपनी सहैतियों को फोन करती है। वे उसकी भावनाओं की बात करती हैं और यह भी कि उसका साथी कितना बेरहम है।

पुराने दिनों में पुरुषों को आधुनिक पुरुष के सामने आने वाली इन समस्याओं का कभी सामना नहीं करना पड़ता था। अपनी पढ़ी व परिवार के प्रति अपना प्यार जताने के लिए वह वही करता था, जो कि पुरुष हमेशा से करते रहे हैं - वह काम पर जाता था और ‘घर पर शिकार लेकर’ आता था। हजारों साल से ऐसा होता रहा है और अधिकतर पुरुषों का यही सहज स्वभाव है। अधिकतर देशों में अब काम करने वाले लोगों का औसतन 50 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है, इसलिए अधिकतर पुरुषों से अपने परिवार के संपूर्ण भरण-पोषण की अपेक्षा नहीं की जाती। अब उम्मीद की जाती है कि वह संवाद करेगा और यह एक ऐसा कौशल है, जो पुरुषों के लिए सहज-स्वाभाविक नहीं है। लेकिन खुशखबरी यह है कि ये हुनर सीखे जा सकते हैं।

भावुक महिलाओं से पुरुष क्यों निपट नहीं पाते

जब कोई महिला परेशान या भावुक होती है तो हो सकता है कि वह रोने लगे, अपनी बाँहें झटकाएँ और अपनी स्थिति बताने के लिए भावनात्मक विशेषणों का इस्तेमाल करने लगे। वह चाहती है कि कोई उसे माँ जैसा दुलार दे, उसकी परवाह करे और उसकी बात सुने, लेकिन पुरुष उसके बर्ताव की अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर व्याख्या करता है और उसे लगता है कि वह कह रही है, ‘मुझे बचाओ, मेरी परेशानियाँ सुलझाओ!’

उसे हिम्मत व दिलासा देने के बजाय पुरुष उसे सलाह देने लगता है, खोजी सवाल करता है या फिर उससे कहता है कि वह ज्यादा परेशान न हो। चेहरे पर डरावने से भाव लाकर वह कहता है, ‘रोना बंद करो!’, ‘तुम ज़रूरत से ज्यादा सोच रही हो! हालात इतने भी बुरे नहीं हैं! उसके साथ माँ जैसा बर्ताव करने के बजाय वह उसके साथ पिता जैसा सलूक करता है। उसने अपने पिता और दादा को इस तरह का बर्ताव करते देखा है और जंगल से निकलने के बाद पुरुष इसी तरह का व्यवहार करते रहे हैं। महिला के लिए भावना का प्रदर्शन करना संवाद स्थापित करने का एक स्वरूप है, जिससे वह जल्दी उबर जाती है और भूल भी जाती है। लेकिन पुरुष उसके लिए समाधान खोजने की ज़िम्मेदारी खुद पर पाता है और हल न खोज पाने पर उसे नाकामी का एहसास होता है। यही वजह है कि जब महिला भावुक होती है, तो पुरुष परेशान या नाराज हो जाता है और उसे चुप हो जाने

को कहता है। महिला को लगातार रोते देखकर पुरुष डर जाते हैं।

रोने का खेल

पुरुषों की तुलना में महिलाएँ ज्यादा रोती हैं। पुरुषों का विकास इस तरह हुआ है कि वे ज्यादा नहीं रोते, खासकर लोगों के बीच और सामाजिक अनुकूलन इसे ज्यादा बढ़ावा देता है। फुटबॉल खेलते हुए अगर किसी लड़के को चोट लग जाए और वह मैदान पर गिरकर रोने लगे तो उसका कोच उत्तेजित हो कर चिल्लाता है, ‘उठो! विरोधियों को यह मत दिखाओ कि उन्होंने तुम्हें चोट पहुँचाई है! मर्द बनो!’

नए ज़माने के संवेदनशील पुरुष से अब यह उम्मीद की जाती है कि वह कहीं भी, कभी भी रो सकता है। थ्रेपिस्ट, काउंसलर्स, पत्रिकाओं में छपे लेखों, अलावों और गहरे जंगलों में लगे शिविरों में एक-दूसरे के गले लगते पुरुष उसे रोने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हर संभव मौके पर अपने अंदर के ‘गुबार को बाहर न निकालने’ की वजह से आधुनिक पुरुषों पर ठंडेपन और बेरुखी का इल्ज़ाम लगाया जाता है। महिला का दिमाग़ अपने बाकी कामों के साथ भावना को जोड़ सकता है, इसलिए यह साफ़ हो जाता है कि अधिकतर परिस्थितियों में क्यों वह रो सकती है या भावनात्मक हो सकती है।

असली मर्द रोते हैं, लेकिन केवल तभी जब उनके मस्तिष्क का भावना से जुड़ा हिस्सा काम करता है।

असली मर्द रोते हैं, लेकिन सिर्फ तभी जब वे अपने दिमाग़ के भावना से जुड़े हिस्से को काम करने दें और ऐसा बहुत कम होता है कि वे लोगों के बीच ऐसा करें। इसलिए ऐसे पुरुष को संदेह से देखें जो नियमित रूप से सार्वजनिक स्तर पर ऐसा करता है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संवेदी क्षमताएँ श्रेष्ठतर होती हैं। उन्हें मर्दों के मुकाबले अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है और वे भावनात्मक व शाब्दिक तौर पर स्वयं को अच्छी तरह व्यक्त कर सकती हैं। अपमानित होने पर महिला रो सकती है, क्योंकि अपमान में भावनात्मक आवेग होता है, लेकिन पुरुष को शायद समझ ही न आए कि उसे बेइज़्ज़त किया गया है। उसके लिए अक्षरशः वह ज्यादा मतलब नहीं रखता।

बाहर भोजन करना

बाहर जाकर भोजन करने को महिला रिश्ते बनाने और उसे बढ़ाने, समस्याओं पर पर बातचीत करने या फिर किसी दोस्त की मदद करने के रूप में देखती है। पुरुष इसे खाने के प्रति ताकिक प्रतिक्रिया के रूप में देखते हैं - खाना न बनाना, ख़रीदारी या फिर साफ़-सफ़ाई। बाहर खाना खाते हुए महिलाएँ सभी को उनके पहले नाम से पुकारती हैं, क्योंकि इससे रिश्ते बनते हैं, जबकि पुरुष अन्य पुरुषों के साथ इस तरह की आत्मीयता से बचने की कोशिश करते हैं। अगर बारबरा, रॉबिन, लीज़ा और फ़ियोना बाहर जाकर खाना खाती हैं तो वे एक-दूसरे को पहले नाम से पुकारेंगी। लेकिन अगर रे, ऐलन, माइक और बिल डिंक के लिए बाहर जाते हैं तो वे एक-दूसरे को बेवकूफ़, खाली खोपड़ी और नाकारा कहकर पुकारेंगे। इसमें कहीं से भी किसी तरह की आत्मीयता दिखाई नहीं देती।

बिल आने पर महिलाएँ हिसाब लगाएँगी कि हर किसी का कितना हिस्सा होगा। पुरुष 100 डॉलर मेज़ पर रखेंगे और जताएँगे कि वे बिल चुकाना चाहते हैं, ताकि उन्हें महत्व मिल सके, हर कोई दिखावा करेगा कि उसे बचे हुए पैसे नहीं चाहिए।

ख़रीदारी: महिला के लिए मज़ा और पुरुष के लिए दहशत

ख़रीदारी करना महिलाओं के लिए बातचीत करने जैसा है - उसका कोई निश्चित बिंदु या उद्देश्य नहीं होता और

उसमें कोई योजना न होने के कारण घंटों भी लग सकते हैं। उसके लिए किसी निश्चित परिणाम की ज़रूरत भी नहीं होती। महिलाओं को ख़रीदारी करना ताज़गी और राहत भरा लगता है, इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उन्होंने कुछ ख़रीदा भी है या नहीं। इस तरह की ख़रीदार किसी पुरुष को 20 मिनट में पागल कर सकती है। पुरुष को तरोताज़ा होने के लिए कोई उद्देश्य, कोई लक्ष्य और समय सारणी चाहिए। आखिरकार, वह शिकार का पीछा करने वाला है और यही उसका काम है। वह झटपट काम निपटाकर घर लौटना चाहता है।

20 मिनट की ख़रीदारी के बाद अधिकतर पुरुषों का दिमाग़ फिरने लगता है।

कपड़े की दुकान में एक के बाद एक पोशाकों की आज़माइश करती महिला जब उसकी राय पूछती है और कुछ भी नहीं ख़रीदती, तो उसके साथ पहुँचा पुरुष बेचैन और हताश हो जाता है। महिलाओं को कई तरह के कपड़ों को देखना, आज़माना अच्छा लगता है, क्योंकि यह उनके दिमाग़ के साथ सही बैठता है, हर तरह के कपड़ों के साथ मनोभाव के हिसाब से कई तरह की भावनाएँ जुड़ी होती हैं। पुरुषों के कपड़े उनके दिमाग़ के नमूने को प्रदर्शित करते हैं - उसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है, वह पारंपरिक है और किसी उद्देश्य से जुड़ा होता है। इसी वजह से उस पुरुष का पता लगा पाना आसान है, जिसके कपड़े कोई महिला ख़रीदती है। कपड़ों का शौक रखने वाले पुरुष के लिए कपड़ों का चुनाव आमतौर पर महिला करती है या फिर वह समलैंगिक होता है। हर आठ पुरुषों में से एक पुरुष नीले, लाल या हरे रंगों को लेकर बेखबर होता है और अधिकतर में नमूने व डिज़ाइन का मिलान करने की क्षमता नहीं होती। इसलिए अविवाहित पुरुषों की पहचान करना आसान होता है।

पुरुष को ख़रीदारी के लिए जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उसे स्पष्ट मानदंड दें, उसे रंग, आकार, ब्रांड, स्टाइल के अलावा यह भी बताएँ कि आप कहाँ ख़रीदारी करेंगी और कितनी देर तक करेंगी। स्पष्ट उद्देश्य (चाहे आपने खुद ही उनकी खोज की हो) बताने के बाद आपको यह देखकर हैरानी होगी कि वह ख़रीदारी के लिए कितना उत्साहित हो जाएगा।

महिला की वास्तविक सराहना कैसे की जाए

नई पोशाक पहनकर महिला पुरुष से पूछती है, ‘यह कैसी लग रही है?’ इस पर उसे ‘अच्छी’ या ‘ठीक’ जैसे साधारण से जवाब मिलते हैं, जिससे खास कामयाबी नहीं मिलती। अगर पुरुष चाहता है कि वह सफल हो, तो उसे भी महिला की तरह पूरे विस्तार से जवाब देना चाहिए।

कुछ पुरुषों को विस्तार से जवाब देने की बात सोचकर ही घबराहट
होने लगती है, लेकिन अगर आप इसकी कोशिश की तैयारी कर लें, तो
आपको अधिकतर महिलाओं के मामले में सफलता मिलेगी।

मिसाल के तौर पर अगर वह कहता है, ‘वाह! कितनी बढ़िया पसंद है! पीछे मुड़ो, देखता हूँ कि यह पीछे से कैसी लगती है। यह रंग तुम पर अच्छा लग रहा है! इसका डिज़ाइन तुम पर जच रहा है। तुम्हारे कान के झुमके भी कपड़ों से मैच कर रहे हैं, तुम बहुत अच्छी लग रही हो,’ तो ऐसा सुनकर अधिकतर महिलाएँ प्रभावित हो जाएँगी।

7

हमारा केमिकल कॉकटेल



‘तो बात यह है मिसेज़ गुडविन। आप कहती हैं कि आप पीएमटी से गुज़र रही हैं, आपने अपने पति को चेतावनी दी थी कि अगर वे टीवी चैनल बदलना बंद नहीं करते, तो आप उनकी खोपड़ी उड़ा देंगी... उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?’

पीटर ने पॉला से डिनर पर चलने को कहा। दोनों का समय अच्छा बीता। दरअसल, दोनों की आपस में इतनी अच्छी तरह पटी कि उन्होंने दोस्ती करने का फ़ैसला किया और एक-दूसरे को अँगूठी पहनाई। एक साल बाद फ़िल्म देखकर घर लौटते हुए पॉला ने पीटर से पूछा कि अपनी दोस्ती की पहली सालगिरह को वह कैसे मनाना चाहता है। पीटर कहता है, ‘हम पीटज़ा मँगवा लेंगे और फिर साथ मिलकर टीवी पर गॉलफ़ देखेंगे।’ पॉला खामोश हो जाती है। पीटर को किसी मुसीबत का अंदेशा होता है और वह कहता है, ‘अगर तुम्हें पीटज़ा पसंद नहीं तो हम चाइनीज़ खाना मँगवा लेंगे।’ पॉला कहती है कि ठीक है और फिर खामोश हो जाती है।

पीटर सोचता है, ‘एक साल बीत गया! तो हम लोग जनवरी में मिले थे और तभी मैंने अपनी कार ख़रीदी थी, अब एक साल बाद इसकी सर्विसिंग का भी बक्त आ गया है। उस मैकेनिक का कहना था कि वह डैशबोर्ड पर जलती-बुझती ऑयल लाइट को ठीक कर देगा और गेयरबॉक्स अब भी ठीक से काम नहीं कर रहा।’

इस बीच पॉला सोचती है, ‘अगर हमारे इस खास दिन पर उसे बस टीवी देखते हुए पीटज़ा खाना है, तो इसका मतलब है कि उसे हमारे रिश्ते की ज़्यादा परवाह नहीं है। फिर वह चाहेगा कि उसके दोस्त भी आ जाएँ। मुझे कैंडललाइट डिनर करना, नाचना और अपने भविष्य के बारे में बात करना पसंद आता। यह रिश्ता उसके लिए इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि मेरे लिए है। हो सकता है कि मेरा होना उसे बंधन जैसा लगे। मुझे उससे रिश्ते के लिए थोड़ी और प्रतिबद्धता चाहिए, लेकिन वह तो ख़तरा महसूस कर रहा है। वैसे कई बार मुझे भी लगता है कि मुझे भी अपने लिए भी थोड़ा स्पेस चाहिए, ताकि अपने दोस्तों के साथ समय बिता सकूँ। दरअसल मुझे भी यह सौचने के लिए बक्त चाहिए कि आखिर हमारा रिश्ता किस तरफ़ जा रहा है। मेरा मतलब है कि हम कहाँ जा रहे हैं? क्या हम डेटिंग ही करते रहेंगे या फिर हमारी शादी भी होगी? फिर बच्चे होंगे? या फिर क्या? क्या मैं भी इस स्तर की प्रतिबद्धता के लिए तैयार हूँ? क्या मैं भी पीटर के साथ सचमुच अपनी बाकी ज़िंदगी बिताना चाहती हूँ?’

पीटर फिर से डैशबोर्ड पर जलती-बुझती ऑयल लाइट पर गौर करता है, त्योरी चढ़ाकर सोचता है, ‘गैराज में मौजूद उन बेवकूफ़ों ने वादा किया था कि वे इस लाइट को ठीक कर देंगे और अब तो कार की वॉरंटी ख़त्म होने को है।’

पॉला उसे देख रही है और उसके विचार एक अलग ही पटरी पर ढौँडने लगते हैं। ‘इसकी भौंहें चढ़ी हुई हैं... यह खुश भी नहीं लगता... इसे ज़रूर मैं मोटी लगती हूँ और मुझे अपने कपड़े पहनने के तरीके को भी बदलना होगा। मुझे लगता है कि मुझे कम मेकअप करना चाहिए और व्यायाम करना चाहिए। वह हमेशा कहता है कि मेरी दोस्त कैरी किट है और मुझे भी उसके साथ जिम जाना चाहिए। अपनी सहेलियों से मैंने इस बारे में बात की है और उनका ख़्याल है कि पीटर को मुझे वैसे ही प्यार करना चाहिए, जैसी मैं हूँ और मुझे खुद को बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। शायद वे ठीक कहती हैं।’

पीटर की सोच हालाँकि इन बातों से कोसों दूर है। ‘मैं जानता हूँ कि इन मैकेनिकों का क्या करना है! मैं तो कहूँगा कि वे...’

पॉला अब भी पीटर के चेहरे को देख रही है और वह सोचती है, ‘यह तो बहुत परेशान लग रहा है। इसके चेहरे पर साफ़ दिख रहा है और मैं इसका तनाव महसूस कर सकती हूँ। हो सकता है कि मैं कुछ ग़लत समझ रही हूँ... हो सकता है कि उसे मुझसे ज़्यादा प्रतिबद्धता चाहिए हो और उसे लग रहा हो कि अपने एहसास को लेकर मैं थोड़ा डगमगा रही हूँ... हाँ, यहीं बात है। इसीलिए वह मुझसे बात नहीं कर रहा... वह खुलकर मुझे अपने मन की बात नहीं बता पा रहा, उसे डर है कि कहीं मैं उसे नकार न दूँ। उसकी आँखों में उस चोट को मैं साफ़-साफ़ देख सकती हूँ।’

पीटर सोच रहा है, ‘बेहतर होगा कि वे इस बार इसे सही कर दें। मैंने उन्हें बताया था कि मुझे परेशानी हो रही है और उन्होंने कार निर्माता पर दोष मढ़ दिया। बेहतर होगा कि वे यह कहने की कोशिश न करें कि यह समस्या वॉरंटी में नहीं आती वरना मेरी उनसे झ़डप हो जाएगी। मैंने कार ख़रीदने में इतने पैसे इसलिए लगाए कि वे...’

‘पीटर?’ पॉला ने कहा।

‘क्या?’ ध्यान भंग होने पर पीटर ने खीझकर जवाब दिया।

‘देखो, इस तरह खुद को परेशान मत करो... हो सकता है कि मेरा इस तरह सोचना सही न हो... ओह, मुझे बहुत बुरा लग रहा है... हो सकता है कि मुझे थोड़ा बक्त चाहिए... मेरा मतलब है कि ज़िंदगी इतनी आसान भी नहीं होती...’

‘वो तो नहीं होती!’ पीटर भुनभुनाया।

‘शायद तुम्हें लगता है कि मैं बेवकूफी भरी बात कर रही हूँ, है न?’

‘नहीं,’ पीटर ने असमंजस से कहा।

‘बस बात यह है कि... ओह, मैं कुछ नहीं जानती... मैं खुद चकराई हुई हूँ... मुझे इस पर सोचने के लिए थोड़ा समय चाहिए,’ पॉला ने कहा।

पीटर सोचता है, ‘अब यह किस बारे में बात कर रही है? मैं बस “ठीक है” कहूँगा और कल तक बात निपट जाएगी! यह मासिक चक्र का वही समय होगा।’

‘शुक्रिया पीटर... तुम नहीं जानते कि यह सब मेरे लिए क्या मायने रखता है,’ वह कहती है। उसकी आँखों में देखते हुए वह महसूस करती है कि वह बहुत खास इंसान है और इस रिश्ते के बारे में उसे काफ़ी सोचना होगा।

वह रात भर करवटें बदलती है और अगली सुबह इस पर बात करने के लिए अपनी सहेली कैरी को फ़ोन करती है। वे दिन के खाने पर मिलना तय करती हैं, ताकि पीटर और उसकी समस्याओं पर बातचीत कर सकें।

अगले दिन पॉला और कैरी मिलती हैं और उनकी बातचीत रात तक चलती रहती है। कुछ दिन बाद कैरी के बॉयफ्रेंड मार्क से पीटर की बात होती है और वह कहता है, ‘तो पॉला और तुम्हारे बीच कोई परेशानी चल रही है?’ पीटर अब पूरी तरह चकरा चुका है। ‘पता नहीं, वह किस बारे में बात कर रही है!’ पीटर हँसता है ‘...लेकिन ज़रा इस ऑफल लाइट को देखकर बताओ कि तुम्हारा क्या ख़्याल है।’

हार्मोन हमें कैसे नियंत्रित करते हैं

पहले यह माना जाता था कि हार्मोन सिर्फ हमारे शरीर को प्रभावित करते हैं और दिमाग पर उनका कोई असर नहीं होता। अब हम जानते हैं कि हमारे जन्म से पहले से ही हार्मोन हमारे मस्तिष्क की प्रोग्रामिंग करते हैं, हमारे विचारों और व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। किशोर लड़कों में टेस्टोस्टेरॉन का स्तर किशोरियों की तुलना में 15-20 गुना अधिक होता है और लड़कों में हार्मोन का प्रवाह शरीर की आवश्यकता के अनुसार मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित व नियमित होता है।

यौवनारंभ होने पर लड़कों के शरीर में टेस्टोस्टेरॉन का स्तर बढ़ जाता है, जिसके कारण उसके शरीर में बहुत तेज़ी से वृद्धि होती है, उनके शरीर में वसा और प्रोटीन का अनुपात 15 प्रतिशत और 45 प्रतिशत का होता है। किशोरावस्था में पहुँचने पर उसके शरीर में उसके जीववैज्ञानिक काम के हिसाब से परिवर्तन आते हैं और वह छरहरे, मांसल व मज्जबूत नर में बदलने लगता है, जो शिकार का पीछा करने वाला होता है। लड़के खेल में बहुत अच्छे होते हैं, क्योंकि उनके शरीर कारगर ढंग से साँस लेने के लिए बने होते हैं और उनमें लाल रक्त कोशिकाओं के माध्यम से बेहतरीन तरीके से ऑक्सीजन का वितरण होता है, जिससे वे भागने-दौड़ने, कदने और लड़ने-भिड़ने जैसे काम कर पाते हैं। स्टेरॉयड्स नर हार्मोन होते हैं, जो अतिरिक्त मांसपेशियाँ बनाते हैं, एथलीटों को शिकार करने की अतिरिक्त क्षमताएँ देते हैं और स्टेरॉयड्स न लेने वालों के मुकाबले उन्हें गलत ढंग से बढ़त भी देते हैं।

मादा हार्मोनों का किशोरियों पर अलग ढंग से असर पड़ता है। वे लड़कों के हार्मोन्स की तरह नियंत्रित नहीं होते, लेकिन 28 दिनों के चक्र में बड़ी लहरों के रूप में आते हैं और उनके साथ घटते-बढ़ते मनोभाव कई लड़कियों व महिलाओं के लिए बहुत उतार-चढ़ाव लेकर आते हैं। मादा हार्मोन के कारण लड़कियों के शरीर में वसा और प्रोटीन का अनुपात 26 प्रतिशत व 20 प्रतिशत होता है, जिससे हर जगह अधिकतर महिलाओं को परेशानी होती है। अतिरिक्त वसा का उद्देश्य स्तनपान के लिए अतिरिक्त ऊर्जा देना है और ऐसे समय में सुरक्षा देना है, जब खाने की कमी की आशंका हो। मादा हार्मोन शरीर को मोटा करते हैं, इसलिए उनका इस्तेमाल मवेशियों को मोटा करने के लिए किया जाता है। नर हार्मोन शरीर की चर्बी को कम करते हैं और मासंपेशियाँ बनाते हैं, इसलिए उनका इस्तेमाल जानवरों को मोटा करने के लिए नहीं किया जाता।

‘प्यार में पड़ने’ से जुड़े केमिकल्स

आप अभी उस खास इंसान से मिले हैं। आपका दिल तेज़ी से धड़क रहा है, आपकी हथेलियाँ पसीने से तरबतर हैं, आपको बेचैनी हो रही है और आपके पूरे शरीर में सिहरन हो रही है। आप दोनों डिनर पर साथ जाते हैं और आप तो जैसे सातवें आसमान पर हैं। खाना खत्म होने पर साथी के चुम्ने पर आप जैसे पिघल से जाते हैं। उसके बाद कई दिन तक खाना न खाने के बावजूद आप बेहतर महसूस करते हैं और आप गौर करते हैं कि आपका जुकाम ठीक

हो गया है। तंत्रिका से जुड़े प्रमाण दिखाते हैं कि ‘प्यार होने’ की प्रक्रिया असल में मस्तिष्क में होने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं की एक श्रंखला है, जिसके कारण मानसिक व शारीरिक अभिक्रियाएँ होती हैं। अनुमानित रूप से लगभग 100 अरब न्यूरॉन यानी तंत्रिका कोशिकाएँ हैं, जिनसे मस्तिष्क का संचार नेटवर्क बना होता है। मॉलिक्यूल्स ऑफ़ इमोशन (1999) के लेखक कैंडेस पर्ट ने एक शोध किया, जिसमें न्यूरोपेप्टाइड्स की खोज हुई। ये अमीनो एसिड्स हैं, जो हमारे शरीर में होते हैं और स्वागत करते रिसेप्टर्स या अभिग्राहकों के साथ खुद को जोड़ लेते हैं। अब तक 60 अलग-अलग तरह के न्यूरोपेप्टाइड्स खोजे जा चुके हैं। रिसेप्टर्स के साथ इनके जुड़ने से शरीर में भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ शुरू हो जाती हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रेम, दुःख, प्रसन्नता जैसी हमारे सभी एहसास दरअसल जैवरासायनिक हैं। जब अंग्रेज़ वैज्ञानिक फ्रांसिस क्रिक और उनके साथियों को जीन्स को परिभाषित करने वाले डीएनए कोड के लिए चिकित्सा क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार मिला, तो क्रिक ने यह कहकर चिकित्सा संसार को हैरत में डाल दिया, ‘आप, आपकी खुशियाँ, आपके दुःख-दर्द, यादें, महत्वाकांक्षाएँ, आपकी पहचान का बोध, आपकी इच्छा और प्रेम असंख्य तंत्रिका कोशिकाओं के व्यवहार से बढ़कर और कुछ भी नहीं है।’

प्रेम होने पर आपको शारीरिक रूप से खुश होने का एहसास देने वाला प्रमुख रसायन है, पीईए (फिनायलेथायलामाइन), जो एम्फेटामिन से जुड़ा होता है और चॉकलेट में पाया जाता है। यह उन रसायनों में से एक है, जिनके कारण आपका दिल तेज़ी से धड़कता है, हथेलियों में पसीना आने लगता है, आपकी पुतलियाँ फैल जाती हैं और आपको बेचैनी होने लगती है। एड्रेनलिन भी स्नावित होता है, जिससे आपके दिल की धड़कन बढ़ जाती है, आप ज्यादा सचेत हो जाते हैं और इससे आप बहुत अच्छा महसूस करने लगते हैं। इसके अलावा एंडोफिन्स भी होते हैं, जो आपकी प्रतिरोधक प्रणाली को बनाते हैं और आपका जुकाम ठीक हो जाता है। जब आप दोनों एक-दूसरे को चूमते हैं, तो आपके दिमाग़ एक-दूसरे की लार का बहुत तेज़ी से विश्वेषण करते हैं और आपकी आनुवंशिक अनुकूलता पर निर्णय लेते हैं। महिला का दिमाग़ पुरुष की प्रतिरोधक प्रणाली की स्थिति को लेकर रासायनिक निर्णय करता है।

यह समूची सकारात्मक रासायनिक प्रतिक्रिया स्पष्ट करती है कि प्रेम में दूबे लोगों की सेहत क्यों बेहतर होती है और क्यों प्यार में न पड़े लोगों के मुकाबले उन्हें किसी बीमारी के लगने की आशंका कम होती है। प्रेम में होने की स्थिति आमतौर पर आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती है।

हार्मोन से जुड़ी केमिस्ट्री

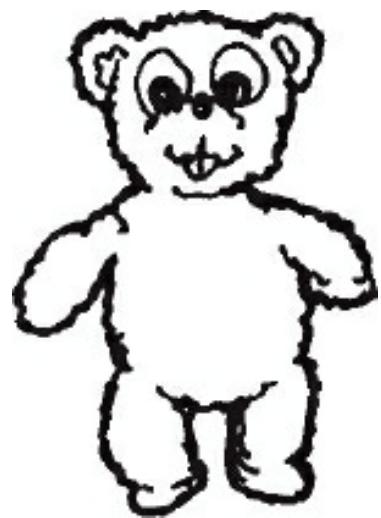
इस्ट्रोजन मादा हार्मोन है, जिससे महिलाओं को परी तरह से संतुष्टि व सुख का एहसास होता है और यह महिला के पालन-पोषण व घरबैठे की रक्षा से जुड़े बर्ताव में भी प्रमुख भूमिका निभाता है। इसका प्रभाव शांत करने वाला है, इसलिए जेल में आक्रामक कैदियों के हिंसक व्यवहार पर काबू पाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है। इस्ट्रोजन स्मरणशक्ति को भी बढ़ाता है और यही कारण है कि मेनोपॉज़ यानी रजोनिवृत्ति के बाद ईस्ट्रोजन का स्तर कम होने के कारण कई महिलाओं को याददाश्त से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी (एचआरटी) करवा रही महिलाओं की स्मरणशक्ति बेहतर होती है।

जून 2000 में अटलांटा की एमरी यूनिवर्सिटी की डॉ. ऐग्रेस लैक्रूज़ द्वारा किए गए प्रयोगों से यह सामने आया कि टेस्टोस्टेरॉन और ईस्ट्रोजन के अनुपात में आने वाले बदलाव से अधिकतर महिलाओं में स्थानिक स्मृति का स्तर बढ़ जाता है। इससे उन्हें याद करने में सुविधा होती है कि उन्होंने कार की चाबियाँ, चश्मा या हैंडबैग कहाँ रखे थे - या फिर उन्होंने कार कहाँ पार्क की थी।

प्रोजेस्ट्रोन वह हार्मोन है, जो माता-पिता व पालन-पोषण से जुड़े एहसास को छोड़ता है और इसका उद्देश्य महिला को बच्चे को पालने-पोसने की अपनी भूमिका को सफलतापूर्वक निभाने के लिए प्रोत्साहित करना है। महिला द्वारा किसी शिशु को देखे जाने पर प्रोजेस्ट्रोन निकलता है और शोध दिखाते हैं कि बच्चे का आकार इस हार्मोन के स्राव को उत्प्रेरित करता है। शिशु की बाँहें छोटी व गोल-मटोल होती हैं, उसका धड़ गोलाकार व गुदगुदा होता है, सिर व आँखें बड़ी होती हैं और इन आकारों को ‘रिलीज़र्स’ कहा जाता है। इस आकार पर प्रतिक्रिया इतनी ज़बरदस्त होती है कि यह हार्मोन तब भी निकलता है, जब कोई महिला किसी रूई भरे मुलायम गोल-मटोल खिलाने को देखती है। यही वजह है कि महिलाओं में टेडी बेयर या जानवरों के बच्चों के खिलाने अधिक लोकप्रिय होते हैं और लंबे, दुबले-पतले खिलाने उन्हें रास नहीं आते। कोई महिला या लड़की टेडी बेयर उठाकर यह कहेगी कि ‘अरे... ये कितना प्यारा है!’ और उसके रक्त प्रवाह में प्रोजेस्ट्रोन का स्राव हो जाएगा।



शिशु



टेडी बेर



लंबा-पतला खिलौना

अधिकतर पुरुषों में प्रोजेस्ट्रोन की कमी होती है, इसलिए वे फूले हुए महँगे से खिलौने को देखकर महिलाओं द्वारा की कई प्रौतिक्रिया को नहीं समझ पाते। इससे यह बात समझ आती है कि क्यों मातृत्व की भावना रखने वाली महिलाएँ मोटे गाल वाले छोटे कद के पुरुषों से शादी करती हैं।

इन तीन चित्रों को देखें। शिशु को देखकर महिलाओं में प्रोजेस्ट्रोन का स्राव होता है और टेडी बेयर का असर भी बैसा ही होता है। तीसरे उदाहरण का आकार पहले दो जैसा नहीं है, इसलिए उससे महिलाओं में प्रोजेस्ट्रोन का स्राव नहीं होगा। फैली पुतलियों वाली गोल-मटोल गुड़िया और जानवरों के बच्चों के खिलौने हमेशा से ज्यादा बिकते रहे हैं।

ब्लॉन्डस की प्रजनन क्षमता अधिक क्यों होती है

सुनहरे बाल होना ईस्ट्रोजन के अधिक होने का लक्षण है और यही कारण है कि पुरुष सुनहरे बालों वाली महिलाओं की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। यह प्रजनन क्षमता का संकेत है और शायद मुख्य या डम्ब ब्लॉन्ड जैसे वाक्यांश का यही कारण है। जैसा कि मज़ाकिया तौर पर कहा जाता है, डम्ब ब्लॉन्ड्स की प्रजनन क्षमता अधिक होती है और गणितीय तर्क कम। शोध बताते हैं कि जिन किशोरियों की माँओं द्वारा गर्भाविस्था के दौरान प्रोजेस्ट्रोन हार्मोन लिया गया, वे बाकी लड़कियों की तुलना में पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन करती हैं और उनके विश्वविद्यालय जाने की संभावना अधिक होती है। इस सिंक्रेन का दूसरा पहलू यह है कि कहा जाता है कि इन लड़कियों में नारी सुलभ गुण कम होते हैं और उनके शरीर पर बाल ज्यादा होने की संभावना होती है।

पहला बच्चा होने के बाद ईस्ट्रोजन का स्तर कम होने के कारण ब्लॉन्ड महिलाओं के बाल थोड़े काले हो जाते हैं। दूसरे बच्चे के बाद ये ज्यादा काले हो जाते हैं। ईस्ट्रोजन स्तर में कमी आने की वजह से 30 साल के बाद की उम्र में बहुत कम महिलाओं के बाल प्राकृतिक रूप से सुनहरे रहते हैं।

रोमन युग में वेश्याएँ अपने काम का प्रचार करने के लिए सुनहरे रंग के नकली बाल लगाती थीं और इसने

‘ब्लॉन्डस ज्यादा मज़े करती हैं’ जैसे मुहावरों को जन्म दिया।

पीएमटी और सेक्स ड्राइव

आधुनिक महिलाओं के लिए प्रीमेन्ट्स्ट्रुअल टेंशन यानी मासिक धर्म से पूर्व होने वाला तनाव (पीएमटी) एक प्रमुख समस्या है और उनके पूर्वजों को कभी भी इस परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा था। कुछ समय पहले तक महिलाएँ हमेशा गर्भवती रहा करती थी, जिसका मतलब है कि एक सामान्य महिला को पूरी ज़िंदगी में सिर्फ़ 10 से 20 बार ही मासिक धर्म से जुड़ी परेशानियों से निपटना होता था, जबकि आधुनिक महिला को साल भर में 13 बार इसका सामना करना पड़ता है। अगर औसतन उसके 2.4 बच्चे हों तो इसका मतलब है कि उसे बच्चे पैदा करने की 12 से 50 साल तक की उम्र में 350-400 बार पीएमटी के लक्षणों को झेलना पड़ता है।

1950 के दशक में गर्भनिरोधक गोलियों की शुरुआत तक किसी ने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि महिलाओं को भावनात्मक उतार-चढ़ाव झेलने पड़ते हैं। मासिक धर्म के बाद के शुरुआती 21 दिन में ईस्ट्रोजेन हार्मोन सुख भरी अनुभूति देता है और रजोनिवृत्ति से पूर्व की अवस्था वाली अधिकतर महिलाओं को खुशनुमा एहसास होता है और उनका रवैया सकारात्मक रहता है। इस दौरान सेक्स ड्राइव भी धीरे-धीरे बढ़ने लगती है, ताकि वह एक निश्चित समय पर गर्भधारण कर सके और यह चक्र के बीच में होता है। इसी समय महिला का टेस्टोस्टेरॉन स्तर भी सबसे अधिक होता है।

प्रकृति बहुत चतुराई से काम करती है। उसके पास अधिकतर मादाओं के लिए समय-सारणी होती है, जिसके कारण वे गर्भधारण के समय सबसे अधिक कामोत्तेजित हो जाती हैं। कई मादा प्राणियों में इसे आसानी से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कामोत्तेजना में आने पर घोड़ी अपने नर के साथ छेड़खानी करती है और उसे उत्तेजित करती है, लेकिन उसे तब तक मिलन नहीं करने देती, जब तक कि उसके भीतर मौजूद अंडा निषेचन की सही स्थिति में न आ जाए। मानव मादाएँ इस बात से अनजान हैं कि इसी तरह की समय-सारणी और प्रतिक्रियाएँ उन पर भी लागू होती हैं।

इसकी वजह से महिला किसी पार्टी में मिले पुरुष के साथ रात गुज़ारती है, लेकिन उसे इसका कोई स्पष्टीकरण भी नहीं दिखाई देता और अगले दिन उसे यह समझ नहीं आता कि जो कुछ हुआ उसका कारण क्या था। ‘मुझे पता नहीं कि क्या हुआ,’ एक महिला ने कहा। ‘हम दोनों पार्टी में मिले और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती, हम दोनों रात में एक साथ थे! मैंने पहले ऐसा कभी नहीं किया।’ अन्य मादा प्राणियों की तरह वह महीने के ठीक उस समय पर उस पुरुष से मिली, जब उसके पास गर्भधारण का बिल्कुल सही अवसर था। महिला के मस्तिष्क ने अवचेतन रूप से पुरुष की आनुवंशिक रचना, उसकी प्रतिरोधक प्रणाली की स्थिति और अन्य नर लक्षणों के संकेतों के अर्थ निकाला। संभावित पिता होने की स्वीकार्यता के निश्चित स्तर को पार करने के बाद नियंत्रण प्रकृति के हाथों में आ जाता है। इस तरह के अनुभव से गुज़रने वाली महिलाएँ इसका वर्णन नहीं कर पाती और उनमें से कई यह बात समझने के बजाय कि उनके हार्मोन उन पर हावी हो गए थे, इसे ‘तकदीर’ या फिर ‘अजीब सा चुंबकीय आकर्षण’ कहती हैं। इन पलों के परिणामस्वरूप, कई महिलाएँ ऐसे पुरुषों के साथ ज़िंदगी भर के लिए फँस जाती हैं, जो सही साथी साबित नहीं होते। अधिकतर पुरुष महिला के हार्मोनल चरम पर पहुँचने का समय जानने के लिए कुछ भी करेंगे!

स्कॉटलैंड के वैज्ञानिकों ने 104 महिलाओं को पुरुषों की ऐसी तसवीरें दिखाई, जिनमें डिजिटल बदलाव किए गए थे और फिर उनकी प्रतिक्रियाओं व प्राथमिकताओं का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि महीने के तीन सप्ताहों में महिलाओं को कोमल, स्त्री सुलभ गुणों वाले, सवंदेनशील किस्म के पुरुष पसंद आए, जो लंबे समय तक उनका साथ निभाने वाले लगते थे। शरीर में अंडोत्सर्ग होने की स्थिति में महिलाओं ने मर्दाना किस्म के पुरुषों को पसंद किया, जिनके जबड़े, भौंहे और शरीर भी बड़े थे। ये सब पौरुष की निशानी हैं। उन्होंने यह भी पाया कि अंडोत्सर्ग की अवस्था में महिलाओं द्वारा पहनी गई स्कर्टों की लंबाई कम थी। वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि घर बसाने के लिए महिलाओं को ऐसा पुरुष चाहिए जो अच्छा पिता बन सके। लेकिन जीववैज्ञानिक तौर पर सक्रिय होने की स्थिति में उन्हें टार्ज़न के अंश की चाहत होती है।

महिलाओं की रासायनिक उदासी

मासिक चक्र के बाद 21-28 दिन के दौरान मादा हार्मोन का स्तर नाटकीय ढंग से गिर जाता है, जिसके कारण पीएमटी जैसे गंभीर लक्षण दिखाई देते हैं। कई महिलाओं में इस कारण निराशा, उदासी, अवसाद और यहाँ तक कि खुदकुशी की तरफ़ झुकाव भी हो सकता है। 25 महिलाओं में से एक महिला में अपने हार्मोन्स के असंतुलन के कारण व्यक्तित्व परिवर्तन तक हो सकता है।

कई अध्ययनों में पाया गया कि अधिकतर महिलाओं द्वारा किसी पर हमला करने और दुकान से चोरी किए जाने जैसे अधिकतर अपराध 21-28 दिन के मासिक पूर्व काल में होते हैं। महिलाओं की जेल में पाया गया कि कम से कम 50 प्रतिशत महिलाओं द्वारा की गई हत्याएँ या उनके द्वारा हमले उस समय किए गए जब वे पीएमटी से गुजर रही थीं। इस दौरान मनोवैज्ञानिकों, काउंसलर्स और ज्योतिषियों के पास जाने वाली महिलाओं की संख्या नाटकीय ढंग से बढ़ जाती है और कई महिलाओं को लगता है कि उनका 'नियंत्रण ख़त्म हो रहा है' या फिर वे 'पागल हो रही' हैं। प्रमाणों पर आधारित अध्ययन बताते हैं कि पीएमटी से गुजर रही कार चालक महिलाओं के कार दुर्घटनाओं में शामिल होने की आशंका चार से पाँच गुना तक बढ़ जाती है।

मादा हार्मोनों का इस्तेमाल लंबे समय से आक्रामक लोगों को शांत करने के उपाय के रूप में किया जाता रहा है। कुछ देशों में हिंसक अपराधों के लिए महिलाओं को सज़ा सुनाते हुए जज पीएमटी जैसे कारक को ध्यान में रखते हैं।

आमतौर पर अपनी उम्र के चौथे या फिर पाँचवें दशक में मेनोपॉज़ यानी रजोनिवृत्ति पर पहुँचने पर महिला में कई तरह के मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और हार्मोन संबंधी परिवर्तन आते हैं। हर महिला पर इसका असर अलग हो सकता है।

पुरुषों में रजोनिवृत्ति का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, वे ऐवियेटर धूप के चश्मे व चमड़े के दस्ताने ख़रीदते हैं, हेयर ट्रांसप्लांट यानी बालों का प्रत्यारोपण करवाते हैं, मोटरसाईकिल या स्पोर्ट्स कार की ख़रीदारी करते हैं और अजीबोऽरीब कपड़े पहनते हैं।

टेस्टोस्टेरॉन: लाभ या अभिशाप

नर हार्मोन्स, खासकर टेस्टोस्टेरॉन, आक्रामक हार्मोन होते हैं, जिनके कारण पुरुष अपने शिकार का पीछा कर पाते व उसे मार पाते हैं। टेस्टोस्टेरॉन बड़े पैमाने पर मानव के जीवित रहने के लिए उत्तरदायी है, क्योंकि इसने ही पुरुषों को शिकार पकड़ने और हमलावरों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। यह वही हार्मोन है, जिसके कारण पुरुषों की दाढ़ी बढ़ती है, उनमें गंजापन होता है, आवाज़ गहरी होती है और उनकी स्थानिक क्षमता बेहतर होती है। पाया गया है कि पतली आवाज़ वाले लोगों के मुकाबले गहरी भारी आवाज़ वाले लोगों का सप्ताह भर में अधिक वीर्य स्खलन होता है। टेस्टोस्टेरॉन दिए जाने वाले अधिकांश लोगों को नक्शे व स्ट्रीट डायरेक्ट्री पढ़ने में कम मुश्किलें आती हैं। दिलचस्प बात यह है कि बाएँ हाथ से काम करने और दमा का संबंध भी टेस्टोस्टेरॉन से है और अब यह भी पता चला है कि जो पुरुष अत्यधिक धूम्रपान करते हैं व शराब पीते हैं, उनके रक्त में इस हार्मोन का स्तर कम हो जाता है।

आधुनिक पुरुषों के लिए टेस्टोस्टेरॉन का नकारात्मक पहलू यह है कि अगर इसे शारीरिक रूप से अभिव्यक्त होने का मौक़ा न मिले तो इससे आक्रामकता पैदा हो सकती है, जिसके कारण असामाजिक गतिविधियों में बढ़ोतरी हो सकती हैं। 12 से 17 साल तक के लड़कों में टेस्टोस्टेरॉन का प्रवाह बढ़ने से वे सर्वाधिक अपराध करने वाले लोगों के दायरे में आ जाते हैं। किसी निष्क्रिय से पुरुष को टेस्टोस्टेरॉन देकर देखिए कि उसमें किस प्रकार जोश भर जाता है और वह अधिक दृढ़ आग्रह वाला और आत्मनिर्भर बन जाता है। यही खुराक अगर किसी महिला को दे दी जाए, तो उसका आक्रामकता स्तर बढ़ जाएगा, लेकिन उस पर पड़ने वाला रासायनिक प्रभाव उतना अधिक नहीं होता, जितना कि पुरुष पर होगा। पुरुष का मस्तिष्क टेस्टोस्टेरॉन पर प्रतिक्रिया करने के लिए पहले से स्वाभाविक तौर पर तैयार होता है, जबकि महिला के मामले में ऐसा नहीं होता। इसका कारण अब भी अनिश्चित है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से स्थानिक क्षमता से जुड़ा है।

महिलाओं को बाएँ हाथ से काम करने वाले, गंजे, दाढ़ी वाले,
गहरी आवाज़ वाले उन अकाउंटेंट्स पर नज़र रखनी चाहिए, जो

नक्शे पढ़ते हैं और ठीक उसी समय ढींकते भी हैं।

उम्र के पाँचवें व छठे दशक में पहुँचने पर पुरुषों का टेस्टोस्टेरॉन स्तर घट जाता है और वे कम आक्रामक व अधिक ध्यान रखने वाले हो जाते हैं। महिलाओं में इसका उलटा होता है। मेनोपॉज के बाद ईस्ट्रोजन का स्तर घट जाता है और टेस्टोस्टेरॉन व ईस्ट्रोजन का अनुपात बड़ा हो जाता है। यही कारण है कि 45-50 साल की उम्र के बीच महिलाएँ अधिक दृढ़ आग्रह वाली और अधिक आत्मनिर्भर बनने लगती हैं। इसका नकारात्मक पहलू यह है कि महिलाओं के चेहरे पर बाल आने की संभावना बढ़ जाती है और उन्हें तनाव व स्ट्रोक हो सकता है।

बर्तनों का फेंका जाना

लेखिका बारबरा पीज़ इस बात से अनजान थीं कि उन्हें दी गई नई गर्भनिरोधक गोलियों में बड़ी मात्रा में टेस्टोस्टेरॉन मौजूद था। उनके पति ऐलन ने बहुत तेज़ी से उन्हें निशाना बनाकर फेंके गए बर्तनों व फेंकी गई अन्य चीज़ों से खुद को बचाने का अनमोल हुनर सीख लिया और कम दूरी की तेज़ दौड़ के अपने बचपन के शौक को पूरा कर लिया। वे ऐसा इसलिए कर पाए, क्योंकि बारबरा पीएमटी के दौरान बर्तन व बाक़ी चीज़ें उन पर फेंकती थीं। मज़ेदार बात यह है कि उनकी पैरलल पार्किंग की क्षमता या फिर उसकी कमी अब बहस का विषय नहीं रह गई थी। इस गोली के सेवन के बाद उनका यह कौशल नाटकीय रूप से बेहतर हुआ था।

उनके खून की जाँच से अंततः यह बात सामने आई कि बारबरा का टेस्टोस्टेरॉन बहुत बढ़ गया था और उन्हें दूसरी गोली लेनी पड़ी, जिसमें टेस्टोस्टेरॉन नहीं था। एक महीने के भीतर ही उनके मनोभावों में तेज़ी से आने वाले बदलाव ख़त्म हो गए, लेकिन अब ऐलन को लगने लगा कि वे जैसे किसी लाइब्रेरियन के साथ रह रहे हों, जो नन बनने के लिए पढ़ाई कर रही हो। एक बार फिर गोली बदलने से उनका टेस्टोस्टेरॉन स्तर सही स्तर पर आ गया, जो दोनों की शादी और घर के बर्तनों के लिए अधिक सुरक्षित था।

पुरुष आक्रामक क्यों होते हैं

टेस्टोस्टेरॉन सफलता, उपलब्धि व मुकाबले की भावना का हार्मोन है और ग़लत हाथों (या अंडकोषों) में इसके होने से पुरुष व नर जानवर ज़्यादा ख़तरनाक हो सकते हैं। अधिकतर माता-पिता लड़कों में हिंसक फ़िल्में देखने की कभी न संतुष्ट होने वाली इच्छा से वाक़िफ़ हैं और यह भी जानते हैं कि उनके बेटों को किस तरह कोई आक्रामक दृश्य न केवल परी तरह याद रहता है, बल्कि वे उसका परा वर्णन भी कर सकते हैं। लड़कियाँ आमतौर पर इस तरह की फ़िल्मों में दिलचस्पी नहीं लेती। सिडनी यूनिवर्सिटी में हुए एक अध्ययन से पता चला कि स्कूल में होने वाली किसी लड़ाई, जैसे संभावित आक्रामक टकराव का सामना होने, की स्थिति में समस्या के समाधान के लिए 74 प्रतिशत लड़कों ने शाब्दिक या शारीरिक आक्रामकता का इस्तेमाल किया, जबकि 78 प्रतिशत लड़कियाँ ने वहाँ से चले जाने या फिर समझौता करने का रास्ता अपनाने की कोशिश की। ट्रैफ़िक सिग्नलों पर हाँ बजाने वाले लोगों में से 92 प्रतिशत पुरुष होते हैं, चोरी करने वाले लोगों में से 96 प्रतिशत और हत्या करने वालों में से 88 प्रतिशत पुरुष होते हैं। यौन विकृति वाले लोगों में लगभग सभी पुरुष होते हैं और इस तरह की महिलाओं पर किए गए परीक्षणों से स्पष्ट होता है कि उनमें अधिक मात्रा में नर हार्मोन होते हैं।

जेल में बंद कैदियों में से नब्बे प्रतिशत पुरुष होते हैं।

हमारी प्रजातियों में पुरुषों के प्रभुत्व के लिए नर आक्रामकता मुख्य रूप से उत्तरदायी है। हम लड़कों को आक्रामकता नहीं सिखाते, हम उन्हें उससे दूर रहने की शिक्षा देते हैं। आक्रामकता एक ऐसा नर गुण है, जिसका स्पष्टीकरण सामाजिक अनुकूलन द्वारा नहीं दिया जा सकता।

खिलाड़ियों पर हुए अध्ययन दिखाते हैं कि किसी खेल प्रतियोगिता से पहले की तुलना में उसके होने के बाद खिलाड़ियों का टेस्टोस्टेरॉन स्तर अधिक होता है, जिससे यह साबित होता है कि किस तरह प्रतियोगिता

आक्रामकता के स्तर को बढ़ा सकती है। न्यूज़ीलैंड की टीमों को अक्सर खेल शुरू होने से ठीक पहले माओरी युद्ध नृत्य हका करते देखा जा सकता है। इससे दो उद्देश्य पूरे होते हैं: विरोधियों में ख़ौफ़ पैदा होता है और खिलाड़ियों का टेस्टोस्टेरॉन स्तर बढ़ता है। ठीक इसी काम यानी टेस्टोस्टेरॉन के स्तर को बढ़ाने के लिए कई खेलों में चीयरलीडर्स को काम में लाया जाता है। अध्ययनों से इस बात की पुष्टि होती है कि जिन मैचों में चीयरलीडर्स का इस्तेमाल किया जाता है, उनमें भीड़ की हिंसा का स्तर बढ़ा होता है।

पुरुष इतनी मेहनत क्यों करते हैं

जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जेम्स डैब्स ने बिज़नेस लीडर्स से लेकर राजनीतिज्ञों, खिलाड़ियों, पादरियों व कैदियों तक की लार के नमूने लिए। उन्होंने पाया कि हर क्षेत्र में ख़राब प्रदर्शन करने वालों की तुलना में अच्छा प्रदर्शन करने वालों का टेस्टोस्टेरॉन स्तर अधिक था और पादरियों में यह स्तर कम था, जिससे उनके कम प्रभुत्व का होना और यौन सक्रियता की कमी स्पष्ट होती है। उन्होंने यह भी पाया कि वकालत और सेल्स के काम में उपलब्धि पानी वाली महिलाओं का टेस्टोस्टेरॉन स्तर सामान्य महिलाओं के मुकाबले ज्यादा था। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि टेस्टोस्टेरॉन से न केवल उपलब्धियों का स्तर बढ़ता है, बल्कि उससे अधिक टेस्टोस्टेरॉन बनता है।

हमने अफ्रीका से लेकर बोर्नियो के जंगल तक प्राणियों के व्यवहार को देखा है और प्रत्यक्ष रूप से वही पाया है जिस पर शोध करते हुए वैज्ञानिकों ने कई वर्ष लगाए हैं - जिन नर प्राणियों में टेस्टोस्टेरॉन ज्यादा होता है, वे ही आमतौर झुंड के मुखिया होते हैं। कछु जानवरों, जैसे चित्तीदार लकड़बग्धों, में टेस्टोस्टेरॉन इतना ज्यादा होता है कि पैदा होने के समय उनके पूरे दाँत होते हैं और वे इतने आक्रामक होते हैं कि उनके बच्चे एक-दूसरे को खा जाते हैं।

सबसे अधिक टेस्टोस्टेरॉन वाले प्राणी जंतु जगत पर शासन करते हैं।

कुत्तों, नर बिल्लियों, घोड़ों, बकरों और बंदरों में नर हार्मोन सबसे ज्यादा होता है। घर में रहने वाली महिलाओं व उनकी बेटियों के मुकाबले कामकाजी महिलाओं व उनकी बेटियों में टेस्टोस्टेरॉन अधिक होता है। 1995 में किए गए 700 कैदियों के एक अध्ययन में पाया गया कि उन कैदियों का जेल प्रशासन के साथ टकराव होने या फिर बिना किसी वजह के हिंसा में शामिल होने की ज्यादा आशंका थी, जिनका टेस्टोस्टेरॉन स्तर बहुत अधिक था। 1998 के एक अध्ययन में पाया गया कि अन्य वकीलों की तुलना में आजीवन टकराव व जिरह करने वाले प्रतिवादी वकीलों का टेस्टोस्टेरॉन स्तर अधिक होता है। टेस्टोस्टेरॉन की अधिकता वाले पुरुषों इतिहास में मानव प्रजाति पर वर्चस्व रहा है और यह मानना भी पूरी तरह तार्किक है कि इतिहास में असाधारण महिला नेता जैसे बोडिसिया, मार्गेट थैचर, जोन ऑफ़ आर्क और गोल्डा मायर जैसी असाधारण नेताओं को अपनी माँ के गर्भ में भूंण अवस्था में छह से आठ सप्ताह के बीच अतिरिक्त नर हार्मोन मिले थे।

इसका एक गंभीर नकारात्मक पहलू टेस्टोस्टेरॉन का वह स्तर है, जिसका इस्तेमाल नहीं किया जाता। हाल ही में इसका एक भयावह उदाहरण अमेरिका में देखा गया, जिसमें कानून के 118 छात्रों को मिनेसोटो मल्टिफ़ेज़िक पर्सनैलिटी असेसमेंट दिया गया और 30 साल तक उनकी ज़िंदगी का लेखा-जोखा रखा गया व उनकी निगरानी की गई। पाया गया कि जिन लोगों में वैमनस्य और आक्रामकता का स्तर बहुत अधिक था, इस अवधि के दौरान उनकी मृत्यु की आशंका चार गुना अधिक थी। जैसे-जैसे समाज में शारीरिक बल का महत्व कम हो रहा है, दिमागी गतिविधियाँ अधिक बढ़ रही हैं और कई उद्योगों में पुरुषों का स्थान महिलाएँ ले रही हैं, हमें पुरुषों के हार्मोन टेस्टोस्टेरॉन के उपयोग के नए रास्ते खोजने होंगे। लोकप्रिय संस्कृति में पुरुषों के मांसल शरीर पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, पुरुषों की सस्ती पत्रिकाओं में बड़ोतरी हुई है और हिंसक कम्प्यूटर गेम्स की संख्या विस्फोटक ढंग से बढ़ी है। इसे सांस्कृतिक विस्थापन के नाम से जाना जाता है और यह तब होता है, जब टेस्टोस्टेरॉन की अनदेखी की जाती है या फिर उस पर हमला होता है, परिणामस्वरूप वह ज्यादा अपरिष्कृत, कम सामाजिक स्वरूपों में सामने आता है, इसलिए यह ज़रूरी है कि लड़कों को नियमित रूप से शारीरिक रूप से

सक्रिय डाली जाएँ।

टेस्टोस्टेरॉन और स्थानिक क्षमता

आप अब तक इस निष्कर्ष तक पहुँच चुके होंगे कि स्थानिक क्षमता पुरुषों का एक बहुत बड़ा गुण है, इसलिए यह टेस्टोस्टेरॉन से जुड़ा है। अध्याय 3 में हमने देखा कि कैसे टेस्टोस्टेरॉन गर्भ में नर भून के मस्तिष्क को आकार देने और शिकार करने व पीछा करने के लिए आवश्यक स्थानिक क्षमताओं से जुड़े सॉफ्टवेयर को उसमें स्थापित करने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी होता है। परिणामस्वरूप, शरीर जितना अधिक टेस्टोस्टेरॉन बनाएगा, मस्तिष्क का व्यवहार भी उतना ही अधिक पुरुषोंचित होगा। सामान्य नर चूहों की तुलना में वे चूहे भूलभूलैया से ज्यादा तेज़ी से बाहर निकलने में कामयाब रहे, जिन्हें अतिरिक्त नर हार्मोन दिया गया था। उससे मादा चूहों की दिशासंचालन क्षमता भी बेहतर हुई, लेकिन वह उतने नाटकीय ढंग से बेहतर नहीं हुई, जितनी कि नर चूहों की हुई थी। नर हार्मोन से नर व मादा, दोनों का आक्रामकता स्तर बढ़ा।

ब्रेन वायरिंग टेस्टमेंटेस्टोस्टेरॉन की अधिक मात्रा वाले नरों के अंक -50 और +50 के बीच रहते हैं और उन्हें आमतौर पर नक्शा पढ़ने, किसी बिंदु से सही स्थिति का पता लगाने, वीडियो गेम्स खेलने या लक्ष्य पर निशाना साधने में कम कठिनाई होती है। उनकी दाढ़ी ज्यादा तेज़ी से बढ़ती है, फुटबॉल, बिलियडर्स और मोटर रेसिंग जैसे पीछा करने वाले खेल उन्हें पसंद आते हैं और रिवर्स पार्किंग में वे अच्छे होते हैं। टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन एकाग्रता में मददगार होता है और थकावट से बचाता है। अध्ययन बताते हैं कि टेस्टोस्टेरॉन लेने वाले लोगों में पैदल चलने व लंबी दूरी तक दौड़ने जैसी शारीरिक गतिविधियों के लिए ज्यादा दमखम दिखा और वे लंबे समय तक किसी काम में अपना ध्यान लगा पाएं। इसमें आश्चर्य नहीं कि इनमें से कई विशेषताएँ समलैंगिक महिलाओं में पाई जाती हैं। अमेरिका स्थित इंस्टिट्यूट ऑफ एजिंग की सूसन रेसनिक ने पाया कि गर्भ में जिन लड़कियों को नर हार्मोन की असामान्य मात्रा मिली, उनके स्थानिक कौशल उन लड़कियों से बहुत बेहतर थे, जिन्हें वह हार्मोन नहीं मिला।

महिलाओं को रिवर्स पार्किंग क्यों पसंद नहीं आती

टेस्टोस्टेरॉन जहाँ स्थानिक क्षमता को बेहतर करता है, वहीं मादा हार्मोन ईस्ट्रोजेन इसे कम करता है। महिलाओं में टेस्टोस्टेरॉन की मात्रा पुरुषों से कम होती है, जिसके परिणामस्वरूप मस्तिष्क जितना अधिक नारी सुलभ होता है, उसकी स्थानिक क्षमता उतनी ही कम होती है। यहीं वजह है कि अत्यधिक व्यियोंचित गुणों वाली महिलाएँ रिवर्स पार्किंग या नक्शा पढ़ने-समझने में अच्छी नहीं होती। टर्नर्स सिंड्रोम कहलाने वाली एक बहुत ही दुर्लभ स्थिति में किसी महिला में XX में से एक X क्रोमोज़ोम नहीं होता और उसे XO कहा जाता है। सभी मामलों में इन लड़कियों का बर्ताव बहुत व्यियोंचित होता है और उनमें स्थानिक क्षमता बहुत कम या न के बराबर होती है। अपनी कार की चाबियाँ किसी XO महिला को कभी न दें।

कॉकेशियन यानी श्वेत पुरुषों की तुलना में चीनी पुरुषों में टेस्टोस्टेरॉन का स्तर काफ़ी कम होता है और यह उनके चेहरे पर बालों के कम होने व उनमें गंजेपन के कम होने के रूप में दिखाई देता है। श्वेत या काले पुरुषों की तुलना में चीन के समाज में हिंसक या आक्रामक अपराधों के लिए दोषी पुरुषों की संख्या कम होती है। वहाँ बलात्कार की घटनाएँ भी तुलनात्मक रूप से कम होती हैं। शायद टेस्टोस्टेरॉन का स्तर कम होने के कारण ऐसा होता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि एशियाई पुरुष आमतौर पर रिवर्स पार्किंग की क्षमता के मामले में क्यों पिछड़ते हैं।

गणित और हार्मोन्स

लड़के अपने दिमाग के दाएँ अगले हिस्से का इस्तेमाल गणित के सवालों को हल करने के लिए करते हैं। लड़कियों के मामले में स्थानिक क्षेत्र मस्तिष्क के दोनों ओर स्थित होता है और परीक्षण बताते हैं कि गणित के सवाल हल करने के लिए कई लड़कियाँ अपने दिमाग के बाएँ भाग के अगले शाब्दिक हिस्से का इस्तेमाल करती हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों कई महिलाएँ ऊँचे स्वर में गिनती करती हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों

आमतौर पर लड़कियाँ बुनियादी कैलकुलस में लड़कों से बेहतर होती हैं और उनका आपसी सहयोग और पढ़ाई के प्रति लगन उन्हें अक्सर अंकगणित या गणित की परीक्षाओं में लड़कों के मुकाबले बढ़त देती है।

लड़कों की तुलना में लड़कियों में मस्तिष्क का विकास जल्दी होता है, जिससे आंशिक रूप से यह बताया जा सकता है कि वे क्यों प्रारंभिक अवस्था में बेहतर प्रदर्शन करती हैं। लेकिन यौवनारंभ के बाद लड़के उस स्तर पर पहुँच जाते हैं और गणितीय तर्क क्षमता में अच्छा प्रदर्शन करते हैं, क्योंकि टेस्टोस्टेरॉन उनकी स्थानिक क्षमता को बढ़ा देता है। बॉस्टन में जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी में 11 से 13 साल के प्रतिभाशाली बच्चों की गणित की योग्यता जाँचने के परीक्षण किए गए। इनमें पाया गया कि परीक्षणों को जितना कठिन बनाया गया, उतनी ही अधिक लड़कों की क्षमता लड़कियों से उतनी ही अधिक बढ़ती गई। सरल स्तरों पर प्रतिभाशाली लड़कों ने लड़कियों को 2:1 से हराया, मध्यम स्तर पर यह अनुपात बढ़कर 4:1 हो गया और कठिनाई का स्तर अधिक बढ़ने पर यह अनुपात 13:1 पर पहुँच गया।

1998 में कैनेडा के मस्तिष्क शोध के क्षेत्र की विशेषज्ञ डॉ. डॉरीन किमुरा ने पाया कि अगर किसी पुरुष में टेस्टोस्टेरॉन की मात्रा को दोगुना या तीन गुना कर दिया जाए, तो इसका मतलब यह नहीं कि उसकी गणित संबंधी तर्कक्षमता भी दोगुनी या तीन गुना हो जाएगी। इससे स्पष्ट है कि टेस्टोस्टेरॉन की कारगरता के लिए शायद कोई आदर्श स्तर होगा, जो कि निम्न से लेकर मध्यम श्रेणी तक के स्तर के बीच कहीं होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह ज़रूरी नहीं कि किंग कॉन्ना का गणितीय कौशल उस पुरुष से बेहतर होगा, जिसकी दाढ़ी कम तेज़ी से बढ़ती है। दिलचस्प बात यह है कि टेस्टोस्टेरॉन से महिला की गणितीय तार्किकता नाटकीय ढंग से बेहतर होती है, जबकि पुरुष के मामले में यह उतनी तेज़ी से बेहतर नहीं होती। इसी कारण से संभव है कि किसी बाबी गुड़िया जैसी लगने वाली महिला की तुलना में कोई मूँछ वाली महिला बेहतर इंजीनियर बने। पतझड़ ऋतु में जब पुरुषों का टेस्टोस्टेरॉन स्तर अपने चरम स्तर पर होता है, तो उनकी नक्शा पढ़ने की क्षमता बढ़ जाती है।

पीएमटी से गुज़र रही लड़कियों को गणित में कम अंक मिलते हैं।

गणित की परीक्षा में शिक्षा प्रणाली लड़कों का साथ देती है और लड़कियों के प्रतिकूल होती है, क्योंकि अध्ययन बताते हैं कि पीएमटी से गुज़र रही लड़कियों के टेस्टोस्टेरॉन का स्तर बहुत कम होता है। एक अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि पीएमटी झेल रही लड़कियों को गणित की परीक्षा में उन लड़कियों के मुकाबले कम अंक मिले, जो उससे नहीं गुज़र रही थी। एक न्यायपूर्ण व्यवस्था वह होगी, जिसमें इम्तिहान ऐसे समय में हो, जो जैववैज्ञानिक तौर पर लड़कियों के लिए अधिक अनुकूल हो। लड़के तो किसी भी समय परीक्षा दे सकते हैं।

आधुनिक पुरुष का शिकार का खेल

अब पुरुष शिकार करने के बजाय खेल खेलते हैं। अधिकतर खेल गतिविधियाँ 1800 के बाद शुरू हुईं, उससे पहले दुनिया के अधिकतर लोग भोजन या मनोरंजन के लिए शिकार करते थे। 1700 के दशक के अंतिम वर्षों में हुई औद्योगिक क्रांति और खेती की आधुनिक तकनीकों के कारण भोजन का पीछा करने और उसे पकड़ने की ज़रूरत नहीं रही। हज़ारों साल से पुरुष शिकार करने के लिए प्रोग्राम्ड रहे हैं और अचानक उसके बंद होने से उनके पास कहीं और जाने का रास्ता नहीं बचा।

इसके जवाब के रूप में खेल सामने आए। 90 प्रतिशत से अधिक आधुनिक खेल 1800 और 1900 के बीच तैयार हुए और कुछ नए खेल 20वीं सदी के दौरान सामने आए। अधिकतर खेलों में दौड़ना, पीछा करना, लक्ष्यों पर निशाना साधना शामिल है, जिससे अतिरिक्त टेस्टोस्टेरॉन का इस्तेमाल हो सके। शोध दिखाते हैं कि जो लड़के शारीरिक रूप से सक्रिय होते हैं, किसी अपराध या आक्रामक काम में उनके शामिल होने की आशंका कम होती है और आपराधिक रिकॉर्ड वाले युवाओं से जुड़े आँकड़े बताते हैं कि खेलों में वे बहुत कम भाग लेते थे। अगर टेस्टोस्टेरॉन का इस्तेमाल खेल के मैदान में न किया जाए, तो वह असामाजिक तरीके से अभिव्यक्त होता है। सड़कों पर दिखने वाली हिंसा लगभग पुरुषों द्वारा ही की जाती है। अधिकतर पुरुष सड़क पर एक-दूसरे के साथ मुकाबला करते हैं, जबकि महिलाएँ बस उस वक्त संयोग से वहाँ मौजूद होती हैं।

किसी स्पोर्ट्स क्लब में नाम लिखवाने से पहले उस क्लब के लक्ष्यों, मूल्यों, आदर्शों और वहाँ के अग्रणियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें। अगर वे सिर्फ़ खेल के लिए वहाँ पर हैं और खेल ही सबसे महत्वपूर्ण है, तो वे लोग

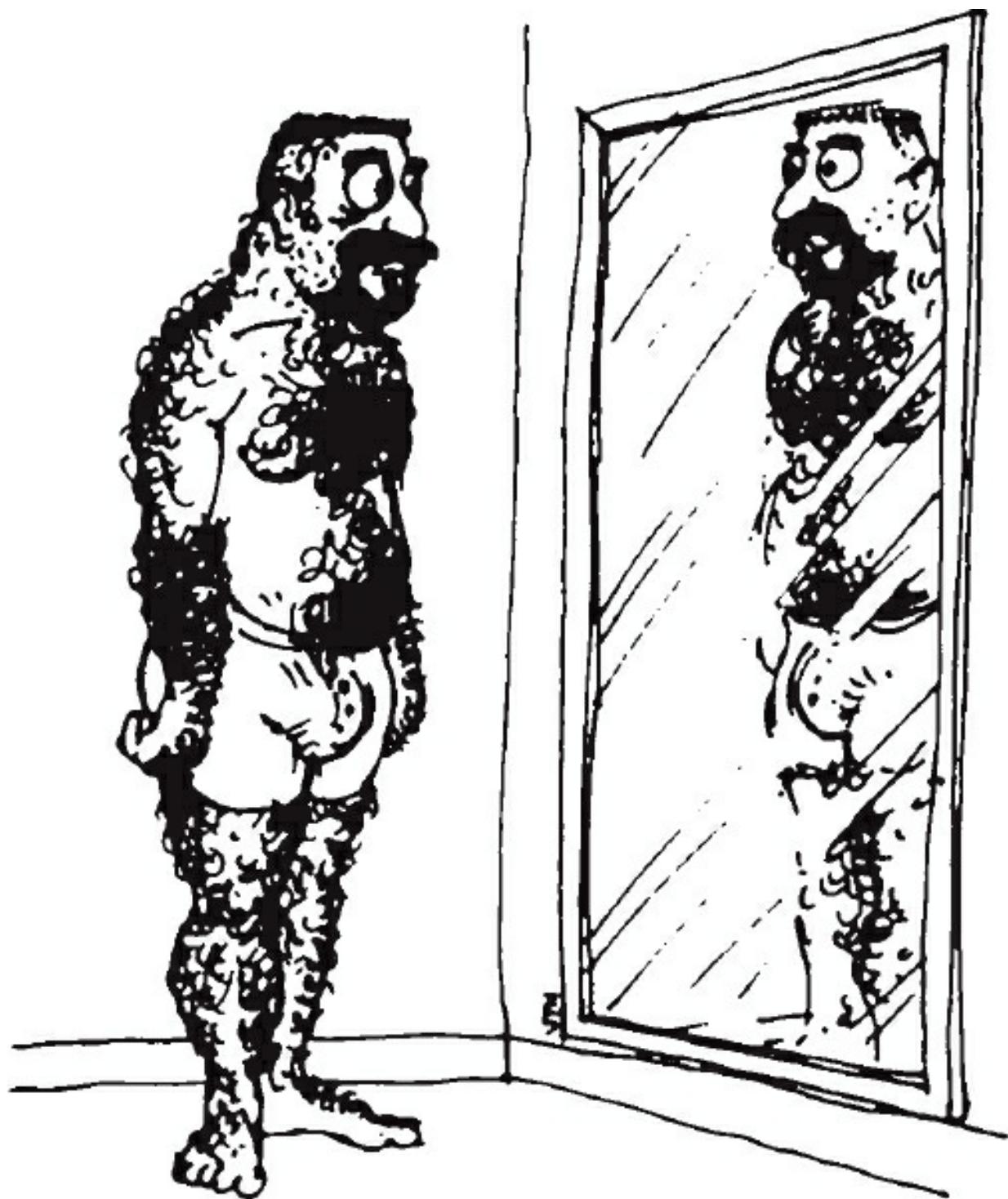
अब भी अपने जीवविज्ञान के गुलाम हैं, इसलिए बेहतर है कि आप किसी फ़िशिंग क्लब की सदस्यता ले लें। योग या मार्शल आर्ट्स जैसे कई क्लब भी हैं, जो आज भी जीवन जीने के कारण तरीके सिखाने के लिए सेहत, तनाव मुक्ति और अच्छे जीवन मूल्यों जैसे सिद्धांतों की सीख देते हैं। ऐसे क्लबों से बचने की कोशिश करें, जिनका ज़ोर सिर्फ़ सदस्यों से पैसा बनाना होता है।

पुरुषों की तोदं क्यों होती है और महिलाओं का पिछला हिस्सा भारी-भरकम क्यों होता है

प्रकृति अतिरिक्त वसा के ऊतकों को जितना संभव हो शरीर के महत्वपूर्ण अंगों से दूर रखती है, ताकि उससे इन अंगों की कार्यप्रणाली की कारगरता में कोई रुकावट न आए। आमतौर पर मस्तिष्क, हृदय और जननांगों के आसपास बहुत कम या न के बराबर चर्बी होती है। महिलाओं में कुछ अतिरिक्त महत्वपूर्ण अंग जैसे अंडाशय होते हैं। इसके पारिणामस्वरूप बच्चे पैदा करने में सक्षम महिलाओं के पेट पर अतिरिक्त चर्बी नहीं जमती। पुरुषों के अंडाशय नहीं होते और इसलिए अतिरिक्त चर्बी उनकी तोंद पर जमा हो जाती है और इसके अलावा उनकी पीठ पर भी कुछ चर्बी आ जाती है। यही कारण है कि आपको मोटी टाँगों वाले पुरुष बहुत कम दिखेंगे। महिलाओं की अतिरिक्त चर्बी उनकी जाँधों, पिछले हिस्से और ऊपरी बाँह के नीचे जमा होती है, जिसका इस्तेमाल स्तनपान कराने के दौरान पोषण के स्रोत के रूप में होता है। अगर पुरुषों के अंडाशय होते, तो उनकी जाँधें भी ज़्यादा बड़ी होती और उनके पेट मोटे न होते। गर्भाशय निकाले जाने की स्थिति में प्रकृति उस चर्बी को पेट पर फैला देगी।

8

लड़के तो लड़के रहेंगे, लेकिन हमेशा नहीं



‘और फिर एक दिन जीवविज्ञान की कक्षा के बाद ईलियट उस बात को समझ पाया, जो उसके साथी उसके बारे में सोचते थे - उसका टेस्टोस्टेरॉन स्तर सामान्य नहीं था!’

वह क्या चीज़ है, जो किसी स्त्री को स्त्री व पुरुष को पुरुष बनाती है? क्या समलैंगिक होना सचमुच चुनाव या पसंद की बात है? समलैंगिक महिला कौन अन्य महिलाएँ ही क्यों पसंद आती हैं? ट्रांससेक्शनल यानी पारलिंगि लोग दोनों तरह के संबंध बनाने में कैसे कामयाब होते हैं? आप जैसे हैं, क्या उसके पीछे आपकी माँ का अत्यधिक आक्रामक होना या फिर आपके पिता का भावनात्मक रूप से ठंडा या तटस्थ होना कारण था या फिर इसकी वजह तीसरी कक्षा में आपका अपनी अध्यापिका की ओर आकर्षित होना था? क्या आपके मिजाज की वजह आपका अपने माता-पिता की दूसरी संतान होना है, क्या आप गरीबी में पले-बढ़े हैं या फिर अनाथ हैं, क्या आप किसी टूटे हुए परिवार से हैं, या आप वृश्चिक राशि के अंतराल पर पैदा होने वाले सिंह राशि के व्यक्ति हैं या शायद आप पूर्वजन्म में बिल्ली थे? इस अध्याय में हम देखेंगे कि क्या होता है जब किसी मानव भूष्ण को बहुत अधिक या बहुत कम पुरुष-हार्मोन मिलते हैं।

समलैंगिक पुरुष, महिला और ट्रांससेक्शनल

शोध दिखाते हैं कि मानव भूष्ण के शरीर और दिमाग का बनियादी नमना संरचनात्मक रूप से नारी सुलभ है। नतीजतन पुरुषों में कुछ अतिरिक्त महिला गुण पाए जाते हैं, जैसे कि नीपल या स्तनाग्र। पुरुषों में स्तन ग्रंथियाँ होती हैं, जो दूध बनाने का काम नहीं करती, लेकिन उनमें इसकी संभावना होती है। ऐसे हजारों मामले देखे गए हैं, जिनमें युद्धबंदियों में दूध का स्राव होने लगा, क्योंकि भूख के कारण उनका यकृत रोगग्रस्त हो गया और वह स्तनपान के लिए आवश्यक हार्मोन्स को विघटित नहीं कर पाया।

जैसा कि अब हम जानते हैं, गर्भाधान के बाद छह से आठ सप्ताह में नर भूष्ण (XY) को एंड्रोजन कहलाने वाले नर हार्मोन की भारी मात्रा मिलती है, जिससे पहले अंडकोश बनते हैं और फिर उसकी दूसरी खुराक से उसके मस्तिष्क में बदलाव आता है, जो कि मादा नमूने से नर नमूने में बदल जाता है। अगर नर भूष्ण को सही समय पर नर हार्मोन न मिले, तो दो में से एक बात हो सकती है। पहला, ऐसे लड़के का जन्म हो सकता है, जिसके मस्तिष्क की संरचना पुरुषोचित होने के बजाय नारी सुलभ अधिक होती है। दूसरे शब्दों में कहें, तो तरुण अवस्था तक पहुँचने पर ऐसे लड़के के समलैंगिक होने की संभावना अधिक होती है। दूसरा, एक ऐसा लड़का पैदा हो सकता है, जिसका मस्तिष्क पूरी तरह महिला का हो, लेकिन उसके जननांग पुरुष के हों। ऐसा लड़का ट्रांसजेंडर हो सकता है। वह जैववैज्ञानिक तौर पर पुरुष होगा, लेकिन उसे लगेगा कि वह महिला है। कई बार पुरुष में नर व मादा, दोनों प्रकार के जननांग होते हैं। आनुवंशिकी विज्ञानी ऐन माँयर की अभृतपूर्व पुस्तक ब्रेनसेक्स में कई ऐसे लड़कों का उल्लेख है, जो लड़कियों जैसे दिखते थे और उनका पालन-पोषण भी लड़कियों की तरह किया गया, लेकिन अचानक यौवनारंभ के समय उन्होंने पाया कि उनके शिश्र व अंडकोश थे, जो कि उसी चरण में उभरकर सामने आए।

डॉमिनिकन गणराज्य में इस तरह की जनन संबंधी विषमताएँ दिखाई दी और इस तरह के बच्चों के माता-पिता पर हुए अध्ययन में पता चला कि उन्होंने ऐसे बच्चों का पालन-पोषण लड़कियों की तरह किया और उन्हें पारंपरिक रूप से बर्ताव करने के लिए प्रोत्साहित किया, जैसे कि उन्हें स्त्रियोचित कपड़े पहनने व गुड़िया के साथ खेलने के लिए बढ़ावा दिया। उनमें से कई माता-पिता को तब बड़ा झटका लगा, जब उन्हें पता चला कि जिन बच्चों को उन्होंने बेटी की तरह पाला-पोसा था, यौवनारंभ होने पर वे पुरी तरह लड़कों में बदल गए थे। नर हार्मोनों ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया, अचानक उनकी ‘बेटियों’ के शिश्र निकल आए, उनकी वेशभूषा पुरुषों की तरह हो गई और उनका बर्ताव भी पुरुषों जैसा हो गया। महिलाओं की तरह व्यवहार करने के लिए होने वाले सामाजिक अनुकूलन, सामाजिक दबाव के बावजूद यह बदलाव सामने आया।

यह सच्चाई कि इन सभी ‘लड़कियों’ ने अपनी बाकी ज़िंदगी पुरुषों के रूप में बिताई, यह स्पष्ट करती है कि उनके सामाजिक वातावरण और पालन-पोषण का उनके वयस्क जीवन पर सीमित प्रभाव पड़ा। यह बात बिल्कुल साफ़ है कि उनके स्वभाव के सांचे को बनाने में उनका जीवविज्ञान प्रमुख कारक था।

समलैंगिकता इतिहास का हिस्सा है

प्राचीन यूनानियों में समलैंगिकता को न केवल स्वीकार किया जाता था, बल्कि उसे बहुत सम्मान से देखा जाता था। छरहरा, लड़कों जैसा, युवा रूप उनकी सुंदरता का आदर्श था और इसके सम्मान में तसवीरें व मूर्तियाँ बनाई

गई। प्रतिष्ठित पुरुषों के युवाओं के प्रति प्रेम पर कविताएँ लिखी गई। यूनानी लोगों का मानना था कि पुरुष समलैंगिकता एक उत्कृष्ट, उच्चतर उद्देश्य को पूरा करती है और इस विचार ने युवाओं को इस समुदाय का सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह भी पाया कि युवा समलैंगिक पुरुष उनके कुछ सबसे बहादुर व कामयाब योद्धाओं में से थे, क्योंकि वे ‘एक-दूसरे के प्रेम में साथ-साथ’ लड़ते थे।

रोमन काल में जूलियस सीज़र का वर्णन ‘हर महिला का पुरुष और हर पुरुष की महिला’ के रूप में किया जाता था।

इसाई धर्म द्वारा समान लिंग के संबंधों पर असहमति व्यक्त की गई, कहा गया कि ईश्वर द्वारा सिटी ऑफ़ सोडॉम को दंडित किया गया, समलैंगिकता को प्रतिबंधित कर दिया गया और वह जैसे किसी तहखाने में गायब हो गई और फिर कभी सार्वजनिक तौर पर नहीं दिखी, बाद में हाल के समय में यह फिर सामने आई।

विक्टोरियाई युग ने समलैंगिकता के अस्तित्व को मानने से पूरी तरह इनकार कर दिया, उसका ज़िक्र शैतान की कारस्तानी के रूप में किया गया और उसे मानने वालों को सख्त सज्जा देने की बात की। 21वीं सदी में पहुँचने के बावजूद अधिकतर पुरानी पीढ़ियों का अब भी मानना है कि समलैंगिकता हाल की चीज़ है और यह ‘अप्राकृतिक’ गतिविधि है। सन्नाई यह है कि यह तब से मौजूद है, जब से नर भूण को नर हार्मोन का पर्याप्ति हिस्सा नहीं मिल पाया। नरवानरों में किसी समूह के सदस्यों के बीच जुड़ाव या फिर अपने से श्रेष्ठ नर के प्रति अधीनता दिखाने के लिए समलैंगिक व्यवहार का इस्तेमाल किया जाता है और मवेशियों, मुर्गों व कुत्तों में भी यह पाया जाता है। महिला समलैंगिकता यानी लेज़्बेनिझम शब्द ग्रीक द्वीप लिस्बस से लिया गया है। इसे उतनी घृणा की दृष्टि से नहीं देखा गया, जितना कि पुरुषों की समलैंगिकता को देखा जाता है, संभवतः इसका कारण यह रहा हो कि महिला समलैंगिकता का संबंध अंतरंगता से अधिक है और इसे उतना ‘विकृत’ नहीं माना जाता।

यह आनुवंशिक है या फिर आपका चुनाव

जब बॉडी लैंग्वेज के लेखक ऐलन पीज़ और आनुवंशिकी विज्ञानी ऐन मायर 1991 में ब्रिटिश टेलीविज़न पर अपनी पुस्तकों ब्रेनसेक्स (मैंडरिन बुक्स) और टॉक लैंग्वेज (हार्परकॉलिन्स) के विमोचन पर एक साथ दिखाई दिए। मायर ने अपने शोध के परिणाम सबके सामने रखे, जिसमें वही बात विशिष्ट रूप से सामने आई, जिसे वैज्ञानिक कई साल से जानते हैं और वह यह है कि समलैंगिकता जन्मजात होती है, यह कोई अपनी इच्छा से किया गया चुनाव नहीं है।

अधिकतर मामलों में समलैंगिकता न केवल जन्मजात होती है, बल्कि यह भी तथ्य है कि जिस वातावरण में हमारा पालन-पोषण होता है उसका हमारे बर्ताव पर तुलनात्मक तौर पर कम असर पड़ता है, जबकि पहले यह माना जाता था कि उसका हम पर बहुत बड़ा असर पड़ता है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि किसी किशोर या वयस्क के समलैंगिक रुझान को दबाने में माता-पिता की कोशिशें कारगर नहीं होती। समलैंगिकता का प्रमुख कारण मस्तिष्क पर नर हार्मोन का असर (या फिर उसकी कमी) है, इसलिए अधिकतर समलैंगिक पुरुष होते हैं।

इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि पालन-पोषण किसी बच्चे के समलैंगिक होने की संभावना पर प्रभाव डालता है।

हर महिला समलैंगिक (पुरुषोचित मस्तिष्क वाला महिला शरीर) पर लगभग आठ से दस समलैंगिक पुरुष होते हैं। अगर समलैंगिक आंदोलन ने इस शोध को अपनाया होता और शिक्षा प्रणाली ने इन निष्कर्षों को पढ़ाया होता, तो समलैंगिक लोगों और ट्रांससेक्शुअल को इतने पूर्वग्रहों का सामना न करना पड़ता। अधिकतर लोग ऐसे लोगों के प्रति कम सहिष्णु होते हैं, जो अस्वीकार्य चुनाव करते हैं, वे उन लोगों के प्रति सहिष्णु होते हैं और उन्हें स्वीकार भी कर लेते हैं, जो जन्म से ही उनसे अलग होते हैं। थलिडमाइड शिशुओं, पार्किन्सन्स रोगियों, ऑटिज़म या सेरीब्रल पॉल्सी के शिकार लोगों का उदाहरण ले लीजिए। लोग इन्हें स्वीकारते हैं, क्योंकि इन्हें ये रोग जन्मजात

होते हैं, जबकि लोगों को लगता है कि समलैंगिक अपनी जीवनशैली का चुनाव स्वयं करते हैं।

क्या हम ऐसे इंसान की आलोचना कर सकते हैं, जो जन्मजात हीं बाएँ हाथ से काम करता है या फिर डिसलेक्सिक है? या फिर जिसकी आँखें नीली या बाल लाल हैं? या फिर पुरुष शरीर में मादा मस्तिष्क है? अधिकतर समलैंगिक लोग मानते हैं कि ये उनका चुनाव है और कई अल्पसंख्यक समूहों की तरह वे अक्सर अपनी पसंद का प्रदर्शन करने के लिए सार्वजनिक मंच का इस्तेमाल करते हैं, जिससे कई लोगों में उनके प्रति नकारात्मक रवैया पैदा हो जाता है।

वह डिसलेक्सिक, संशयवादी अनिद्रारोगी था। वह सारी रात जगकर सोचता रहता कि क्या वाकई कोई कुत्ता वहाँ मौजूद था।

यह दृःख्यद है कि 30 प्रतिशत से अधिक किशोर आत्महत्याएँ समलैंगिकों द्वारा की जाती हैं और हर तीन में से एक ट्रासेंडर व्यक्ति आत्महत्या करता है। ऐसा लगता है कि ज़िंदगी भर 'शुल्त शरीर' में फँसे होने के एहसास को वे छोल नहीं पाते। इन समलैंगिक किशारों के पालन-पोषण पर हुए एक अध्ययन में पता चला कि उनमें से अधिकतर ऐसे परिवारों या समुदायों में पले-बढ़े, जो समलैंगिकों के प्रति धृणा व अस्वीकृति सिखाते थे या फिर वे ऐसे धर्मों से थे, जो समलैंगिकता के 'शिकार लोगों' को प्रार्थना या इलाज से बचाने की कोशिश करते थे।

लोग पिता को दोषी क्यों मानते हैं

जब कोई लड़का समलैंगिक होता है, तो अक्सर पिता को दोष दिया जाता है। परिवार के सदस्य दावा करते हैं कि पिता ने हमेशा बढ़ते बच्चे की आलोचना की कि वह किसी पुरुषोचित काम में न तो शामिल होता है और न ही उसमें अच्छा प्रदर्शन करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, लड़के ने पिता से विद्रोह किया और उसे चिढ़ाने के लिए वह समलैंगिक बन गया, लेकिन इस दृष्टिकोण की पुष्टि के लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसका संभावित स्पष्टीकरण यह हो सकता है कि लड़के को फुटबॉल, मोटरसाईकिल रेसिंग, कारों या मुकेबाज़ी के बजाय ऐसे कामों में दिलचस्पी थी, जो महिलाओं से जुड़े थे। इसके कारण उसके पिता उससे चिढ़े रहते होंगे, जिन्हें अपने बेटे के नर के रूप में विकास को लेकर कुछ निश्चित अपेक्षाएँ रही होंगी। दूसरे शब्दों में कहें तो लड़के के नारीसुलभ रुझान के कारण पिता का रवैया आलोचनात्मक या आक्रामक हो गया होगा न कि इसका उलटा हुआ होगा।

लाल बाल और चकत्ते भी वैसे होते हैं, जैसे कि समलैंगिकता।

अगर लोगों को यह बात समझ आ जाती कि वैज्ञानिक साध्यों के अनुसार अगर पूरी नहीं, तो अधिकांश समलैंगिकता जन्मजात होती है, तो लोगों में समलैंगिकों की रैली में भी उतनी ही दिलचस्पी होती, जितनी कि लाल बालों व चकत्तों वाले लोगों की किसी रैली में। यह एक तरह की आनुवंशिक स्थिति होती है, जिसके होने की संभावना उतनी ही होती है, जितनी कि समलैंगिकता के होने की। इससे लोग स्त्री-पुरुषों की समलैंगिकता को अधिक स्वीकार कर सकेंगे, ऐसे रुझान वाले लोगों को भी अपने आत्मगौरव को लेकर उतनी मुश्किलें नहीं होंगी, उनके साथ लोग अधिक सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे और उन्हें कम विरोध व उपहास का सामना करना पड़ेगा। दोनों ओर मौजूद अज्ञान के कारण ये दोनों हिस्से एक-दूसरे से इतने अलग हैं।

क्या 'चुनाव' को बदला जा सकता है?

समलैंगिक लोग ठीक उसी तरह अपने यौन रुझान को नहीं चनते, जिस तरह विषमलिंगी ऐसा नहीं करते। वैज्ञानिक और अधिकतर यौन विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि समलैंगिकता एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसे बदला नहीं जा सकता। शोधकर्ताओं का मानना है कि अधिकतर समलैंगिक रुझान गर्भ में ही विकसित होता है और पाँच

साल की उम्र के आसपास समलैंगिक प्रवृत्ति मज़बूत हो जाती है और यह उस इंसान के नियंत्रण से बाहर की चीज़ हो जाती है। कई सदियों से इससे 'पीड़ित' लोगों की समलैंगिकता को दबाने के लिए कई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता रहा है, जिनमें वक्ष काटकर अलग करना, वैध्यकरण, दवाओं का इस्तेमाल, गर्भशय निकालना, दिमाग़ के अगले हिस्से की शल्य चिकित्सा, मनश्चिकित्सा, विजली के झटके देना, प्रार्थना सभा करना, आध्यात्मिक परामर्श और जादू-टोना शामिल हैं। इनमें से कोई भी इलाज समलैंगिकता का दमन करने में सफल नहीं रहा। इन इलाजों से केवल यही परिणाम रहा कि कुछ बायसेक्शन यानी उभयलिंगी लोगों ने अपनी यौन गतिविधियाँ विपरीत लिंग के लोगों के साथ सीमित रखीं या फिर कुछ समलैंगिकों ने अपराधबोध या भय के कारण ब्रह्मचर्य अपना लिया और कुछ लोग आत्महत्या करने पर विवश हो गए।

वैज्ञानिकों ने प्रदर्शित किया है कि समलैंगिकता एक ऐसा रुद्धान है, जिसे बदला नहीं जा सकता। यह चुनाव नहीं है।

इस बात की संभावना 90 प्रतिशत से भी अधिक हो सकती है कि इस पुस्तक के पाठक विषमलिंगी हों। इस बात पर गौर करें कि अपने जैसे लिंग के किसी व्यक्ति की ओर आकर्षित होना कितना मुश्किल होता होगा, इससे आप यह समझने लगेंगे कि ऐसी भावनाएँ पैदा करना एक हद तक नामुमकिन है, जो पहले से मौजूद ही न हों। जैसा कि कई लोग दावा करते हैं कि यह एक चुनाव है, तो कोई भी समझदार इंसान ऐसा रास्ता क्यों चुनेगा, जिस पर चलकर उसे शवुता, पूर्वग्रह और भेदभाव का सामना करना पड़े? इसके लिए हार्मोन्स ज़िम्मेदार हैं और यह मानव का चुनाव नहीं है।

हमशक्ल समलैंगिक जुड़वाँ का मामला

ऐसे हमशक्ल जुड़वाँ बच्चों पर विस्तृत शोध किए गए हैं, जो जन्म के समय अलग हो गए थे और फिर उनका पालन-पोषण अलग-अलग परिवारों व परिवेशों में किया गया। इस तथ्य को स्थापित करने के लिए कई परीक्षण किए गए कि क्या कुछ मानव विशेषताएँ आनुवंशिक होती हैं और उनका निर्धारण सामाजिक अनुकूलन द्वारा नहीं होता। इस प्रकार के शोध दिखाते हैं कि कई मानव विशेषताएँ आनुवंशिक रूप से मिलती हैं, जिनमें तंत्रिका रोग, अवसाद, अंतर्मुखता/बहिर्मुखता के स्तर, प्रभुत्व, खेल का कौशल और पहले यौन रिश्ते की उम्र शामिल हैं। अगर यह मान लिया जाए कि पाँच प्रतिशत पुरुष समलैंगिक हैं और अपने 100 ऐसे हमशक्ल जुड़वाँ बच्चों का विश्लेषण किया हो, जो पैदा होने के बाद एक-दूसरे से अलग हो गए हों, तो इस पूर्वमान्यता के साथ कि समलैंगिकता एक चुनाव है, आप उम्मीद करेंगे कि उनमें से पाँच प्रतिशत बच्चे भी समलैंगिक होंगे। इस प्रश्न पर शोध करने वाले कई शोध समूहों का यही जवाब था। अमेरिकी शोधकर्ता बॉस्टन यूनिवर्सिटी के डॉ. रिचर्ड पियार्ड और नॉर्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक माइकल बेली ने एक साथ पले-बढ़े भाइयों के यौन रुद्धान का अध्ययन किया और इस जवाब को प्रदर्शित किया। उनके निष्कर्ष इस प्रकार थे:

- अलग शक्ल-सूरत वाले जुड़वाँ के लिए 22 प्रतिशत
- ऐसे भाइयों के लिए, जो जुड़वाँ नहीं या फिर गोद लिए गए हों, 10 प्रतिशत
- एक समान जीन्स वाले हमशक्ल जुड़वाँ भाइयों के लिए 50 प्रतिशत

ऐसे समलैंगिक जुड़वाँ लड़कों पर सामूहिक शोध किए गए, जो जन्म के समय अलग हो गए थे और पाया गया कि उनमें से 50 प्रतिशत से अधिक जुड़वाँ भाई भी समलैंगिक थे। शोधकर्ता इस बात को लेकर आमतौर पर सहमत थे कि यह संभव था कि जिन 10 से 20 प्रतिशत जुड़वाँ भाइयों ने विषमलिंगी होने का दावा किया था, वे शायद समलैंगिक थे और वह बात उनके भीतर इतनी गहराई में थी कि वे उसे स्वीकार नहीं कर पा रहे थे या फिर वे उभयलिंगी थे, जिन्होंने खुद को विषमलिंगी मानना ठीक समझा। इससे एक जैसी आनुवंशिक संरचना वाले समलैंगिक जुड़वाँ का असली प्रतिशत 60 से 70 प्रतिशत के बीच हो सकता है या फिर हर तीन में से दो व्यक्ति

समलैंगिक हो सकते हैं। इससे निश्चित तौर पर यह साबित होता है कि अधिकतर समलैंगिकता की रचना गर्भ में होती है। इससे यह भी पुष्टि होती है कि पालन-पोषण का यौन रुक्षान पर बहुत कम या न के बराबर असर पड़ता है।

यह उनके जीन्स में है

इस सिद्धांत के आधार पर कि समलैंगिकता गर्भ में ही तैयार होती है, आपको लगेगा कि सभी समलैंगिकों के हमशक्ल जुड़वाँ भाई भी समलैंगिक होंगे, तो फिर बाकी 30 से 40 प्रतिशत हमशक्ल समलैंगिक क्यों नहीं होते? जीन्स की एक विशेषता होती है, जिसे 'पेनिट्रेंस' यानी भेदना कहा जाता है, जो कि किसी जीन के प्रभावशील होने की ताकत का पैमाना है और यह निर्धारित करता है कि उस जीन के काम करने की कितनी संभावना होगी और वह प्रमुख जीन बन पाएगा या नहीं। उदाहरण के लिए, जो जीन्स हर्निंगटन रोग का कारण होते हैं, वे 100 प्रतिशत पेनिट्रेंट यानी भेदक होते हैं, जबकि टाइप वन डायबिटीज़ यानी मधुमेह पैदा करने वाले जीन्स 30 प्रतिशत पेनिट्रेंट होते हैं। इसका मतलब है कि अगर हमशक्ल दोनों जुड़वाँ में हर्निंगटन व मधुमेह जीन होंगे, तो दोनों को हर्निंगटन बीमारी होने की 100 प्रतिशत आशंका होगी, जबकि उन्हें मधुमेह होने के आसार केवल 30 प्रतिशत होंगे।

'गे जीन' यानी समलैंगिक जीन वाले लोगों के समलैंगिक बनने की संभावना 50-70 प्रतिशत तक हो सकती है और इस सिद्धांत से स्पष्ट होता है कि क्यों सभी हमशक्ल जुड़वाँ भाई समलैंगिक नहीं होते। यह अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 10 प्रतिशत पुरुषों में 'गे जीन' होता है और इनमें से लगभग आधे पुरुष उस जीन के 50-70 प्रतिशत पेनिट्रेंस होने के कारण समलैंगिक होंगे। चूहों व बंदरों पर प्रयोगशाला में हुए प्रयोगों में यह साबित हुआ है कि इस तरह का घटनाक्रम अन्य प्रजातियों में भी होता है। जहाँ इंसानों पर इस तरह के यौन बदलाव करने वाले प्रयोग शैरकानूनी हैं और उन्हें नैतिक रूप से भी शलत माना जाता है, वहीं हम जानते हैं कि रूस में इस तरह के प्रयोग सफलतापूर्वक होते रहे हैं और उनके उसी प्रकार के निर्णायिक परिणाम रहे हैं।

'समलैंगिक जीन'

अमेरिका के नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट के डीन हामर ने समलैंगिक भाइयों के 40 जोड़ों के डीएनए की तुलना की और पाया कि उनमें से 33 के X क्रोमोज़ोम के X 928 हिस्से में एक जैसे जेनेटिक मार्कर यानी आनुवंशिक चिह्नक थे, जो गे जीन की अनुमानित जगह का निर्धारण करते रहे हैं। उन्होंने जुड़वाँ समलैंगिक बहनों के 36 जोड़ों के डीएनए की भी तुलना की, लेकिन उनमें उसी तरह का नमूना नहीं पाया गया। अध्ययन यह भी दिखाता है कि समलैंगिकता प्रमुख तौर पर पुरुषों को ही प्रभावित नहीं करती, बल्कि यह लगभग निश्चित तौर पर आनुवंशिक है। इस जीन का पेनिट्रेंट होना बड़े पैमाने पर गर्भाधान के छह से आठ सप्ताह बाद टेस्टोस्टेरोन हार्मोन की मौजूदगी पर निर्भर करता है। इसके अलावा थोड़ी-बहुत यह संभावना भी हो सकती है कि सामाजिक अनुकूलन जैसे अन्य कारक जीवन के प्रारंभिक चरण में आमतौर पर पाँच वर्ष की आयु से पहले इस जीन को सक्रिय कर दे।

समलैंगिकों की उंगलियों के निशान और परिवारों के अध्ययन

1998 में कैनेडा की प्रमुख मस्तिष्क शोधकर्ता डॉ. डॉरीन किमुरा ने बताया कि उन्होंने लोगों की उंगलियों के निशानों में मौजूद दो निश्चित बिंदुओं के बीच के उभारों की संख्या का अध्ययन किया। इसमें उन्होंने पाया कि जिन लोगों के बाएँ हाथ में उभार होते हैं, वे स्त्रियोचित कामों में बेहतर होते हैं।

उन्होंने पाया कि अधिकतर पुरुषों के दाएँ हाथ में ज्यादा उभार होते हैं, लेकिन औसतन महिलाओं व समलैंगिक पुरुषों के बाएँ हाथ में ज्यादा उभार होते हैं।



उंगलियों पर उभार

नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट द्वारा किए गए समलैंगिक पुरुषों के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि समलैंगिकता परिवारों में आगे बढ़ती है। 114 समलैंगिक पुरुषों के आनुवंशिक परिवार के सदस्यों के आँकड़े बताते हैं कि इस बात की संभावना तीन गुना अधिक होती है कि समलैंगिक पुरुष के भाई, चाचा, चचेरे भाई या माता-पिता भी समलैंगिक थे। परिवार के अधिकतर समलैंगिक पुरुष माँ के परिवार पर गए थे और केवल कुछ ही पिता के परिवार पर गए थे। यह केवल आनुवंशिक कारण से हो सकता है और बताता है कि एक्स क्रोमोजोम पर कहीं एक विशेष जीन होता है। यह क्रोमोजोम केवल माँ दे सकती है (उसके पास दो X होते हैं) और इससे यही प्रदर्शित होता है कि नर समलैंगिकता आनुवंशिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है।

प्रयोगात्मक परिवर्तन

वैज्ञानिक शोध के लिए चुहे पसंदीदा प्राणी हैं। उनमें मनुष्यों की तरह हार्मोन, जीन्स और एक केंद्रीय तंत्रिका तंत्र होता है, लेकिन उनके मस्तिष्क इंसानों की तरह गर्भ में विकसित नहीं होते, बल्कि वे जन्म के बाद विकसित होते हैं और इस प्रकार हम देख सकते हैं कि उनमें क्या चल रहा है। किसी नर चूहे का बंध्यकरण हो जाने के बाद वह खुद को मादा समझने लगता है और सामाजिक व घरौंदा बनाने वाला चूहा बन जाता है। नवजात मादा चूहे को यदि टेस्टोस्टेरोन हार्मोन दे दिया जाए, तो वह खुद को नर समझने लगती है। कुछ मादा पक्षी जैसे कैनेरी गाना नहीं गा सकती, लेकिन यदि बहुत छोटी आयू से उन्हें टेस्टोस्टेरोन हार्मोन दे दिया जाए, तो वे भी नर की तरह गाना गा सकती हैं। इसका कारण यह है कि टेस्टोस्टेरोन उनके मस्तिष्क की संरचना को प्रभावित करता है और इस प्रकार उनकी क्षमताओं पर भी असर पड़ता है।

लिंग-परिवर्तन से होने वाले परिणामों को प्राप्त करने के लिए मस्तिष्क में उस समय बदलाव करना ज़रूरी है, जब वह भ्रूण अवस्था में हो। वयस्क चूहों, पक्षियों व बंदरों पर किए जाने वाले इस प्रकार के परीक्षणों से नाटकीय परिणाम सामने नहीं आए, क्योंकि इन प्राणियों में भ्रूण अवस्था में ही मस्तिष्क की संरचना ‘तय’ हो जाती है। इंसानों में गर्भाधान के छह से आठ हफ्तों के बीच दिमाग की संरचना ‘तय’ हो जाती है। इसका मतलब है कि ज़्यादा उम्र के चूहों में ज़्यादा बदलाव नहीं आएँगे और न ही बड़ी उम्र के इंसानों में।

रूस के एक सेमिनार यात्रा में हम वहाँ की स्थानीय यूनिवर्सिटी के मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा के एक प्रोफेसर से मिले, जिन्होंने हमें बताया कि उनके देश में गुप्त रूप से इंसानों पर मस्तिष्क में बदलाव लाने वाले प्रयोग किए गए थे और उनके परिणाम भी वही रहे, जो चूहों पर हुए प्रयोगों में सामने आए थे यानी उन्होंने गर्भ में ही नर हार्मोन की मदद से मस्तिष्क में परिवर्तन लाकर लड़कों को लड़कियों में व लड़कियों को लड़कों में बदल

दिया था। उन्होंने समलैंगिक और ट्रांससेक्शनल लोगों को तैयार किया था। उन्होंने यह भी बताया कि कई बार ऐसा भी हुआ कि भूषण को पर्यास नर हार्मोन नहीं दिए गए या फिर उसे उसके विकास के ग़लत समय पर हार्मोन दिए गए। एक प्रयोग के बाद ऐसे लड़के का जन्म हुआ, जिसके दो तरह के जननांग थे - एक नर और दूसरे मादा जननांग। ऐसी आकस्मिक घटनाएँ कभी-कभार प्रकृति में भी हो जाती हैं (जैसा कि डॉमिनिकन गणराज्य में हुआ था) और इस बात को भी स्पष्ट करती हैं कि कैसे कोई शिशु लड़की जैसा दिखता है और फिर किशोरावस्था में अचानक लड़के में तब्दील हो जाता है।

यह शोध यहीं प्रदर्शित करता है कि वैज्ञानिक इस बात को जानते हैं कि हार्मोन्स से मस्तिष्क के लिंग को नियंत्रित किया जा सकता है और भूषण की लैंगिकता को जन्म से पहले सही समय पर इंजेक्शन देकर निर्धारित किया जा सकता है, लेकिन वे इस पर बातचीत नहीं करना चाहते। हालाँकि यह बात भी समझी जा सकती है कि इससे नैतिक और मानवीय प्रश्न खड़े हो सकते हैं।

यह सब गर्भ में होता है

अगर गर्भावस्था के शुरुआती चरणों में टेस्टोस्टेरॉन को दबाया या रोका जाए और भूषण अगर नर हो तो ऐसे में उसके समलैंगिक होने की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि उसके मस्तिष्क की संरचना बनाने वाले प्रमुख हार्मोन मादा हार्मोन होते हैं। 1970 के दशक में जर्मनी में हुए एक अध्ययन ने प्रदर्शित किया कि जिन माँओं को गर्भावस्था की शुरुआत में बहुत अधिक तनाव होता है, उनके द्वारा समलैंगिक लड़के को जन्म देने की संभावना छह गुना अधिक होती है। नॉर्थ डिकोटा की माइनोट स्टेट यूनिवर्सिटी के समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर ली एलिस ने यह भी दिखाया कि तनावग्रस्त गर्भावस्था का मतलब समलैंगिक शिशु का होना है। ऐसी स्थिति में अगर भूषण लड़की है, तो संभव है कि वह उसमें नारी सूलभ गुण बहुत अधिक हों और संभव है कि उसकी स्थानिक क्षमता बहुत ख़राब हो। दूसरे शब्दों में कहें तो उसमें मातृत्व और पालने-पोसने की भावना अत्यधिक होगी, लेकिन वह रिवर्स पार्किंग करने व उत्तर दिशा का पता लगाने में नाकाम रहेगी। नॉर्थ डिकोटा स्टेट यूनिवर्सिटी के ब्रायन ग्लैड्य ने बताया कि विषमलिंगी पुरुषों के स्थानिक कौशल समलैंगिकी पुरुषों से बेहतर होते हैं और महिला समलैंगिकों की स्थानिक क्षमताएँ विषमलिंगी महिलाओं से बेहतर होती हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि समलैंगिक महिलाओं के मस्तिष्क में अधिक नर हार्मोन काम कर रहे थे। तो टेस्टोस्टेरॉन को कौन रोकता है? इसके प्रमुख कारक हैं, तनाव, बीमारी और कुछ दवाएँ।

हमें कुछ समय से अजन्मे शिशु पर ऐल्कोहल व निकोटिन के ख़तरनाक असर की जानकारी है और हम यह भी जानते हैं कि सही आहार व चिंतामुक्त जीवन का उस पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। लंदन के चेल्सी हॉस्पिटल के डॉ. विवेट ग्लोवर जैसे विशेषज्ञों द्वारा किए गए नए शोध से यह प्रदर्शित हुआ है कि तनावग्रस्त रहने वाली गर्भवती महिलाएँ ऐसे बच्चों को जन्म देती हैं, जो तनावपूर्ण स्थितियों से निपटने में असमर्थ रहते हैं। लंदन के इंस्टिट्यूट ऑफ साइकियेट्री के डॉ. ग्लेन विल्सन ने भी इस क्षेत्र में विस्तृत अध्ययन किया है। उनका निष्कर्ष है, ‘कुछ रसायनिक दवाएँ टेस्टोस्टेरॉन को प्रभावित करती हैं और उसके परिणामस्वरूप समलैंगिक शिशु का जन्म हो सकता है।’

यदि भूषण लड़की (xx) है और उसके मस्तिष्क को अगर नर हार्मोन की ख़ुराक दी जाए तो नतीजे के रूप में एक ऐसा शिशु सामने आएगा, जिसका शरीर लड़की का होगा, लेकिन मस्तिष्क की संरचना नर जैसी होगी। ऐसी लड़कियाँ अक्सर ‘टॉमबॉय’ कहलाती हैं, क्योंकि वे अपनी हम उम्र लड़कियों की तुलना में ज़्यादा मज़बूत व कठोर होती हैं। इस बात की संभावना होती है कि तरुण अवस्था में इन लड़कियों के शरीर व चेहरे पर अन्य लड़कियों की तुलना में ज़्यादा बाल हों, उनका हाथ व आँखों का तालमेल व गेंद से जुड़े हुनर बेहतर हों। वयस्क होने पर ऐसी लड़कियों को ‘बुच’ या मर्दाना कहा जाता है। इनमें से कई समलैंगिक बन जाती हैं। अगर गर्भवती महिला गर्भनिरोधक गोलियाँ, मधुमेह की दवाएँ या अन्य ऐसी दवाएँ ले रही हो, जिनमें नर हार्मोन का स्तर अधिक हो, तो उसे अनावश्यक रूप से ज़्यादा नर हार्मोन मिल सकते हैं।

1950 व 1960 के दशक में मधुमेह की रोगी गर्भवती महिलाओं पर हुए एक अध्ययन में पाया गया कि उनमें से कई की बेटियाँ किशोरावस्था के बाद समलैंगिक हो गई, क्योंकि भूषणावस्था में उनके मस्तिष्क को विकास के महत्वपूर्ण काल के दौरान उन्हें मधुमेह की दवा में मौजूद नर हार्मोन बड़ी मात्रा में मिला।

ठीक इसी तरह एक अन्य अध्ययन से पता चला कि उसी अवधि के दौरान जिन महिलाओं को इस मान्यता के साथ ईस्ट्रोजेन जैसा मादा हार्मोन दिया गया कि उससे गर्भावस्था में मदद मिलेगी, उनके समलैंगिक लड़का होने

की संभावना पाँच से दस गुना बढ़ गई। किशोरावस्था तक किसी किशोर की वास्तविक लैंगिकता स्पष्ट नहीं होती, ऐसा तभी होता है जब उसके शरीर में बड़े पैमाने पर हार्मोन उमड़ते हैं और उससे उसका मस्तिष्क चक्र शुरू हो जाता है।

इन्हीं परिणामों को अमेरिका केकिन्जी इंस्टिट्यूट के शोधकर्ताओं ने दोहराया, जब उन्होंने पाया कि जिन माँओं ने गर्भावस्था के दौरान नर हार्मोन लिए थे, उनकी ऐसी बेटियाँ हुई जो अधिक आत्मनिर्भर थी, उनमें अपनी बात को लेकर दृढ़ आग्रह अधिक था और उनके किकबॉक्सिंग या फुटबॉल जैसे आक्रामक खेलों में शामिल होने की संभावना अधिक थी। बचपन में उनमें से कई को 'टॉमबॉय' कहा जाता था। जिन माँओं ने मादा हार्मोन अधिक लिए थे, उनकी बेटियों में अधिक नारी सुलभ गुण थे और बेटे अपने हमउम्र लड़कों के मुकाबले ज्यादा कोमल व सभ्य थे, वे दूसरों पर अधिक निर्भर थे और शारीरिक तौर पर अधिक सक्रिय नहीं थे।

ट्रांससेक्शुअल मस्तिष्क

ट्रांससेक्शुअल लोगों को बचपन से ही लगता है कि वे ग़लत लिंग वाले शरीर के साथ पैदा हुए। यौन वर्ताव के लिए मस्तिष्क में मौजूद महत्वपूर्ण क्षेत्र हाइपोथैलेमस कहलाता है और यह क्षेत्र पुरुषों की तुलना में महिलाओं में छोटा होता है। नीदरलैंड्स इंस्टिट्यूट फॉर ब्रेन रिसर्च के शोधकर्ता डिक स्वॉब और उनकी टीम ने 1995 में पहली बार दिखाया कि नर ट्रांससेक्शुअल्स में हाइपोथैलेमस का आकार महिलाओं जितना या फिर उनसे कम था। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि लिंग की पहचान विकसित होते मस्तिष्क व सेक्स हार्मोनों के बीच होने वाली क्रिया से उत्पन्न होती है। इस सिद्धांत को पहली बार जर्मन वैज्ञानिक डॉ. गुंटर ड्याना ने प्रस्तावित किया था, जिन्होंने पाया कि समलैंगिक पुरुषों के हाइपोथैलेमस में मादा हार्मोन का इंजेक्शन लगाने पर वह ठीक मादा हाइपोथैलेमस जैसी प्रतिक्रिया करता है। स्वॉब ने कहा, 'हमारा अध्ययन वह पहला अध्ययन है, जो दिखाता है कि आनुवंशिक रूप से नर ट्रांससेक्शुअल में मादा मस्तिष्क संरचना होती है।' दूसरे शब्दों में कहें तो इस स्थिति में महिला का मस्तिष्क पुरुष के शरीर में क्रैद होता है।

मनोरोग की दृष्टि से देखा जाए, तो ट्रांसजेंडर व्यक्ति जेंडर आइडेंटिटी डिसऑर्डर यानी लिंग की पहचान के विकार से ग्रस्त होते हैं और इनमें से लगभग 20 प्रतिशत लिंग परिवर्तन ऑपरेशन करवाते हैं। इसमें अंडकोश को हटाना व शिश्र को लंबाई में बीच से आधा काट कर उसके अंदर मौजूद ऊतकों को हटाना शामिल होता है। शिश्र की त्वचा शरीर से जुड़ी रहती है, मूत्रमार्गीय नलिका को फिर से एक सीधे में किया जाता है और फिर शल्य चिकित्सा से बने छेद में शिश्र से ली गई त्वचा को मोड़कर रखा जाता है, जिससे कृत्रिम योनि बना दी जाती है। कुछ मामलों में शिश्र का अगला हिस्सा क्लाइटॉरिस यानी भग-शिश्र बन जाता है और वह चरम आनंद में सक्षम होता है। दुःखद बात यह है कि ट्रांससेक्शुअल्स की खुदकुशी की दर सामान्य लोगों से पाँच गुना अधिक है। हर पाँच ट्रांससेक्शुअल्स में से एक खुदकुशी की कोशिश करता है।

क्या हम अपने जीवविज्ञान के गुलाम हैं?

वैज्ञानिक जानते हैं कि गर्भ में चूहों व बंदरों की लैंगिकता कैसे बदली जा सकती है। कुछ समूहों का दावा है कि हम अपनी पसंद व नापसंद को अपनी इच्छाशक्ति से या अपनी मर्जी से बदल सकते हैं और वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हम सभी आसानी से रिवर्स पार्किंग कर सकते हैं व स्ट्रीट डायरेक्टी पढ़ सकते हैं। लेकिन वैज्ञानिक जानते हैं कि यह बात वास्तविक नहीं है। यह देखने के लिए आपको वैज्ञानिक होने की ज़रूरत नहीं कि कि खरगोश उड़ नहीं सकते, बतख अच्छी तरह दौड़ नहीं सकती, अधिकतर महिलाओं को नक्शे पढ़ने में मुश्किल होती है और अखबार पढ़ते पुरुष उस दौरान बहरे से हो जाते हैं। हमारे मस्तिष्कों की संरचना में मौजूद अंतर समझकर हम एक-दूसरे के प्रति अधिक सहनशील बनते हैं व इससे हमारा अपनी नियति पर अधिक नियंत्रण हो पाता है और अपने रुद्धानों व पसंद के प्रति सकारात्मक महसूस करते हैं।

मानव बुद्धिमत्ता इस स्तर तक विकसित हो गई है कि अन्य प्राणियों की तुलना में अपनी भावनाओं पर हमारा बेहतर नियंत्रण है और हम अपनी पसंद-नापसंद पर सोच-विचार कर सकते हैं। अन्य जानवर सोचते नहीं हैं, वे बस परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया करते हैं और यही बात उन्हें अपने जीवविज्ञान का गुलाम बनाती है। कई बार जो चुनाव हम करते हैं, उसके पीछे हमारा जीवविज्ञान ही प्रेरणा का काम करता है, लेकिन हमें यह बात कई

बार सही नहीं लगती। जहाँ एक ओर हम अन्य जानवरों के मुकाबले ज्यादा नियंत्रणकारी स्थिति में हैं, वहीं हम जीववैज्ञानिक प्रणाली को पूरी तरह नकार नहीं सकते। अधिकतर लोगों के सामने सबसे बड़ी बाधा यही होती है कि वे इस विचार को खारिज कर देते हैं कि हम भी बाकी जानवरों की तरह हैं, बस हमारे पास ज्यादा स्मार्ट दिमाग मौजूद है। यही अस्वीकृति इन लोगों को अपने जीवविज्ञान का शिकार बनाती है।

सभी समलैंगिक पुरुष एक समान क्यों नहीं होते

साधारण शब्दों में कहें तो समलैंगिक बर्ताव से जुड़े दो प्रमुख केंद्र होते हैं, ‘मेटिंग सेंटर’ यानी संसर्ग केंद्र और ‘बिहेवियर सेंटर’ यानी बर्ताव केंद्र।

‘मेटिंग सेंटर’ हाइपोथेलेमस में स्थित होता है और यह फ्रैसला करता है कि वह किस लिंग की ओर आकर्षित होगा। पुरुषों में उसे नर हार्मोन की खुराक की ज़रूरत होगी, ताकि उसका संचालन नरोचित हो और वह पुरुष किसी महिला की ओर आकर्षित होगा। यदि उसे अपर्याप्त नर हार्मोन मिलें, तो वह किसी हद तक संचालन में नारी सुलभ होगा और पुरुष अन्य पुरुषों की ओर आकर्षित होगा।

संभव है कि मस्तिष्क में स्थित ‘बिहेवियर सेंटर’ को इतने पर्याप्त नर हार्मोन न मिलें कि वह किसी पुरुष को मर्दना बर्ताव, बातचीत व शारीरिक हावभाव दे सके। यदि उसे नर की तरह विन्यास प्राप्त करने के लिए पर्याप्त हार्मोन न मिलें तो पुरुष का बर्ताव उल्लेखनीय ढंग से बियोचित होगा।

महिला समलैंगिकों के बीच अंतर

यदि मादा भूषण को अनजाने में अतिरिक्त नर हार्मोन दिए जाएँ तो उसका मेटिंग सेंटर मर्दना हो जाएगा। इसका अर्थ है कि वह महिला अन्य स्त्रियों की ओर आकर्षित होगी। यदि उसका बिहेवियर सेंटर भी मर्दना हो, तो उसका बर्ताव, बातचीत व शारीरिक हावभाव पुरुषोचित होंगे और उसे ‘बुच’ यानी मर्दना कहा जाएगा।

दसूरी ओर, यदि उसका बर्ताव केंद्र नर हार्मोन्स से परिवर्तित न हो, तो उसका व्यवहार स्त्रियोचित तो होगा, लेकिन वह अन्य महिलाओं की ओर आकर्षित होगी। मादा चूहों व बंदरों पर किए गए प्रयोगों में यही परिणाम दिखाई देते रहे हैं।

जहाँ एक ओर, मर्दना महिला समलैंगिकों को उनके जीवविज्ञान के परिणाम के तौर पर देखा जा सकता है, वहीं कई लोग आज भी इस विचार का विरोध करते हैं कि महिला समलैंगिक भी अपनी संरचना की बंधक हैं। उनका मानना है कि इन महिलाओं ने समलैंगिक होना चुना, क्योंकि वे किसी भी कोण से समलैंगिक नहीं लगती। आपके कई पुरुषों को स्त्रियोचित बर्ताव वाली या ‘लिपस्टिक’ समलैंगिक महिला को देखकर यह कहते हुए सुना होगा कि ‘शर्त लगा लो, मैं उसकी सोच बदल सकता हूँ।’

ये महिलाएँ वास्तव में अन्य स्त्रियों की तरफ ही आकर्षित होती हैं।

9

स्त्री-पुरुष और सेक्स



अपने नर हार्मोन के
बूते पर टिके रहें।

स्टेला और जेरेमी की मुलाकात अपने एक साझे दोस्त की पार्टी में हुई। दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचे चले आए और उनके बीच का आकर्षण जल्दी ही एक तेज़ रफ्तार उग्र रिश्ते में बदल गया। वे दोनों एक-दूसरे के प्यार में पागल थे और शारीरिक तौर पर एक-दूसरे से उनका मन नहीं भरता था। वे घर के हर कोने में, वह चाहे बैठक हो, शयनकक्ष, रसोईघर, स्नानघर, ज़ीना या फिर गैराज, सहवास करते थे। जेरेमी के हिसाब से सेक्स ज़बरदस्त था, इसलिए उसे लगा कि स्टेला ही उसके लिए सही साथी थी। स्टेला के लिए भी यह रिश्ता बहुत बढ़िया था, इसलिए उसे लगा कि उसे प्यार हो गया था। वे दोनों हमेशा साथ रहने वाले थे।

दो साल बाद भी उनकी सेक्स लाइफ़ तेज़ रफ्तार व उग्र थी - जेरेमी तेज़ था और स्टेला उग्र। स्टेला के लिए हफ्ते में दो बार सेक्स काफ़ी था, लेकिन जेरेमी को वह हर रोज़ चाहिए था। आखिर अपने इस रिश्ते के लिए उसने अपने एकल जीवन को छोड़ा था, इसलिए उसे यह सही लेन-देन लगा। वह जितना सेक्स पर ज़ोर देता, स्टेला को उसकी चाहत उतनी ही कम होती और जल्दी ही उनका सेक्स शयनकक्ष तक ही सीमित रह गया। वे छोटी-छोटी बातों पर झगड़ने लगे, चुम्बन व अलिंगन धीरे-धीरे उनकी ज़िंदगी से गायब हो गए और वे एक-दूसरे की कमियाँ निकालने लगे। वे अलग-अलग समय पर सोने के लिए जाते और एक-दूसरे से बचते। अब उनकी ज़िंदगी में सेक्स बस एक ज़बानी काम बनकर रह गया था। अकेलेपन की एक रात में उनमें से एक किसी दोस्त की पार्टी में गया और उसकी मुलाकात किसी से हुई। झटपट उनके बीच आकर्षण पैदा हुआ और उनके तेज़ रफ्तार जुनून भरे रिश्ते की शुरुआत हुई। वे दोनों एक-दूसरे की चाहत में पागल थे और शारीरिक तौर पर एक-दूसरे से उनका मन नहीं भरता था...

सेक्स की शुरुआत कैसे हुई

लगभग 3.5 अरब साल पहले एक एक कोशिकीय प्राणी के साथ जीवन की शुरुआत हुई। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उस कोशिका ने अपनी जैसी और प्रतियाँ बनाई। इस प्रकार लाखों वर्षों तक वह प्राणी वैसा ही रहा और उसका रूपरंग तभी बदला, जब किसी दुर्घटनावश उसकी संरचना में कोई परिवर्तन आया या फिर अनुभव से उसने कुछ नया सीखा। जीवन की गति धीरी थी।

फिर लगभग 80 करोड़ साल पहले कोशिका ने शायद संयोगवश एक आश्वर्यजनक तरीका सीखा। उसने किसी प्रकार जान लिया कि अन्य कोशिकाओं के साथ जीन्स का लेन-देन कैसे किया जाए। इसका मतलब था कि दूसरी कोशिकाओं ने उत्तरजीविता के जिन फ़ायदों को हासिल कर लिया था, उन्हें एक नई शिशु कोशिका तक आगे बढ़ाया जा सकता था, ताकि वह अपनी मूल जनक कोशिकाओं से अधिक सशक्त और समुत्थानशील हो सके। अब बेहतर उत्तरजीविता की ओर बढ़ती कोशिका को परिवर्तित होने के लिए लाखों साल तक किसी संयोग का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं रही।

यह बहुत बड़ा सफल विस्तार था, जिसने नई कोशिकाओं की वृद्धि को तीव्र किया और उसे आश्वर्यजनक गति से बड़ी व बेहतर चीज़ों की ओर ले गया। शुरुआत नर्म शरीर वाले कृमियों व जेलीफिश जैसे प्राणियों से हुई। 60 करोड़ साल पहले हड्डियों व खोल वाले प्राणी आए और उनके 30 करोड़ साल बाद पहली मछली ने सौंस लेना सीखा और वह किनारे पर ज़मीन तक घिसटकर आई। यह सब जीन्स के लेन-देन का परिणाम था।

सेक्स यानी यौन क्रिया अब पूरे चरम पर थी। एक बार मज़बूत जीन्स वाली नई कोशिका की रचना होने के बाद यह ज़रूरी था कि उसकी मूल जनक कोशिकाओं की मृत्यु हो जाए। इसके दो कारण थे। पहला, नई कोशिका अपनी मूल जनक कोशिकाओं से बेहतर थी, इसलिए अब उसकी ज़रूरत नहीं थी। दूसरा, मूल जनक कोशिकाओं को हटाना ज़रूरी था, ताकि वे नई कोशिका के साथ प्रजनन न करें और उसे कमज़ोर न करें। मृत्यु का अर्थ था कि नए ज़्यादा मज़बूत जीन का अस्तित्व बना रहेगा और वह अपने जीन्स अन्य नए उत्तरजीवीभागीदारों के साथ बाँट सकेगा। इस प्रकार सेक्स का मूल उद्देश्य किसी अन्य के साथ जीन्स का लेन-देन करके अगली पीढ़ी के शिशुओं में ज़्यादा मज़बूत जीन्स तैयार करना था। हमारे अधिकांश इतिहास में हालाँकि सेक्स और बच्चों के बीच कभी कोई रिश्ता नहीं बनाया गया और अब भी कई ऐसी आदिम जनजातियाँ हैं, जो अब भी इस संबंध को नहीं समझ पाएँ हैं।

मस्तिष्क में सेक्स कहाँ है?

आपका सेक्स केंद्र हाइपोथैलेमस में स्थित होता है। मस्तिष्क का यह हिस्सा भावनाओं, दिल की गति और रक्तचाप को नियंत्रित करता है। यह चेरी के आकार का होता है, इसका वज़न लगभग 4.5 ग्राम होता है और महिलाओं, समलैंगिकों व ट्रांससेक्शुअल्स की तुलना में पुरुषों में इसका आकार बड़ा होता है।

इसी क्षेत्र में हार्मोन्स, खासकर टेस्टोस्टेरॉन सेक्स को इच्छा को उकसाता है। इस बात का ध्यान रखते हुए कि पुरुषों में महिलाओं के मुकाबले 10 से 20 गुना ज्यादा टेस्टोस्टेरॉन होता है और उनका हाइपोथैलेमस भी बड़ा होता है, यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि पुरुषों में सेक्स ड्राइव या यौन रुचि इतनी ज़बरदस्त क्यों होती है। यही वजह है कि पुरुष किसी भी समय और किसी भी जगह में सहवास कर सकते हैं। इसके अलावा कई पीढ़ियों से पुरुषों को 'सौ देयर ओट्स' यानी अपने शुक्राणुओं का विस्तार करनेके लिए सामाजिक प्रोत्साहन मिलता रहा है और यौन रूप से सक्रिय महिलाओं की समाज निंदा करता है, इसलिए इस बात पर कोई आश्वर्य नहीं कि सेक्स को लेकर स्त्री-पुरुषों का रवैया हमेशा से दोनों के बीच कलह की जड़ बना रहा है।



मस्तिष्क का सेक्स केंद्र - हाइपोथैलेमस

पुरुष इतने मजबूर क्यों होते हैं?

पुरुषों की जोशीली और आवेग भरी सेक्स ड्राइव का एक स्पष्ट उद्देश्य है - यह सुनिश्चित करना कि मानव प्रजाति

का अस्तित्व बना रहे। अधिकतर नर स्तनधारियों की तरह अपनी सफलता के लिए पुरुष को कई तत्वों के साथ विकसित होना पड़ा। पहली बात, उसकी सेक्स ड्राइव को बहुत तीव्रता से एकाग्र होना चाहिए और उसका ध्यान भंग नहीं होना चाहिए। इससे वह किसी भी परिस्थिति में, जैसे कि किसी संभावित दुश्मन का जोखिम होने के बावजूद, यौन संबंध बना सकेगा या फिर कोई भी यौन अवसर मिलते ही किसी भी स्थान पर ऐसा कर सकेगा।

**किसी पुरुष को कम से कम समय में जितनी जल्दी संभव हो वीर्य
का स्खलन करने की ज़रूरत थी, ताकि वह किसी शिकारी या
दुश्मन की पकड़ में न आ सके।**

उसके लिए जितनी दूर तक हो सके, अपने बीज का, जितनी अधिक बार संभव हो, विस्तार करना भी ज़रूरी था। विश्व में मानव यौन शोध में अग्रणी अमेरिका के किन्जी इंस्टिट्यूट ने बताया कि सामाजिक नियमों की गैरमौजूदगी में उनका मानना है कि लगभग सभी पुरुष स्वचंद्र रूप से यौन संबंध बनाएँगे, क्योंकि अधिकांश मानव अस्तित्व के इतिहास के दौरान लगभग 80 प्रतिशत मानव समाज ऐसे ही रहे हैं। एक विवाह प्रथा का युग आने पर पुरुषों की जीववैज्ञानिक इच्छा रिश्ते बनाने की कोशिश करते दंपतियों के जीवन में लगातार खलबली मचाती रही है और आधुनिक रिश्तों की परेशानियों का पहला कारण रही है।

महिलाएँ निष्ठावान क्यों होती हैं

महिला का हाइपोथैलेमस पुरुष की तुलना में काफ़ी छोटा होता है और उसे सक्रिय करने के लिए उसके मस्तिष्क में टेस्टोस्टेरॉन की मात्रा भी कम होती है। यहीं वजह है कि महिलाओं की सेक्स ड्राइव पुरुषों के मुकाबले कम होती है और वे कम आक्रामक भी होती हैं। तो फिर प्रकृति ने महिलाओं को प्रजाति को बनाए रखने के लिए उन्मत्त कामुकतापूर्ण प्राणी क्यों नहीं बनाया? इसका जवाब गर्भाधान और बच्चे को आत्मनिर्भर होने में लगने वाली लंबी अवधि में मौजूद है।

उदाहरण के लिए, खरगोश जैसी प्रजातियों में गर्भावधि केवल छह सप्ताह की होती है और नवजात खरगोश दो हफ्ते बाद ही खुद खाना खा सकते हैं, दौड़ सकते हैं और छिप सकते हैं। तब उन्हें अपनी हिफ़ाज़त व भोजन के लिए पिता की ज़रूरत नहीं रहती। नवजात हाथी या फ़ैलो डियर (हिरन की एक प्रजाति) जन्म के थोड़े समय बाद ही अपने झुंड के साथ दौड़-भाग कर सकते हैं। हमारे सबसे नज़दीकी रिश्तेदार चिम्पांज़ी भी छह महीने की उम्र में अपने माता-पिता के बिना भी ज़िंदा रह सकता है। नौ महीने की गर्भावस्था के दौरान अधिकांश समय अधिकतर महिलाओं के क्रियाकलाप सीमित हो जाते हैं और बच्चे पाँच साल की उम्र के बाद ही खुद खाना खा सकते हैं व अपना ध्यान रख सकते हैं। यहीं वजह है कि महिलाएँ किसी भी संभावित पिता में भोजन व आश्रय उपलब्ध कराने और दुश्मनों का सामना करने की क्षमता जैसे गुणों का बहुत बारीकी से विश्लेषण करती हैं।

**कुछ पुरुषों को लगता है कि गर्भाधान के साथ पालन-पोषण का
काम पूरा हो जाता है।**

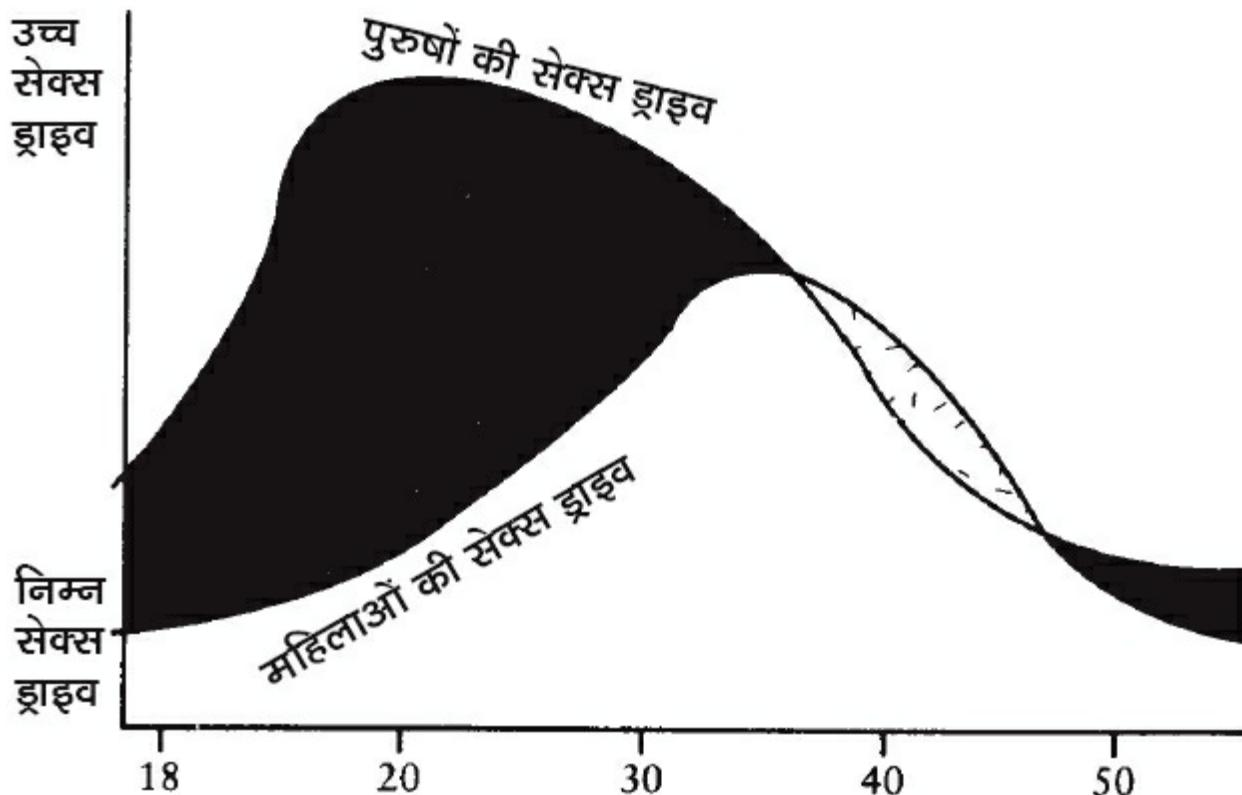
महिला का मस्तिष्क ऐसे पुरुष को खोजने के लिए तैयार होता है, जो उसके बच्चों के पालन-पोषण के लिए लंबे समय तक उसके साथ रहने की प्रतिबद्धता दिखाए। अपने दीर्घकालीन साथी में महिला जो कुछ चाहती है, यह उसमें प्रतिविम्बित होता है।

पुरुष माइक्रोवेव की तरह और महिलाएँ इलेक्ट्रिक अवन की तरह होती हैं

पुरुषों की सेक्स ड्राइव माइक्रोवेव की तरह होती है - वह जल्दी सुलगती है और कुछ ही पलों में अपनी पूरी

क्षमता पर काम कर सकती है, लेकिन खाना पकते ही उसे तुरंत बंद किया जा सकता है। महिला की सेक्स ड्राइव इलेक्ट्रिक अवन की तरह होती है - यह धीरे-धीरे अपने उच्च तापमान पर पहुँचती है और उसे ठंडा होने में भी ज़्यादा वक्त लगता है।

नीचे दिया गया ग्राफ़ एक औसत पुरुष व महिला के जीवनकाल में उनकी सेक्स ड्राइव को प्रदर्शित करता है। इसमें उनके जीवन की विभिन्न अवधियों में जन्म, मृत्यु, प्रणय निवेदन, सेवानिवृत्ति जैसे माहौल से जुड़े कई कारकों को सेक्स ड्राइव के बढ़ने या घटने की बात को समायोजित नहीं किया गया है। सेक्स ड्राइव के अंतर को प्रदर्शित करने के लिए हमने इस ग्राफ़ को सरल बना दिया है।



पुरुष व स्त्री की सेक्स ड्राइव

उम्र बढ़ने पर पुरुष का टेस्टोस्टेरॉनस्तर धीरे-धीरे घटने लगता है और उसके अनुसार उसकी सेक्स ड्राइव भी कम होने लगती है। एक औसत महिला की सेक्स ड्राइव धीरे-धीरे बढ़ती है, जिससे वह 36-38 वर्ष के बीच अपने यौन चरम पर पहुँच सके, इससे यह स्पष्ट होता है कि बूढ़ी महिलाएँ क्यों युवा पुरुषों को पसंद करती हैं। युवा पुरुषों का शारीरिक प्रदर्शन बूढ़ी महिलाओं की लालसा को पूरा करता है। किसी 19 वर्षीय लड़के का यौन प्रदर्शन उस महिला की इच्छा के मुताबिक होता है, जिसकी उम्र पैंतीस से चालीस के बीच हो या फिर चालीस से पैंतालीस साल के बीच हो। चार्ट में आप यह भी पाएँगे कि चालीस से पचास की उम्र के बीच के पुरुष की सेक्स ड्राइव उस महिला के अनुकूल होती है, जिसकी उम्र बीस से पञ्चीस के बीच हो। इससे बूढ़े पुरुष व युवा महिला के संबंध की बात का भी आशिक रूप से स्पष्टीकरण मिलता है। इस बूढ़े व युवा मेल में आमतौर पर उम्र में 10 से 20 साल का अंतर होता है।

जब हम कहते हैं कि किसी पुरुष की सेक्स ड्राइव उसकी उम्र के 19वें साल में अपने चरम पर होती है और वह बाद में घट जाती है, तो हम उसके शारीरिक प्रदर्शन के स्तर की बात कर रहे होते हैं। सेक्स में उसकी रुचि लगभग जीवन भर रहती है, जिसका मतलब है कि 70 साल की उम्र में भी वह सेक्स में उतनी ही दिलचस्पी लेता है, जितनी कि 30 साल की उम्र में। बस अंतर इतना होता है कि हर उम्र में उसका प्रदर्शन उसकी रुचि के स्तर के अनुरूप नहीं होता। कोई महिला किशोरावस्था के उत्तरार्ध में सेक्स में (प्रेम से उसके संबंध के कारण) बहुत दिलचस्पी ले सकती है, लेकिन उसकी सेक्स की इच्छा सीमित हो सकती है। संभव है कि 30 से 40 वर्ष की आयु में भी उसकी वही रुचि बनी रहे, लेकिन इसके साथ-साथ यह भी हो सकता है कि सेक्स के लिए उसकी इच्छा भी बढ़ जाए।

हम सेक्स को लेकर बहस क्यों करते हैं

इस बात का ध्यान रखें कि हम एक समूह के रूप में सभी पुरुषों की व दूसरे समूह के रूप में सभी महिलाओं की सेक्स ड्राइव की बात कर रहे हैं। हर व्यक्ति की अपनी सेक्स ड्राइव हो सकती है, लेकिन इस अध्याय में हम अधिकतर लोगों की सामान्य सेक्स ड्राइव की बात कर रहे हैं।

किसी महिला की सेक्स ड्राइव बहुत ज़्यादा हो सकती है, जबकि पुरुष की बहुत कम, लेकिन ऐसे मामले बहुत कम होते हैं और ये ज़्यादातर लोगों के बर्ताव को नहीं दिखाते। कुल मिलाकर, अधिकतर पुरुषों की सेक्स ड्राइव महिलाओं की तुलना में अधिक होती है। किन्तु यूनिवर्सिटी में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि 37 प्रतिशत पुरुष हर 30 मिनट में सेक्स के बारे में सोचते हैं, जबकि केवल 11 प्रतिशत महिलाएँ अक्सर इसके बारे में सोचती हैं। पुरुष के मामले में उसके टेस्टोस्टेरॉन का लगातार बना हुआ उच्च स्तर उसकी ड्राइव को बढ़ाए रखता है और यहीं वजह है कि सेक्स की बात आते ही वह तैयार रहता है।

सेक्स के मामले में महिलाओं को कारण की ज़रूरत होती है जबकि पुरुषों को बस जगह चाहिए होती है।

ग्राफ में मौजूद आच्छादित क्षेत्र में महिलाओं व पुरुषों के बीच सेक्स को लेकर सबसे ज्यादा झगड़े होते हैं। 35 से 40 वर्ष की आयु की किसी महिला की शिकायत होगी कि पुरुष उस पर सेक्स के लिए लगातार दबाव बनाता है, जिससे दोनों तरफ नाराज़गी पैदा होती है। वह अक्सर पुरुष पर उसे 'इस्तेमाल' करने का आरोप लगाती है। 35 से 40 वर्ष की उम्र में पहुँचने पर ही महिला की सेक्स ड्राइव पुरुष की ड्राइव के मुताबिक होती है और कई बार तो उसे भी पीछे छोड़ देती है। उसकी यह ड्राइव असल में बच्चे पैदा करने की आखिरी कोशिश की तरफ धकेलने का कुदरत का तरीका है, ताकि मेनोपॉज़ यानी रजोनिवृत्ति से पहले यह काम पूरा हो सके। 40 से 45 साल के बीच का कोई भी पुरुष इस भूमिका के उलटने से हैरानी में पड़ सकता है। मुमकिन है कि अपनी ही उम्र की महिला के मुकाबले उसकी सेक्स ड्राइव कम हो, जबकि अपनी बात को लेकर महिला का आग्रह काफ़ी दृढ़ हो सकता है। कई पुरुष इस बात की शिकायत करते हैं कि उन्हें 'माँग के मुताबिक प्रदर्शन' करना पड़ता है। अब मामला बिल्कुल उलट जाता है। हमारी सलाह है कि आप डॉ. रोज़ि किंग की गुड लविंग, ग्रेट सेक्स और डॉ. जॉन ग्रे की मार्स एंड वीनस इन द बेडरूम पढ़ें। दोनों किताबें सेक्स ड्राइव के अंतर से निपटने के लिए बेहतरीन तकनीक व रणनीतियाँ बताती हैं। अधिकतर दंपति इन अंतरों पर ध्यान नहीं देते और दूसरे से उम्मीद करते हैं कि वह उनकी ज़रूरतों को समझे, जबकि प्रकृति इस तरह काम नहीं करती।

स्त्री-पुरुषों की सेक्स ड्राइव में अंतर होता है और अधिकतर दंपति साल, महीने व हफ्ते में इसके अलग स्तर पर हो सकते हैं। यह कहना भले आज के समय में फैशनेबल हो कि आधुनिक स्त्री-पुरुष सेक्स में बराबर दिलचस्पी लेते हैं या फिर सेक्स के लिहाज़ से एक सामान्य दंपति का एक-दूसरे के साथ पूरी तरह मिलान हो, लेकिन असली ज़िंदगी में ऐसा नहीं होता।

कवि जो कुछ लिखते रहें या फिर रूमानी ढंग से सोचने वाले जो कुछ सोचते रहें, सेक्स ड्राइव दिमाग से छोड़े गए हार्मोन के मिश्रण का नतीजा होती है। जैसे कि हम अध्याय 7 में चर्चा कर चुके हैं, टेस्टोस्टेरॉन प्रमुख हार्मोन है, जो सेक्स ड्राइव कहलाने वाले एहसास को तैयार करता है। शायद वे लोग कुछ हद तक सही हैं, जो यह मानते

हैं कि प्यार दिमाग़ का मामला है। महिलाओं के लिए भरोसा, नज़दीकी और कुल मिलाकर सुख के एहसास जैसे मनोवैज्ञानिक कारक मिलकर ऐसी परिस्थितियाँ तैयार करते हैं, जिनमें मस्तिष्क हार्मोनों का मिश्रण छोड़ता है। पुरुषों में यह मिश्रण कभी भी कहीं भी तैयार हो जाता है।

अमेरिका के विश्वविद्यालयों के परिसरों में किए गए अध्ययनों से पता चला कि जब कोई आकर्षक महिला किसी पुरुष के पास जाकर उसे हमेस्तर होने को कहती है, तो 75 प्रतिशत पुरुष इसके लिए तैयार हो जाते हैं, जबकि किसी आकर्षक पुरुष के इसी तरह के प्रस्ताव पर कोई महिला हासी नहीं भरती।

सेक्स ड्राइव और तनाव

किसी महिला की सेक्स ड्राइव उसकी ज़िंदगी की घटनाओं से उल्लेखनीय रूप से प्रभावित होती है। अगर उसे अपना काम पसंद नहीं है, दफ्तर में कोई बहुत भारी-भरकम काम है, कर्ज़ की किश्तें दोगनी हो गई हैं, बच्चे बीमार हैं, वह बारिश में भीग गई है या फिर उसका कुत्ता भाग गया है, तो ऐसे में वह सेक्स के बारे में सोचेगी भी नहीं। वह बस विस्तर पर जाकर चैन की नींद सोना चाहेगी।

इसी तरह की घटनाएँ अगर पुरुष के साथ हों, तो वह सेक्स को एक नींद की गोली की तरह देखेगा और उसे दिन भर के तनाव को दूर करने के एक उपाय के तौर पर लेगा। तो फिर दिन भर के काम के बाद वह महिला से इसकी माँग करेगा और वह उसे बेरहम जाहिल कहेगी और पुरुष उसे ठंडी या सेक्स के प्रति उदासीन कहकर सोफे पर सोने चला जाएगा। यह दृश्य कुछ जाना-पहचाना लगता है? दिलचस्प बात यह है कि जब पुरुषों से उनके रिश्ते की स्थिति के बारे में पूछा जाता है, तो वे आम तौर पर उस दिन उनके जीवनसाथी द्वारा की गई उनकी देखभाल के लिहाज़ से बात करते हैं, जैसे कि क्या महिला ने उनके लिए नाश्ता बनाया, कमीज़ इस्तरी की या फिर सिर की मालिश की। महिलाएँ हाल की घटनाओं के आधार पर अपने रिश्ते की स्थिति बताती हैं, जैसे पिछले कुछ महीनों में उनके साथी ने उन पर कितना ध्यान दिया, घर के कामकाज में मदद की और उनके साथ कितना संवाद बनाया। अधिकतर पुरुष इस अंतर को नहीं समझते। हो सकता है कि पुरुष दिन भर बहुत सभ्य, शालीन व्यक्ति की तरह पेश आया हो, लेकिन फिर भी महिला ने सेक्स से इनकार कर दिया हो, क्योंकि दो हफ्ते पहले वह उसकी माँ का अपमान किए जाने से वह अब भी नाराज़ हो।

एक अनोखे अध्ययन में पाया गया कि जो दंपति एक-दूसरे की जितनी आलोचना करते हैं और जितनी नफरत ज़ाहिर करते हैं, अगले पाँच साल में उन्हें, विशेषकर महिलाओं को, होने वाली संक्रामक बीमारियों से उनका सीधा संबंध होता है। आलोचना जितनी अधिक होती है, संक्रमण भी उतने ही अधिक व उग्र होते हैं। इसका कारण यह है कि लड़ाई-झगड़े के कारण बढ़े हुए तनाव के स्तर से रोगप्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर हो जाती है, जिससे शरीर रोग का मुकाबला नहीं कर पाता और आसानी से रोगग्रस्त हो सकता है।

हमारे जीवन में कितना सेक्स है?

वर्ष 2000 में ऑस्ट्रेलिया में हुए कुछ जोड़ों के सर्वेक्षण में सेक्स की औसत आवृत्ति दिखाई गई। सर्वेक्षण में भाग लेने वाले जोड़ों के चुनाव का कोई क्रम नहीं था और उसमें गोपनीयता बरती गई, इसलिए इस बात की संभावना है कि लोगों ने सद्व्याहृति से जवाब दिया होगा।

आयु	सेक्स की आवृत्ति
20-30 वर्ष में	148 बार
30-40 वर्ष में	110 बार
40-50 वर्ष में	78 बार
50-60 वर्ष में	61 बार
60-70 वर्ष में	61 बार

यह बात ध्यान में रखें कि ये औसत आँकड़े हैं। कुछ 65 वर्षीय लोग सप्ताह में छह बार सहवास कर सकते हैं, जबकि संभव है कि 20 साल की उम्र के कुछ लोग कभी भी इस क्रिया में लिस न हों, लेकिन ये नियम न होकर

उसके अपवाद हैं। दिलचस्प बात यह है कि 81 प्रतिशत जोड़ों ने दावा किया कि वे अपने यौन जीवन से संतुष्ट हैं, अगर हम यह मान लें कि वे सच कह रहे थे, तो इसका मतलब है कि पुरुषों की अतिरिक्त सेक्स ड्राइव की पूर्ति के लिए तोलमोल चल रहा होगा। पश्चिमी देशों में अपने यौन जीवन से संतुष्ट रहने वाले युगलों का प्रतिशत आमतौर पर 60 के लगभग होता है।

अमेरिका में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि मोटे तौर पर, सभी श्वेत पुरुषों के सेक्स की मात्रा बराबर होती है, अश्वेत या श्वेत खियों की (जिनकी मात्रा बराबर होती है) तुलना में लैटिन महिलाओं का सेक्स प्रतिशत अधिक होता है और इस बात की संभावना 50 प्रतिशत अधिक होती है कि हर बार सहवास करने पर अश्वेत महिला चरम संतुष्टि के स्तर पर पहुँचे। एशियाई पुरुषों द्वारा सबसे कम सहवास किया गया, जो उनके टेस्टोस्टेरॉन के निम्न स्तर के अनुकूल है।

दिमाग़ में सेक्स

अमेरिकन डेमोग्राफिक्स पत्रिका ने शोधकर्ताओं के एक समूह द्वारा 1997 में 10,000 वयस्कों के एक सर्वेक्षण के नतीजे प्रकाशित किए, जिसमें सेक्स ड्राइव व बृद्धिमत्ता के बीच संबंध दिखाई दिया। इसमें पाया गया कि आप जिनने चतुरहोते हैं, उतना ही कम सहवास करते हैं या फिर सहवास की चाहत आपको उतनी ही कम होती है। स्नातकोत्तर शैक्षिक योग्यता वाले बुद्धिजीवियों ने साल भर में 52 बार सहवास किया, जबकि सामान्य स्नातकों ने 61 बार और स्कूली पढ़ाई छोड़ने वालों 59 बार। नौ से पाँच की नौकरी करने वाले पुरुषों ने साल में 48 बार सहवास किया, जबकि हफ्ते में 60 से अधिक घंटे काम करने वाले पुरुषों के मामले में यह वर्ष में 82 बार था यानी टेस्टोस्टेरॉन के बढ़े स्तर ने शायद उनके काम करने की प्रवृत्ति व सेक्स ड्राइव को प्रभावित किया। पॉप संगीत पसंद करने वाले लोगों के मुकाबले जैज़ पसंद करने वाले लोगों में सहवास का आँकड़ा 34 प्रतिशत अधिक है, जबकि क्लासिकल संगीत पसंद करने वालों में यह आँकड़ा सबसे कम है।

**कोई महिला क्लासिकल संगीत पसंद करने वाले और अंशकालिक समय काम करने वाले चीनी पुरुष के साथ सबसे सुरक्षित है,
लेकिन उसे जैज़ पियानोवादकों से सावधान रहना चाहिए।**

पुरुषों में टेस्टोस्टेरॉन दिन भर में पाँच से सात लहरों के रूप में आता है और सूर्योदय के समय इसका स्तर दिन के किसी अन्य समय के मुकाबले दोगुना होता है, यह शिकार के लिए निकलने से ठीक पहले का समय होता है। औसतन किसी पुरुष का टेस्टोस्टेरॉन स्तर शाम को आग के पास बैठे रहने के दौरान 30 प्रतिशत कम होता है।

‘मैं एक सुबह छह बजे उठा और मेरी पत्नी मुझे पीछे से झाड़ू के हत्थे से कोंच रही थी!’ एक आदमी ने हमारे लेक्चर के बाद यह बात कही। ‘मैंने जब उससे पूछा कि वह क्या कर रही है, तो उसका जवाब था, “तुम इसे क्यों नहीं आज़माते!”’

सेक्स कैसे आपकी सेहत बेहतर बनाता है

इस बात के ज़बरदस्त सबूत मिले हैं कि सेक्स आपकी सेहत के लिए बहुत फ़ायदेमंद है। हफ्ते में औसतन तीन बार सेक्स से लगभग 35,000 किलोजूल ख़र्च होते हैं, जो कि साल भर में 130 किलोमीटर दौड़ने के बराबर है। सेक्स आपके टेस्टोस्टेरॉन स्तर को बढ़ाता है, जिससे आपकी हड्डियाँ व मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं और आपको अच्छा कॉलेस्ट्रॉल मिलता है। सेक्स शोधकर्ता डॉ. बेवरली विपल का कहना है, ‘सेक्स के दौरान एंडोफिन्स का स्राव होता है, जो शरीर के प्राकृतिक दर्द निवारक हैं और ये सिरदर्द, गर्दन की मोच और आर्थराइटिस से राहत दिलाते हैं।’

सहवास के चरम पर पहुँचने से ठीक पहले डीएचईए (डीहाइड्रोएपियनड्रोस्टेरॉन) हार्मोन भी निकलता है, जो हमारे सहज बोध को बेहतर करता है, रोग प्रतिरोधक प्रणाली का निर्माण करता है, ट्यूमर की वृद्धि को

रोकता है और हड्डियों को मज़बूत बनाता है। महिला में सेक्स के दौरान ऑक्सिटॉसिन हार्मोन का स्राव होता है, जो छुए जाने की इच्छा को जगाता है और उसके ईस्ट्रोजन स्तर को भी बढ़ाता है। डॉ. हेरॉल्ड ब्लूमफील्ड ने अपनी किताब द पावर ऑफ़ फ़ाइव में बताया कि महिलाओं में उच्च ईस्ट्रोजन स्तर का संबंध बेहतर हड्डियों और बेहतर हृदयवाहिनी प्रणाली से है। इन सभी हार्मोनों के परिणामस्वरूप दिल की हिफ़ाज़त होती है और ज़िंदगी लम्बी होती है, इसलिए ज़्यादा सेक्स का मतलब तनाव का कम होना है। अच्छे यौन जीवन के फ़ायदों की सूची और लंबी होती जा रही है!

एकपत्री व बहुपत्री व्यवस्था

बहुपत्री या बहुविवाह वह व्यवस्था है, जिसमें किसी स्त्री या पुरुष के एक बार में एक से ज़्यादा साथी होते हैं। अब तक आप इस नतीजे पर पहुँच चुके होंगे कि मानव प्रजाति प्रकृति से एकपत्री व्यवस्था वाली नहीं है। हमारे विकास के अधिकांश समय के दौरान 80 प्रतिशत से अधिक मानव समाज बहुपत्री व्यवस्था वाले थे और ऐसा मुख्य तौर पर उत्तरजीविता के कारण हुआ था।

**कुछ पुरुषों को लगता है कि मोनोगैमी या एकविवाह व्यवस्था वह
चीज़ है, जिससे फर्नीचर बनाया जाता है।**

एकविवाह का मतलब है कि एक पुरुष का स्थायी रूप से एक ही स्त्री के साथ जोड़ा बनाया जाता है, जो लोमड़ियों, हंस और गरुड़ जैसी कई प्राणी प्रजातियों के लिए एक प्राकृतिक स्थिति है। एकपत्री नर व मादा सामान्य तौर पर एक ही शारीरिक आकार के होते हैं और उनके बीच बच्चों की परवरिश की ज़िम्मेदारी आधी-आधी बँटी होती है। बहुपत्री समाजों में नर आम तौर पर बड़े, ज़्यादा रंगीन, अधिक आक्रामक होते हैं और बच्चों के पालन-पोषण में उनकी भूमिका न्यूनतम होती है। बहुपत्री व्यवस्था में मादाओं की तुलना में नरों में देर से यौन परिपक्षता आती है, ताकि बूढ़े व नौसिखिया युवा नरों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक टकरावों से बचा जा सके, जिसमें युवा नरों की जान जाने का ख़तरा रहता है। मानव नरों की शारीरिक विशेषताएँ बहुपत्री वाली प्रजातियों के अनुरूप हैं; इसलिए इस बात में कोई आश्चर्य नहीं कि पुरुष एकपत्री व्यवस्था में बने रहने के लिए लगातार संघर्ष करते रहते हैं।

पुरुष क्यों स्वच्छंद होते हैं

जानवरों की एक ऐसी प्रजाति की जीवनशैली में विवाह जैसी अवधारणा कहाँ फिट बैठती है, जिसका नर जीववैज्ञानिक तौर पर स्वच्छंद हो?

स्वच्छंदता पुरुष के मस्तिष्क की संरचना में मौजूद है और यह उसके विकासमूलक अतीत की विरासत है। परे मानव इतिहास के दौरान होने वाले युद्धों में पुरुषों की संख्या बड़े पैमाने पर घटी, इसलिए यह ज़रूरी था कि जहाँ तक संभव हो सके, उनकी संख्या बढ़ाई जाए। लड़ाई में जाने वाले पुरुषों की संख्या अधिक होती थी, जबकि उससे बहुत कम पुरुष लौटकर आते थे। इसका मतलब है कि विध्वाओं की बड़ी संख्या होती थी, इसलिए लड़ाई से लौटने वाले पुरुषों के लिए उनका हरम तैयार करना उस जनजाति को कायम रखने की असरदार रणनीति थी।

लड़कों को जन्म देना एक प्रशंसनीय बात थी, क्योंकि समुदाय की रक्षा करने के लिए हमेशा पुरुषों की ज़रूरत रहती थी। लड़कियों का होना निराशा लेकर आता था, क्योंकि महिलाएँ पहले ही बहुतायत में थी। सैकड़ों-हज़ारों साल से यही होता रहा। इसके अलावा आधुनिक पुरुष में अब भी बड़ा हाइपोथेलेमस और प्रजनन करने की उसकी आदिम इच्छा की पूर्ति के लिए टेस्टोस्टेरोन की बड़ी मात्रा मौजूद है। सच्चाई यह है कि अधिकतर नर वानरों और अन्य स्तनधारियों की तरह पुरुष भी जीववैज्ञानिक तौर पर संपूर्ण एकपत्री व्यवस्था की ओर प्रवृत्त नहीं हैं।

पुरुषों पर केंद्रित सेक्स उद्योग इसके उपयुक्त सबूत देता है। लगभग सभी प्रकार का अक्षील साहित्य, कामोत्तेजक वीडियो, वेश्यावृत्ति और एक्स-रेटेड इंटरनेट तसवीरें पुरुषों के लिए होती हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि

जहाँ अधिकतर पुरुष एकपक्ती संबंध में बने रह सकते हैं, वहीं उनके मस्तिष्क की संरचना बहुपक्ती वाली मानसिक उत्तेजना चाहती है। यहाँ यह बात समझना ज़रूरी है कि स्वच्छंद होने की पुरुषों की इच्छा पर बातचीत करते हुए हम जीववैज्ञानिक प्रवृत्तियों की बात कर रहे हैं। हम स्वच्छंद व्यवहार को प्रोत्साहित नहीं कर रहे और न ही पुरुषों को परस्प्रीगमन के लिए बहाने उपलब्ध करा रहे हैं। हम आज ऐसी दुनिया में जी रहे हैं, जो हमारे अतीत से बहुत अलग है और अक्सर ऐसा होता है कि हमारा अपना जीवविज्ञान हमारी अपेक्षाओं और इच्छाओं का विरोधाभासी होता है।

मानव जीवविज्ञान ख़तरनाक तौर पर अप्रासंगिक हो चुका है।

यह तथ्य कि जो चीज़ सहज या स्वाभाविक हो, ज़रूरी नहीं कि वह हमारे लिए अच्छी हो। पतंगों के मस्तिष्क की संरचना ऐसी होती है कि वह सहज रूप से तेज़ रोशनी की तरफ आकर्षित होता है और इसकी वजह से ही वह रात को तारों व चाँद की मदद से अपने रास्ते का पता लगा लेता है। दुर्भाग्यवश, आधुनिक पतंगा भी एक ऐसी दुनिया में रहता है, जो उस दुनिया से बहुत अलग है, जिसमें वह विकसित हुआ है। पतंगों व मच्छरों को मारने के लिए अब हमारे पास ज़ैपर्स हैं। अपने सहज व कुदरती स्वभाव के अनुकूल आधुनिक पतंगा सीधे ज़ैपर्स में पहुँच जाता है और वहीं जलकर ख़ाक हो जाता है। अपनी जीववैज्ञानिक इच्छाओं को समझते हुए आधुनिक पुरुषों के पास अपनी सहज प्रकृति के परिणामस्वरूप जलकर राख कर होने से बचने का विकल्प मौजूद है।

एक बहुत छोटा प्रतिशत उन महिलाओं का भी है, जो पुरुषों जितनी ही स्वच्छंद होती हैं, लेकिन उनके ऐसा करने की वजहें पुरुषों से अलग होती हैं। यौन संबंधों के लिए उत्तेजित होने के लिए घराँदे की रक्षा करने वाली मानव मादा के मस्तिष्क की संरचना सहवास की संभावना के अलावा कई अन्य मानदंडों के हिसाब से प्रतिक्रिया करती है। अधिकतर महिलाओं को सहवास की इच्छा होने से पहले किसी रिश्ते या कम से कम किसी भावनात्मक संपर्क की संभावना की चाहत होती है। अधिकतर पुरुष इस बात को नहीं समझते कि जब एक बार किसी महिला को लगता है कि कोई भावनात्मक रिश्ता बन गया है, तो वह अगले तीन से छह महीने तक वह खुशी-खुशी उसके साथ सहवास करेगी। कुछ अत्यधिक कामुक महिलाओं की बात छोड़ दें, तो अधिकतर महिलाओं को अंडोत्सर्ग के दौरान सहवास की सबसे अधिक इच्छा होती है, जो कुछ दिन या फिर कुछ घंटों तक चल सकता है।

यदि पुरुषों को बेकाब छोड़ दिया जाए, तो वे मानवजाति के अस्तित्व की गारंटी के लिए व्यभिचार के अथाह गर्त में गिर जाएँगे। अमेरिकन हेल्थ इंस्टिट्यूट द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में पता चला कि 16-19 साल के 82 प्रतिशत लड़कों का कहना था कि उन्हें अजनबियों के साथ यौन संबंध बनाने में भागीदारी करने का विचार पसंद आता है, जबकि सिर्फ़ दो प्रतिशत लड़कियों को ऐसा लगा। बाकी लोगों को यह विचार बहुत घटिया लगा।

महिला उस आदमी के साथ ढेरे सारा सेक्स चाहती है, जिसे वह प्यार करती है। पुरुष को बस ढेर सारा सेक्स चाहिए।

रूस्टर इफेक्ट

मुर्गा बहुत कामोत्तेजित नर पक्षी है, जो लगभग लगातार मुर्गियों के साथ मैथुन कर सकता है, कई बार यह संख्या 60 तक पहुँच जाती है। हालाँकि वह एक दिन में उसी मुर्गी से पाँच से ज्यादा बार मैथुन नहीं कर सकता। छठी बार तक उसकी दिलचस्पी उस मुर्गी में ख़त्म हो जाती है और वह मैथुन के लिए तैयार नहीं हो पाता, लेकिन अगर उसके सामने कोई नई मुर्गी आ जाए, तो वह फिर पहली बार वाले जोश के साथ तैयार हो जाता है। इसे ‘रूस्टर इफेक्ट’ के रूप में जाना जाता है।

कोई बैल एक ही गाय के साथ सात बार मैथुन करने के बाद उसमें दिलचस्पी खो देता है, लेकिन नई गाय के सामने आने के बाद वह फिर से उत्साहित हो जाता है। नई दसवीं गाय पर पहुँचने तक उसका प्रदर्शन उतना ही असरदार बना रहता है। नर भेड़ एक ही मादा भेड़ के साथ पाँच बार से ज्यादा मैथुन नहीं कर सकता, लेकिन नई भेड़ों के साथ फिर पुराने उत्साह से मैथुन कर सकता है। यहाँ तक कि अगर उसकी पहले की यौन साथियों को नए तरीके से फिर से उसके सामने लाया जाए, तब भी वह प्रदर्शन नहीं कर सकता। आप उसे बेवकूफ़ नहीं बना सकते।

यह प्रकृति का सुनिश्चित करने का तरीका है कि जहाँ तक संभव हो, नर के अंश का तेज़ी से विस्तार हो सके, ताकि अधिक से अधिक गर्भाधान हो सके और उस प्रजाति का अस्तित्व बना रहे।

पुरुष अपने शिश्र को नाम देते हैं, क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनके 99 प्रतिशत निर्णय कोई अजनबी ले।

सेहतमंद पुरुषों के मामले में भी यह संख्या लगभग पाँच होती है। किसी सही दिन वह एक ही महिला के साथ पाँच बार सहवास कर सकता है, लेकिन आम तौर पर छठी बार वह ऐसा नहीं कर पाता। लेकिन नई महिला के आते ही मुर्गे व बैल की तरह उसकी दिलचस्पी और उसके शरीर के अंग फिर से तेज़ी से जाग जाते हैं।

पुरुषों की सहवास की इच्छा इतनी मजबूत होती है कि लॉस एंजेलीस के सेक्शुअल रिकवरी इंस्टिट्यूट के डॉ. पैट्रिक कार्न्स का अनुमान है कि तीन प्रतिशत महिलाओं की तुलना में आठ प्रतिशत तक पुरुष सेक्स के आदी होते हैं।

पुरुष महिलाओं के लिए वेश्याओं जैसा पहनावा (सार्वजनिक तौर पर कभी नहीं) क्यों चाहते हैं

पुरुष के मस्तिष्क को विविधता चाहिए। अधिकतर नर स्तनधारियों की तरह पुरुष की संरचना इस प्रकार की है कि वह अपने साथी की तलाश करता है और जहाँ तक संभव हो, अधिक से अधिक महिलाओं के साथ सहवास करता है। यहीं वजह है कि पुरुषों को एकपक्षी संबंध में कोई न्यायपन पसंद आता है, जैसे कि आकर्षक अंतर्वस्त्र। अन्य स्तनधारियों के विपरीत पुरुष अपनी साथियों को आकर्षक कपड़े व अंतर्वस्त्र पहनाकर अपनी ज़िदगी में एक से ज्यादा महिलाओं के होने के भुलावे को अपना सकते हैं। यह उसके हिसाब से महिला को नए ढंग से पेश करने का तरीका है, जिससे अलग-अलग आभास से विविधता उपलब्ध कराई जा सकती है। अधिकतर महिलाएँ पुरुषों पर पड़ने वाले अंतर्वस्त्रों के असर को जानती हैं, लेकिन उनमें से बहुत कम इस बात को समझ पाती हैं कि यह इतना असरदार क्यों है।

हर क्रिसमस पर डिपार्टमेंट स्टोर के अंतर्वस्त्र बेचने वाले विभाग पुरुषों से भरे होते हैं, जो शर्मते हुए अपनी साथियों के लिए किसी सेक्सी उपहार की तलाश में होते हैं। जनवरी के महीने में वही महिलाएँ उन्हीं स्टोर्स के पैसे की वापसी वाले काउंटरों पर खड़ी मिलती हैं। ‘यह मेरे लिए नहीं है,’ वे कहती हैं, ‘वह चाहता है कि मैं वेश्या जैसे कपड़े पहनूँ।’ वेश्या यौन संबंध बेचने वाली एक पेशेवर होती है, जो बाज़ार की माँगों पर शोध कर चुकी होती है और बेचने के लिए तैयार होती है। एक अमेरिकी अध्ययन दिखाता है कि सफेद सूती अंदरूनी कपड़े पहनने वाली महिलाओं के मुकाबले जो महिलाएँ विभिन्न प्रकार कामोत्तेजक अंतर्वस्त्र पहनती हैं, सामान्य तौर पर उनके साथी उनके प्रति वफ़ादार रहते हैं। एकपक्षी सम्बन्ध में पुरुष की विविधता की इच्छा को पूरा करने का यह एक तरीका है।

पुरुषों का जोश तीन मिनट में क्यों छू मंतर हो जाता है

एक ठंडी शुरुआत से लेकर चरम पर पहुँचने तक एक सेहतमंद पुरुष को औसतन लगभग ढाई मिनट लगते हैं। एक स्वस्थ महिला के लिए यह औसत 13 मिनट का है। अधिकतर स्तनधारियों के मामले में मैथुन बहुत तेज़ी से होता है, क्योंकि जब वे एक-दूसरे के साथ व्यस्त होते हैं, तब उन पर शिकारी का हमला हो सकता है। तेज़ी से मैथुन प्रजातियों के संरक्षण का प्रकृति का तरीका था।

‘तुम बेकार प्रेमी हो! उसने कहा। ‘तुम दो मिनट में कैसे फैसला कर सकती हो?’ पुरुष ने पूछा।

उम्र, सेहत और मिज़ाज के हिसाब से कई पुरुष एक दिन में कई बार सहवास कर सकते हैं और उनका शिश्रृंखला अवधियों तक सक्रिय रह सकता है। यह अफ्रीकी बबून के प्रदर्शन से अधिक प्रभावशाली है, जो केवल दस से बीस सेकेंड तक ही मैथुन कर सकता है और हर बार केवल चार से आठ बार धक्का मार सकता है। लेकिन पुरुषों का प्रदर्शन जंगली चूहे के सामने फीका पड़ जाता है, जो दस घंटे की अवधि में 400 बार तक मैथुन कर सकते हैं। प्राणी जगत में पहला स्थान शॉज़ माउस का है, जिसका सहवास का रिकॉर्ड प्रति घंटा 100 बार से अधिक का है।

बॉल गेम

‘इसे करने के लिए मर्दानगी चाहिए,’ इस प्रकार की उक्तियों से हम अनजाने ही अंडकोष के आकार और दृढ़ आग्रह के बीच के रिश्ते को स्वीकार करते हैं। जानवरों की दुनिया में संपूर्ण शरीर के द्रव्यमान के सापेक्ष अंडकोष का आकार टेस्टोस्टेरॉन स्तर को निर्धारित करने में प्रमुख कारक होता है। यह ज़रूरी नहीं कि अंडकोषों का आकार शरीर के आकार से संबंधित हो। उदाहरण के लिए एक गोरिल्ला का वज़न चिम्पांज़ी से चार गुना अधिक होता है, लेकिन गोरिल्ला के अंडकोषों की तुलना में उसके अंडकोष चार गुना ज़्यादा भारी होते हैं। गौरैया के अंडकोष उसके शरीर के द्रव्यमान के हिसाब से गरुड़ की तुलना में आठ गुना बड़े होते हैं और इस वज़ह से यह नन्हा परिंदा आसपास मौजूद सबसे कामोत्तेजक प्राणी बन जाता है। अब मुद्दे की बात यह है कि अंडकोषों का आकार किसी पुरुष की वफ़ादारी या फिर उसके एक साथी के प्रति समर्पित रहने के स्तर को निर्धारित करता है। अफ्रीकी बोनोबो चिम्पांज़ी के अंडकोष सभी नरवानरों में सबसे बड़े होते हैं और वह सामने पड़ने वाली हर मादा के साथ लगातार यौन संबंध बना सकता है, लेकिन छोटे अंडकोषों वाला गोरिल्ला खुशकिस्मत होगा, अगर वह साल में एक बार ऐसा कर सके, जबकि उसके पास अपना हरम होता है। शरीर के द्रव्यमान के अनुपात के हिसाब से मानव नर के अंडकोष नर वानर के औसत अंडकोष जितने होते हैं। इसका मतलब यह है कि पुरुषों में इतने टेस्टोस्टेरॉन का निर्माण होता है कि वे स्वच्छंद होने को प्रोत्साहित हों, लेकिन वह इतना पर्याप्त होता है कि वे महिलाओं, धर्म या जिस समाज में वे रहते हैं उसके द्वारा लागू किए गए कठोर नियमों वाली एकपक्षी व्यवस्था में रहें।

इस विवरण के संदर्भ में यह बात मायने रख सकती है कि बिल किल्टन, जॉन एफ़ केनेडी, विन्स्टन चर्चिल और सद्गुरु हुसैन जैसे राजनेताओं के अंडकोष औसत अंडकोषों से बड़े थे, हालाँकि हम उनके इतने करीब कभी नहीं पहुँचे कि इसकी जाँच कर सकें। इसके परिणामस्वरूप यह संभव है कि उनकी सेक्स ड्राइव औसत पुरुष से कहीं अधिक होगी और उसे बाहर निकालने के लिए उन्हें किसी उपाय की ज़रूरत होगी। लोग पहले बड़े अंडकोष वाले, उच्च टेस्टोस्टेरॉन स्तर वाले पुरुषों को सत्ता तक पहुँचाते हैं और फिर उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे किसी नपुंसक बिल्ली की तरह यौन रूप से संयुक्त व्यवहार करें। सच्चाई यह है कि उनकी उच्च सेक्स ड्राइव उन्हें सत्ता तक ले जाती है और फिर विडम्बनापूर्ण ढंग से उसके कारण ही वे सत्ता से बाहर हो जाते हैं।

**रे अपनी शादी के वीडियो को उलटा चलाता है वह कहता है कि
ऐसा करके वह खुद को चर्च के बाहर एक आज़ाद इंसान के तौर
पर निकलते देख सकता है।**

जल्दी ही पुरुषों की व्यभिचारी इच्छाओं का हल निकल सकता है। 1999 में अटलांटा की एमरि यनिवर्सिटी के डॉ. लैरी यंग और डॉ. थॉमस इन्सेल ने कृतक बोल (मूस) के दो समूहों पर एक अध्ययन किया। उन्होंने दो प्रकार के बोल का इस्तेमाल किया: एक ही साथी के साथ संबंध बनाने वाले प्रेयरी बोल और कई साथियों के साथ संबंध बनाने वाले उनके रिश्तेदार मॉन्टेन बोल, जिनमें उनके जैसे 99 प्रतिशत जीन्स होते हैं। नेचर पत्रिका में यंग और इन्सेल ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने एक साथी के प्रति निष्ठावान रहने वाले बोल से आक्रामकता, संचार, यौन गतिविधि और सामाजिक स्मृति समेत नर व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वेसोप्रेसिन रिसेप्टर जीन कहलाने वाले जीन को लिया और उसे अनेक साथियों से शारीरिक संपर्क रखने वाले बोल में डाल दिया। उन्होंने पाया कि इसके परिणामस्वरूप पैदा हुए नए बोल ने कई मादाओं के साथ निकट के संबंध बनाए और कई अन्य तरीकों से एक साथी के प्रति निष्ठावान रहने से जुड़ा बर्ताव अपनाया।

नरों की निष्ठाहीनता एक ही गारंटी भरा हल है और वह है - वंध्यकरण। न केवल पुरुष एक ही साथी के प्रति वफ़ादार रहेगा, बल्कि उसे दाढ़ी बनाने की भी ज्यादा ज़रूरत नहीं रहेगी, वह गंजा भी नहीं होगा और ज़्यादा लंबे समय तक ज़िंदा रहेगा। मानसिक रोगियों पर किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि वंध्यकरण किए गए पुरुष औसतन 69 वर्ष तक जीवित रहते हैं, जबकि शरीर में टेस्टोस्टेरॉन की मौजूदगी वाले पुरुष केवल 56 साल तक ज़िंदा रहते हैं। यही सिद्धांत आपकी बिल्ली पर भी लागू होता है।

हम यह भी अपेक्षा कर सकते हैं कि पुरुषों की आने वाली पीड़ियाँ आधुनिक पुरुषों के मुकाबले कम जननक्षम होंगी। कई पीड़ियों से पुरुषों के अंडकोषों और शुक्राणु के उत्पादन में लगातार कमी आती रही है। साक्ष्य दिखाते हैं कि हमारे नर पूर्वजों के अंडकोष आधुनिक पुरुषों से बड़े थे और गोरिल्ला व चिम्पांज़ी की तुलना में पुरुष प्रति ग्राम ऊतक शुक्राणु की कम मात्रा उत्पादित करते हैं। पुरुषों का औसत शुक्राणु उत्पादन 1940 के दशक के पुरुषों से लगभग आधा हो गया है, अब ऐसे नर तैयार हो रहे हैं, जो अपने दादा-परदादा की तुलना में कम मर्दाना हैं।

अंडकोषों में भी दिमाग़ होता है

मेनचेस्टर यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ बायलॉजिकल साइंस के डॉ. रॉबिन बेकर ने कुछ असाधारण शोध किए, जिन्होंने यह प्रदर्शित किया कि पुरुष का मस्तिष्क अनजाने ही महिला के व्यवहार से पता लगा लेता है कि कब उसका अंडोत्सर्ग का समय आ गया है। फिर उसका शरीरगणना करता है और शुक्राणुओं की ठीक उतनी ही मात्रा छोड़ता है, जितनी कि किसी पल में गर्भाधान के लिए आवश्यक होती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई जौड़ा हर रोज़ सहवास करता है, तो महिला के अंडोत्सर्ग के समय पुरुष का शरीर हर बार 10 करोड़ शुक्राणु छोड़ेगा। अगर वह तीन दिन तक उससे नहीं मिलता, तो उसका शरीर एक बार में 30 करोड़ शुक्राणु छोड़ेगा, अगर यह अवधि पाँच दिन की हो तो शुक्राणुओं की संख्या 50 करोड़ होगी और ऐसा तब भी होगा, जब वह अन्य महिलाओं के साथ सहवास कर रहा होगा। अपने मस्तिष्क की जीववैज्ञानिक गणना के आधार पर पुरुष का शरीर गर्भाधान के लिए पर्याप्त मात्रा में शुक्राणु छोड़ेगा और किसी अन्य संभावित प्रतियोगी से लड़ेगा।

पुरुष और तिरछी नज़रों से घूरना

पुरुष अपनी आँखों के माध्यम से उत्तेजित होते हैं और महिलाएँ अपने कानों के माध्यम से। पुरुषों के मस्तिष्क महिलाओं के आकार को देखने के लिए बने होते हैं और यही कारण है कि कामोत्तेजक छवियों का उन पर इतना असर पड़ता है। महिलाओं की संवेदी सूचना के ग्राही के बड़े विस्तार के कारण वे मीठे शब्द सुनना चाहती हैं। अनूठी प्रशंसा सुनने की महिला की संवेदनशीलता इतनी मज़बूत होती है कि अपने प्रेमियों की मीठी बातें सुनते हुए कई महिलाएँ अपनी आँखें तक बंद कर लेती हैं।

मिस यूनिवर्स प्रतियोगिताओं को स्त्री-पुरुष दोनों ही बड़ी संख्या में देखते हैं, लेकिन टेलीविज़न सर्वेक्षणों से पता चलता है कि महिलाओं की तुलना में पुरुष इन प्रतियोगिताओं को ज़्यादा देखते हैं। इसका कारण यह है कि पुरुष महिला के आकार की ओर आकर्षित होते हैं और इन प्रतियोगिताओं में वे महिलाओं को बिना किसी आपत्ति के घर सकते हैं। इसकी तुलना में मि. यूनिवर्स प्रतियोगिताएँ प्रायः किसी को आकर्षित नहीं करती और शायद ही इन्हें टेलीविज़न पर दिखाया जाता है। इसकी वजह यह है कि स्त्री-पुरुष निष्क्रिय नर आकार में रुचि नहीं रखते, क्योंकि किसी पुरुष का आकर्षण अक्सर उसके कौशल व शारीरिक साहस पर निर्भर करता है।

मिस यूनिवर्स प्रतियोगिताएँ मुख्य तौर पर पुरुषों द्वारा देखी जाती हैं, लेकिन मि. यूनिवर्स प्रतियोगिताएँ किसी को भी नहीं लुभाती।

आकर्षक देहयष्टि वाली किसी महिला के सामने से गुज़रने पर अच्छी परिधीय दृष्टि की कमी के कारण पुरुष उसे देखने के लिए अपना सिर घुमाता है और फिर मोहित होने की दशा में पहुँच जाता है। वह पलक नहीं झपकाता

और उसका मुँह लार से भर जाता है, इस प्रतिक्रिया को महिलाएँ डूलिंग इफेक्ट कहती हैं। अगर कोई दंपति सड़क पर गुज़र रहा हो, और ऐसे में दूसरी ओर से मिनि स्कर्ट पहने कोई महिला आ जाए तो महिला अपनी कम विस्तार की परिधीय दृष्टि से पुरुष की तुलना में पहले उसे देख लेगी। वह तेज़ी से अपने व उस अपनी उस संभावित प्रतियोगी महिला के बीच तुलना करेगी और उसे आम तौर पर नकारात्मक रूप से देखेगी। अंततः जब पुरुष उसे देखेगा, तो उसे अपनी साथी महिला से इस घरने पर नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलेगी। इस प्रकार की स्थिति में आम तौर पर किसी महिला के दो नकारात्मक विचार होंगे: पहला, वह ग़लती से यह सोचेगी कि पुरुष उसके बजाय दूसरी महिला के साथ रहना पसंद करेगा और दूसरा कि वह उस महिला की तरह शारीरिक रूप से उतनी आकर्षक नहीं है। पुरुष की आँखें गोलाइयों, टाँगों की लम्बाई और आकारों की ओर आकर्षित होती हैं। सही आकार और अनुपात की महिलाओं की ओर पुरुषों का ध्यान जाता है।

पुरुष दिमाग़ के बजाय रूप-रंग को प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि अधिकतर पुरुष सोचने के बजाय देखने का काम बेहतर ढंग से कर सकते हैं।

इसका यह मतलब नहीं कि पुरुष तुरंत किसी महिला को बिस्तर की तरफ ले जाना चाहता है, लेकिन यह उसे याद दिलाता है कि वह मर्दना है और उसकी विकासमूलक भूमिका यह है कि वह अपनी जाति के आकार को बढ़ाने के मौकों को तलाशता रहे। वह किसी अन्य महिला को जानता तक नहीं और वास्तव में वह उसके साथ लंबे समय तक रिश्ता बनाने की बात नहीं सोच सकता। यही सिद्धांत उस पुरुष पर भी लागू होता है, जो पुरुषों की पत्रिकाओं के बीच के पन्नों को देखता है। किसी नग्न महिला को देखते हुए कोई पुरुष उसके व्यक्तित्व के बारे में नहीं सोचता और न ही यह विचार करता है कि वह खाना पका सकती है या फिर पियानो बजा सकती है। वह उसके आकार, गोलाइयों और शारीरिक विशेषताओं को देखता है। उसके लिए यह कसाई के यहाँ टँगी सूअर की टाँग की तारीफ़ करने जैसा है। हम कुछ पुरुषों द्वारा की गई अशिष्ट, खुले तौर पर धूरने की हिमायत नहीं कर रहे हैं। हम बस यह बात रहे हैं कि अगर कोई पुरुष किसी को धूरते हुए पकड़ा जाए, तो इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि वह अपनी साथी से प्यार नहीं करता - यह तो उसके जीवविज्ञान की कारीगरी होती है। यह भी देखना दिलचस्प है कि अध्ययन बताते हैं कि समुद्र तट या फिर तरण ताल जैसी सार्वजनिक जगहों में महिलाएँ पुरुषों को ज्यादा धूरती हैं। महिलाओं की परिधीय दृष्टि बेहतर होने के कारण वे धूरते हुए बहुत कम पकड़ी जाती हैं।

पुरुषों को क्या करना चाहिए

कोई पुरुष अगर किसी महिला को सराहना चाहता है, तो उसका सबसे अच्छा उपाय यह है कि वह किसी अन्य महिला को अनुपयुक्त ढंग से न धूरे, विशेषकर सार्वजनिक जगहों पर और अपनी साथी की प्रशंसा अवश्य करे। उदाहरण के लिए, ‘हाँ, उसकी टाँग बहुत अच्छी हैं, लेकिन उसका हास्य-बोध तुम्हारे जितना अच्छा नहीं है... वो तुम्हारे सामने कहीं नहीं ठहरती।’ जब बाकी लोगों, खासकर अपनी साथी के दोस्तों की मौजूदगी में पुरुष उसे इस तरह सराहने का तरीका अपनाते हैं, तो उन्हें इसका बहुत फ़ायदा मिलता है। महिलाओं को यह समझने की ज़रूरत है कि पुरुष अपने जीवविज्ञान की वजह से महिलाओं के कुछ निश्चित आकारों को देखने के लिए बाध्य होते हैं और उन्हें इससे ख़तरा महसूस करने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। पुरुष पर से दबाव दूर करने का एक सरल तरीका यह हो सकता है कि महिला पहले ही दूसरी महिला पर ग़ौर करे और पहली टिप्पणी स्वयं करे। पुरुष को भी यह समझना चाहिए कि किसी भी महिला को अनुपयुक्त ढंग से धूरना पसंद नहीं आता।

हम दीर्घकाल में वास्तव में क्या चाहते हैं

दिया गया चार्ट 17-60 साल के 15,000 स्त्री-पुरुषों पर किए गए सर्वेक्षण का परिणाम है, जो यह दिखाता है कि अपने दीर्घकालीन यौन साथी में महिलाएँ क्या ढूँढ़ती हैं और पुरुष इस बारे में क्या सोचते हैं कि महिलाएँ क्या

चाहती हैं।

ए	बी
महिलाएँ क्या तलाशती पुरुष की सोच में महिलाएँ क्या	
हैं	तलाशती हैं
1. व्यक्तित्व	1. व्यक्तित्व
2. हास्य	2. सुंदर देह
3. संवेदनशीलता	3. हास्य
4. दिमाग़	4. संवेदनशीलता
5. सुंदर देह	5. खूबसूरती

यह अध्ययन दिखाता है कि पुरुषों को इस बात की अच्छी समझ है कि महिलाएँ पुरुषों में क्या चाहती हैं। पुरुषों ने सूची बी में 'बढ़िया शरीर' को ऊपर रखा है, जबकि वह महिलाओं के मानदंड की सूची में उतना ऊपर नहीं है। 15 प्रतिशत पुरुषों का मानना था कि शिश्र का बड़ा आकार महिलाओं के लिए मायने रखता था, लेकिन सिर्फ दो प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि वह उसका आकार उनके लिए महत्वपूर्ण था। कुछ पुरुष इस बात को लेकर इतने आश्वस्त हैं कि शिश्र का आकार बहुत महत्वपूर्ण हैं और इसी वजह से सेक्स की दुकानों और पत्रिकाओं में पर अब शिश्र का विस्तार करने वाले यंत्र बेचे जाते हैं।

अब देखते हैं कि पुरुष अपने दीर्घकालीन यौन साथी में क्या चाहते हैं और महिलाओं को क्या लगता है कि वे क्या चाहते हैं।

सी	डी
पुरुषों को क्या तलाश है महिलाओं को क्या लगता है कि पुरुष क्या चाहते हैं	
1. व्यक्तित्व	1. खूबसूरती
2. सुंदरता	2. सुंदर देह
3. दिमाग़	3. वक्ष
4. हास्य	4. नितम्ब
5. सुंदर देह	5. व्यक्तित्व

जैसा कि आप देख सकते हैं कि महिलाओं को अपने दीर्घकालीन साथी को लेकर पुरुषों के मानदंडों की कम जानकारी है है। इसका कारण यह है कि महिलाएँ पुरुषों के व्यवहार की जिन विशेषताओं को देखती या सुनती हैं, उनके आधार पर वे ये अनुमान लगाती हैं, जैसे कि पुरुषों द्वारा महिलाओं की देह को धूरना। सूची ए दिखाती है कि लघुकाल व दीर्घकाल में पुरुषों में महिलाएँ क्या चाहती हैं, लेकिन पुरुष के मामले में बात अलग होती है। सूची डी दिखाती है कि पहली मुलाकात में किसी महिला से मिलने पर पुरुष उसमें क्या चाहते हैं, लेकिन सूची सी बताती है कि वह लम्बे समय के लिए उसमें क्या खोजता है।

पुरुषों को सिर्फ़ 'एक ही चीज़' क्यों चाहिए

पुरुषों को सेक्स चाहिए; महिलाओं को प्यार चाहिए। यह बात हज़ारों साल से लोग जानते रहे हैं, लेकिन ऐसा क्यों है और इस मामले में क्या किया जाना चाहिए, इस पर बहुत कम बातचीत होती है। यह स्त्री-पुरुषों के बीच शिकायत व बहस का प्रमुख विषय है। अधिकतर महिलाओं से यह पूछे जाने पर कि वे पुरुषों में क्या चाहती हैं, सामान्यतया वे कहेंगी कि उन्हें चौड़े कंधे, पतली कमर और सुडौल बाँहों व टाँगों वाला पुरुष अच्छा लगता है, किसी बड़े जानवर को पकड़ने या लड़ने के लिए इन सभी चीज़ों की ज़रूरत होती है, इनके अलावा उसे देखभाल करने वाला, सौम्य व उसकी ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, बातचीत करने में माहिर होना चाहिए, जो कि महिलाओं में पाए जाने वाले गुण हैं। बदकिस्मती से अधिकतर महिलाएँ जिस मर्दीना शरीर व महिलाओं के मूल्यों का संगम चाहती हैं, वह आमतौर पर समलैंगिक या स्वैंप पुरुषों में पाया जाता है।

पुरुष को महिलाओं को आनंद देने की कला में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, क्योंकि उसे यह काम सहज रूप

से नहीं आता। वह शिकारी है और वह प्राकृतिक तौर पर समस्याओं को सुलझाने, शिकार का पीछा करने व दुश्मनों से लड़ने के लिए बना है। दिन ख्रेत्म होने पर वह बस आग को घरते रहना चाहता है और अपनी जाति की सख्त्या बनाए रखने के लिए कोई गतिविधि चाहता है। सेक्स की इच्छा पैदा करने के लिए महिला को यह महसूस करवाने की ज़रूरत होती है कि उसे कोई प्यार करता है, उसे चाहता है और उसे महत्वपूर्ण समझता है। अब यही वह संकेत है, जिसे लोग नहीं समझ पाते और वह है कि पुरुष को अपनी भावनाओं के तालमेल से पहले सेक्स की ज़रूरत होती है। दुर्भाग्यवश महिला को सेक्स की चाहत से पहले पहले भावनाओं की ज़रूरत होती है। पुरुष शिकार के लिए बना है। उसका शरीर ठंड, गर्मी या फिर तपते हालात में भी यह काम करने में सक्षम होता है। उसकी त्वचा संवेदनशील नहीं होती, ताकि चोट लगने, जलने या ठंड में उसे कोई परेशानी न हो। ऐतिहासिक तौर पर पुरुष की दुनिया लड़ाई और मौत से भरी थी - उसमें बाकी लोगों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशीलता, संवाद बनाने या भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं थी। किसी से संवाद बनाने या करुणा व्यक्त करने में समय लगाने का मतलब था एकाग्रता खोना और अपने लोगों को हमले के जोखिम में डालना। महिला को यह समझने की ज़रूरत है कि यह जीवविज्ञान है और आधुनिक पुरुष इस बोझ को ढो रहा है और इससे निपटने के लिए वह उपयुक्त रणनीति खोज रहा है।

महिलाओं को उनकी माँएँ सिखाती हैं कि पुरुषों को बस 'एक ही चीज़' की चाहत होती है और वह है, सेक्स। लेकिन यह बात भी पूरी तरह सही नहीं होती। पुरुष प्यार चाहते हैं, लेकिन वे उसे सेक्स के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं।

स्त्री व पुरुषों की यौन प्राथमिकताएँ एक-दूसरे से इतनी अलग होती हैं कि दोनों के एक-दूसरे को सज्जा देने का कोई औचित्य नहीं है। दोनों ही इस मामले में कुछ नहीं कर सकते; वे कुदरती रूप से वैसे ही हैं। इसके अलावा दोनों का विपरीत होना उन्हें एक-दूसरे की ओर आकर्षित करता है। दो समलैंगिक पुरुषों या फिर समलैंगिक महिलाओं की यौन इच्छाएँ आमतौर पर एक जैसी होती हैं, इसीलिए समलैंगिक पुरुषों व स्त्रियों के बीच प्रेम/सेक्स को लेकर उतनी बहस नहीं होती, जितनी कि विपरीत लिंग वाले लोगों में।

सेक्स अचानक क्यों बंद हो जाता है

जिस व्यक्ति ने यह पहली बार कहा कि पुरुष के दिल का रास्ता उसे पेट से जाता है, उसका लक्ष्य थोड़ा ऊँचा था। बढ़िया सेक्स के बाद पुरुष का कोमल, स्त्री सुलभ पक्ष सामने आता है। वह पंछियों के सुर सुन सकता है, पेड़ों के रंगों से प्रभावित होता है, फूलों की खुशबू लैं सकता है और किसी गीत के बोल उसे छू जाते हैं। सेक्स से पहले शायद उसने पंछियों पर इसलिए गौर किया होगा, क्योंकि उन्होंने उसकी कार को गदा कर दिया था। लेकिन पुरुष को यह समझना चाहिए कि सेक्स के बाद के उसके व्यक्तित्व को महिलाएँ पसंद करती हैं और वह उन्हें आकर्षक लगता है। अगर वह इस तरह के बर्ताव का अभ्यास कर ले, तो सेक्स से पहले भी वह महिला को उत्तेजित करने में कामयाब हो सकता है। ठीक इसी तरह महिला को भी पुरुष को अच्छा सेक्स देने का महत्व समझने की ज़रूरत है, ताकि वह इस पुरुष के कोमल पक्ष को देख सके और बता सके कि वह उसे कितना आकर्षक लगता है।

किसी नए रिश्ते की शुरुआत में सेक्स हमेशा बहुत बढ़िया रहता है और प्रेम की भी बहुतायत होती है। वह उसे ढेर सारा सेक्स देती है, पुरुष उसे बहुत सा प्यार देता है और इस तरह एक चीज़ दूसरे को बढ़ाती है। कुछ साल बाद, पुरुष खाने का पीछा करने व सेक्स के बाद घराँदे की रक्षा करने के काम में व्यस्त हो जाती है और इसीलिए लगता है कि सेक्स व प्रेम एक ही साथ समाप्त हो जाते हैं। अच्छे या ख़राब सेक्स के लिए स्त्री व पुरुष दोनों बराबर रूप से ज़िम्मेदार होते हैं, लेकिन स्थिति बिगड़ने पर दोनों अक्सर एक-दूसरे को दोष देते हैं। पुरुषों को यह समझना चाहिए कि महिलाओं को अपनी कामोत्तेजना बढ़ाने के लिए ध्यान, प्रशंसा, लाङ-प्यार और समय की ज़रूरत होती है। महिलाओं को यह याद रखना चाहिए कि इस बात की संभावना अधिक होती है कि पुरुष इन भावनाओं को अच्छे सेक्स के बाद व्यक्त कर सकते हैं। पुरुष को यह याद रखना चाहिए कि उसे सेक्स के बाद कैसा महसूस हुआ और उन भावनाओं को उस समय फिर से याद करना चाहिए, जब उसे अगली बार सेक्स की ज़रूरत हो। महिला को भी उसकी मदद के लिए तैयार रहना चाहिए।

यहाँ मुख्य चीज़ सेक्स है। अगर सेक्स अच्छा है, तो समूचा रिश्ता नाटकीय ढंग से बेहतर हो जाएगा।

हर बार महिला को कैसे संतुष्ट किया जाए:

प्यार से छूना, तारीफ़, लाड-प्यार, लज्जत लेना, मज़ा लेना, मालिश, चीजों की मरम्मत करना, समानुभूति रखना, प्रेमगीत गाना, सराहना, समर्थन करना, बढ़ावा देना, शांत करना, छेड़छाड़, हास्य, मनाना, उद्दीप करना, सहलाना, दिलासा देना, गले लगाना, मोटे हिस्से की अनदेखी करना, आलिंगन करना, उत्तेजित करना, शांत करना, बचाव करना, फ़ोन, पूर्वानुमान करना, चुम्बन लेना, नज़दीक आना, माफ़ करना, सजना-धजना, मनोरंजन करना, लुभाना, ध्यान रखना, खुश करना, आकर्षित करना, ध्यान देना, भरोसा करना, बचाव करना, कपड़े पहनाना, शेखी बघारना, अपराधबोध हटाना, कबूलना, लाड-प्यार से बिगाड़ना, आलिंगन करना, मर-मिटना, सपने देखना, छेड़खानी करना, संतुष्ट करना, भींचना, आनंद लेना, पूजने की सीमा तक प्रेम करना, आराधना।

हर बार किसी पुरुष को कैसे संतुष्ट किया जाएः
नग्नावस्था में पहुँचना।

पुरुषों को सेक्स से क्या चाहिए

पुरुषों के लिए यह सीधा सा मामला हैः चरम आनंद के माध्यम से बढ़े हुए तनाव से छुटकारा पाना। सेक्स के बाद पुरुष का वज्ञन कम हो जाता है (कुछ लोगों का मानना है कि उसके दिमाग़ का खाली होना इसकी वजह है) क्योंकि उसके शरीर का एक हिस्सा निकल जाता है और उसे फिर से पाने के लिए उसे आराम की ज़रूरत होती है। यही वजह है कि सेक्स के बाद पुरुष सो जाते हैं। महिला को इस बात से गुस्सा आ सकता है और उसे लग सकता है कि पुरुष स्वार्थी है या फिर उसकी ज़रूरतों की उसे परवाह नहीं है।

पुरुष भावनात्मक रूप से जो कुछ व्यक्त नहीं कर पाता, उसे ज़ाहिर करने के लिए वह शारीरिक रूप से सेक्स का इस्तेमाल करता है। अगर किसी पुरुष को कोई परेशानी है, जैसे कि उसे नई नौकरी की तलाश है, पैसे चुकाने है या फिर कोई विवाद है, तो वह अपनी भावनाओं की तीव्रता से राहत पाने के लिए सेक्स का इस्तेमाल कर सकता है। महिलाओं को यह बात अक्सर समझ नहीं आती और वे खुद का ‘इस्तेमाल किए जाने से’ चिढ़ जाती हैं। उन्हें यह बात समझ नहीं आती कि पुरुष का सामना ऐसी समस्या से था जिससे निपटने में वह नाकाम था।

पुरुष दो महिलाओं के साथ सेक्स की कल्पना करते हैं। महिलाएँ भी ऐसा ही करती हैं, ताकि एक पुरुष के सो जाने के बाद उनके पास कोई दूसरा रहे, जिससे वे बातचीत कर सकें।

पुरुष को कुछ ऐसी समस्याएँ हो सकती हैं, जिन्हें अच्छा सेक्स भी नहीं सुलझा सकता। परीक्षण दिखाते हैं कि किसी पुरुष में सेक्स की दमित इच्छा होने पर उसे सुनने, सोचने, गाड़ी चलाने या भारी मशीनरी का संचालन करने में मुश्किल होती है। उसे समय का खयाल नहीं रहता और 3 मिनट 15 मिनट के बराबर लगते हैं। अगर किसी महिला को पुरुष से समझदारी भरे फ़ैसले की अपेक्षा है, तो उसे सेक्स के बाद उस समय मसलों पर बात करनी चाहिए, जब उसका दिमाग़ साफ़ हो जाए।

महिलाओं को सेक्स से क्या चाहिए

सेक्स के माध्यम से संतुष्टि महसूस करने के लिए पुरुष को तनाव से छुटकारा पाने की ज़रूरत होती है। महिला की ज़रूरत ठीक इससे उल्टी होती हैः ध्यान दिए जाने व बात करने की उसकी ज़रूरत के कारण उसे लम्बे समय तक बढ़े हुए तनाव को महसूस करने की ज़रूरत होती है। वह खुद को खाली करना चाहता है; जबकि वह खुद को भरना चाहती है। इस अंतर को समझने से पुरुष ज्यादा परवाह करने वाले प्रेमी बन जाते हैं। अधिकतर महिलाओं को सेक्स के लिए तैयार होने से पहले 30 मिनट के फ़ोरप्ले यानी काम क्रियाओं की ज़रूरत होती है। पुरुषों को इसके लिए कम से कम 30 सेकेंड की ज़रूरत होती है और अधिकतर पुरुषों के लिए महिला के घर तक जाना भी

फ़ोरप्ले ही होता है।

आदम पहले आया - लेकिन पुरुषों का वीर्य स्खलन अक्सर पहले हो जाता है।

सेक्स के बाद महिलाओं के हार्मोन उच्च स्तर पर पहुँच जाते हैं और वह दुनिया का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाती है। वह धूना, आलिंगन करना और बात करना चाहती है। पुरुष अगर सोया नहीं है, तो वह उठ जाता है और बल्ब बदलने या फिर कॉफ़ी बनाने जैसे किसी काम में जुट जाता है। इसका कारण यह है कि पुरुष हर स्थिति में हर समय नियंत्रण की स्थिति में रहना चाहता है और चरम आनंद पर पहुँचने पर वह अस्थायी रूप से नियंत्रण खो देता है। उठ जाने के बाद किसी काम में लगने से वह नियंत्रण फिर से प्राप्त कर सकता है।

पुरुष सेक्स के दौरान बात क्यों नहीं करते

अधिकतर पुरुष एक बार में एक ही काम कर सकते हैं। जब पुरुष का शिश्रुत अवस्था में होता है, तो उसे बात करने, बात सुनने या गाड़ी चलाने में मुश्किल होती है और यहीं वजह है कि सेक्स के दौरान पुरुष बहुत कम बात करते हैं। कई बार महिला को उसकी साँस की आवाज़ सुनकर उसकी गति का अंदाज़ा मिलता है। पुरुषों को महिलाओं द्वारा की जाने वाले 'कामुक' बातचीत पसंद आती है, जो वह कर सकती है और उसके लिए करेगी भी - लेकिन पुरुष को सेक्स से पहले ऐसा करना अच्छा लगता है न कि उसके बीच। सेक्स के दौरान महिला द्वारा की गई बातचीत से पुरुष अपनी दिशा (और अपनी उत्तेजना) खो सकता है। सेक्स के दौरान पुरुष अपने दाएँ मस्तिष्क का इस्तेमाल करता है और मस्तिष्क के स्कैन दिखाते हैं कि जब वह अपने काम में खोया होता है, तो वह लगभग बहरा हो जाता है।

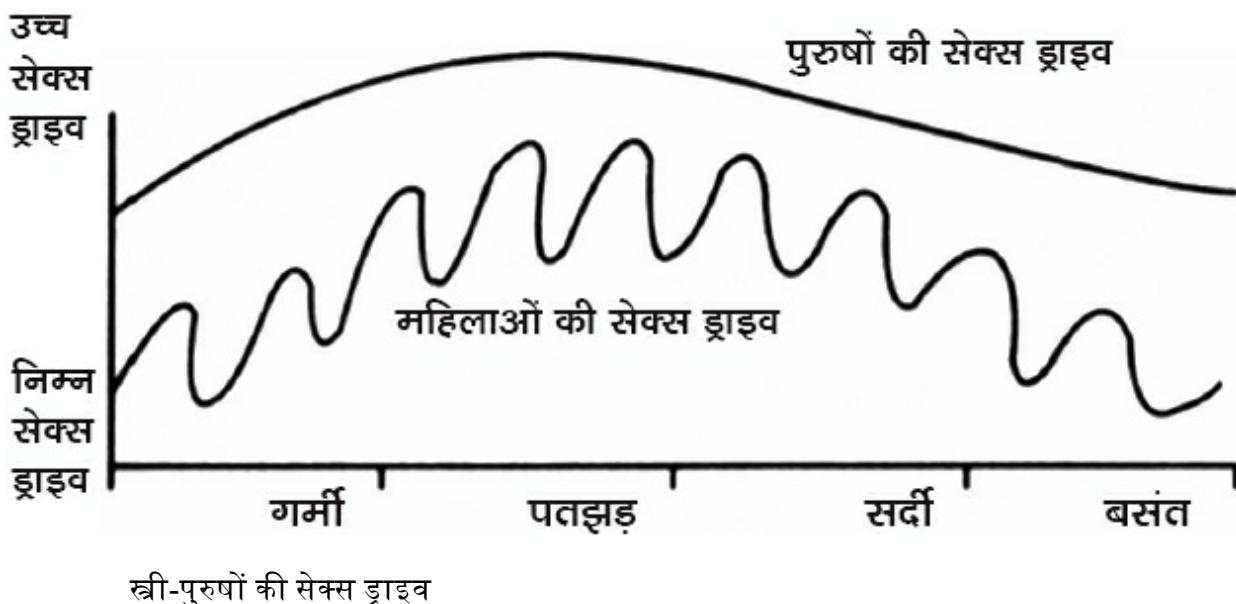
सेक्स के दौरान बातचीत करने के लिए पुरुष को अपने बाएँ मस्तिष्क को सक्रिय करना होता है। महिला सेक्स के साथ-साथ बात करने का काम भी कर सकती है।

महिला के लिए बातचीत फ़ोरप्ले यानी संभोग से पहले की क्रियाओं का महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि उसके लिए शब्द बहुत मायने रखते हैं। अगर सेक्स के दौरान पुरुष बात करना बंद कर देता है, तो महिला को लग सकता है कि वह उसमें दिलचस्पी नहीं रखता। महिला की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए फ़ोरप्ले के दौरान पुरुष को बहुत-सी प्यार भरी बातें करने का अभ्यास करना चाहिए। महिला को सेक्स के दौरान बात नहीं करनी चाहिए और पुरुष की दिलचस्पी बनाएँ रखने के लिए ध्वनियों का प्रयोग करना चाहिए। 'उह' और 'आह' जैसी आवाज़ें पुरुष को वह सकारात्मक प्रतिक्रिया देती हैं, जो उसकी संतुष्टि के लिए ज़रूरी होती हैं। अगर सेक्स के दौरान महिला बात करती है, तो पुरुष को लगता है कि उसका जवाब देना चाहिए और ऐसे में वह पल हाथ से निकल सकता है।

महिला का दिमाग़ कुदरती तौर पर सेक्स ड्राइव के रसायनों पर नाटकीय प्रतिक्रिया करने के लिए सहज रूप से तैयार नहीं होता, जैसा कि पुरुष का मस्तिष्क होता है। सेक्स के दौरान महिला बाहरी आवाज़ों या फिर माहौल में होने वाले बदलावों को लेकर पूरी तरह सचेत होती है, लेकिन पुरुष पूरी तरह से अपने काम में लगा होता है। ऐसे में घराँदे की हिफ़ाज़त करने का महिला का प्राचीन जीवविज्ञान काम कर रहा होता है। वह आवाज़ों की निगरानी कर रही होती है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई उसके बच्चों को चुराने के लिए उनके पास दबे पाँव तो नहीं पहुँच रहा। जैसा कि कई पुरुषों ने पाया है कि किसी खुली जगह में या फिर पतली दीवारों वाले कमरे में या फिर खुले दरवाज़े वाले कमरों में महिला को सहवास के लिए लुभाने का काम करने से बहस शुरू हो सकती है। यह तथ्य इस बात पर भी रोशनी डालता है कि भीतर गहरे मौजूद यही भय क्यों अधिकतर महिलाओं की सार्वजनिक जगह पर सहवास करने की गोपनीय फ़ंतासी बन जाता है।

चरम आनंद का लक्ष्य

‘वह बस अपनी मर्जी के मुताबिक मेरा इस्तेमाल करती है और फिर मुझे भूल जाती है। मुझे सेक्स ऑवजेक्ट बनने से नफरत है!’ किसी पुरुष ने कभी भी ये शब्द अपने मूँह से नहीं निकाले होंगे। किसी पुरुष के लिए संतुष्टि का मापदंड चरम आनंद है और वह ग़लती से यह समझता है कि महिला के मामले में भी ऐसा ही होगा। उसे हैरानी होती है कि ‘विना चरम आनंद के वह कैसे संतुष्ट महसूस कर सकती है?’ पुरुष अपने लिए इस तरह की स्थिति की कल्पना नहीं कर सकता और इसीलिए वह महिला के चरम आनंद को प्रेमी के रूप में अपनी सफलता के पैमाने के रूप में इस्तेमाल करता है। यह अपेक्षा महिला पर प्रदर्शन के लिए बहुत दबाव डालती है और असल में चरम आनंद की उसकी संभावनाओं को कम कर देती है। महिला को नज़दीकी के एहसास, गर्मीहट और तनाव के बढ़े स्तर की ज़रूरत होती है और वह आम तौर पर चरम आनंद को एक अतिरिक्त चीज़ के रूप में देखती है न कि किसी लक्ष्य के रूप में। पुरुष को हमेशा चरम आनंद की आवश्यकता होती है, लेकिन महिला को नहीं। पुरुष महिलाओं को अपने यौन प्रतिबिम्ब के रूप में देखते हैं और उसे उत्तेजित करने व धक्के लगाने में समय लगाते हैं और सोचते हैं कि महिला को वही चाहिए। अगले चार्ट को देखें और साल भर के दौरान महिलाओं की सेक्स ड्राइव के उत्तर-चढ़ावों का अध्ययन करें। उच्चतम बिंदु उस समय को दिखाते हैं, जब इस बात की संभावना होती है कि उसे चरम आनंद चाहिए और वह समय उसके अंडोत्सर्ग का समय होता है। उतार या निम्न बिंदु तब सामने आते हैं, जब उसे आलिंगन करने या यौनेतर स्पर्श की ज़रूरत होती है। आप पाएँगे कि किसी महिला में सेक्स की इच्छा पतझड़ के समय ज्यादा होती है। इसका मतलब है कि गर्मियों में पैदा होने वाले शिशुओं की संख्या अधिक होगी, जिससे ज्यादा गर्भी व भोजन की बहुतायत के कारण उनके जीवित रहने के अवसर अधिक होंगे।



अधिकतर पुरुषों की कल्पना यह होती है कि कोई कामोत्तेजक, अनजानी महिला उनके पास आए और खुद पर काबू न रख सके। वह उसकी हर इच्छा पूरी करता है - उसकी हर इच्छा को। प्रेमी के रूप में पुरुष के लिए अपने साहस को नापने का पैमाना महिला के संतुष्टि के स्तर से जुड़ा है और इसलिए वह अपने प्रदर्शन को आँकने के लिए लगातार उसकी प्रतिक्रिया पर नज़र रखता है।

पुरुष चरम आनंद का ढोंग नहीं करते - कोई भी पुरुष जानबूझकर वैसा चेहरा बनाना नहीं चाहता।

अधिकतर पुरुषों में सेक्स के दौरान महिला की अंतरंग भावनाओं और आवेगों को समझने की क्षमता नहीं होती और यह भी एक अन्य कारण है, जिसकी वजह से पुरुष के लिए महिला का चरम आनंद इतना महत्वपूर्ण हो जाता है। इससे सावित होता है कि उसने अपना काम बखूबी किया है और नतीजा हासिल कर लिया है। अधिकतर पुरुष यह नहीं समझते कि चरम आनंद की अनिवार्यता सफलता के लिए पुरुष का मानदंड है; यह ज़रूरी नहीं कि वही महिला के लिए भी सही हो। किसी महिला के लिए चरम आनंद तक पहुँचना अतिरिक्त लाभ हो सकता है, लेकिन उसके लिए यह कोई पैमाना नहीं है।

हमें क्या उत्तेजित करता है?

यहाँ स्त्री-पुरुषों को उत्तेजित करने वाली चीज़ों की सूची दी गई है, जो दिखाती है कि कैसे दोनों एक-दूसरे की यौन आवश्यकताओं को नहीं समझ पाते। प्राथमिकताओं की यह सूची स्त्री-पुरुषों के मस्तिष्क की संरचना का सीधा-स्पष्ट प्रतिबिम्ब है। पुरुष दृष्टिगत रूप से आकर्षित होते हैं और सेक्स चाहते हैं। महिलाएँ वातें सुनकर व भावनाओं से प्रभावित होती हैं और उन्हें स्पर्श व रोमांस की चाहत होती है।

महिलाओं को उत्तेजित करने वाली चीज़ें पुरुषों को उत्तेजित करने वाली चीज़ें

- | | |
|------------------|----------------------|
| 1. रोमांस | 1. पोर्नोग्राफी |
| 2. प्रतिबद्धता | 2. स्त्री नग्नता |
| 3. संवाद | 3. यौन विविधता |
| 4. अंतरंगता | 4. अंतर्वस्त्र |
| 5. यौनेतर स्पर्श | 5. महिला की उपलब्धता |

पुरुष का जीववैज्ञानिक कार्य है कि वह जितनी ज़्यादा मुमकिन हो, उतनी सेहतमंद मादाओं को खोजकर उनके गर्भाधान में मदद करे। महिला की जीववैज्ञानिक भूमिका बच्चे पैदा करना और ऐसे साथी को खोजना है, जो बच्चों की परवरिश करने तक उसके साथ बना रहे। दोनों को ही ये आदिम शक्तियाँ प्रेरित करती रही हैं, यह अलग बात है कि आज वे ऐसी दुनिया में रह रहे हैं, जहाँ पर जीवित रहने के लिए प्रजनन प्रासंगिक नहीं रह गया है। यही वजह है कि प्रतिबद्धता महिला को उत्तेजित करती है, जो रोमांस के साथ मिलकर बच्चों की परवरिश करने में मदद करने की पुरुष की तत्परता का सूक्ष्म भरोसा दिलाती है। इसी कारण महिलाओं को एक साथी के प्रति निष्ठा या एकपक्ती व्यवस्था की आवश्यकता होती है, जिस पर हम अगले अध्याय में चर्चा करेंगे।

महिला द्वारा पुरुष की दृष्टिगत उत्तेजना की आलोचना करना ठीक वैसा ही है, जैसाकि पुरुष द्वारा बातचीत करने की इच्छा व बाहर खाने जाने की महिला की इच्छाओं की आलोचना है। जबाब है कि दोनों ही ज़रूरी हैं।

पुरुषों के साथ कैसे अन्याय होता है

पुरुषों को उत्तेजित करने वाली चीज़ों का वर्णन, विशेषकर महिलाओं द्वारा, गंदे, घिनौने, अश्लील या काम-विकृति के रूप में किया जाता है। कुल मिलाकर महिलाओं की काम भावना पुरुषों को उत्तेजित करने वाली चीज़ों से नहीं भड़कती और पुरुष भी महिलाओं की सूची में दी गई चीज़ों पर बहुत कम प्रतिक्रिया देते हैं।

सामान्य तौर पर लोग फ़िल्मों, किताबों व विज्ञापनों में महिलाओं को उत्तेजित करने वाली चीज़ों को महिमामंडित करते हैं और अश्लील या अशिष्ट कहकर पुरुषों की भर्त्यना करते हैं। जीववैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो उत्तेजना जगाने के लिए दोनों को ही इन चीज़ों की ज़रूरत होती है। लोगों द्वारा पुरुषों की उत्तेजना बढ़ाने वाली चीज़ों की आलोचना के कारण उन्हें प्लेबॉय जैसी पत्रिकाओं को छिपाना पड़ता है और अपनी गोपनीय

कल्पनाओं से किनारा करना पड़ता है। कई पुरुषों की ज़रूरतें अधूरी रह जाती हैं और कई अन्य में अपराधबोध या रोष पैदा हो जाता है। जब स्त्री-पुरुष इतिहास व अपनी इच्छाओं के विकास को समझेंगे तो उनके लिए बिना किसी गुस्से, रोष या अपराधबोध के उसे स्वीकार करना आसान हो जाएगा। किसी भी इंसान को वह काम नहीं करना चाहिए, जो उसे असहज लगे, लेकिन एक-दूसरे की ज़रूरतों पर खुली बातचीत से ज्यादा प्यार भरे रिश्ते के बढ़ने में मदद मिल सकती है। पुरुष को भी यह समझना चाहिए कि महिला द्वारा स्पैंडर्स पहनने या फिर झाड़फानूस से लटकने के मुकाबले रोमांटिक डिनर या वीकेंड पर कहीं घूमने का बंदोबस्त करना उसके लिए कहीं ज्यादा आसान है।

कामोत्तेजक का मिथक

आसपास मौजूद सैकड़ों प्रचलित कामोत्तेजक चीज़ों में से वैज्ञानिक तौर पर कोई भी कारगर साबित नहीं हुई है। उनका असर शांत करने वाला होता है - यदि आपको लगता है कि वह दवा काम करेगी तो वह कारगर होगी। कुछ तथाकथित कामोत्तेजक पदार्थ यौन इच्छा को रोकने या उसे सीमित करने में मदद कर सकते हैं, खासकर जब वे गुर्दों में जलन पैदा करें और खुजली व फुंसी का कारण बन जाएँ। केवल उन्हीं कामोत्तेजक तत्वों के काम करने की गारंटी होती है, जो हमारी उत्तेजना बढ़ाने की सूची में शामिल हैं।

पुरुष और उनकी पोर्नोग्राफी

पुरुषों को पोर्नोग्राफी पसंद आती है और महिलाओं को नहीं। पुरुषों के मामले में यह आकारों, लालसा और सेक्स की स्पष्ट छवियों को दिखाकर उनकी जीववैज्ञानिक इच्छा को आकर्षित करती है, लेकिन अधिकतर महिलाएँ इसे निष्ठुर पुरुषों द्वारा महिलाओं पर प्रभुत्व के प्रदर्शन के रूप में देखती हैं। अब तक पोर्नोग्राफी और यौन अपराधों के बीच संबंध को साबित करने वाले कोई सबूत नहीं मिले हैं। हालाँकि यह स्त्री-पुरुषों के लिए मनोवैज्ञानिक तौर पर नुकसानदेह हो सकता है, क्योंकि इसमें पुरुषों को गधे की तरह लटका हुआ दिखाया जाता है, जो बस बिना सोचे-समझे घंटों तक लगातार धकेलने का काम करते रहते हैं। इससे अपने प्रदर्शन को लेकर किसी पुरुष की अपेक्षाएँ उल्लेखनीय ढंग से प्रभावित हो सकती हैं।

कामुक व विकृति में क्या अंतर है? जब आप पंख का इस्तेमाल करते हैं, तो वह कामुक है और जब आप पूरी मुर्गी को काम में लाते हैं, तो वह विकृति है।

पोर्नोग्राफी से यह भी तात्पर्य होता है कि महिलाओं का भी पुरुषों जैसा दृश्य संबंधी व शारीरिक उत्तेजना का मानदंड होता है और इससे यह भी लगता है कि महिलाओं की सेक्स ड्राइव पुरुषों जितनी या उनसे अधिक हो सकती है। महिलाओं पर भी इसका नुकसानदेह असर पड़ सकता है। उन्हें सेक्स ऑब्जेक्ट (यौन रूप से आकर्षक) की तरह दिखाने और सहवास के लिए उनकी अवास्तविक भूख दिखाने से किसी भी महिला के आत्मसम्मान को हानि पहुँच सकती है। 18-23 वर्ष के लोगों के सर्वेक्षण में पता चला कि 50 प्रतिशत पुरुषों को लगता है कि उनका यौन जीवन उतना अच्छा नहीं है, जितना कि फ़िल्मों, टीवी और पत्रिकाओं में दिखाया जाता है। 62 प्रतिशत महिलाओं को लगता है कि उनका यौन जीवन मीडिया में दिखाई गई चीज़ों जितना अच्छा या फिर उससे बेहतर है। इससे लगता है कि महिलाओं की तुलना में प्रदर्शन संबंधी अपेक्षाओं के मामले में पुरुषों पर अधिक असर पड़ता है।

क्या यौन विकृति वाली महिलाएँ होती हैं?

अगर कोई अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आए और यहाँ पाई जाने वाली स्त्री-पुरुषों की पत्रिकाओं, किताबों व फ़िल्मों को देखे, तो वह बहुत तेज़ी से इस नतीजे पर पहुँचेगा कि मानव मादाएँ बहुत कामुक होती हैं, वे लगातार कामोन्माद के चरम पर पहुँच सकती हैं और वे कभी संतुष्ट नहीं रहती। फिर अगर वे अंतरिक्षवासी हमारे द्वारा तैयार अक्षील साहित्य को पढ़ें व फ़िल्मों को देखें तो उन्हें पूरा यक्कीन हो जाएगा कि महिलाओं में सेक्स की कभी न मिटने वाली भूख होती है और वे किसी भी स्थिति में किसी भी पुरुष के साथ सहवास करेंगी। आधुनिक महिला से यह उम्मीद की जाती है कि वह मीडिया द्वारा प्रस्तुत की गई इस छवि पर पूरा उतरे। सच यह है कि अतिकामी महिलाएँ केवल अधिकांश पुरुषों की कल्पना का एक हिस्सा हैं और एक प्रतिशत से भी कम महिलाएँ ऐसी होती हैं। आधुनिक महिला को अब पुरुष की इस बात पर विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि वह नग्नावस्था में जैसी दिखती है, उसे वह अच्छी लगती है। इस फंतासी छवि का असर आम तौर पर आधुनिक स्त्री-पुरुषों पर पड़ता है, क्योंकि उनके माता-पिता या दादा-नाना के सामने यह विचार कभी नहीं आया कि पुरुष की सेक्स ड्राइव की चाबी महिला के पास होती है। अधिकतर महिलाएँ इससे असामान्य महसूस करती हैं या फिर उनमें विरक्ति का भाव आ जाता है, क्योंकि वे मीडिया की छवियों पर खरी नहीं उतरती। पुरुषों को यह मानने के लिए फुसलाया जाता है कि अब महिलाओं की सेक्स ड्राइव बढ़ गई है और जब महिलाएँ सेक्स की पहल नहीं करती तो पुरुष क्रोधित या फिर हताश हो जाते हैं। पत्रिकाओं में, ‘पाँच दिन में एक से अधिक बार चरम पर पहुँचें!’, ‘यूरोपीय प्रेमी के साथ सहवास कैसे करें’, ‘तांत्रिक सेक्स - घंटों तक लगे रहें’, ‘तीन साल में मेरे 300 प्रेमी रहें!’ और ‘उसे रात भर कैसे उत्तेजित रखें’ जैसे शीर्षक वाले लेखों को देखकर हैरानी की कोई बात नहीं कि स्त्री-पुरुष इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि महिलाएँ हर समय बस सेक्स के बारे में सोचती रहती हैं।

महिला आंदोलन ने आधुनिक महिलाओं को अपनी कामुकता के प्रति रवैये से आज्ञाद किया, लेकिन उसने सेक्स की उनकी बुनियादी इच्छा में कोई बढ़ोतरी नहीं की।

हजारों साल से शायद महिलाओं की सेक्स ड्राइव एक समान ही रही है, बस अब इतना बदलाव ज़रूर आया है कि उस पर अब खुली चर्चाएँ होने लगी हैं। आधुनिक महिला की सेक्स ड्राइव शायद उसकी माँ या नानी से अलग नहीं है, लेकिन पुरानी पीढ़ी की महिलाएँ उसे दबाती थीं और उस पर कोई बात तो बिल्कुल भी नहीं होती थी। गर्भनिरोधक गोली के आने से पहले यौन हताशा अवश्य ही अधिक रहती होगी। लेकिन एक बात तो निश्चित है कि वह उतनी अधिक नहीं रही होगी, जितनी कि आज मीडिया द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

रोशनी या फिर अँधेरा

जैसा कि हम जानते हैं कि सेक्स के मामले में पुरुष दृश्य पर अधिक निर्भर करते हैं। वे आकार, गोलाइयों, नग्नता, पोर्नोग्राफी देखना चाहते हैं। किन्जी ने पाया कि 76 प्रतिशत पुरुषों ने कहा कि उन्हें बत्ती जलाकर सहवास करना पसंद है, जबकि केवल 36 प्रतिशत महिलाओं को ऐसा करना पसंद था। कुल मिलाकर, महिलाएँ नग्नता से तब तक उत्तेजित नहीं होती, जब तक कि वह कोई रोमांटिक नग्न जोड़ा न हो या फिर कोई वह कोई सांकेतिक दृश्य न हो। जब कोई पुरुष किसी नग्न महिला को देखता है, तो वह बहुत कामोत्तेजित हो जाता है। किसी नग्न पुरुष को देखे जाने पर आम तौर पर महिला की हँसी छूट जाती है।

महिलाओं को शब्द व भावनाएँ पसंद आती हैं। उन्हें सहवास के दौरान बत्ती बुझाना या फिर अपनी आँखें बंद करना पसंद आता है, क्योंकि यह महिला की संवेदी प्रणाली के अनुकूल होता है। हौले से सहलाना, कामुक ढंग से स्पर्श और कानों में कोई मीठी बात कहने से अधिकतर महिलाएँ उत्तेजित हो जाती हैं। बीच के पन्नों पर नग्न पुरुषों की तसवीरें आती हैं और चली जाती हैं, महिलाओं की पत्रिकाएँ हमें यह विश्वास दिलाने की कोशिश करती हैं कि नग्नता के प्रति महिलाओं का रवैया अब पुरुषों जैसा ही है। ये पन्ने जितनी तेज़ी से आते हैं, उतनी ही तेज़ी से ग़ायब भी हो जाते हैं, लेकिन यह पता चला है कि उनसे समलैंगिक पुरुष पाठकों की संख्या में बढ़ोतरी होती है।

अधिकतर महिलाओं को अँधरे में सहवास करना पसंद आता है,
क्योंकि वे पुरुष को आनंद लेता नहीं देख सकती। पुरुषों को
रोशनी में ऐसा करना पसंद है, ताकि वे महिला को उसके सही
नाम से पुकार सकें।

महिलाओं को पॉर्न बेचने की कोशिशें नाकाम रही हैं, हालाँकि 1990 के दशक के अंतिम वर्षों में अर्धनग्न पुरुषों की बड़ी तसवीरों की विक्री में काफ़ी बढ़ोतरी हुई, जिसने नग्न द्वियों वाले कैलेंडरों की विक्री को पीछे छोड़ दिया। नग्न पुरुषों के कैलेंडरों के खरीदारों को तीन श्रणियों में बाँटा जा सकता है - किशोरियाँ, जो अपने पसंदीदा फ़िल्मी या रॉक स्टार की तसवीरें चाहती हैं, महिलाएँ, जो अपनी दोस्तों के लिए इसे एक हास्यप्रद चुटकुले के रूप में चाहती हैं और समलैंगिक पुरुष।

10

विवाह, प्रेम और रोमांस



‘...मुझे खुलापन, ईमानदारी और एक साथी के प्रति वफ़ादार रहने वाला रिश्ता चाहिए। मैं उन पुरुषों को पसंद नहीं करती, जो छल-कपट करते हैं!'

ल म्बे समय तक एक पुरुष व एक स्त्री का जुड़ाव इंसानों के लिए जीवन की एक सामान्य अवधारणा रहा है। यह आम तौर पर एक व्यवस्था होती थी, जिसमें कोई नर अपनी पसंदीदा मादा को रखता था और अगर वह कई मादाओं के पालन-पोषण की क्षमता रखता, तो उन्हें भी रखता और उनके अलावा उसकी कई अन्य बहुत-सी यौन साथी भी होती।

आधुनिक विवाह यहूदी-ईसाई आदर्शों का आविष्कार था और भर्ती का परिष्कृत स्वरूप था। ऐसे नियमों का पालन करने के लिए दो वयस्कों को आश्वस्त किया जाता था, जो ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहने से जुड़े थे और उनके संयोग से पैदा होने वाला बच्चा स्वाभाविक रूप से माता-पिता के धर्म में ही जन्म लेता। जब कोई भी मानव गतिविधि विस्तृत अनुष्ठानों और सार्वजनिक घोषणाओं से घिरी होती है, तो आम तौर पर वह हमारे जीवविज्ञान के विपरीत होती है और उसका लक्ष्य लोगों से कुछ ऐसा करवाना होता है, जो कि वे सामान्य तौर पर नहीं करते। पंछियों को 'विवाह' करने के लिए किसी विस्तृत अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं होती, वह तो उनकी स्वाभाविक जीववैज्ञानिक स्थिति होती है। यह आग्रह कि बहुत से साथी वाला भेड़ा किसी एक भेड़ से विवाह का समझौता करने को राजी होगा भी उतनी ही बेतुकी बात है। इसका यह मतलब नहीं कि आधुनिक समाज में विवाह का कोई स्थान ही नहीं है। हम दोनों लेखक शादीशुदा हैं, लेकिन यहाँ विवाह का इतिहास और हमारे जीवविज्ञान से उसके रिश्ते को समझना ज़रूरी है।

**विवाह का अच्छा पक्ष भी है। यह आपको निष्ठा, धीरज,
सहनशीलता, आत्मसंयम और अन्य अनमोल गुण सिखाता है,
जिनकी अकेले रहने पर आपको कोई ज़रूरत नहीं पड़ती।**

तो फिर किसी पुरुष के लिए विवाह का क्या लाभ है? मूलभूत विकासमलक दृष्टि से कहें, तो कुछ भी नहीं। पुरुष एक मुर्गे की तरह है, जो अपने आनुवंशिक बीज को जहाँ तक और जितनी बार संभव हो, फैलाना चाहता है। फिर भी अधिकतर पुरुष शादी करते हैं और तलाकशुदा पुरुष फिर से शादी करते हैं या फिर छद्म-विवाह में बने रहते हैं। इससे जीववैज्ञानिक तौर पर स्वच्छंद पुरुषों को संयमित करने की समाज की असाधारण क्षमता का पता चलता है।

**सेक्स वह क्रीमत है, जो महिलाएँ शादी के लिए देती हैं। शादी वह
क्रीमत है, जो पुरुष सेक्स के लिए अदा करते हैं।**

जब पुरुषों से यह पूछा जाता है कि 'शादी तुम्हें क्या दे सकती है?', तो अधिकतर पुरुष एक गर्माहट भरे सुरक्षित सहारे, उनके लिए खाना पकाए जाने, उनके कपड़े इस्तरी किए जाने जैसी बातों के बारे में कुछ बुद्बुदाते हैं। बुनियादी रूप से वे अपनी माँ और निजी सेवक का मिला-जुला रूप चाहते हैं। मनोविज्ञेयक सिगमंड फ्रायड ने कहा था कि ऐसे पुरुषों का संभवतः अपनी पत्रियों के साथ माँ/बेटे जैसा रिश्ता होता है। केवल 22 प्रतिशत पुरुष ही अपनी जीवनसंगिनी को अपना सबसे अच्छा दोस्त मानते हैं। अधिकतर पुरुषों का सबसे अच्छा दोस्त अन्य पुरुष ही होता है, क्योंकि वे एक-दूसरे की विचार प्रक्रिया को समझते हैं। जब महिलाओं से पूछा जाता है कि उनका सबसे अच्छा दोस्त कौन है, तो 86 प्रतिशत महिलाएँ किसी अन्य महिला को बताती हैं, अन्य शब्दों में कहें तो ऐसा कोई व्यक्ति, जिसके मस्तिष्क की संरचना उनके जैसी होती है।

जब पुरुष विवाह के बंधन में बँधते हैं, तो उनमें से कई इसे माँग के मृताविक सेक्स की असीमित आपूर्ति के रूप में देखते हैं, लेकिन इस अपेक्षा पर शादी से पहले कोई बातचीत नहीं होती और महिलाएँ इसे इस तरह से नहीं देखती। सर्वेक्षणों से यह बात सामने आई है कि एकल पुरुषों के मुकाबले शादीशुदा पुरुष अधिक सहवास करते हैं, 25 से 50 वर्ष की आयु के विवाहित पुरुष औसतन सप्ताह में तीन बार ऐसा करते हैं, जबकि केवल आधे एकल पुरुषों के मामले में ऐसा होता है। ऐसे पुरुषों का औसत सप्ताह में एक बार का है। 1999 में ऑस्ट्रेलिया में हुए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 20 प्रतिशत एकल पुरुषों ने सर्वेक्षण के साल सहवास नहीं किया और शादीशुदा पुरुषों में यह प्रतिशत तीन का था। जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं कि सेक्स संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए बहुत

अच्छा होता है। शादीशुदा पुरुषों की तुलना में अविवाहित या विधुर पुरुषों में समय से पूर्व मृत्यु का प्रतिशत अधिक होता है।

महिलाओं को एकपत्री विवाह क्यों चाहिए

कानूनी दृष्टिकोण से देखा जाए तो पश्चिमी समाजों में विवाह की संस्था काफ़ी कमज़ोर हो चुकी है, लेकिन इसके बावजूद यह अधिकतर महिलाओं की महत्वाकांक्षा है और 91 प्रतिशत लोग अब भी शादी करते हैं। इसका कारण यह है कि महिला के लिए विवाह एक ऐसी घोषणा की तरह है, जो दुनिया को बताती है कि कोई पुरुष उसे 'खास' मानता है और उसके साथ संबंध रखना चाहता है। 'खास' महसूस होने के एहसास का महिला के मस्तिष्क में होने वाली रसायनिक गतिविधि पर नाटकीय प्रभाव पड़ता है। शोध दिखाते हैं कि वैवाहिक स्थिति में महिला के चरम आनंद की दर चार से पाँच गुना अधिक होती है और एक ही साथी से रिश्ते की स्थिति में यह दर दो से तीन गुना अधिक होती है।

बूढ़े लोगों के मुताबिक युवा सोचते हैं कि शादी एक पुरानी संस्था हो गई है। 1998 में किए गए 18-23 वर्ष के कॉलेज जाने वाले 2,344 लड़के-लड़कियों के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि यह सच नहीं है। प्रतिबद्धता के बारे में पूछे जाने पर 70 प्रतिशत लड़कों की तुलना में 84 प्रतिशत लड़कियों का कहना था कि वे किसी दिन विवाह के बधन में बँधेंगे। केवल 5 प्रतिशत लड़कों व 2 प्रतिशत लड़कियों का मानना था कि शादी अब अप्रासंगिक हो चुकी है।

92 प्रतिशत स्त्री-पुरुषों का मानना था कि यौन संबंधों के मुकाबले दोस्ती कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। जब ज़िदगी भर एक ही इंसान से शादी करने की अवधारणा के बारे में पूछा गया तो 86 प्रतिशत महिलाओं को यह विचार पसंद आया, जबकि ऐसा मानने वाले पुरुषों का प्रतिशत 75 था। केवल 35 प्रतिशत जोड़ों का मानना था कि आज के रिश्ते उनके माता-पिता की पीढ़ी के संबंधों से बेहतर हैं। महिलाओं के लिए वफादारी सबसे ज्यादा मायने रखती थी और 30 वर्ष से कम उम्र की 44 प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि पुरुष द्वारा बेवफाई किए जाने पर वे उस रिश्ते को ख़त्म कर देंगी। 30 वर्ष या उससे अधिक की महिलाओं के मामले में यह प्रतिशत गिरकर 32 रह गया। 40 वर्ष की महिलाओं में 28 प्रतिशत ने रिश्ता ख़त्म करने की बात की, जबकि 60 साल की केवल 11 प्रतिशत महिलाओं का यहीं विचार था। इससे यहीं स्पष्ट होता है कि महिला जितनी अधिक युवा होगी, बेवफा पुरुष के प्रति उसका रवैया उतना ही कठोर होगा और उसके लिए एक साथी के प्रति निष्ठावान रहना उतना ही अधिक महत्वपूर्ण होगा।

इस अंतर को अधिकतर पुरुष कभी नहीं समझ पाते। उनमें से अधिकांश का मानना है कि कभी-कभार ऐसा करने से उनके रिश्ते पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि पुरुषों के मस्तिष्क को सेक्स व प्रेम को अलग-अलग रखने में थोड़ी परेशानी होती है। महिलाओं के लिए हालाँकि दौनों आपस में जुड़े होते हैं। किसी दूसरी महिला के साथ यौन संबंध को बहुत बड़ी बेवफाई के रूप में देखा जा सकता है और उसकी वजह से रिश्ता ख़त्म किया जा सकता है।

शादी जिस तरह से नाकाम हो रही है, उसके बावजूद हमें से इतने सारे लोग उसके क्यों अपना रहे हैं? क्यों न हम अकेले रहें या फिर अपने परिवारों व दोस्तों के साथ ज़िदगी गुज़ारें और जब मन चाहे प्रेमियों को रखें। इसके दो जवाब हैं। पहला यह कि सुखी व स्थायी विवाह अब भी खुशमिज़ाज व सेहतमंद बच्चों की परवरिश का सबसे विश्वसनीय तरीका हैं। दूसरा यह कि शादी हमें काफ़ी हृद तक शांत रखती है। इस तेज़ रफ़तार दुनिया में अपने सबसे अच्छे रूप में शादी तूफ़ान के बीच बंदरगाह का काम कर सकती है, एक ऐसी जगह जहाँ पर हम आराम कर सकते हैं और रोज़मरा के तनाव से राहत पा सकते हैं। वह जगह जहाँ हमें शान्तिक व मनोवैज्ञानिक रूप से राहत मिलती है, हम अपने सहज रूप में रह सकते हैं।

पुरुष प्रतिबद्धता से क्यों बचते हैं

विवाहित पुरुष या किसी दीर्घकालीन रिश्ते में बँधा पुरुष हमेशा इस बात को लेकर चिंतित रहता है कि अकेले पुरुष ज़्यादा सेक्स व ज्यादा मज़े कर रहे हैं। वह अकेले पुरुषों की बिंदास पार्टीयों, ज़्यादा जोश भरे व प्रतिबद्धता मुक्त शारीरिक संबंधों और नग्न सुपरमॉडल्स से भरी ज़कूज़ी की कल्पना करता है। उसे संशय होता है कि उसके

हाथ से मौक़े छूटते जा रहे हैं और वह ज़िंदगी का ज़रा भी लुक़ नहीं उठा पा रहा। वह उन शामों के बारे में भूल जाता है, जब वह अकेले बैठकर डिब्बे की ठंडी बेकड बीन्स खा रहा होता था, पार्टियों में जब उसके दोस्तों के सामने महिलाएँ उसे दो टूक जवाब दे देती थीं और जब सेक्स के बिना एक लम्बा अरसा गुज़र जाता था। इस सबके बावजूद उसे यही लगता है कि किसी के साथ प्रतिबद्धता का मतलब है, अवसरों से चूकना।

पुरुष सबसे सही साथी का इंतज़ार करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें
अक्सर बूढ़ा साथी मिलता है।

मस्तिष्क में प्रेम कहाँ है?

जून 2002 में यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन के प्रोफेसर सीमिन ज़ेकी और एंड्रयू बार्टला ने ऐसे 11 महिला व 6 पुरुषों के मस्तिष्क के स्कैन किए, जिनका कहना था कि वे 'प्यार में पागल' थे और पिछले छह से बारह महीनों के दौरान उन्हें प्यार हुआ था। उन्हें बारी-बारी से उनके प्रेमी की व उसी लिंग के उनके अन्य मित्रों के चित्र भी दिखाए गए। वैज्ञानिकों ने पाया कि प्रेमी की तसवीर देखकर उनके दिमाग़ के चार निश्चित क्षेत्र सक्रिय हो गए। उनमें से दो क्षेत्र मस्तिष्क के अधिक विकसित सेरीब्रल कॉर्टिक्स में थे। ये मीडियल इन्सुला थे, जिन्हें स्वाभाविक भावनाओं के लिए ज़िम्मेदार माना जाता है और जो आंतरिक (सिंगुलेट) का हिस्सा थे, जो सुख का बोध कराने वाले मादक पदार्थों पर प्रतिक्रिया करता है। अन्य दो क्षेत्र मस्तिष्क के अधिक आदिम बुनियादी (गैंगलिन) हिस्से में होते हैं, जो अनुभवों के फायदों को समझने और किसी चीज़ के आदि होने में भूमिका निभाते हैं।

यह शोध बताता है कि क्यों जब हम प्यार में होते हैं, तो अक्सर हमें सुख का अनुभव होता है, हम नशे जैसी स्थिति में होते हैं और तनाव में नहीं आते।

न्यू जर्सी की रटगर्स यूनिवर्सिटी की जानी-मानी अमेरिकी मानववैज्ञानी डॉ. हेलन फ़िशर भी मस्तिष्क के स्कैन का इस्तेमाल करके उसमें प्रेम की स्थिति जानने के लिए कार्य करती रही हैं। उनका शोध फ़िलहाल प्राथमिक दौर में है, लेकिन वे दिमाग में तीन तरह की भावनाओं का पता लगा चुकी हैं: लालसा, आसक्ति और लगाव। हर भाव की अपनी निश्चित केमिस्ट्री होती है, जो तब जाग उठती है जब उसका मालिक किसी की ओर आकर्षित होता है। जीववैज्ञानिक भाषा में कहें तो प्रेम के ये तीनों हिस्से प्रजनन सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण कार्य के लिए विकसित हुए हैं। एक बार गर्भाधान हो जाने पर यह प्रणाली स्वयं निष्क्रिय हो जाती है और प्रेम की प्रक्रिया रुक जाती है।

पहला चरण लालसा का है, जो कि शारीरिक व शब्देतर आकर्षण होता है, जिस पर हम पहले चर्चा कर चुके हैं। फ़िशर कहते हैं, 'आसक्ति एक ऐसा चरण है, जिसमें कोई शङ्ख बार-बार आपके ख्यालों में आता है और आप उसे अपने दिल-दिमाग से नहीं निकाल पाते। आपका दिमाग उस प्रियतम की खासियतों पर ध्यान देता है और उसकी बुरी आदतों को नज़रअदाज़ कर देता है।'

आसक्ति संभावित साथी के साथ मेल करने की दिमाग की कोशिश है और यह भावना इतनी सशक्त होती है कि इससे असाधारण याफोरिया यानी सुख का आभास होता है। अगर किसी को ढुकरा दिया जाता है, तो उससे असाधारण निराशा भी पैदा हो सकती है, जो जुनून में बदल सकती है। कुछ गंभीर मामलों में तो इसके परिणामस्वरूप हृत्या तक हो सकती है। इस चरण में मस्तिष्क से बहुत ज़बरदस्त रसायन निकलते हैं, जिनके कारण उल्लास की भावना पैदा हो जाती है। डोपामाइन सुख का एहसास देता है, फ़िनाइलथायलामाइन उत्तेजना का स्तर बढ़ाता है, सेरोटोनिन भावनात्मक स्थिरता का एहसास क्रायम करता है और नॉरेपिनफ्राइन आपमें यह एहसास जगाता है कि आप कुछ भी हासिल कर सकते हैं। सेक्स का व्यसनी व्यक्ति इस चरण में होने वाले हार्मोन्स के कॉकेटेल का आदि हो जाता है और स्थायी तौर पर मदहोश रहना चाहता है। आसक्ति अस्थायी होती है और यह चरण आम तौर पर 3 से 12 महीने तक रहता है, जब अधिकतर लोग इसे प्रेम मानने की ग़लती कर बैठते हैं। वास्तव में यह प्रकृति की जीववैज्ञानिक कारीगरी है, जो इस बात की गारंटी करती है कि किसी पुरुष व महिला को पर्याप्त समय के लिए एक साथ लाया जाए, ताकि वे प्रजनन कर सकें। इस चरण का एक ख़तरा यह है कि प्रेमियों को लगता है कि उनकी सेक्स ड्राइव एक-दूसरे से पूरी तरह मिलती हैं, ऐसा लगने की वजह यह है कि वे बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे होते हैं। उनकी सेक्स ड्राइव के बीच के अंतर आसक्ति के चरण के समाप्त होने पर सामने आते हैं या फिर जब जुड़ाव का चरण शुरू होता है।

आसक्ति प्रकृति की जीव वैज्ञानिक कारीगरी है ताकि यह सुनिश्चित हो कि एक पुरुष व महिला इतने लंबे समय तक एक-दूसरे के साथ रहें कि वे प्रजनन कर सकें।

जब बात आसक्ति से निकलकर सच्चाई पर आ जाती है, तो दोनों साथियों में से एक या फिर दोनों एक-दूसरे को अस्वीकृत कर देंगे या तीसरा चरण, लगाव, शुरू हो जाएगा, जब दोनों का ध्यान आपसी सहयोगयुक्त जुड़ाव पर केंद्रित होगा, जो कि इतने लंबे समय तक चले कि बच्चों की परवरिश की जा सके। शोधों की बढ़ती संख्या और मस्तिष्क के स्कैनर्स में तेज़ी से हुए तकनीकी विकास को देखते हुए फ़िशर को अपेक्षा है कि जल्दी ही एक फ़फ़ॉर्मला सामने आएगा, जिससे मस्तिष्क में प्रेम व भावनाओं की स्थिति को समझा जा सकेगा। इन तीनों चरणों को समझने से आसक्ति चरण को समझने में आसानी हो सकती है और उसके संभावित नकारात्मक पहलुओं से निपटने की तैयारी की जा सकती है।

प्रेम: पुरुष इसमें क्यों पड़ते हैं और महिलाएँ क्यों निकल आती हैं

प्रेम को भ्रामक माना जाता है और पुरुषों के मामले में यह ख़ासतौर पर सही होता है। टेस्टोस्टेरॉन के कारण पुरुष इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि वे प्यार के लालसा के चरण में आसानी से पहुँच जाते हैं। आसक्ति चरण के दौरान पुरुषों का टेस्टोस्टेरॉन इतना ज्यादा बढ़ जाता है कि वे आगा-पीछा नहीं समझ पाते। बाद में सच का सामना होने पर बहुत बड़ा झटका लगता है। बीती रात जो महिला बहुत आर्कषक लग रही थी, सुबह होने पर वह किसी भी नज़रिय से ख़बूसूरत नहीं लगती और न ही समझदार। महिला के मस्तिष्क में भावना और तर्क के केंद्र आपस में बेहतर ढंग से जुड़े होते हैं, इसलिए वह टेस्टोस्टेरॉन के मामले में बेकाबू नहीं होती - उसके लिए इस बात को आँकना ज्यादा आसान होता है कि कोई पुरुष उसके लिए सही संभावित साथी हो सकता है या नहीं। इससे स्पष्ट होता है कि क्यों अधिकतर रिश्ते महिलाओं द्वारा ख़त्म किए जाते हैं और क्यों अधिकांश पुरुष घटनाक्रम को लेकर चकरा जाते हैं। किसी पुरुष को छोड़ते हुए भी महिलाएँ बहुत सौम्यता से काम लेती हैं। पुरुष को अलविदा कहते हुए कुछ महिलाएँ पत्र को समाप्त करते हुए मुस्कुराते हुए चहरे की तसवीर बनाती हैं या फिर कहती हैं कि वे हमेशा उससे प्यार करेंगी।

पुरुष 'आई लव यू' क्यों नहीं कह सकते

'आई लव यू' या मैं तुमसे प्यार करती हूँ, यह कहने में महिलाओं को कभी कोई परेशानी नहीं होती। महिला के मस्तिष्क की बनावट ऐसी होती है कि उसकी दुनिया भावनाओं, संवाद और शब्दों से भरपूर होती है। महिला जानती है कि जब उसे गर्माहिट, चाहत व सराहे जाने का एहसास होता है, तो शायद वह किसी के प्यार में होती है और उस समय वह लगाव के चरण में होती है, जबकि पुरुष इस बात को लेकर अनिश्चित होता है कि प्यार क्या है और संभव है कि वह लालसा व आसक्ति तथा प्रेम के बीच चकरा जाए। वह बस इतना जानता है कि वह उससे पल भर भी दूर नहीं रह सकता... शायद वही प्यार हो? टेस्टोस्टेरॉन की वजह से उसका दिमाग़ काम करना बंद कर देता है, वह लगातार उत्तेजित रहता है और वह स्पष्टता से नहीं सोच पाता। किसी रिश्ते की शुरुआत के कुछ साल बाद पुरुष को यह बात समझ आती है कि उसे प्यार हो गया था, लेकिन उसे यह बात बीते दिनों को याद करके समझ आती है। महिलाएँ प्यार के ख़त्म होने की पहचान रखती हैं, और यही कारण है कि रिश्तों को ख़त्म करने वाली अधिकतर महिलाएँ ही होती हैं।

महिलाएँ जान जाती हैं कि कब प्यार का वजूद नहीं रहता। इसी कारण किसी रिश्ते को ख़त्म करने में वे अधिक सक्रिय होती हैं।

कोई पुरुषों को प्रतिबद्धता से डर लगता है। उन्हें भय होता है कि प्रेम स्वीकार कर लेने से वे बाकी जिंदगी के लिए बँध जाएँगे और जकूज़ी में नग्न सुपमॉडल्स के साथ होने का कोई भी मौक़ा हमेशा के लिए गँवा देंगे। जब अंततः कोई पुरुष प्यार की बात कबूलकर इस रेखा को पार करता है तो वह हर जगह हर किसी को यह बात बताना चाहता है। हालाँकि अधिकतर पुरुष इस बात पर गँवा नहीं करते कि उनके प्यार के इज़हार के बाद महिला का चरम-आनंद बढ़ जाता है।

पुरुष प्रेम व सेक्स को कैसे अलग कर सकते हैं

सुखी विवाहित महिला का प्रेम संबंध होना बहुत दुर्लभ बात है, लेकिन अपनी शादीशुदा जिंदगी से खुश रहने वाले और किसी अन्य से संबंध बनाने वाले पुरुष बहुत आम हैं। 90 प्रतिशत से अधिक प्रेम संबंधों की शुरुआत पुरुष करते हैं, लेकिन उनमें से 80 प्रतिशत से अधिक रिश्तों को महिलाएँ ख़त्म करती हैं। इसकी वजह यह है कि जब महिला यह समझ जाती है कि उस रिश्ते में भावनात्मक ठहराव नहीं आ सकता और वह केवल शारीरिक स्तर पर रहेगा, तो वह उससे बाहर निकलना चाहती है। पुरुष का मस्तिष्क चीज़ों को अलग-अलग खंडों में बाँट सकता है, उसकी इसी खासियत के कारण वह प्रेम को सेक्स से अलग कर सकता है और एक बार में एक चीज़ को देख सकता है। इसलिए वह अक्सर अच्छे शारीरिक संबंध को लेकर खुश रहता है, जिस पर उसका पूरा ध्यान लगा रहता है। यह अब भी अस्पष्ट है कि मस्तिष्क में ठीक किस जगह पर प्रेम होता है, लेकिन शोध बताते हैं कि महिला के मस्तिष्क में उसके प्रेम के केंद्र व सेक्स के केंद्र (हाइपोथलेमस) के बीच संपर्कों का एक संजाल मौज़ूद होता है और सेक्स केंद्र के सक्रिय होने के लिए पहले प्रेम के केंद्र को क्रियाशील करना पड़ता है। लगता है कि पुरुषों में ऐसे कनेक्शन्स या संपर्क मौज़ूद नहीं होते और इस कारण वे सेक्स व प्रेम को अलग करके देख सकते हैं। पुरुष के लिए सेक्स अपनी जगह है और प्यार अपनी जगह और कभी-कभी दोनों साथ होते हैं।

जब कोई पुरुष विवाहेतर संबंध बनाते हुए पकड़ा जाता है, तो महिला उससे सबसे पहले पूछती है, ‘क्या तुम उस औरत से प्यार करते हो?’ ‘नहीं, वह तो सिर्फ़ शारीरिक रिश्ता था, उसका और कोई मतलब नहीं,’ कहते हुए असल में पुरुष सच्ची बात बता रहा होता है, क्योंकि वह सेक्स व प्रेम को अलग-अलग करके देख सकता है। महिला के दिमाग़ की बनावट ऐसी होती है कि उसे इस जवाब को स्वीकार करने में कठिनाई होती है और इसी वजह से कई महिलाओं को उस पुरुष पर विश्वास करना मुश्किल हो जाता है, जो कहता है कि उस रिश्ते के कोई मायने नहीं हैं, क्योंकि महिला के लिए तो सेक्स का मतलब प्यार है। महिला के मस्तिष्क में किसी दूसरी स्त्री से शारीरिक संबंध की बात उसे उतनी प्रभावित नहीं करती, जितनी यह कि पुरुष ने उसके साथ किए भावनात्मक समझौते का उल्लंघन किया व उसके भरोसे को ठेस पहुँचाई। यदि किसी महिला का प्रेम संबंध हो और वह कहे कि उसके कोई मायने नहीं, तो संभव है कि वह झूठ बोल रही हो। किसी महिला के लिए सेक्स के लिए रेखा पार करने का मतलब है कि उस दूसरे पुरुष के साथ वह पहले ही भावनात्मक जुड़ाव क़ायम कर चुकी होगी।

महिलाओं के लिए प्रेम व सेक्स एक-दूसरे से जुड़े हैं। एक का मतलब दूसरा है।

जब महिलाएँ प्रेम कर रही होती हैं तो पुरुष संभोग कर रहा होता है

एक पुरानी कहावत है कि जब पुरुष महिला के साथ संभोग कर रहा होता है, तो वह प्रेम कर रही होती है। यह असल में क्या है, इस बात को लेकर हर जगह प्रेमियों के बीच अक्सर बहसें होती रही हैं। पुरुष सेक्स को ‘सेक्स’ कहेंगे, लेकिन महिला इस शब्द पर नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया दे सकती है, क्योंकि उसकी परिभाषा के अनुसार यह जैसा है, वैसा होता नहीं। महिला ‘प्रेम क्रीड़ा करती है,’ जिसका मतलब है कि उसे यह महसूस किए जाने की ज़रूरत होती है कि उसे प्यार किया जाता है और सेक्स चाहने से पहले उसे प्यार भरे एहसास की क्योंकि महिला के मस्तिष्क की सहज बनावट इस परिभाषा की पहचान नहीं करती।

जब कोई पुरुष ‘सेक्स’ कहता है, तो कई बार उसका मतलब सिर्फ़ शारीरिक यौन संबंध से होता है, लेकिन

इसका मतलब यह नहीं कि वह अपनी साथी से प्यार नहीं करता। जब पुरुष ‘प्रेम करना’ चाहता है, तो वह उसे तब भी ‘सेक्स’ कहना पसंद करता है। महिला पर इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ सकते हैं, लेकिन ‘प्रेम करने’ की अभिव्यक्ति के प्रयोग से पुरुषों को लग सकता है कि वे या तो पाखंड कर रहे हैं या फिर महिला को धोखा दे रहे हैं, क्योंकि कई बार उसे सिफ़े सेक्स की ज़रूरत होती है। जब कोई महिला दावा करती है कि पुरुष किसी के साथ ‘सो रहा है’, तो आप शर्तिया कह सकते हैं कि वह सो नहीं रहा होता। ‘तुम उसके साथ कैसे सो सकते हो?’ महिला पूछती है। ‘तुम तो उसे पसंद तक नहीं करते!’ लगता है कि स्त्री-पुरुष भावनात्मक तौर पर एक-दूसरे से बहुत अलग हैं, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि इसका कारण पुरुषों में नैतिकता की कमी है। हमारी भावनाओं से जुड़े मस्तिष्क के भाग लिम्बिक सिस्टम के दो हिस्से होते हैं। एक पुराना हिस्सा (टेम्पोरल लिम्बिक) है, जो सेक्स व हिंसा से जुड़ा है और दूसरा नया हिस्सा (जायरस लिम्बिक) है, जो चिंतन व कल्पना से जुड़ा है। पुरुषों के मस्तिष्क पुराने हिस्से में अधिक सक्रिय होते हैं और कार्यकलापों के साथ ज़्यादा जुड़े होते हैं, जबकि महिलाओं के मस्तिष्क ‘प्रतीकात्मक भावनात्मक प्रतिक्रियाओं’ के लिए अधिक सक्रिय होते हैं। जब स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझेंगे और इस बात पर सहमत होंगे कि उन्हें एक-दूसरे की परिभाषाओं का आकलन नहीं करना है, तो यह बात उनके रिश्तों के आड़े नहीं आएगी।

अच्छे साथी आकर्षक क्यों लगते हैं

किन्जी इंस्टिल्यूट में हुए अध्ययनों से यह बात सामने आई है कि यौन संबंध बनाने के दौरान पुरुष अपनी साथी के प्रति जो नज़रिया रखता है, वह उसके प्रति उसकी अंतरंग भावनाओं की गहराई पर निर्भर करता है। इसका मतलब है कि अगर वह उसके प्यार में पागल है, तो वह उसे शारीरिक आकर्षण के पैमाने पर ऊपर रखेगा, चाहे वाकी लोगों को यह लगे कि वह काफ़ी मोटी है। महिला कितनी भी आकर्षक हो, अगर पुरुष को उसकी परवाह न हो, तो वह उसे कम आकर्षक मानेगा। जब कोई पुरुष किसी महिला से उत्तेजित होता है, तब उसे उसकी जाँधों का आकार कोई मायने नहीं रखता। दरअसल वे बिल्कुल सही होती हैं। इससे यह प्रदर्शित होता है कि जहाँ पुरुषों के लिए किसी महिला का शारीरिक आकर्षण शुरुआती मुलाकातों में बहुत महत्वपूर्ण कारक होता है, वहीं लम्बे समय के दौरान रिश्ते को बढ़ाने वाला महिला का स्नेह उसके आकर्षण में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। इस बात की पुष्टि अध्याय 9 में ‘हम क्या तलाश करते हैं’ के सर्वेक्षण से होती है। महिला के लिए पुरुष के आकर्षण के मामले में हालाँकि ऐसा नहीं होता। सिंगल्स बार्स यानी एकल लोगों के बार में किए गए कुछ दिलचस्प अध्ययनों से यह बात उजागर होती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि समय बीतने के साथ अविवाहित पुरुषों को वहाँ मौजूद महिलाएँ अधिक आकर्षक दिखाई दी। शाम सात बजे पुरुषों ने जिस महिला को आकर्षण के पैमाने पर दस में से पाँच अंक दिए थे, उसी महिला को रात साढ़े दस बजे सात और फिर आधी रात को साढ़े आठ अंक दिए, शराब के स्तर के साथ महिला का आकर्षण स्तर भी बढ़ता गया। महिलाओं के मामले में बात बिल्कुल अलग रही, जिस पुरुष को सात बजे उन्होंने पाँच अंक दिए थे, आधी रात को भी उसे वही स्थान दिया गया।

महिला जिस पुरुष को शाम सात बजे आकर्षण के पैमाने पर पाँच मानती है आधी रात को भी वह वहीं रहता है चाहे महिला ने कितनी भी शराब पी हो।

शराब ने पुरुष के आकर्षण मूल्यांकन को नहीं बढ़ाया, बल्कि कुछ मामलों में तो वह घट भी गया। साथी के रूप में पुरुष की उपयोगिता को महिलाएँ उसके निजी गुणों से निर्धारित करती हैं, जो पुरुष के शारीरिक आकर्षण से कहीं ऊपर होता है और उस मामले में इस बात से फ़र्फ़ नहीं पड़ता कि समय क्या है व कितनी शराब पी गई है। महिला के आकर्षण मूल्यांकन को पुरुष इस अनुपात के हिसाब से बढ़ाते हैं कि वह उसे पेशेवर शुक्राणु दाता की भूमिका निभाने देगी।

क्या विपरीत एक-दूसरे को आकर्षित करते हैं?

1962 में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अभूतपूर्व अध्ययनों में पाया गया कि हम उन लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं, जिनके जीवन मूल्य, रुचियाँ, रवैये और दृष्टिकोण हमसे मिलते हैं और जिनके साथ हम तुरंत जुड़ जाते हैं। उसके बाद के अध्ययनों में पाया गया कि इन परिस्थितियों में इस बात के अवसर अधिक होते हैं कि प्रेमी दीर्घकालीन संबंध बना सकें। हालाँकि बहुत अधिक समानताएँ काफ़ी उबाऊ हो सकती हैं। हमें केवल इतने अंतरों की ज़रूरत होती है कि वे दिलचस्पी कायम रख सकें और हमारे अपने व्यक्तित्व को पूरा कर सकें, लेकिन वे इतने अधिक भी नहीं होने चाहिए कि हमारी जीवनशैली में रुकावट का काम करने लगें। उदाहरण के लिए, संभव है कि कोई शांत व्यक्ति किसी बर्हिमुखी या मिलनसार महिला की ओर आकर्षित हो या फिर हमेशा चिंतित रहने वाली कोई महिला ऐसे पुरुष की ओर आकर्षित हो, जो बहुत शांत और आराम से रहने वाला हो।

शारीरिक रूप से विपरीत के बीच आकर्षण

ऐसे किसी भी अध्ययन या सर्वेक्षण को देख लीजिए, जो इस बात पर आधारित हो कि हमें शारीरिक रूप से विपरीत लिंग के प्रति क्या आकर्षित करता है, तो आप पाएँगे कि हम अपनी शारीरिक विशेषताओं के विपरीत की ओर आकर्षित होते हैं। पुरुष को मलता भरी, गोलाइयों महिलाओं को पसंद करते हैं, जबकि वे स्वयं मज़बूत और सपाट होते हैं। पुरुष चौड़े नितम्ब, पतली कमर, लंबी टाँगें और गोलाकार वक्ष वाली महिलाओं को पसंद करते हैं - ये सभी गुण पुरुषों में कभी नहीं पाए जा सकते। पुरुष छोटी ठोड़ी व नाक और सपाट पेट पसंद करता है, ये सभी सामान्यतया उसमें नहीं पाए जाते।

महिलाएँ भी अपने से उलट खासियतों को पसंद करती हैं, जिनमें चौड़े कंधे, संकरे नितम्ब, मोटी टाँगें व बाँहें, मज़बूत ठोड़ी व भरी-पूरी नाक शामिल हैं। इसके बावजूद कुछ रोचक अपवाद मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि शराब न पीने वाले पुरुष छोटे वक्ष वाली महिलाओं को पसंद करते हैं, भारी-भरकम वक्ष वाली महिलाएँ छोटे नाक वाले पुरुषों को प्राथमिकता देती हैं और बड़ी नाक वाले पुरुष आम तौर पर सपाट वक्ष वाली महिलाओं के साथ वक्त बिताना पसंद करते हैं। बर्हिमुखी पुरुष बड़े वक्ष वाली महिलाओं को तरजीह देते हैं।

नितम्ब-कमर का अनुपात महत्वपूर्ण है

अगर आप बीती शताब्दियों के दौरान पुरुष की रुचियों को देखें तो आप पाएँगे कि वे 16वीं सदी की विशालकाय मांसल मॉडल्स से लेकर आजकल की पेंसिल की तरह पतली सुपरमॉडल्स, जो शतावरी के काँटों जैसी दिखती हैं, के दीवाने रहे हैं। हालाँकि इस सबके बीच जो चीज़ कायम रही है, वह है किसी महिला का नितम्ब-कमर अनुपात, जो हमेशा से पुरुषों का ध्यान अपनी ओर खींचता रहा है। जिन महिलाओं की कमर उनके नितम्बों के अनुपात में 70 प्रतिशत होती है, अन्य महिलाओं के मुकाबले उनकी प्रजनन दर अधिक देखी गई है। केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के डॉ. देवेंद्र सिंह ने कई देशों के पुरुषों का सर्वेक्षण किया और पाया कि अपने अतीत में पुरुषों ने अनजाने ही इस जानकारी को पढ़ना सीख लिया और अब वह उनके मस्तिष्क का सहज हिस्सा बन गई है। महिलाओं के लिए अच्छी खबर यह है कि अगर आपकी कमर की नाप आपके नितम्बों के अनुपात में 67 से 80 प्रतिशत के बीच में है, तो आप पुरुषों का ध्यान आकर्षित करेंगी, चाहे आपका वज़न 5 से 10 किलो ज़्यादा हो, क्योंकि गोलाइयों अनिवार्य कसौटी हैं। इसके अलावा इन अनुपातों वाली महिलाओं को पुरुष मज़ाकिया, सेक्सी, सेहतमंद और वफ़ादार समझा जाता है। बहुत पतली महिलाओं को महत्वाकांक्षी व आक्रामक माना जाता है।

हर जगह महिलाओं को पुरुषों के छोटे, कसे हुए नितम्ब पसंद आते हैं हालाँकि कुछ ही महिलाएँ इसका कारण जानती हैं।

महिलाएँ वी आकार के पुरुषों को पसंद करती हैं, जिनके कंधे चौड़े, कमर पतली और बाँहें मज़बूत होती हैं, जो शिकार का पीछा करने में सफल रहने वाले मानव की बुनियादी ज़रूरत थी। मज़बूत ठोड़ी, नाक और भौंह भी

महिलाओं को आकर्षित करती हैं, क्योंकि इनके कारण यह संभव था कि सिर पर होने वाली मज़बूत चोट के बावजूद पुरुष बच जाएगा। हर जगह महिलाएँ पुरुषों के कसे हुए नितम्ब पसंद करती हैं, हालाँकि बहुत कम को यह बात मालूम है कि आखिर उन्हें वह इतना आकर्षक क्यों लगता है। हम ही केवल ऐसे नर वानर हैं, जिनका पिछला हिस्सा बाहर की ओर निकला होता है और यह दो उद्देश्यों को पूरा करता है। पहला, यह सीधे खड़े होने में हमारी मदद करता है और दूसरा, यह सुनिश्चित करता है कि सहवास के समय पुरुष मज़बूती से आगे धकेलने की क्रिया कर सके, ताकि निषेचन के अवसर बढ़ सकें।

पुरुष और रोमांस

ऐसा नहीं है कि पुरुष रोमांस नहीं करना चाहते, बस वे महिलाओं के लिए इसकी अहमियत को नहीं समझ पाते। हम जिस तरह की किताबें खरीदते हैं, उससे यह साफ हो जाता है कि हमारी दिलचस्पी किन चीज़ों में है। महिलाएँ हर साल लाखों रुपये रोमांटिक उपन्यास खरीदने में खर्च करती हैं। महिलाओं की पत्रिकाएँ प्यार, रोमांस, अन्य लोगों के प्रेम संबंधों या फिर व्यायाम कैसे करें, क्या खाएँ और कैसे ज़्यादा रोमांस के लिए बेहतर ढंग से पोशाकें पहनें, आदि बातों पर ज़्यादा ध्यान देती हैं। ऑस्ट्रेलिया में हुए एक अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि रोमांटिक उपन्यास न पढ़ने वाली महिलाओं के मुकाबले इन उपन्यासों को पढ़ने वाली महिलाओं की यौन क्रिया दोगुनी होती है। इसके विपरीत पुरुष उन किताबों व पत्रिकाओं पर लाखों खर्च करते हैं, जो स्थानिक विषयों, कम्प्यूटरों व मैकेनिकल औज़ारों से लेकर मछली पकड़ने, शिकार करने व फुटबॉल जैसी शिकार का पीछा करने वाली गतिविधियों से जुड़ी तकनीकी जानकारी देती हैं।

इसमें कोई आश्वर्य नहीं कि रोमांस की बात आने पर अधिकतर पुरुषों को पता नहीं होता कि क्या करना चाहिए। इस बात को समझा जा सकता है, क्योंकि इस मामले में आधुनिक पुरुष के सामने कभी कोई आदर्श नहीं रहा। उसके पिता को भी नहीं पता था कि रोमांस के लिए क्या करना चाहिए, लेकिन यह उनके लिए कभी कोई मुद्दा रहा ही नहीं। हाल में हुए हमारे एक सम्मेलन में एक महिला ने बताया कि जब उसने अपने पति से अधिक स्लैह दिखाने को कहा तो उसके पति ने उसकी कार को धो-पोंछकर चमका दिया। इससे पता चलता है कि पुरुष कैसे ‘काम करने को’ दूसरे की परवाह किए जाने के एक तरीके के रूप में देखते हैं। उस महिला का पति उसके जन्मदिन पर उसके लिए कार जैक लाया और शादी की दसवीं सालगिरह पर उसने कुश्ती देखने के लिए आगे की सीटें बुक की।

यह कभी न भूलें कि महिला रोमांटिक होती है। उसे वाइन, फूल
और चॉकलेट पसंद आते हैं। उसे बताइए कि आपको भी ये चीज़ें
याद रहती हैं... कभी-कभार उनके बारे में बात कर लिया
कीजिए।

जुड़ी ऐलन

यूरोपीय पुरुषों की ख्याति कुछ अतिश्योक्तिपूर्ण रूप में रोमांस करने वालों के रूप में है, लेकिन दुनिया के हर कोने में रहने वाले अधिकतर पुरुष इससे पूरी तरह अनजान हैं। पिछली पीढ़ियों के पुरुष दो जून की रोटी के जुगाड़ में इतना व्यस्त रहते थे कि उनके पास इन बारीकियों के लिए समय ही नहीं था। इसके अलावा पुरुषों के मस्तिष्क तकनीकी चीज़ों के लिए बने हैं, न कि कलात्मक चीज़ों के लिए। बात यह नहीं है कि पुरुष कौशिश नहीं करते, बस वे कार का दरवाज़ा खोलने, फूल भेजने, नाचने, महिला के लिए खाना पकाने या टॉयलेट रोल बदलने की अहमियत को नहीं समझ पाते। महिला किसी रिश्ते में रोमांस व प्यार की तलाश में आती है। सेक्स उसके परिणामस्वरूप आता है। पुरुष अक्सर सेक्स की राह से किसी रिश्ते में पड़ते हैं और फिर देखते हैं कि उसमें किसी संबंध की गुंजाइश है या नहीं।

पुरुषों के लिए रोमांस के कुछ अचूक नुस्खे

प्यार व रोमांस की बात आने पर महिलाओं को कोई समस्या नहीं होती, लेकिन इसे लेकर अधिकतर पुरुष कुछ नहीं जानते, इसलिए वे यह सुनिश्चित करते हैं कि वे किसी भी जगह पर किसी भी वक्त प्यार के लिए तैयार हों। किसी पुरुष के रोमांटिक हुनर (या फिर उनकी कमी) इस बात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि कोई महिला उसके साथ यौन संबंध बनाना चाहेगी या नहीं। यहाँ छह आज़माई हुई बातों का वर्णन किया जा रहा है, जो आज के पुरुषों के लिए कारगर हैं और 5000 साल पहले के पुरुषों के मामले में भी कारगर थीं।

आप कैसे जानेंगे कि पुरुष सेक्स के लिए तैयार है? वह साँस ले रहा होता है।

1. माहौल बनाएँ। जब आप अपने माहौल के प्रति महिला की संवदेनशीलता और बाहरी उद्दीपन पर उसकी इंद्रियों की ग्रहणशीलता पर विचार करेंगे, तो आप यह बात समझ पाएँगे कि क्यों किसी पुरुष को अपने माहौल पर ध्यान देना चाहिए। महिलाओं के ईस्ट्रोजन हार्मोन उन्हें सही रोशनी के प्रति संवदेनशील बनाते हैं - मद्दम रोशनी से पुतलियाँ फैलती हैं, इसलिए लोग आकर्षक लगते हैं, त्वचा के दाग-धब्बे व झुरियाँ कम स्पष्ट होती हैं। महिला की सुनने की शक्ति श्रेष्ठतर होती है, जिसका मतलब है कि सही संगीत भी ज़रूरी है और एक साफ़-सुथरी, सुरक्षित गुफा उस स्थान से बेहतर है, जहाँ पर बच्चे कभी भी पहुँच सकते हैं या किसी भी पल कोई भी आ सकता है। महिलाओं द्वारा एकांत में सहवास करने के आग्रह से पता चलता है कि क्यों अधिकतर महिलाएँ सार्वजनिक जगह में सहवास करने की निजी कल्पना करती हैं, जबकि पुरुष किसी अजनबी के साथ यौन संबंध बनाने की कल्पना करते हैं।
2. उसे भोजन कराएँ। भोजन का पीछा करने वाले के रूप में विकसित होने के कारण आपको लगेगा कि कोई पुरुष यह बात समझ सकता है कि महिला को भोजन कराने से उसमें आदिम मादा भावनाएँ जगाई जा सकती हैं। यही वजह है कि किसी महिला को डिनर पर ले जाना भी एक महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि भूख न होने के बावजूद भोजन उपलब्ध कराने से यह ज़ाहिर होता है कि उसे महिला की सेहत व उसकी जान की परवाह है। महिला के लिए भोजन बनाने का गहरा गूढ़ अर्थ है, क्योंकि उससे स्त्री व पुरुष के आदिम एहसास जाग जाते हैं।
3. रोशनी करना। लकड़ियाँ जमा करने और महिलाओं को गर्माइट व सुरक्षा देने के लिए आग जलाने का काम सैकड़ों-हज़ारों साल से पुरुष करते चले आ रहे हैं। यह अधिकतर महिलाओं के रोमांटिक पक्ष को पसंद भी आता है। यदि पुरुष रोमांटिक माहौल बनाना चाहता है, तो उसे रोशनी करने का काम करना चाहिए, यह बात और है कि अब गैस की आग होती है, जिसे महिलाएँ भी जला सकती हैं। नतीजे आग से नहीं, बल्कि महिला की ज़रूरत पूरा करने के काम से मिलते हैं।
4. फूल लेकर आएँ। अधिकतर पुरुष ताजे फूलों के गुच्छों के असर को नहीं समझते। वे सोचते हैं, ‘ऐसी चीज़ पर पैसा खर्च करने का क्या फ़ायदा जो कुछ दिनों में ही ख़राब होकर बाहर फेंक दी जाएगी?’ पुरुष के ताकिक मस्तिष्क के अनुसार गमले में लगा पौधा देना बेहतर होगा, क्योंकि लगातार देखभाल किए जाने से वह बढ़ेगा - बल्कि उससे लाभ भी कमाया जा सकता है! लेकिन महिला उसे इस तरह नहीं देखती - उसे ताजे फूल चाहिए। कुछ दिन बाद फूल मर जाएँगे, उन्हें बाहर फेंक दिया जाएगा, जिससे पुरुष के सामने फिर से गुलदस्ता लाने का मौक़ा होगा और इस प्रकार एक बार फिर महिला की ज़रूरतें पूरी करके वह उसके रोमांटिक पक्ष को उभार सकेगा।
5. नाचें। ऐसा नहीं है कि पुरुष नाचना नहीं चाहते, बात सिर्फ़ इतनी है कि उनके मस्तिष्क के दाएँ हिस्से में लय-ताल को महसूस करने का स्थान नहीं होता। किसी भी ऐरोबिक्स क्लास में जाकर पुरुषों को (अगर वे आते हैं) समय के साथ कदम मिलाने की कोशिश करते देखिए। जब कोई पुरुष रॉक एन रोल या वॉल्ट्ज़ सीखता है, तो पार्टी में वह सभी महिलाओं के बीच तुरंत लोकप्रिय हो जाता है। नृत्य का वर्णन क्षैतिज इच्छा की लम्बवत गतिविधि के रूप में किया जाता है। इतिहास भी यही रहा है - यह एक अनुष्ठान है, जिसे स्त्री-

पुरुष को नज़दीक लाने के लिए विकसित किया गया, ताकि उनके बीच प्रेम संबंध बन सके, जैसा कि अन्य जानवरों के मामले में होता था।

6. चॉकलेट और शैम्पेन ख़रीदें। ये दोनों चीज़ें लंबे समय से रोमांस के साथ जुड़ी रही हैं, हालाँकि बहुत कम लोग इसका कारण जानते हैं। शैम्पेन में ऐसा रसायन पाया जाता है, जो टेस्टोस्टेरॉन के स्तर को बढ़ाता है और यह रसायन अन्य शराबों में नहीं पाया जाता। चॉकलेट में फिनायलथायलामाइन होता है, जो महिला के दिमाग़ में मौजूद प्यार के केंद्र को जागृत करता है। सैन डिएगो में न्यूरोसाइंसेज़ इंस्टिट्यूट की डैनियेला पियोमेला द्वारा किए गए शोध में तीन नए रसायनों की खोज की गई, जिन्हें एन-एसीलेथानोलामाइन्स कहा जाता है। ये महिला के मस्तिष्क में भाँग के अभिग्राहकों से जुड़ जाते हैं और उसे नशे जैसा एहसास होता है। ये रसायन भूरी चॉकलेट व कोको में पाए जाते हैं, लेकिन सफेद चॉकलेट या कॉफ़ी में ये नहीं पाए जाते।

पुरुष छूना व बात करना क्यों बंद कर देते हैं

‘शादी से पहले वह लोगों के बीच मेरा हाथ पकड़ता था, मेरी पीठ सहलाता था और मुझसे लगातार बातें करता था। अब वह कभी मेरा हाथ नहीं पकड़ता और मुझसे बात भी नहीं करना चाहता - और वह मुझे बस तभी छूता है, जब उसे सेक्स चाहिए।’ क्या यह शिकायत जानी-पहचानी लगती है?

**शादी के बाद पुरुष अपने साथी के बारे में वह सब जान लेता है,
जो उसे जानना चाहिए और उसे ज़्यादा बातचीत की कोई
ज़रूरत महसूस नहीं होती।**

प्रणय काल के दौरान पुरुष अपनी महिला दोस्त को अपने रिश्ते के किसी अन्य समय के मुकाबले अधिक छूता है। इसकी वजह यह है कि वह उसे पाने के लिए आतुर होता है, लेकिन उसे किसी तरह के यौन स्पर्श के लिए हरी झंडी नहीं मिली होती है, इसलिए वह उसे छूता रहता है। जब उसे यौन स्पर्श करने की अनुमति मिल जाती है, तो उसके दिमाग को ‘पुराने दिनों’ में लौटने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। वह बस एक ही काम पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रणय काल के दौरान अपनी दोस्त के बारे में हर तरह की जानकारी पाने के लिए वह उससे काफ़ी बातचीत करता है और उसे भी अपने बारे में जानकारी देता है। जब तक शादी का समय आता है, उसे वह सारी जानकारी होती है, जो उसे होनी चाहिए, इसलिए उसे अत्यधिक बातचीत करने का कोई कारण नज़र नहीं आता। लेकिन जब पुरुष यह बात समझ लेता है कि महिला का मस्तिष्क बातचीत करके संवाद करने के लिए बना है और यह भी कि स्पर्श के प्रति उसकी संवेदनशीलता पुरुष की तुलना में दस गुना अधिक होती है, तो वह इन मामलों में स्वयं को अधिक कुशल बना सकता है और कुल मिलाकर उसका प्रेम जीवन नाटकीय ढंग से बेहतर हो जाएगा।

पुरुष ज़बरदस्ती क्यों छूते हैं, जबकि महिलाएँ ऐसा नहीं करती

ऑक्सिटोसिन हार्मोन को ‘कड़ल हार्मोन’ यानी आलिंगन हार्मोन के नाम से जाना जाता है और यह तब निकलता है, जब किसी की त्वचा को हौले से सहलाया जाए या फिर उसे गले से लगाया जाए। यह स्पर्श के प्रति संवेदनशीलता व आपसी जुड़ाव की भावनाओं को बढ़ाता है और शिशुओं व पुरुषों के प्रति महिलाओं के व्यवहार में एक प्रमुख कारक होता है। जब कोई महिला स्तनपान कराना शुरू करती है, तो यह ‘लेट डाउन’ यानी उत्तरने की प्रतिक्रिया को तेज़ करता है, जिसके कारण स्तनों में दूध उत्तरता है।

यदि कोई महिला किसी पुरुष को छूकर उसे आनंद देना चाहती है, तो वह आम तौर पर उसे उसी प्रकार करती है, जैसा कि वह अपने साथ चाहती है। वह उसके सिर को खुजलाती है, उसके चेहरे को सहलाती है, उसकी पीठ रगड़ती है और उसके बालों को हौले से सँवारती है। इस प्रकार के स्पर्श का अधिकतर पुरुषों पर कुछ ख़ास

असर नहीं पड़ता और इससे उन्हें खीझ भी हो सकती है। पुरुष की त्वचा महिला की तुलना में उल्लेखनीय रूप से कम संवेदनशील होती है, ताकि शिकार के समय वह धायल न हो और उसे दर्द का एहसास न हो। पुरुषों को एक ही जगह पर और वहीं पर बार-बार छुआ जाना अच्छा लगता है। इससे रिश्तों से जुड़ी परेशानियाँ पैदा होती हैं। जब पुरुष किसी महिला को छूने की बात सोचता है, तो वह उसके साथ वही करता है, जो उसे अपने साथ किया जाना अच्छा लगता है। वह उसके वक्ष और जाँध व धड़ के बीच की जगह को पकड़ता है। महिलाओं को यह सबसे ज्यादा नापसंद होता है और इससे दोनों पक्षों में रोष पैदा होता है। जब स्त्री-पुरुष एक-दूसरे को उनकी ज़रूरत के हिसाब से कामुक ढंग से छूना सीखते हैं, तो उनका रिश्ता बेहतर होता है।

क्या वसंत के मौसम में प्रेम अधिक होता है?

प्रकृति की जीव वैज्ञानिक घड़ी इस तरह काम करती है कि मादा पशु साल के गर्माहट भरे समय में बच्चे को जन्म दें, ताकि उसका जीवित रहना सुनिश्चित हो सके। मान लीजिए कि किसी प्रजाति को जन्म देने में तीन महीने का समय लगता है, तो प्रकृति उसके नर को वसंत के मौसम में सबसे अधिक कामोत्तेजक बनाती है, ताकि बच्चों का जन्म गर्भी के मौसम में हो सके। मनुष्यों के मामले में गर्भकाल नौ महीने का होता है और इसलिए पुरुष का टेस्टोस्टेरॉन स्तर उससे नौ महीने पहले यानी शरद क्रृतु में सबसे अधिक होता है। पुरानी कहावत, ‘वसंत में पुरुष का ध्यान प्रेम की ओर जाता है,’ केवल उन्हीं प्रजातियों पर लागू होता है, जिनका गर्भकाल तीन महीने का होता है।

‘वसंत में प्रेम’ केवल उन्हीं प्राणियों पर लागू होता है जिनका गर्भकाल छोटा होता है।

शोध दिखाते हैं कि दक्षिणी गोलार्ध में पुरुष का टेस्टोस्टेरॉन मार्च के महीने में सबसे ज्यादा होता है और उत्तरी गोलार्ध में सितम्बर के महीने में ऐसा होता है। यह भी पाया गया है कि इन महीनों के दौरान पुरुष नक्शा पढ़ने में अधिक सक्षम होते हैं, क्योंकि टेस्टोस्टेरॉन उनकी स्थानिक क्षमता को बढ़ा देता है। (अध्याय 9 में दिए गए चार्ट को देखें और आप जान जाएँगे कि यह कैसे होता है।)

कैसे सेक्सी महसूस किया जाए

दिमाग विभिन्न रसायनिक प्रतिक्रियाओं का कॉकटेल यानी मिश्रण होता है, इसलिए खुद सेक्सी महसूस करने की बात सोचना संभव है। कई सेक्स थेरेपिस्ट इस तकनीक को सिखाते हैं। इसमें अपने साथी के केवल सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना होता है और साथ में महसूस किए गए उत्तेजक यौन अनुभवों को याद करना होता है। इससे मस्तिष्क उन रसायनों को सक्रिय करता है, जिनसे आपकी यौनेच्छा संचालित होती है और आपमें कामनाएँ जागती हैं। आसक्ति के चरण या फिर प्रणय काल के दौरान यह प्रतिक्रिया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जब प्रेमी अपने साथी में केवल अच्छी बातें देखता है और उनकी सेक्स ड्राइव समाप्त होती नहीं लगती। स्वयं को सेक्स से बाहर निकालने की बात सोचना भी संभव है, अपने साथी की नकारात्मक बातों पर ध्यान केंद्रित करके आप ऐसा कर सकते हैं। इसमें मस्तिष्क सेक्स ड्राइव के लिए आवश्यक रसायनों को नहीं छोड़ता।

आसक्ति वाले आकर्षण को फिर से तरोताज़ा करना

अच्छी बात यह है कि क्योंकि आप खुद को सेक्स के बारे में सोचने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, आप जब चाहें अपने रिश्ते के आसक्ति चरण से जुड़ी बातों को याद करके उस समय को फिर से ताज़ा कर सकते हैं। यहीं वजह है कि मोमबत्ती की रोशनी में भोजन करने, समुद्र तट पर रोमांटिक चहलकदमी और किसी जगह पर एक साथ वीकेंड गुज़ारने से दंपत्तियों के हार्मोन सक्रिय हो जाते हैं - उन्हें प्राकृतिक तौर पर मदहोशी और प्रेम में मदहोशी

जैसा महसूस होता है। यह उम्मीद करने वाले प्रेमी कि आसक्ति का उल्लास हमेशा बना रहेगा दुःखद रूप से निराश होते हैं, लेकिन कारगर योजना बनाकर आप जब चाहे उस एहसास को फिर से ताज़ा कर सकते हैं।

सही साथी कैसे खोजा जाए

प्रेम लालासा के साथ शुरू होता है, जो कुछ घंटे, कुछ दिन या फिर कुछ सप्ताह तक रह सकता है। फिर बारी आती है आसक्ति के चरण की, जो औसतन 3 से 12 महीने रहता है और फिर लगाव का चरण शुरू हो जाता है। एक साल या लगभग इतने ही समय बाद जब हार्मोन्स के मिश्रण का चौंधियाने वाला असर कम होने लगता है, तो हम अपने साथी को दिन की रोशनी में साफ़ तौर पर देखने लगते हैं और जो छोटी-छोटी आदतें हमें शुरू में बहुत प्यारी लगती थीं, वे अब खीझ भरी लगने लगती हैं। पहले कभी आपको यह बात बहुत प्यारी लगती थी कि उसे प्रिज में कभी कोई चीज़ नहीं मिलती, लेकिन अब आप उसी बात पर चिल्लाना चाहते हैं। उसे आपकी छोटी-छोटी बातें सुनना पहले अच्छा लगता था, लेकिन अब वह आपकी बातों से खीझकर आपको मारने का इरादा रखता है। आप खुद से खामोशी से पूछते हैं, ‘क्या मैं अपनी बाकी जिंदगी इस तरह गुज़ार सकता हूँ? हमारे बीच क्या चीज़ एक जैसी है?’

**प्रेम का फूल गुलाब जैसा होता है। तीन दिन बाद सभी पंखुड़ियाँ
झड़ जाती हैं और आपके पास सिर्फ़ भद्री, चुभने वाली चीज़ बची
रह जाती है।**

हो सकता है कि आप दोनों में कोई भी समानता न हो या फिर बात करने के लिए कुछ खास न हो। प्रकृति का उद्देश्य ज़बरदस्त हार्मोनल कॉकटेल के असर में आए छीं-पुरुषों को एक-दूसरे के साथ धकेलना है, ताकि वे प्रजनन कर सकें और ज़्यादा सोच-विचार न करें। सही साथी को खोजने का मतलब यह देखना है कि आप दोनों के बीच ऐसा क्या है, जो दीर्घकाल में एक समान हो और कुदरत की चौंधिया देने वाली हार्मोन संबंधी मदहोशी से पहले हम यह काम कर सकें। जब आसक्ति का दौर गुज़र चुका होता है और वह गुज़रेगा भी, तब भी क्या आप दोस्ती और साझी दिलचस्पियों की बुनियाद पर एक स्थायी रिश्ता कायम रख पाएँगे? उन गुणों व रुचियों की सूची बनाएँ, जिन्हें आप अपने दीर्घकालीन साथी में चाहते हैं और फिर आप ठीक-ठीक जान पाएँगे कि आपको किसकी तलाश है। पुरुष के पास भी एक आदर्श साथी के गुणों की सूची होगी, लेकिन किसी पार्टी में जाने पर उसका दिमाग़ टेस्टोस्टेरॉन से उत्तेजित हो जाता है। उसके बाद अपनी हार्मोनल प्रेरणा के आधार पर वह ‘आदर्श’ महिला की तलाश करता है - बढ़िया टाँगें, सपाट पेट, गोल नितम्ब, पुष्ट वक्ष और इसी प्रकार की अन्य बातें। ये सभी गुण लघुकालीन प्रजनन से जुड़े हैं। महिलाओं को ऐसे पुरुष की चाहत होती है, जो संवेदनशील और परवाह करने वाला हो, उसका धड़ वीं आकार का हो और अच्छी शख्तियत का मालिक हो, ये सभी चीज़ें बच्चों के पालन-पोषण, भोजन का पीछा करने और सुरक्षा से जुड़ी हैं। ये भी लघुकालीन जीवविज्ञानिक ज़रूरतें हैं, जिनका आधुनिक रिश्ते की कामयाबी से ज़्यादा लेना-देना नहीं है। जब आप अपने साथी के वांछित दीर्घकालीन गुणों की सूची बनाएँ, तो उसे हमेशा तैयार रखें, ताकि जब भी किसी नए व्यक्ति से मिलने पर कुदरत आपके विचारों व इच्छाओं को नियंत्रित करने की कोशिश करे तो आप बिना किसी भावनात्मक बाधा के उसे देख-परख सकें।

प्रकृति चाहती है कि आप जितनी बार भी संभव हो, प्रजनन करें और वह उसमें धकेलने के लिए बहुत ज़बरदस्त चीज़ों का इस्तेमाल करती है। जब आप यह बात समझ लेते हैं और आपके पास अपने आदर्श दीर्घकालीन साथी के गुणों की सूची होती है, तो इस बात की संभावना कम होती है कि कोई आपको धोखा दे और उस आदर्श साथी की तलाश में आपको कामयाब मिलने की संभावना भी अधिक हो जाती है, जिसके साथ आप हमेशा के लिए सुखपूर्वक रह सकते हैं।

एक अलग भविष्य की ओर



‘हम शायद कभी नहीं जान पाएँगे कि वह क्या चीज़ थी, जिसने हमारे मछली पूर्वजों को पानी से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया।’

-ડેવિડ એટનબરો, પ્રકૃતિવિદ

क हा जाता है कि पुरुष होना बहुत अच्छा है, क्योंकि आप पत्थरों से मारे जाने के भय के बिना ट्यूनीशिया में अर्धनग्न अवस्था में घूम सकते हैं, आपके लिए अपनी चीज़ों के ठिकानों को याद रखना ज़रूरी नहीं होता, आप अपने जार खोलकर बिल्डर्स के सामने केला खा सकते हैं। महिला होना भी बहुत अच्छा है, क्योंकि आप अपने कपड़े खुद ख़रीद सकती हैं, बिना किसी परेशानी के अपनी टाँगों को मोड़ सकती हैं और अगर आप किसी सार्वजनिक जगह पर पुरुष को थप्पड़ रसीद करती हैं, तो हर कोई सोचता है कि आप ही सही होंगी।

पुरुष होना अच्छा है, क्योंकि आप बिना किसी शर्मिंदगी के खीरे और लौकी ख़रीद सकते हैं।

स्त्री व पुरुष अलग हैं। न बेहतर और न बदतर - लेकिन वे अलग हैं। विज्ञान यह जानता है, लेकिन राजनीतिक रूप से सही बात कहने वाले इसे नकारने के लिए सब कुछ करते हैं। सामाजिक व राजनीतिक दृष्टिकोण कहता है कि स्त्री व पुरुष के साथ बराबरी का बर्ताव किया जाना चाहिए, जो कि इस अजीबोग़रीब मान्यता पर आधारित है कि वे दोनों एक जैसे हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वे एक जैसे बिल्कुल नहीं हैं।

स्त्री व पुरुष वास्तव में क्या चाहते हैं?

कई शताब्दियों बाद भी आधुनिक पुरुषों के लिए कुछ ख़ास बदलाव नहीं आए हैं। आज भी 87 प्रतिशत पुरुषों का कहना है कि उनकी जिंदगी में काम सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है और 99 प्रतिशत का कहना है कि उन्हें बढ़िया सेक्स की चाहत है। हालाँकि आधुनिक महिलाओं की प्राथमिकताएँ उनकी माँ और दादी-नानी से काफी अलग हैं। कई महिलाओं ने कामकाज का चुनाव किया है, क्योंकि वे उन सभी चीज़ों को चाहती हैं, जो पुरुषों के पास हैं: पैसा, इज़्जत और ताक़त। अध्ययन दिखाते हैं कि कामकाजी महिलाओं को भी अब पुरुषों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ रहा है: हृदय संबंधी समस्याएँ, अल्सर, तनाव और समय-पूर्व मृत्यु।

एक-तिहाई से अधिक महिलाओं को तनाव के कारण हर वर्ष नौ दिन की छुट्टी लेनी पड़ती है।

44 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं का कहना है कि उनका काम ही उनके तनाव का सबसे बड़ा स्रोत है। एक निजी ब्रिटिश स्वास्थ्य बीमा कंपनी बीयूपीए और स्वास्थ्य पत्रिका टॉप सॉन्टे द्वारा 5,000 महिलाओं पर किए गए एक सर्वेक्षण में 66 प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि अतिरिक्त काम उनकी सेहत को नुकसान पहुँचाता है।

अधिकतर महिलाओं का यह भी कहना था कि अगर पैसा कमाना ज़रूरी नहीं होता, तो वे घर में चैन से बैठती और गुहिणी बनकर रहती। केवल 19 प्रतिशत का कहना था कि उन्हें वास्तव में कामकाजी महिला बनना पसंद है। ऑस्ट्रेलिया में हुए इसी प्रकार के सर्वेक्षण में यह बात सामने आई कि 18-65 वर्ष के आयु वर्ग की महिलाओं में केवल पाँच प्रतिशत के लिए कामकाज उच्च प्राथमिकता था, जबकि सभी महिलाओं के अनुसार मातृत्व उनकी पहली पसंद था। 31-39 आयु समूह में साठ प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि मातृत्व उनकी पहली पसंद था, जबकि दो प्रतिशत की पसंद कामकाज करना था। 18-30 आयु वर्ग की 31 प्रतिशत महिलाओं के लिए प्रथम प्राथमिकता मातृत्व था और कामकाज को तरजीह देने वाली महिलाओं का प्रतिशत 18 था।

हर आयु वर्ग में 80 प्रतिशत महिलाओं के लिए पारंपरिक परिवारों में बच्चों का पालन-पोषण करना उनकी प्राथमिकता में सबसे ऊपर था, जिससे यह पता चलता है कि महिलाओं के रवैये पर मीडिया के तमाम प्रचार व नारीवादी आंदोलन का उतना ज्यादा असर नहीं पड़ा, जितना कि पहले माना जाता था। आधुनिक महिलाओं के जीवन मूल्य व प्राथमिकताएँ वही हैं, जो सदियों से चली आ रही हैं। नाटकीय अंतर इतना है कि 93 प्रतिशत आधुनिक महिलाओं का कहना है कि आर्थिक स्वतंत्रता उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है और 62 प्रतिशत महिलाएँ राजनीति में ज्यादा ताक़त चाहती हैं - अन्य शब्दों में कहें तो वे पुरुषों पर निर्भर नहीं रहना चाहती।

जहाँ तक महिलाओं के निजी जीवन का सवाल है, केवल एक प्रतिशत महिलाओं के लिए सेक्स पहली

प्राथमिकता था, 45 प्रतिशत के लिए विश्वास और 22 प्रतिशत के लिए सम्मान पहली प्राथमिकता था। केवल 20 प्रतिशत महिलाओं का मानना था कि उनका यौन जीवन बहुत शानदार था, जबकि 63 प्रतिशत का कहना था कि उनका साथी बढ़िया प्रेमी नहीं था। यहाँ प्रमुख बात यह है कि मातृत्व अब भी महिलाओं की सची में उन चीजों में सबसे ऊपर है, जो उसे सबसे अधिक संतुष्टि देती हैं। बहुत सी कामकाजी महिलाओं का कहना है कि वे पैसे के लिए काम करती हैं और इनमें से अधिकतर शहरों में रहती हैं, जहाँ जिंदगी बिताने के लिए दो लोगों की आमदनी बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा लगा कि कई महिलाओं का यह मानना है कि बच्चों को भोजन कराने, कपड़े मुहैया कराने व शिक्षा देने का काम उनका पालन-पोषण करने से अधिक महत्वपूर्ण है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं को बच्चों को पालने-पोसने के काम में अधिक आनंद आता है, अधिकतर पुरुष दादा-नाना बनने तक इस बात का महत्व नहीं समझ पाते।

व्यावसायिक चयन

कुल मिलाकर, पुरुषों के लिए व्यावसायिक विकल्पों में बहुत अंतर नहीं आया है, स्थानिक विषयों से जुड़े कामकाज आज भी उनकी पहली पसंद हैं। पारंपरिक रूप से महिलाओं के कामकाज माने जाने वाले क्षेत्रों में पुरुषों की संख्या बढ़ी है, लेकिन इन पुरुषों पर किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उनके मस्तिष्क की सरचना एक हद तक महिलाओं से मिलती-जुलती है। हेयरड्रेसिंग और रचनात्मक कलाओं में यह स्पष्ट होता है, जबकि काउंसलिंग व शिक्षण में यह कम स्पष्ट होता है।

महिलाओं के लिए हालाँकि हालात बदल चुके हैं, अमेरिका में 84 प्रतिशत महिलाएँ कामकाजी हैं और संचार व सेवा क्षेत्रों का हिस्सा बन रही हैं। पश्चिमी जगत में सभी नए व्यवसायों के आधे से लैकर दो-तिहाई हिस्सों में महिलाओं का स्वामित्व है और 40 प्रतिशत से अधिक कार्यकारी, प्रशासन तथा प्रबंधन पदों पर महिलाएँ कार्यरत हैं।

**यदि आप पारंपरिक पुरुष पदानुक्रम में कार्यरत महिला हैं, तो
आपके पास दो विकल्प हैं: पद छोड़ दें या फिर मर्दाना बन जाएँ।**

पारंपरिक पुरुष पदानुक्रम में महिलाओं को अब भी अपने काम के शीर्ष पर पहुँचने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, लेकिन जैसा कि हम देख चुके हैं, अधिकतर महिलाओं को इन पदों की चाहत है भी नहीं। अधिकतर राजनीतिक प्रणालियों में पाँच प्रतिशत से कम महिलाएँ हैं, जबकि वे 50 प्रतिशत मीडिया कवरेज पाती हैं। यदि आप पारंपरिक पुरुष पदानुक्रम में काम कर रही हैं, तो सफलता के लिए आपके पास दो विकल्प मौजूद हैं: एक है, उस काम को छोड़कर दूसरे किसी ऐसे काम में लगना, जिसमें महिलाओं के साथ उचित बर्ताव होता हो, जबकि दूसरा है, पुरुषों जैसा बर्ताव करना। पुरुषोचित होने से अब भी अवसरों के द्वारा खुल जाते हैं और अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि जो महिलाएँ ‘पुरुषोचित’ लिबास पहनती हैं, प्रबंधन पदों पर उनके चुने जाने के अवसर उन महिलाओं के मुकाबले बेहतर होते हैं, जो नारीसुलभ शैली के पहनावे को अपनाती हैं - यह तब भी होता है, जबकि किसी महिला के हाथ में यह निर्णय हो। साक्षात्कार लेने वाले पुरुष भी ऐसे उम्मीदवारों को पसंद करते हैं, जिन्होंने इत्र न लगाया हो।

कामकाज का महिलाकरण

पदानुक्रम में सबसे ऊपर पहुँचने के लिए लोगों को प्रेरित करने में पौरुष संबंधी विशेषताएँ और मूल्य उत्तरदायी होते हैं, लेकिन अब वहाँ बने रहने में स्त्री सुलभ मूल्य तेज़ी से एकमात्र रास्ता बनते जा रहे हैं।

पारंपरिक रूप से अधिकतर संगठन पुरुष पदानुक्रम द्वारा नियंत्रित किए जाते रहे हैं, जिसमें एक प्रधान पुरुष नेता होता है, जिसका सिद्धांत था, ‘मेरा अनुकरण करो - वरना!’ आज के दौर में ऐसे संगठन तेज़ी से दुर्लभ होते जा रहे हैं, जैसे कि स्कूल का धौंस मारने वाला लड़का, जो ऐसे समय में सबसे ऊपर वाले स्थान पर पहुँचा था जब बाहुबल को बुद्धिमानी से ज्यादा इज़्ज़त दी जाती थी। आज ज़बरदस्त ढंग से उसका तिरस्कार किया जाता है।

चोटी पर पहुँचने वाले व्यक्ति को मर्दाना प्राथमिकताओं को समझना होगा, लेकिन अब मूल्यों की नारी सुलभ प्रणाली समची व्यवस्था के कुशलतापूर्वक, तालमेल के साथ और परिणामस्वरूप सफलतापूर्वक चलने के लिए बेहतर ढंग से अनुकूल है।

सबसे उच्च स्तरों पर पुरुषोचित मूल्यों पर ज़ोर देने से आंतरिक सत्ता संघर्ष होने लगता है। किसी सहमति पर न पहुँचने की स्थिति में सभी लोग ‘अकेले चलो’ का रास्ता अपनाते हैं। बेहतरीन बनने व दिखने की होड में पहल करने या फिर सहज ज्ञान जैसी बातों के लिए कोई जगह नहीं है और इस बात से भी कोई फ़र्फ़ नहीं पड़ता कि नई रणनीतियों या पाश्वीय तरीकों से नई वृद्धि व विकास को प्रोत्साहन मिल सकता है। दूसरी ओर, नारी सुलभ मूल्यों से मिल-जुलकर काम करने, सहयोग और परस्पर निर्भरता को बढ़ावा मिल सकता है, जो किसी संगठन की रणनीतिक क्षमताओं और मानव संसाधनों के अधिक अनुकूल हो सकते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी पुरुष को स्त्री जैसा होना चाहिए या फिर महिला को पुरुषोचित होने की ज़रूरत है, लेकिन यह ज़रूर है कि स्त्री-पुरुषों को यह समझना चाहिए कि ऊपर तक पहुँचने के सफ़र में अलग-अलग समय पर हर लिंग का तरीका महत्वपूर्ण है।

लड़कों का क्या करें

हर जगह स्कूल में लड़के नाकाम हो रहे हैं, यानी उन्हें लड़कियों से अलग शिक्षा की ज़रूरत है। पश्चिमी दुनिया में स्कूल से निकाले जाने वाले लड़कों की संख्या 80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक है। लगभग सभी अतिसक्रिय बच्चों में लड़के ज्यादा होते हैं और लड़कियों में यह स्थिति बहुत दर्लभ होती है। जो विषय उनके अनुकूल नहीं हैं, उन्हें छोड़ने (लड़कियाँ यहीं करती हैं) के बजाय लड़के स्कूल ही छोड़ देते हैं और अधिकतर सामाजिक अपराधों में उनका हाथ होता है। एक ओर जहाँ कम्प्यूटर पर मेल लिखने और उसे एक-दूसरे को भेजने के लिए लड़कियों की तारीफ़ की जाती है, वहीं स्कूल कम्प्यूटर कोड का पता लगाने और इंटरनेट पर एक्स रेटेड तसवीरों का ठिकाना ढूँढ़ने के लिए लड़कों को स्कूल से निकाल दिया जाता है। कुल मिलाकर, स्कूली शिक्षा के कई क्षेत्रों में लड़कों का प्रदर्शन ख़राब रहा है। ऐसे पुरुष शिक्षण कार्य छोड़ चुके हैं, जो लड़कों के लिए अनुकरणीय हो सकते थे और प्राथमिक स्कूलों में शिक्षण में अब महिलाओं का प्रभुत्व है। जो थोड़े-बहुत पुरुष इस क्षेत्र में बचे हैं, उन्होंने भी महिलाओं के तौर-तरीके अपना लिए हैं।

प्रतियोगिता का स्थान आपसी सहयोग ने ले लिया है, दुनिया के कष्टों के प्रति समानुभूति रखने ने तथ्यों को याद करने की जगह ले ली है और धौंस मारने वाले शिक्षकों को अब सौम्य समन्वयक बनने के लिए फिर से प्रशिक्षित किया गया है - यह सब बहुत ध्यान रखने वाला व मिल-बॉटने वाला बन गया है। अनुशासन को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है और अच्छाई को अपना लिया गया है। लड़कों के लिए कुछ नहीं बचा है और उनके सामने पुरुषोचित गुणों का कोई आदर्श नहीं है।

इसका एक हल केवल लड़कों के स्कूल या फिर केवल लड़कों की कक्षाएँ और पुरुष आदर्शों को शिक्षण क्षेत्र में प्रोत्साहित करना है। हम डराने-धमकाने या छड़ी से फीटने के पुराने दिनों में लौटने का सुझाव नहीं दे रहे - लड़कों को सम्मान, सहिष्णुता और सहयोग का महत्व सिखाने की ज़रूरत है - लेकिन उन्हें प्रभुत्व, अनुशासन, प्रतियोगिता और मर्दाना आदर्श दिखाने की भी ज़रूरत होती है। शिक्षा के नारीकरण ने लड़कों को दो समूहों में बॉट दिया है - कोमल, सौम्य किस्म के लड़के और अनुशासनहीन बदमाश व स्कूल छोड़ने वाले लड़के।

लड़कों के लिए कोई अनुकरणीय आदर्श नहीं हैं

लड़कियों के लिए ऐसी महिलाओं की कमी नहीं, जो अनुकरणीय हों, क्योंकि अधिकतर महिलाएँ अब भी नई पीड़ियों के सामने स्नेह, संवाद और परवरिश के आदर्श प्रस्तुत कर रही हैं। ऐल मैकफ़र्सन, वार्बरा स्ट्रायसैंड, हिलेरी किंलंटन, स्वर्गीय प्रिंसेज़ डायना व मैडोना जैसी महिला आदर्शों ने दृढ़ आग्रह व यौन स्वतंत्रता जैसे मर्दाना गुण प्रदर्शित किए और साथ ही पालन-पोषण वाला विशिष्ट महिला व्यवहार का आदर्श भी रखा। आयरन लेडी कहलाने वाली मारग्रेट थैचर को किसी मानव त्रासदी या नुकसान की स्थिति में अपने नारी सुलभ पक्ष को दिखाने में कभी कोई समस्या नहीं हुई। लेकिन लड़कों के सामने अब पुरुष आदर्शों की कमी है। पहले क्लार्क गेबल, जेम्स डीन और जेम्स बॉन्ड जैसे आदर्श हुआ करते थे, जो बेहतरीन पुरुष विशेषताओं को प्रदर्शित करते थे, लेकिन वे

शिष्टाचार, शालीनता, महिलाओं के प्रति सम्मान के मामले में भी अनुकरणीय थे। इन आदर्शों का स्थान अब सिल्वेस्टर स्टैलन, आर्नोल्ड श्वात्जनेगर, ब्रूस विलिस और ज्यां क्लॉड वैन डैम जैसे लोगों ने ले लिया है, जो अपनी समस्याओं के हल के लिए हिंसा का इस्तेमाल करने वाले किरदार निभाते हैं और बिना कोई परवाह किए अन्य लोगों की संपत्ति पर तबाही मचाते हैं; या फिर हयू ग्रांट जैसे कमज़ोर किरदार हैं, जो पुरुषों के बजाय महिला बर्ताव को प्रदर्शित करते हैं। अब हर पाँच में से चार प्राथमिक शिक्षक महिलाएँ हैं और ज्यादा से ज्यादा लड़कों का पालन-पोषण अकेली माँएँ कर रही हैं। किसी महिला के लिए दरवाज़ा खोलने जैसी पुरुषों की विशेषता अपनाने वाले पुरुष पर लैंगिकवादी, पुरुषों को श्रेष्ठ मानने वाला या आक्रामक होने का आरोप लग सकता है।

खेल नायक

बहुत से लड़कों के जीवन में बुजुर्ग पुरुष आदर्श अब नहीं रहे और इसने नए आदर्शों यानी खेल नायकों का रास्ता साफ़ कर दिया है। लगभग 200 वर्ष तक खेल के दो उद्देश्य रहे; एक, युवा पुरुष अपने टेस्टोस्टेरॉन का इस्तेमाल कर सकें, जिससे सम्मचे समदाय को फ़ायदा हुआ। दूसरा, युवाओं को ऐसे हुनर व मूल्य सिखाना, ताकि वे सफल वयस्क बन सकें। नीति व निष्पक्षता का महत्व, टीम में खेलने वाला अच्छा खिलाड़ी होना और निजी व टीम के लक्ष्यों को पाने के सिद्धांत युवा पीढ़ियों तक पहुँचाए गए। खिलाड़ियों को सोच-विचार व अन्य खिलाड़ियों का सम्मान करना सिखाया गया और खिलाड़ियों को खेल से ज्यादा अहम माना गया। 1980 के दशक से हालाँकि अधिकतर खेल गतिविधियाँ पैसे से नियंत्रित होने लगी और खिलाड़ियों को अपनी स्थानिक क्षमताओं - हिट करने, किंक करने या किसी लक्ष्य पर निशाना लगाने के लिए आश्रयजनक रूप से बड़ी रकम मिलने लगी। आज के अधिकतर खेलों में खेल खिलाड़ियों से कहीं ज्यादा अहम बन गया है। किसी के प्रति रोष, हिंसा, आक्रामकता, अभिमान और धृणा का इतना बड़ा प्रदर्शन खेल के मैदान के अलावा आपको कहाँ और कहाँ देखने को मिल सकता है? पिछली पीढ़ियों में खेल का इस्तेमाल चरित्र बनाने के लिए किया जाता था और खिलाड़ी का कल्याण सर्वोच्च था, क्योंकि पैसा कभी कोई मुद्दा ही नहीं था। आज, जब पूरा दुनियां गेंद को लकीर के पीछे धकेलता है, तो खेल के मैदान में खिलाड़ियों को कुचलकर, अपमानित, निराश, हतोत्साहित या अधमरा छोड़ दिया जाता है और हर किसी को पैसा मिलता है। खेल के बाद क्लबों व होटलों में युवा खिलाड़ी अशिष्ट बर्ताव करते, नशे में चर होते व बाकी लोगों का अनादर करते दिखाई देते हैं। अम्पायरों से मारपीट व अपने प्रतिद्वंद्वी के कान काट लेने को कई खेल प्रशंसक हास्यकर मानते हैं।

खेल नायक के रूप ने खेल के प्रति दीवाने देशों के युवाओं के सामने अनिष्टकारी आदर्श रखे हैं। पॉप स्टार्स की तरह एक दिन वे अज्ञात होते हैं और अगले ही दिन उन्हें देवता की तरह पूजा जाने लगता है, जिससे आसानी से प्रभावित होने वाले युवाओं को आधी-अधूरी, अकूशल सलाह मिलती है।

हर तरह के सामान और उत्पाद को बेचने में खिलाड़ियों का इस्तेमाल किया जाता है। समाज के कई लोग, विशेषकर युवा अब यह मानने लगे हैं कि एक व्यक्ति के रूप में उनका महत्व इस बात से जुड़ा है कि वे कितनी अच्छी तरह से गेंद को किक मार सकते हैं या किसी लक्ष्य पर निशाना साध सकते हैं।

खेल के नायक से जुड़ी समस्या यूरोप में उतनी बड़ी नहीं हैं, जहाँ मुख्यतया ठंडी जलवायी होने के कारण चारदीवारी के अंदर होने वाली गतिविधियों या सांस्कृतिक आयोजनों को प्रोत्साहित किया जाता है। परिणामस्वरूप, यूरोप में वीथोवन उतने ही प्रसिद्ध हैं, जितने कि माइकल जॉर्डन या डेविड बेकहम हैं।

क्या यह राजनीतिक तौर पर सही है?

हमने छह देशों में सम्मेलनों में भाग लेने वाले 10,00 से ज्यादा प्रतिनिधियों का सर्वेक्षण किया, जहाँ राजनीतिक रूप से सही होना राजनीतिक एजेंडा में काफ़ी ऊपर था। हमने पाया कि 98 प्रतिशत पुरुषों और 94 प्रतिशत महिलाओं का मानना था कि यह अब एक दमनकारी अवधारणा बन चुका है, जो कि बिना किसी निंदा के उनके मत को व्यक्त करने की स्वतंत्रता का गला घोटता है।

लिंग के संदर्भ में राजनीतिक रूप से सही होने का मूल आशय लैंगिकवादी रवैयों, भाषा, स्त्री/पुरुष असमानताओं से निपटना था और महिलाओं को समान अवसर देना था। माना जाता था कि प्रभावशाली पुरुषों द्वारा महिलाओं का दमन किया जाता था, लेकिन यह स्पष्ट है कि अधिकतर लोग राजनीतिक रूप से सही होने की

बात का समर्थन नहीं करते। तो क्या यह कभी काम करेगा? वैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसा होना असम्भव है। वर्तमान अवस्था में विकसित होने में स्त्री-पुरुषों को लाखों साल का समय लगा है और राजनीतिक रूप से सही माहौल के अनुकूल होने में संभवतः उन्हें और भी लाखों साल लग सकते हैं। मानवता के सामने आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनके उच्च आदर्श और व्यवहार की अवधारणाएँ उनके आनुवंशिक यथार्थ से लाखों वर्ष आगे की हैं।

हमारे जीवविज्ञान में अधिक बदलाव नहीं आया है

लड़के चीज़ों के साथ खेलना चाहते हैं; लड़कियाँ लोगों के साथ बातचीत करना चाहती हैं। लड़के नियंत्रण, प्रभुत्व और चोटी पर पहुँचना चाहते हैं, लेकिन लड़कियों के सरोकार नैतिकता, रिश्ते और लोग होते हैं। बड़े व्यवसायों और राजनीतिक क्षेत्र में अब भी महिलाओं की संख्या कम है, लेकिन इसका कारण पुरुषों द्वारा किया गया दमन नहीं है। बात यह है कि इन चीज़ों में महिलाओं की दिलचस्पी नहीं है।

नियोक्ताओं के समान अवसर के अच्छे इरादों के बावजूद लड़के ऐसे कामों में जाएँगे, जिनमें यांत्रिक व स्थानिक झुकाव हो और लड़कियाँ ऐसे कामों की ओर प्रवृत्त होती दिखेंगी, जिनमें अन्य लोगों के साथ काम करना जुड़ा हो।

इज़राइली किबुल्जिम ने कई साल तक लड़कों व लड़कियों की भूमिका की रूढ़िवद्धता को हटाने की कोशिश की। बच्चों के कपड़े, जूते, बालों की शैली व जीवनशैली को इस तरह तैयार किया गया कि वह एक जैसी व तटस्थ रहे। लड़कों को गुड़िया के साथ खेलने, सिलाई-बुनाई करने, खाना पकाने व सफाई करने के लिए प्रोत्साहित किया गया और लड़कियों को प्रेरित किया गया कि वे फुटबॉल खेलें, पेड़ों पर चढ़ें व निशाना लगाने का खेल खेलें।

किबुल्ज का विचार था कि एक ऐसा समाज बनाए जाए, जो लैंगिक दृष्टि से तटस्थ हो, जिसमें दोनों लिंगों के लिए कोई कठोर नियम न हों और हर सदस्य को समूह के भीतर बराबर अवसर मिलें व सभी की ज़िम्मेदारी बराबर हो। लैंगिकवादी भाषा व वाक्याशों, जैसे ‘बड़े लड़के रोते नहीं’ या ‘नन्ही लड़कियाँ धूल-मिट्टी में नहीं खेलती’ को भाषा से हटा दिया गया। किबुल्ज सदस्यों का दावा था कि वे दोनों लिंगों की भूमिका को पूरी तरह से एक-दूसरे से बदल सकते हैं। लेकिन असल में हुआ क्या?

किबुल्जिम के 90 वर्ष बाद अध्ययनों में स्पष्ट हुआ कि किबुल्ज में लड़कों ने आक्रामक व अवज्ञा भरा वर्ताव प्रदर्शित किया, उन्होंने शक्ति समूह बनाए, उनके बीच झगड़े हुए, उन्होंने अलिखित पदानुक्रम बनाए और ‘सौदे’ किए, जबकि लड़कियों ने एक-दूसरे का सहयोग किया, टकरावों से दूर रहीं, प्यार भरा वर्ताव किया, दोस्त बनाए व एक-दूसरे के साथ चीज़ों की साझेदारी की। जब उन्हें स्कूल के पाठ्यक्रम व विषयों का चुनाव करने की स्वतंत्रता दी गई, तो उन्होंने अपने लिंग के अनुसार पाठ्यक्रमों का चुनाव किया। लड़कों ने भौतिकी, इंजीनियरिंग व खेलों को चुना, जबकि लड़कियाँ शिक्षक, सलाहकार, नर्स व कार्मिक प्रबंधक बनीं। उनके जीवविज्ञान ने उन्हें ऐसी रुचियों व व्यवसायों की ओर निर्देशित किया, जो उनके मस्तिष्क की सहज संरचना के अनुकूल थे।

ऐसे समाजों में तटस्थ रूप से बड़े हुए बच्चों पर हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि माँ/बच्चे के जुड़ाव को मिटाने से बच्चों में मौजूद लैंगिक अंतर या उनकी प्राथमिकताओं में कमी नहीं आती। सच तो यह है कि इससे बच्चों की ऐसी पीढ़ी बनी, जिसे उपेक्षा की अनुभूति हुई व जो असमंजस में थी। ऐसे बच्चों के निराश-हताश व्यस्क बनने की संभावना अधिक थी।

अंततः:

स्त्री-पुरुषों के बीच ज़बरदस्त लैंगिक अंतरों के बावजूद रिश्ते चलते रहेंगे। यहाँ अधिक श्रेय महिलाओं को जाता है, क्योंकि उनमें रिश्तों व परिवार को सँभालने के ज़रूरी हुनर होते हैं। उनमें किसी की नीयत, भाषा व वर्ताव के

निहितार्थ समझने की शमता होती है और इसलिए वे परिणामों का पूर्वानुमान लगा सकती हैं या फिर किसी समस्या से बचने के लिए पहले से क़दम उठा सकती हैं। यदि हर राष्ट्र की नेता कोई महिला हो, तो यही बात दुनिया को एक अधिक सुरक्षित जगह बना सकती है। पुरुष शिकार करने व उसका पीछा करने, घर का रास्ता खोजने, आग को धूरने व प्रजनन करने के लिए आवश्यक शमताओं से लैस हैं। उन्हें आधुनिक समय में अस्तित्व के लिए नए तरीके सीखने होंगे, ठीक वैसे ही जैसे महिलाओं ने सीखे हैं।

रिश्ते तब डगमगाने लगते हैं, जब स्त्री-पुरुष इस बात को समझने में नाकाम होते हैं कि जीववैज्ञानिक तौर पर वे दोनों एक-दूसरे से अलग हैं और जब वे एक-दूसरे से अपनी उम्मीदों पर खरा उतरने की अपेक्षा करते हैं। रिश्तों में महसूस होने वाला अधिकतर तनाव इस झूठी मान्यता से आता है कि अब पुरुष व महिला समान हैं और उनकी प्राथमिकताएँ, प्रेरणाएँ व इच्छाएँ एक समान हैं।

मानव इतिहास में पहली बार हम लड़कियों का पालन-पोषण व शिक्षण एक समान तरीके से कर रहे हैं, उन्हें सिखा रहे हैं कि वे एक समान हैं और दोनों एक-दूसरे जितने सक्षम हैं। फिर वयस्क होने के बाद शादी होने पर एक दिन अचानक उन्हें पता चलता है कि वे हर लिहाज़ व हर तौर-तरीके से एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि युवाओं के रिश्ते व शादियाँ आज इतनी बुरी हालत में हैं। कोई भी वह अवधारणा जिसमें लैंगिक समानता का आग्रह किया जाता है, वह ख्वतरे से भरी है, क्योंकि वह स्त्री-पुरुष से एक जैसे बर्ताव की अपेक्षा करती है, जबकि दोनों के मस्तिष्क की संरचना एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। कई बार यह समझना बहुत मुश्किल हो जाता है कि प्रकृति ने दोनों लिंगों के बीच इतनी स्पष्ट असंगति क्यों बनाई, लेकिन यह वैसी इसलिए दिखाई देती है, क्योंकि हमारा जीववैज्ञान हमारे वर्तमान वातावरण से बहुत अलग है।

अच्छी बात यह है कि जब आप इन अंतरों के उद्भव को समझ जाएँगे, तब आपको न सिर्फ उनके साथ रहने में आसानी होगी, बल्कि आप उन्हें सँभाल सकेंगे, उनका मौल समझ सकेंगे और आखिरकार उन्हें सँजोकर रखने लगेंगे।

पुरुषों को ताकत, उपलब्धि और सेक्स चाहिए। महिलाओं को रिश्ते, स्थिरता व प्रेम चाहिए। इसे लेकर परेशान होने का कोई फ़ायदा नहीं है, यह तो वैसा ही है जैसा कि बारिश के लिए आसमान को कोसना। बारिश को स्वीकारने से आप उससे निपटने के लिए छतरी या बरसाती लेकर चलते हैं, तो फिर वह समस्या के रूप में नहीं रह जाती। ठीक इसी तरह, हमारे बीच मौजूद अंतरों के कारण रिश्ते में आने वाली मुश्किलों या टकरावों पर पहले ही विचार करने से आप उनसे अच्छी तरह निपट सकते हैं।

हर रोज़ मस्तिष्क के स्कैन हमें इस बात की नई व रोमांचक जानकारी दे रहे हैं कि हमारा दिमाग़ कैसे काम करता है और उन चीज़ों के बारे में भी बता रहे हैं, जिन्हें हम कोई महत्व नहीं देते थे। ऐनोरेक्सिया से फीडित कोई लड़की जब आईना देखती है, तो वह खुद को मोटा या पतला देखती है। वह जो कुछ देखती है, वह किसी कारण से उसके यथार्थ का विकृत रूप होता है। लंदन के ग्रेट औरमॉन्ड स्ट्रीट हॉस्पिटल के डॉ. ब्रायन लैस्क ने 1998 में ऐनोरेक्सिक किशोरों के मस्तिष्क को स्कैन किया और पाया कि लगभग सभी के मस्तिष्क में दृष्टि को नियंत्रित करने वाले हिस्से में रक्त का प्रवाह कम था। यह उन दर्जनों अध्ययनों में से एक है, जो इस बात से पर्दा उठा रहे हैं कि चीज़ों में गड़बड़ी होने से मस्तिष्क में क्या कुछ होता है।

हर जगह के वैज्ञानिकों से एक जैसे और ठोस सबूत सामने आ रहे हैं, जो दिखाते हैं कि गर्भ में मौजूद जैवरसायन हमारे मस्तिष्कों की संरचना को निर्देशित करते हैं और परिणामस्वरूप हमारी प्राथमिकताओं को निर्धारित करते हैं। लेकिन हममें से अधिकतर को यह जानने के लिए लाखों डॉलर के स्कैन करवाने की ज़रूरत नहीं है कि पुरुष बात नहीं सुनते और महिलाएँ नक्शा नहीं पढ़ सकती; स्कैन वही बताता है, जो अक्सर स्वतः प्रमाणित होता है।

इस किताब को लिखकर हमने उस जानकारी को प्रस्तुत किया है, जिसे शायद आप अवचेतन स्तर पर पहले से जानते हों, लेकिन चेतन तौर पर उसे समझने के लिए आपने कभी कोई कोशिश न की हो। हैरानी की बात है कि आज 21वीं शताब्दी की शुरुआत में हम अब भी स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों की समझ को स्कूलों में नहीं पढ़ाते। हम भूलभूलैया में भागते चुहों का अध्ययन करने और यह देखने को प्राथमिकता देते हैं कि कैलों के इनाम के बदले बंदर कैसे कलाबाज़ी खा सकता है। विज्ञान एक धीमा व भारी-भरकम विषय है और शिक्षा प्रणाली में अपने परिणाम देने में उसे कई साल लगते हैं।

अब यह आपके यानी पाठकों के हाथ में है कि आप खुद को शिक्षित करें। उसके बाद ही आप ऐसे रिश्तों की उम्मीद कर सकते हैं, जो पुरुष व महिलाओं के लिए सुखद और संतोषप्रद हों।